CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिग्रफ़ नामा विलायत

बर्तानिया के बारे में पहला भारतीय यात्रा वृत्तांत
१७६७-१७६६ ई.

लेखक
मुंशी एतिसामुद्दीन

हिंदी अनुवाद
डॉ. शाहिद जमील

खुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिग्रफ़ नामा विलायत

बर्तानिया के बारे में पहला भारतीय यात्रा वृत्तांत
१७६७-१७६६ ई.

लेखक
मुंशी एतिसामुद्दीन

हिंदी अनुवाद
डॉ. शाहिद जमील

खुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2010

मूल्य रूपये 160/-

मुद्रक एवं प्रकाशक खुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना–4.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुक्रम

प्रारंभिका ६

१. परिचय १३

२. प्रार्थना और स्तुति (हमद व नाअत) २३

३. पुस्तक के संकलन का कारण २४

४. अपनी स्थितियों का उल्लेख २५

५. कुछ अपनी पूर्व की स्थितियाँ २६

६. बादशाह शाह आलम का पत्र, बादशाह बर्तानिया के नाम ... २८

७. बादशाह शाह आलम का पत्र बादशाह बर्तानिया
तक न पहुँचने का कारण और मेरी विफल वापसी ३०

८. पोत पर सवार होना और समुद्र की विशेषताएँ ३३

९. पुर्तगालियों और अँग्रेज़ों के बंगाल आने का संक्षिप्त हाल ... ३४

१०. फ़िरंगियों का बंगाल में प्रवेश कोठियाँ और क़िले बनाना ३६

११. पुर्तगालियों के द्वारा कोठी ख़ाली कराने का हाल ३८

१२. कहवल घाट की अँग्रेज़ी कोठी का ख़ातमा
'और कलकत्ता की आबादी' ३९

१३. जर्मन क़ौम का फ़रार होना ४१

१४. समुद्र की व्यापकता और गहराई का उल्लेख ४१

१५. दिशासूचक यंत्र यानी कम्पास बनाना ४३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६. रास्ते की मापी ४५
१७. पोतों की क़िस्में ४६
१८. हवा की क़िस्में उनका लाभ-हानि ४७
१६. बादे शुर्त (नाव के अनुकूल चलने वाली हवा) का हाल ५०
२०. मॉरिशस द्वीप का हाल ५०
२१. मनदिला द्वीप का उल्लेख और
अँग्रेज़ों और स्पेनियों का संबंध ५३
२२. पीकू द्वीप का हाल ५४
२३. मालद्वीप ५६
२४. बल्कास द्वीप ५७
२५. मालाबार द्वीप ५७
२६. सिलौन द्वीप ५८
२७. आदमख़ोर (नर भक्षी) द्वीप ५६
२८. आमदख़ोर द्वीप का उल्लेख जो पहले के पड़ोस में है ६०
२६. काफ़ द्वीप के हालात ६०
३०. ज़ंगियों का देश ६२
३१. सामून द्वीप ६३
३२. पानी में डूबा हुआ द्वीप ६६
३३. सुम्बुला द्वीप का उल्लेख ६६
३४. फ़ाकिर द्वीप ६६
३५. पश्चिमी बर्तानिया (वेस्टइंडीज़) ६७
३६. समुद्र के अद्‌भुतों का हाल 'जो देखे और सुने' ६७
३७. मगरमच्छ का उल्लेख ६६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८. समुद्री बैल और गदहे का हाल ६६
३६. मानवरूपी जलपरी ७०
४०. नगर पारबपुर बालोन फ्रांस का क्षेत्र ७१
४१. बर्तानिया के तट पर पहुँचना ७७
४२. लन्दन नगर की विशेषताएँ ८०
४३. लन्दन के भवन ८१
४४. वेस्टमिनिस्टर पुल और गिरजा घर ८२
४५. 'शाही महल' और अन्य भवन ८३
४६. बादशाह बेगम की हवेली (विल्यम जेम्स पार्क) ८५
४७. बादशाह बाग़ ८६
४८. रास्तों की सफ़ाई और बाज़ार की रौनक़ ८७
४६. लन्दन में पानी की व्यवस्था ८८
५०. नृत्यगृह (नाच घर) का हाल ८६
५१. चाबुकसवार (घुड़सवार) चलसी का हाल ६२
५२. लन्दन के विद्यालय (ऑक्सफोर्ड) ६३
५३. वेध शाला का भवन ६६
५४. चिकित्सा विद्यायल ६८
५५. फ्रांसीसियों का जादूघर ६८
५६. नाच घर ख़ाकसाँ ६६
५७. राजकीय संग्रहालय (ब्रिटिश मूज़्यिम) का उल्लेख १००
५८. हिमपात (बर्फ़बारी) का हाल १०२
५६. स्कॉटलैंड का हाल १०४
६०. कप्तान सुईटन के हालात और कुछ अपना हाल १०६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६१. हालैंड देश का उल्लेख १०८
६२. फ़िरंगिस्तान की आबादी का आरंभ और
फिरंगी क़ौम का इतिहास ११२
६३. रोम देश ११२
६४. हज़रत ईसा के निधन के बाद ईसवी धर्म का प्रचार ११४
६५. नसारा के ईमान और आस्था का उल्लेख ११५
६६. नसारा का धर्म, इंजील के अनुरूप ११७
६७. बलात्कारियों का धर्म ११६
६८. अँग्रेज़ों की ईश्वर पूजा का तरीक़ा १२२
६६. हज़रत मोहम्मद स. के देवदूत होने से
अँग्रेज़ों का इन्कार १२३
७०. अँग्रेज़ों की आस्थायें, देव पुस्तक से इन्कार १२८
७१. एक घटना १२६
७२. इस्लामी आस्थाओं के संदर्भ में श्री सुईटन से वाद-विवाद .. १२८
७३. लन्दन के लोगों से धार्मिक बहस १२६
७४. बर्तानिया देश और उसके बादशाहों का हाल १३३
७५. एक घटना १३५
७६. बादशाह विलियम प्रथम का हाल १३७
७७. बादशाह बर्तानिया की विशेषताएँ १३८
७८. अँग्रेज़ों का सदाचार, आदतें और देशी नियम १३८
७६. सैनिक नियम और सैनिक अधिकारियों के पद १४०
८०. न्यायालय (संसद) की स्थापना और उसका संविधान १४१
८१. बर्तानिया में विचार और कार्य की स्वतंत्रता १४४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८२. सेना की छावनी १४५

८३. मालगुज़ारी और उसकी वसूली १४६

८४. न्यायालय की कार्य प्रक्रिया १४७

८५. युद्ध के नियम और वीरता की विशेषता १५०

८६. शब्द 'कम्पनी' नाम रखने का कारण और उसका कारोबार १५१

८७. समुद्री डाकुओं और लुटेरों का हाल १५४

८८. लार्ड मेयर का चुनाव १५४

८९. बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था १५५

९०. कारख़ानों की स्थापना १५८

९१. लावारिस और अनाथ बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था. १५९

९२. रोज़गार की चिंता और समय व्यतीत करना १६०

९३. अमेरिका जिसको नया संसार कहते हैं १६५

९४. अमेरिका की विशषताएँ १६७

९५. बर्तानिया की अन्य विशेषताएँ १६९

१. कृषि उत्पादन १६९

२. बर्तानिया के फूल १७०

३. बर्तानिया के वृक्ष १७०

४. सराय और यात्रियों के विश्राम के स्थान, पड़ाव और सैनिक गृह. १७०

९६. रास्ते और सड़कें १७१

९७. बर्तानिया के पशु १७३

९८. शिकारी कुत्तों का हाल १७६

९९. बर्तानिया के अन्य अविष्कार १७९

१००. कप्तान सुईटन से मतभेद का कारण १८०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०१. बर्तानिया के लोगों की बुरी आदतें १८६
१०२. एक अद्भुत नगर १८७
१०३. हुक़्क़ा और तंबाकू १८८
१०४. किताबत और मुद्ररण १८८
१०५. शतरंज १८८
१०६. परिशिष्ट १९०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रारंभिका

यूरोप से भारत का व्यापारिक संबंध आदिकाल से ही बना रहा है परंतु इन संबंधों में अधिक घनिष्टता सोलहवीं और सतरहवीं शताब्दियों में तब आईं जब यूरोप की विभिन्न व्यावसायिक कंपनियाँ भारत में कार्यरत हुईं और अंततः १७५७ ई. में पलासी के युद्ध के बाद लन्दन की ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पूर्वी भारत में सीधे तौर पर अपना शासन स्थापित कर लिया। इस विस्तृत काल में बड़ी संख्या में यूरोप से यात्री आते रहे। उनका संबंध विभिन्न जातियों और देशों से था और उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत भी संकलित किए जो आज भी ऐतिहासिक स्रोत के रूप में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

पलासी युद्ध के बाद जो परिवर्तन प्रकट हुए उनमें एक नयी और रोचक शुरुआत यह हुई कि भारत से भी यूरोप के लिए यात्री जाने लगे और उनके यात्रा वृत्तांत संकलित हुए। इस सिलसिले में सबसे पहला नाम शैख़ एतिसामुद्दीन और उनके संकलन 'शिगर्फ़ नामा विलायत' का है। शैख़ एतिसामुद्दीन मुग़ल बादशाह शाह आलम द्वितीय के राजदूत, कप्तान सुइंटेन (Captain Swinton) के सहयोगी के रूप में १७६७ ई. में लन्दन गए और दो वर्ष नौ माह के प्रवास के बाद १७६९ ई. में कलकत्ता वापस लौटे। यात्रा के दौरान उन्होंने विभिन्न घटनाओं और अनुभवों को लिखा और इसी को आधार बनाकर उन्होंने अपना यात्रा वृत्तांत १७८५ ई. में संकलित किया। इसका शीर्षक 'शिग्रफ़ नामा विलायत' था और इसकी भाषा फ़ारसी थी। इस यात्रा वृत्तांत के कई क़लमी नुस्ख़े (पाण्डुलिपियों) विभिन्न पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। एक अहम क़लमी नुस्ख़ा ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी में भी सुरक्षित है जिसको १२१९ हिजरी में नक़्ल किया गया था। इसका Acc No. १२४५ है और इसमें १३१ पृष्ठ हैं।

१९९५ ई. में ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी ने श्री अमीर हसन नूरानी द्वारा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकलित उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया था, जिसमें संकलनकर्ता ने सुलतानुलमदारिस लखनऊ, नेशनल आरकाईज़ दिल्ली, नदवतुलउलमा लखनऊ और हैदराबाद के नुस्ख़ों का उपयोग किया था। यह दुखद संयोग है कि ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी की पाण्डुलिपि का मूल्यांकन संकलनकर्ता नहीं कर सके थे। अतएव इस द्वितीय प्रकाशन में परिशिष्ट के रूप में इस नुस्ख़े पर एक संक्षिप्त टिप्पणी शामिल कर दी गई है। यद्यपि इस में प्रथम पृष्ठ उपलब्ध नहीं है और इस दृष्टि से यह अपूर्ण है परंतु जहाँ तक यात्रा और उसके वर्णन का मामला है, यह सभी महत्वपूर्ण बातें इस प्रति में उपलब्ध हैं।

कई वर्ष पूर्व प्रो. ए.बी.एम. हबीबुल्लाह ने ख़ुदा बख़्श की पाण्डुलिपि और ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित पाण्डुलिपि का इस्तेमाल करते हुए इस यात्रा वृत्तांत का बंगला अनुवाद 'विलायत नामा' के शीर्षक से किया था। (ढाका, १९८१ ई.) इस यात्रा वृत्तांत की एक अतिरिक्त प्रति आक्सफ़ोर्ड की Bodelain लाइब्रेरी में सुरक्षित है, यद्यपि प्रो. हबीबुल्लाह के अध्ययन में वह नहीं रही थी। कुछ माह पूर्व उनके बंगला अनुवाद को आधार बनाकर कैसर हक़ ने इस यात्रा वृत्तांत का अँग्रेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित किया है जिसका शीर्षक Wonders of Vilayat है (नई दिल्ली, २००८)। इसके पूर्व भी Edward Alexander ने एक अँग्रेज़ी अनुवाद किया था, जिसका प्रकाशन १८२७ ई. में हुआ था। यह सारांश है और इसमें अशुद्धियाँ भी हैं। अब यह लगभग अनुपलब्ध है।

इस यात्रा वृत्तांत के उर्दू अनुवाद के प्रकाशन के सिलसिले में ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी ने ही पहल की और १९९५ ई. में इसका प्रकाशन लाइब्रेरी ने किया था। अब इसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया जा रहा है ताकि अधिक पाठकों तक इसे पहुँचाया जा सके।

शैख़ एतिसामुद्दीन के संबंध में विस्तृत विवरण क़ाज़ी मोहम्मद सद्रुलउला की पुस्तक History of the Family of Mirza Sheikh Etesamuddin (कलकत्ता, १९४४) में मौजूद हैं। उनका संबंध बंगाल के नदिया ज़िला के बाजनौर (पंजनौर) क़स्बे से था। उनके पिता का नाम ताजुद्दीन था। शिक्षा-प्राप्ति के बाद वे ईस्ट इंडिया कम्पनी में मुंशी की हैसियत से नियुक्त हुए। सेवाकाल में बंगाल, बिहार और अवध में रहे। उस ज़माने में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं के साक्षी भी रहे। परंतु 'शिग्रफ़ नामा'

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में सिर्फ़ यूरोप की यात्रा से संबंधित सूचनाएं ही विस्तार से मिलती हैं। क़रीब तीन वर्ष की इस यात्रा में मिर्ज़ा एतिसामुद्दीन ने दो वर्ष लन्दन में गुज़ारे। इसमें अधिक समय वह लंदन में स्थित रहे। कुछ समय वह स्कॉटलैंड और फ़्रांस में रहे। उन स्थानों के हवालों के अतिरिक्त यात्रा के दौरान जिन क्षेत्रों से उनका गुज़र हुआ उनके संबंध में भी उन्होंने विस्तार से लिखा है।

ज्ञातव्य है कि शाह आलम द्वितीय के द्वारा दीवानी का अधिकार प्रदान किए जाने के बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी से बादशाह के कुछ मतभेद हो गए थे और लार्ड क्लाइव के आतंक से तंग आकर शाह आलम ने बर्तानिया के बादशाह से शिकायत करने का निर्णय लिया था। उन्होंने राजदूत के रूप में कप्तान सुइंटन को भेजा। उनके ही परामर्शी और सहायक के रूप में शैख़ एतिसामुद्दीन भी इस यात्रा में शामिल रहे।

उस समय बर्तानिया में जार्ज तृतीय का शासन था जो एक सख़्त मिज़ाज और तानाशाह बादशाह था। उसके विरोध में ही अमेरिका के उपनिवेशों ने विद्रोह किया और १७७४ ई. में स्वतंत्र उपनिवेशवासियों ने संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना की। इस 'नई दुनिया' का उल्लेख भी शैख़ एतिसामुद्दीन ने किया है। जार्ज तृतीय कम्पनी को दीवानी प्रदान किए जाने के निर्णय से संतुष्ट नहीं था। अतएव शाह आलम के राजदूत को अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली और उन्हें वापस लौटना पड़ा (विस्तृत विवरण के लिए संकलनकर्ता द्वारा लिखित परिचय का अवलोकन करें) इस दृष्टि से यह यात्रा असफल रही। परंतु इसके अनायास परिणाम के तौर पर इस यात्रा वृत्तांत का संकलन हुआ और बाद में प्रकाशन भी। शायद यही इस यात्रा का सबसे रचनात्मक और दीर्घकालिक परिणाम कहा जाएगा।

शैख़ एतिसामुद्दीन बर्तानिया के आर्थिक और औद्योगिक विकास से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने इसकी चर्चा भी विस्तार से की है। वह मुग़ल साम्राज्य के पतन से भी प्रभावित थे और उसका उन्हें दुःख भी था। इसका उल्लेख भी जगह-जगह इस यात्रा वृत्तांत में मिलता है। इस यात्रा वृत्तांत में भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में यूरोप की व्यावसायिक कंपनियों के आगमन और उनके द्वारा उन क्षेत्रों पर अधिकार के कारणों का भी उल्लेख है। इससे हमें एक समकालीन व्यक्तित्व की जुबानी उस समय घटित घटनाओं और उनके कारणों और परिस्थितियों को समझने में सहायता मिलती है। बर्तानिया में मूर्तरूप ले रहे परिवर्तनों और उनके प्रभाव का वर्णन भी महत्त्वपूर्ण और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोचक है। इससे भी यह अंदाज़ा होता है कि समकालीन भारतीय बर्तानिया की आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के संबंध में क्या महसूस करते थे। (ऐसे ही विचारों की एक अन्य मिसाल गुलाम हुसैन तबातबाई की कृति सियरुलमुताख़्ख़रीन है) ज्ञातव्य है कि शेख़ एतिसामुद्दीन के बाद भी भारतीय यात्रियों की यूरोप की यात्रा होती रही। एक बहुत अहम नाम मिर्ज़ा अबुतालिब ख़ाँ का है, जिन्होंने १७९९ ई. से लेकर १८०३ ई. तक एशिया, अफ़्रीका और यूरोप के विभिन्न स्थानों की यात्रा की। इस यात्रा वृत्तांत को कहीं अधिक ख्याति प्राप्त हुई। १८१४ ई. में Charles Stewart ने इसका अँग्रेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित किया। इसके कुछ दिनों बाद राजाराम मोहन राय भी अकबर द्वितीय के राजदूत के रूप में बर्तानिया गए जहाँ उन्होंने अपनी ज़िंदगी के अंतिम दो वर्ष (१८३१-१८३३) गुज़ारे। लेकिन यूरोप के प्रथम फ़ारसी यात्रा वृत्तांत की हैसियत से 'शिग्रफ़ नामा विलायत' की महत्ता और उपादेयता को आज भी स्वीकार किया जाता है।

हम उम्मीद करते हैं कि इस यात्रा वृत्तांत में सुधिपाठकों की रोचकता बनी रहेगी और पाठकों को भी इसके अध्ययन से यूरोप की सभ्यता और आर्थिक विकास के एक महत्त्वपूर्ण काल को समझने में एक नया आयाम प्राप्त होगा।

इमत्याज़ अहमद
निदेशक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिचय

'शिगर्फ़ नामा विलायत' बर्तानिया के प्रथम भारतीय यात्री, मुंशी एतिसामुद्दीन का यात्रा वृत्तांत है, जिन्होंने ईस्ट इंडिया कम्पनी के सेवाकाल, शाह आलम बादशाह के दूत कप्तान, सुईटन के सहयोगी के रूप में यात्रा की थी। वे १७६७ ई. में जून माह के प्रारंभ में कलकत्ता से समुद्री पोत पर सवार होकर प्रस्थान किया और दो वर्ष नौ माह के बाद १७६९ ई. में कलकत्ता वापस आए। कुछ दिनों बाद अपनी यात्रा के संदर्भ में जो लिखते रहे थे, उनको संकलित किया। १७८५ ई. में यह यात्रा वृत्तांत पूर्ण हुआ और इसका नाम 'शिगर्फ़ नामा विलायत' रखा। वे बर्तानिया में दो वर्ष तक रहे। उनका अधिकतर समय लंदन में गुज़रा। कुछ दिनों फ़्रांस और स्कॉटलैंड में रहे। यह वह काल था जब यूरोप में औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात हो चुका था। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्रों में यूरोप का हर देश एक दूसरे पर बढ़त प्राप्त करने की चेष्टा में संलिप्त था। दूसरी ओर भारत में अँग्रेज़ अपनी सत्ता स्थापित करने में सक्रिय थे। एतिसामुद्दीन अँग्रेज़ों की प्रगति से बहुत प्रभावित और उनके प्रशंसक थे। परंतु इसी के साथ भारतियों की तबाही और मुग़लिया शासन के पतन का उनको बहुत दुःख था। जिनका उल्लेख उन्होंने यात्रा वृत्तांत में जगह-जगह किया है।

मुंशी एतिसामुद्दीन प्रथम भारतीय पर्यटक थे, जिन्होंने बर्तानिया की सैर की और 'शिगर्फ़ नामा विलायत' के नाम से फ़ारसी भाषा में अपना यात्रा वृत्तांत लिखा। उन्होंने १८ वीं शताब्दी के बर्तानिया की सामान्य स्थितियों के अतिरिक्त वहाँ की सभ्यता और संस्कृति, अविष्कार, नवीन उत्पत्ति और राजनीतिक एवं ऐतिहासिक स्थितियों की चित्रावली प्रस्तुत की है। इस यात्रा वृत्तांत की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें बंगाल, बिहार और अवध के कतिपय ऐतिहासिक घटनाओं के अतिरिक्त तटवर्ती क्षेत्रों में यूरोपियन व्यवसाइयों के आवा-गमन और उनके आधिपत्य और सत्ता के कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है। इस आधार पर यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ भी है।

मुंशी एतिसामुद्दीन बंगाल के क़स्बा बाजनोर ज़िला नदिया के निवासी थे। उन्होंने वहीं शिक्षा-दीक्षा पाई। उस काल की प्रचलित शिक्षा की प्राप्ति के बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी के कार्यालय में मुंशी के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। बहुत दिनों तक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह अँग्रेज़ अधिकारियों के साथ संबद्ध रहे। वह फ़ारसी भाषा में अच्छी योग्यता रखते थे। उस समय सरकारी कार्यालयों में लिखने-पढ़ने का कार्य फ़ारसी और अँग्रेज़ी में होता था। ऐतिसामुद्दीन बिहार, बंगाल और अवध राज्य के विभिन्न नगरों में रहे। अपनी निष्ठा और ईमानदारी के कारण वह कम्पनी के विश्वसनीय और सहयोगी कर्मियों में गिने जाते थे। वे बंगाल, बिहार और अवध के कतिपय महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थितियों के चक्षुदर्शी थे। बक्सर युद्ध के ज़माने में वे बिहार में मौजूद थे और जनरल कारनाक के कमान में अँग्रेज़ फ़ौज ने कोड़ा जहानाबाद में शुजाउद्दौला और मराठों की संयुक्त फ़ौज को पराजित किया था उस समय भी एतिसामुद्दीन मीर मुंशी के रूप में जनरल कारनाक के साथ थे और सारी स्थितियों को अपनी आँखों से देख रहे थे। युद्ध के बाद इलाहाबाद में शाह आलम बादशाह के सामने शुजाउद्दौला के कहने पर अँग्रेज़ों से सुलह-सफ़ाई के बाद जो समझौते हुए थे उनका प्रारूप (मुसव्वदा) एतिसामुद्दीन ने लिखा था। 'शिगर्फ़ नामा' में समझौता इलाहाबाद का विवरण मौजूद है। इसके बाद शाह आलम ने कलाइव से अपनी सुरक्षा के लिए फ़ौज की सहायता माँगी ताकि वे सुरक्षित दिल्ली तक यात्रा कर सकें, क्योंकि उनको अपने विरोधियों और नमकहराम मुलाज़िमों से जान का ख़तरा था। कलाइव ने बर्तानिया के बादशाह की अनुमति के बिना फ़ौज की सहायता देने से लाचारी व्यक्त की और यह तय पाया कि बादशाह जार्ज तृतीय के नाम बादशाह शाह आलम की तरफ़ से अनुमति प्राप्ति के लिए पत्र लिखा जाए और एक लाख रुपया कुछ भेंट के साथ भेजा जाए। इस काम के लिए कप्तान सुईटन एलची के रूप में चुने गए। उनके साथ एक फ़ारसी-ज्ञाता की आवश्यकता थी। उसके लिए एतिसामुद्दीन की नियुक्ति हुई। इस तरह उनको सेवाकाल में ही यात्रा का अवसर मिला। वे १० जवनरी, १७६७ ई. को कलकत्ता से बर्तानिया के लिए रवाना हुए और दो वर्ष नौ माह के बाद १७६९ ई. में कलकत्ता वापस आए। जिस उद्देश्य से यात्रा की थी उसका हाल यात्रा वृत्तांत में मौजूद है। 'शिगर्फ़ नामा' में १८ वीं शताब्दी के बर्तानिया की सभ्यता और संस्कृति, राजनीतिक एवं सामाजिक स्थितियाँ और औद्योगिक विकास का हाल विस्तारपूर्वक लिखा है। ऐतिहासिक और भौगोलिक स्थितियों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने आक्सफोर्ड के शिक्षा-ज्ञान के केंद्र को भी देखा। फ्रांस और स्कॉटलैंड के कतिपय स्थानों को भी देखा और उनकी स्थितियाँ लिपिबद्ध कीं। इसके अतिरिक्त उन द्वीपों का भी हाल लिखा है, जहाँ यात्रा के दौरान उनका पोत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लंगर डालकर कुछ दिनों तक ठहरा था। इसके साथ ही समुद्र के जीव-जंतुओं और कतिपय विचित्रताओं का भी उल्लेख किया है।

एतिसामुद्दीन ने अपनी कुछ प्रारंभिक स्थितियाँ 'शिगर्फ़ नामा विलायत' के 'प्राकथन' में लिखी हैं। परंतु उनके व्यावहारिक जीवन पर भी 'शिगर्फ़ नामा' के अध्ययन से जानकारी प्राप्त होती है। उन्होंने लिखा है कि ;

"मैं एतिसामुद्दीन पिता स्वर्गीय शैख़ ताजुद्दीन, बाजनौर, ज़िला नदया का रहने वाला हूँ। मैंने स्वर्गीय ज़फ़र अली ख़ाँ के अधीन, मुंशी सलीमुल्लाह एवं मिर्ज़ा क़ासिम, सरकार के प्रधान लिपिक के साथ कार्य किया है। इन लोगों की संगत में लिखने-पढ़ने का ढ़ंग सीखा है। क़ासिम अली ख़ाँ के शासन काल में बारक साहब का कर्मचारी होकर असद ज़माँ ख़ाँ राजा बीरभूम के साथ युद्ध में भाग लिया, उक्त युद्ध में विजय प्राप्ति के पश्चात् अज़ीमाबाद तक उनके साथ रहकर शाह आलम बादशाह गाज़ी की नौकरी प्राप्त कर ली। मेजर के साथ कलकत्ता पहुँच गया। इस पूरे कार्यकाल में मुझको लेकर कम्पनी के कार्ययालय में कुल आठ लिपिक थे। जिनके नाम इस प्रकार हैं : मुंशी असदुल्लाह, मुंशी फ़ख़रूद्दीन, मुंशी मो. उस्लूब, मुंशी अबुल क़ारी, मुंशी मुक़बिर, मुंशी सदरुद्दीन एवं मुंशी सलीमुल्लाह।"

मुंशी एतिसामुद्दीन श्री बारक के कार्यालय में काम करते थे। जब बारक साहब बर्तानिया जाने लगे तो उन्होंने मेजर अदम के नाम अनुशंसा-पत्र लिखकर एतिसामुद्दीन को दिया ताकि उन्हें कोई दूसरी नौकरी मिल जाए। लेकिन किसी विरोधी की साज़िश के कारण वहाँ उन्हें नौकरी नहीं मिल सकी। कुछ दिनों बाद चक्ला जलेसर के बख़्शी श्री अस्तरस ने उन्हें अपने कार्यालय में जगह दे दी। दो वर्ष तक वे उस जगह काम करते रहे। श्री अस्तरस उनपर बहुत मेहरबान थे और मुंशी एतिसामुद्दीन भी उनके अधीन काम करने में बहुत खुश थे। दुर्भाग्यवश उसी ज़माने में श्री अस्तरस का निधन हो गया। मुंशी एतिसामुद्दीन पर इस घटना का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा, उसके बाद वे मेदनीपुर चले गए और परगना कुतुबपुर में तहसीलदार नियुक्त हुए। एक वर्ष इस जगह काम किया। यह वह काल था जब अँग्रेज़ों और शुजाउद्दौला के बीच

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बक्सर युद्ध का हंगामा मचा था। मुंशी एतिसामुद्दीन कम्पनी के मुलाज़िम थे और युद्ध की स्थितियों से अवगत रहते थे। १७६४ ई. में जब शुजाउद्दौला को बक्सर के युद्ध में पराजय का सामना हुआ तो उसके बाद मुंशी एतिसामुद्दीन ने तहसीलदार के पद से इस्तिफ़ा दे दिया और अवध का रुख़ किया जहाँ कुछ दिनों के बाद श्री कारनाक के मुंशी नियुक्त हुए और उनके साथ चुनारगढ़, इलाहाबाद और कतिपय अन्य स्थानों पर रहे। यह उनके जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण काल था। वे शाह आलम बादशाह और ईस्ट इंडिया कम्पनी दोनों के विशेष सहयोगी और महत्त्वपूर्ण मामलों के राज़दार थे, सभी पत्राचार और राजनीतिक समझौतों का प्रारूप बनाने और उसे लिखने में शामिल रहे थे।

'शिगर्फ़ नामा' बंगाल और अवध के इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत है, इसमें बक्सर के युद्ध का हाल विस्तारपूर्वक मौजूद है। इसी तरह शुजाउद्दौला और मराठों ने मिलकर कोड़ा जहानाबाद पर चढ़ाई की तो जनरल कारनाक ने शिवराजपुर के घाट से गंगा को पार करके मुक़ाबला किया। इस युद्ध में शुजाउद्दौला और मलहार राव मरहटा को पराजय नसीब हुई थी। इसके बाद शुजाउद्दौला ने सुलह की बात-चीत की और शाह आलम के पास हाज़री दी और शाही वस्त्र और उपहार प्राप्त करके इलाहाबाद के क़िले में प्रवेश किया। यह सारी घटनाएँ और स्थितियाँ मुंशी एतिसामुद्दीन के सामने घटित हुईं। इसलिए उनकी लेखनी प्रमाणिक स्रोत का दर्जा रखती है। 'शिगर्फ़ नामा' में समझौता इलाहाबाद का पूरा विवरण मौजूद है। कतिपय ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें भी मिलती हैं, जिनका उल्लेख अवध के अन्य इतिहासों में स्पष्ट नहीं है। मौलाना नजमुलग़नी ने तारीख़ अवध में स्रोतों की लंबी सूची शामिल की है, इनमें 'शिगर्फ़ नामा' भी शामिल है। परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें मूल पांडूलिपि देखने का अवसर नहीं मिला वरना कतिपय महत्त्वपूर्ण बातों को नज़रअंदाज़ नहीं करते, जिसका अंदाज़ा 'सुलहनामा इलाहाबाद' का हाल पढ़ने से होता है।

तारीख़ अवध पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण हस्तलिपि, 'मोरक़्क़ा खुसरवी' है, जो लखनऊ विश्वविद्यालय टैगोर पुस्तकालय में मौजूद है और विगत वर्ष इसका प्रकाशन हुआ है। इसके लेखक मुंशी अज़मत अली काकोरवी हैं। उन्होंने 'सुलहनामा इलाहाबाद' का पूरा वर्णन 'शिगर्फ़ नामा' के हवाले से लिखा है, जो ११ धाराओं पर आधारित है। समझौता पूर्ण होने के बाद शुजाउद्दौला और लार्ड क्लाइव ने समझौते की पाबंदी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के लिए शपथ उठाया था, जिसकी स्थिति 'शिगर्फ़ नामा' में इस प्रकार बयान की गई है।

"दो प्रति सुलहनामा (संधि-पत्र) लिखकर कम्पनी और उक्त नव्वाब के हस्ताक्षर कराकर मुहर लगवा लिए गए। लार्ड क्लाइव ने नव्वाब के हाथ में इंजील दिया एवं नव्वाब ने भी क़ुरान पक हाथ में लेकर लार्ड क्लाइव को दिया तथा गले-गले मिले।"

'शिगर्फ़ नामा' में मुंशी एतिसामुद्दीन ने अपनी बर्तानिया यात्रा का जो कारण लिखा है, उसके संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण और शिक्षापरद वह बात-चीत है, जो शाह आलम ने लार्ड क्लाइव से विदा होते समय की थी। उन्होंने लिखा है कि जब शुजाउद्दौला और लार्ड क्लाइव के बीच क़रारनामा पूरा हो गया तो सातवें दिन शुजाउद्दौला अवध की बहाली की सनद प्राप्त करके विदा हो गए और सूबा बंगाल और उड़ीसा की सनद दीवानी कम्पनी को मिल गई। उसके साथ संचालन की सनद मीर जाफ़र अली ख़ाँ के बेटे नजमुद्दौला ने पाई। इसके बाद सब अपने-अपने क्षेत्रों की ओर कूच (प्रस्थान) करने लगे तो उस समय शाह आलम बड़े मानसिक तनाव में थे। उन्होंने आबदीदा होकर बड़ी लालसा के साथ लार्ड क्लाइव को संबोधित करके कहा ;

"आपने अपनी कम्पनी का कार्य अपनी पसंद के अनुसार सम्पन्न करा लिया। परंतु अँग्रेज़ सिपाहियों की मौजूदगी से जितनी हमारी सुरक्षा मज़बूत थी उसकी कोई व्यवस्था नहीं की और न ही मुझे दिल्ली की राज गद्दी तक सुरक्षित पहुँचने का कोई प्रबंध किया। अब स्थिति यह है कि चारों ओर से शत्रुओं एवं नकमहरामों में मुझेको घिरा हुआ छोड़कर आप चले जा रहे हैं।"

शाह आलम की इस बात का लार्ड क्लाइव और जनरल कारनिंग पर बहुत असर हुआ और दोनों लज्जित हुए। क्लाइव ने कहा कि हम बर्तानिया के बादशाह की अनुमति के बिना आपकी सुरक्षा के लिए दिल्ली तक फ़ौज की व्यवस्था नहीं कर सकते। यह हो सकता है कि हम बर्तानिया के बादशाह के पास आवेदन-पत्र प्रेषित करें और जब वहाँ से स्वीकृति प्राप्त हो जाएगी तो आपके लिए फ़ौज की व्यवस्था कर दें, उस समय तक हमारा परामर्श यह है कि आप इलाहाबाद में ठहरें। यहा एक पल्टन जनरल इस्मिथ के अधीन आपकी सेवा के लिए मौजूद रहेगी और हम आवश्यकता के अनुसार हर तरह आप की मदद करेंगे। इसके बाद यह तय पाया कि कुछ उपहारों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और एक लाख रुपया सद्भावना स्वरूप शाह आलम की ओर से बर्तानिया के बादशाह जार्ज तृतीय की सेवा में भेजी जाए। यह तय करके नव्वाब मुनीरुद्दौला और राजा शताब राय, लार्ड क्लाइव के साथ कलकत्ता गए और वहाँ परिषद् के अन्य सदस्यों को सूचना दिए बिना बादशाह शाह आलम की ओर से पत्र लिखा और उसपर शाही मुहर लगाकर कप्तान सुईटन के हवाले किया गया कि वह एलची के रूप में यह पत्र बर्तानिया लेकर जाएँ। उनके साथ एक मुंशी की आवश्यकता अपरिहार्य थी इसलिए मुंशी एतिसामुद्दीन का चयन हुआ और मुनीरुद्दौला के माध्यम चार हज़ार रुपया यात्रा व्यय के लिए दिया गया और बाद में पुरस्कार और सम्मान का वादा किया गया।

'शिगर्फ़ नामा' में जिन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक और राजनीतिक घटनाओं का उल्लेख है उनको यहाँ संक्षिप्त रूप में पेश किया जाता है ;

१. 'शिगर्फ़ नामा' के प्रथम आलेख में भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में यूरोप के विभिन्न देशों के व्यवसाइयों और पर्यटकों के अगमन का उल्लेख है। अकबर के काल में उनके ज़ुल्म और अत्याचार का हाल लिखा है जो तटवर्ती क्षेत्रों में वे कर रहे थे। जहाँगीर के काल में उनके साथ जो विशेष रियायतें की गई थीं, उन पर प्रकाश डाला गया है। यह घटना भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि जिस ज़माने में औरंगज़ेब आलमगीर दकन में क़िला गोलकुंडा की घेराबंदी किए हुए थे और क़िला पर विजय कठिन हो रहा था और लंबी घेराबंदी के कारण सामग्री और रसद समाप्त हो गए थे उस समय श्री चामक नामी अँग्रेज़ ने बंगाल से रसद पोत के द्वारा दकन पहुँचाया और बादशाह के दरबार में पहुँच प्राप्त की और बर्तानिया से लाए हुए उपहार भी भेंट किए। इसके साथ क़िला गोलकुंडा पर विजय प्राप्ति के लिए व्यावहारिक जुगाड़ बैठाने में भी भाग लिया। इस प्रकार क़िला चंद दिनों में फ़तह हो गया। इस सेवा के बदले में आलमगीर ने एक फ़रमान के द्वारा चालीस बीघा ज़मीन व्यावसायिक कोठी बनाने के लिए प्रदान की और व्यावसायिक कर माफ़ कर दिया।

२. दूसरी अहम बात यह है कि शाह आलम बादशाह का पत्र और एक लाख रुपया अन्य उपहारों के साथ बर्तानिया के बादशाह जार्ज तृतीय के पास पहुँचाने की सेवा कप्तान सुईटन के सुपुर्द की गई और उनके साथ मुंशी के रूप में एतिसामुद्दीन को नियुक्त किया गया। पोत पर सवार होने के एक सप्ताह बाद यात्रा के दौरान कप्तान सुईटन ने बताया कि एक लाख रुपया उन्हें नहीं दिया गया और क्लाइव ने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शाह आलम का पत्र भी ले लिया और कहा कि जब मैं आगामी वर्ष बर्तानिया जाऊँगा तो रुपया और पत्र साथ लाऊँगा। यह बात सुनकर मुंशी एतिसामुद्दीन बहुत परीशान हुए। उनके कथनानुसार वह विक्षिप्त हो गए और उनको यह यात्रा उद्देश्यहीन महसूस होने लगी। बर्तानिया पहुँचने के बाद से वापसी तक, इस घटना के कारण उनको सकून नसीब नहीं हुआ। उनको अपने उद्देश्य में विफलता का बहुत दुःख था। इसपर ज़ुल्म यह हुआ कि एक साल बाद जब लार्ड क्लाइव बर्तानिया पहुँचे तो उन्होंने शाह आलम के भेजे हुए उपहार और एक लाख रुपया बादशाह जार्ज तृतीय के बदले अपनी ओर से बर्तानिया की मलिका को भेंट स्वरूप पेश करके उनकी शुभकामना प्राप्त की और शाह आलम का पत्र भी नहीं पहुँचाया। कप्तान सुईटन जो पत्र पहुँचाने के ज़िम्मेदार थे, उन्होंने भी चुप्पी साध ली, क्योंकि लार्ड क्लाइव को नाराज़ करना उनके लिए घातक सिद्ध होता। यद्यपि कुछ दिनों बाद पत्र के गुम होने का राज़ फ़ाश हो गया था, क्योंकि कम्पनी के कर्मचारियों और बादशाह के सदस्यों की बीच मतभेद पैदा हो गया था। जब बादशाह को इलाहाबाद के समझौते का विवरण मालूम हुआ तो उसने कहा कि शाह आलम ने बंगाल की हुकूमत कम्पनी को दान स्वरूप दे दी है। अगर मैं इसको लेता हूँ तो मानो (जैसे) दानभोगी हूँ और मैं बादशाह भारत का रैयत कहलाऊँगा। यह बात मेरे लिए बदनामी का कारण होगी। अलबत्ता जब पूरा बंगाल अँग्रेज़ी सत्ता में आजाएगा तब कोई हर्ज (आपत्ति) नहीं।

मुंशी एतिसामुद्दीन ने कलकत्ता से पोत पर सवार होने के बाद बर्तानिया पहुँचने तक यात्रा-क्रम में जो कुछ देखा और सुना उन सबों को लिपिबद्ध किया है। लन्दन पहुँचकर कुछ दिनों तक कप्तान सुईटन के साथ ठहरे। परंतु खाने-पीने की व्यवस्था अपने सेवक की सहायता से ख़ुद करते थे, जिसको वह साथ ले गए थे, ताकि उन हराम चीज़ों से परहेज़ कर सकें जिनको अँग्रेज़ आम तौर पर इस्तेमाल करते हैं। वे एक पक्की आस्था के मुसलमान थे। उन्होंने यात्रा-क्रम और बर्तानिया के प्रवास के क्रम में तकलीफ़ और मजबूरी के समय भी कोई संदिग्ध वस्तु का सेवन नहीं किया, जिसकी पुष्टि कप्तान सुईटन ने भी की है।

मुंशी एतिसामुद्दीन ने वहाँ की सभी वस्तुओं को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र विकास की ओर अग्रसर था। जबकि भारत का उद्योग पतन की अंतिम पायदान पर पहुँच चुका था, जिसका उन्हें बहुत दुःख था। उन्होंने इसे व्यक्त

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी किया है। 'शिगर्फ़ नाम' में वहाँ के औद्योगिक विकास, राजनीति और संस्कृति, सभ्यता और शिक्षा का उल्लेख विस्तार से किया है। कारख़ानों और शैक्षिक संस्थाओं को देखा। आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों को देखा। विशेषकर फ़ारसी विभाग देखकर वह बहुत प्रभावित हुए। वह शिक्षकों से मिले। वहाँ के पुस्तकालय की अनुपम और नायाब (अनुपलब्ध) फ़ारसी पुस्तकें देखीं। इसके अतिरिक्त सामान्य रस्मो रिवाज की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बर्तानिया और उससे संबद्ध देशों के पारस्परिक संबंधों पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने फ़्रांस के कुछ क्षेत्रों की सैर भी की।

'शिगर्फ़ नामा' की एक विशेषता यह है कि यह १८ वीं शताब्दी के बर्तानिया की राजनीतिक और ऐतिहासिक स्थितियों की आकर्षक चित्रावली है। इसमें बर्तानिया के प्रसिद्ध स्थनों और भवनों का परिचय भी शामिल है। इसके अतिरिक्त अमेरिका की खोज का उल्लेख थोड़ा विस्तार से किया गया है। इस अभियान का संक्षिप्त विवरण आकर्षक शैली में अंकित किया गया है, जिसने प्रथमतः अमेरिका का पता लगाया। संभवतः यह जानकारियाँ उनको लन्दन में प्राप्त हुईं। यह विचित्र बात है कि उन्होंने कोलंबस का उल्लेख नहीं किया, जो इस अभियान का प्रेरक-प्राण था। 'शिगर्फ़ नामा' एक यात्रा वृत्तांत है, परंतु इसे १८ वीं शताब्दी के भारत और बर्तानिया के इतिहास का एक प्रमाणिक स्रोत कहा जा सकता है, जिसका लेखक मुंशी एतिसामुद्दीन जैसा सतर्क और सच्चा व्यक्ति था।

मुंशी एतिसामुद्दीन ने समुद्री यात्रा के दौरान उन द्वीपों का भी उल्लेख किया है, जहाँ-जहाँ उनका पोत लंगर डालकर ठहरा था। समुद्री जीवों की असंख्य क़िस्में नज़र आईं। कतिपय ऐसे द्वीपों और जीवों का उल्लेख है जिसके संबंध में अद्भुत और अविश्वसनीय बातें लिखी हैं, जिन्हें उन्होंने पोत के ख़्लासियों से सुनी थीं। कुछ द्वीपों में भारतीयों से भेंट हुई जो यूरोप के पोतों पर नौकरी के लिए वहाँ जाकर आबाद हो गए, जिनमें मुसलमानों की संख्या अधिक नज़र आई। उनमें कुछ कृषक थे और प्रायः पोतों पर बतौर ख़्लासी काम करते थे। मुंशी एतिसामुद्दीन ने कुछ लोगों से बात-चीत करके उनके संदर्भ में जानकारियाँ प्राप्त कीं और उन्हें लिपिबद्ध किया। 'शिगर्फ़ नामा' में उन बहसों का भी उल्लेख है, जो कतिपय अँग्रेज़ों और मुंशी एतिसामुद्दीन के बीच धार्मिक आस्थाओं और समस्याओं के बारे में कई बार हुईं। स्थानों के नाम वही लिखे गए हैं जो मूल यात्रा वृत्तांत में हैं। संभव है अब अधिकांश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या कतिपय के नाम परिवर्तित हो चुके हों।

'शिगर्फ़ नामा विलायत' मुंशी एतिसामुद्दीन ने यात्रा से वापसी के कुछ दिनों बाद १७८५ ई. में संकलित किया था। इसके मुद्रण और प्रकाशन के संदर्भ में कोशिश के बावजूद कुछ मालूम नहीं हो सका। कुछ प्रबुद्धजनों से इसके बारे में तहक़ीक़ (पूछ-ताछ) की, भारत के प्रसिद्ध और बड़े-छोटे मुद्रणालयों को पत्र लिखे परंतु किसी मुद्ररणालय से पांडुलिपि का सुराग़ न मिला और न ही कोई विश्वसनीय बात मालूम हो सकी। यद्यपि मुंशी नवल किशोर के मुद्रणायल की एक पुरानी सूची में पुस्तकों की प्रकाशनार्थ सूची में 'शिगर्फ़ नामा विलायत' का नाम अंकित है। परंतु वहाँ के पुस्तक भंडार में कोई प्रकाशित प्रति नहीं मिल सकी। इसका अँग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। विलियम बेली द्वारा संकलित 'ओरिएन्टल बायोग्राफ़िकल डिक्शनरी' के पृष्ठ १८६ पर इसका उल्लेख है।

यह अत्यंत रोचक और ऐतिहासिक हैसियत से महत्त्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत का संभवतः अब तक प्रकाशन नहीं हुआ। बहुत तलाश करने के बावजूद कोई प्रकाशित प्रति नहीं मिली। इसके क़लमी नुस्ख़े (हस्त लिपि) भारत के विभिन्न पुस्तकालयों में मौजूद हैं। इसके मुद्रण और प्रकाशन की आवश्यकता का एहसास ख़ुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना के अधिकारीगण को हुआ। उन्होंने इसके संकलन और प्रकाशन पर विशेष ध्यान दिया ताकि इस अनुपम यात्रा वृत्तांत का प्रकाशन अमल में आ सके। इसके लिए क़लमी प्रति की छायाप्रति उपलब्ध कराई गई ताकि इसका शुद्ध अनुवाद किया जा सके। इसके संकलन में निम्नांकित प्रतियों से सहायता ली गई है;

१. शिब्ली नोमानी पुस्तकालय, नदवतुलउलमा, लखनऊ की पूर्ण प्रति
२. सुलतानुलमदारिस पुस्तकालय, लखनऊ की पूर्ण प्रति
३. नेशनल आरकाईज़ पुस्तकालय, नई दिल्ली की पूर्ण प्रति
४. नेशनल लाइब्रेरी, हैदराबाद की प्रति (दोषपूर्ण अंतिम भाग)

उपर्युक्त दोनों प्रतियाँ शुद्धता की दृष्टि से अधिक प्रमाणिक हैं। नेशनल आरकाईज़, नई दिल्ली की प्रति बहुत लिखावट वाली और विषयगत सूची की दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से बेहतर है परंतु इसमें प्रूफ़ की अशुद्धियाँ अधिक हैं। और नेशनल लाइब्रेरी, हैदराबाद की प्रति बहुत साफ़ और अशुद्धियाँ रहित है परंतु अंत के कई पृष्ठ ग़ायब हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक बहस वाला भाग हटा दिया गया है। लेकिन नेशनल आरकाईज़ में समापन के वाक्य दूसरी प्रतियों से भिन्न और त्रुटिपूर्ण हैं। इसलिए शिब्ली नोमानी नदवतुलउलमा और सुलतानुलमदारिस, लखनऊ को दृष्ट में रखा गया है। सभी विभिन्नताओं और त्रुटियों को प्ररिशिष्ट के रूप में पांडुलिपि में शामिल किया गया है और भिन्नता के स्थान पर क्रमांक दर्ज कर दिए गए हैं। चारों प्रतियों के लिए निम्नांकित शब्द प्रतीक स्वरूप इस्तेमाल किए गए हैं :

१. प्रति सुलतानुलमदारिस, लखनऊ "स"

२. प्रति नेशनल आरकाईज़, नई दिल्ली "र"

३. प्रति नदवा "न"

४. प्रति नेशनल लाइब्रेरी, हैदराबाद "ह"

उपर्युक्त चारों प्रतियों के अध्ययन से अंदाज़ा हुआ कि कतिपय स्थानों पर कातिबों (अक्षर अंकित करने वालों) ने नक़्ल करने में ग़लतियाँ की हैं या कुछ घटा-बढ़ा दिया है। ऐसे स्थानों पर उन्हीं प्रतियों में जो शब्द अधिक सही लगा वही लिखा गया। व्यक्तियों और स्थानों के नाम, जो लेखक ने फ़ारसी में लिखे हैं वही दर्ज किए हैं। चाहे वे अँग्रेज़ी हों या किसी अन्य भाषा में। यद्यपि कतिपय अँग्रेज़ी नाम जिनको फ़ारसी बनाया गया है संदिग्ध नज़र आते हैं, जैसे गाड़ी, खपरैल इत्यादि। वाव अतफ़ (दो शब्दों के बीच 'और' के स्थान पर 'व') का प्रयोग बहुत किया गया है जो बुरा मालूम होता है। भाषा और शैली में वह आकर्षण और नवीनता नज़र नहीं आती जो एक निपुण फ़ारसी-ज्ञाता में होनी चाहिए। फिर भी कुछ स्थान ऐसे भी हैं जहाँ प्रवाह की झलक दिखाई देती है। यद्यपि वे अपने विचार की अभिव्यक्ति में सक्षम थे। पांडुलिपि के अंत में प्रतियों की विभिन्नता के परिशिष्ट के बाद उन व्यक्तियों और स्थानों की सूची भी शामिल है, जिसका 'शिगर्फ़ नामा विलायत' में ज़िक्र आया है।

सैयद अमीर हसन नूरानी

लखनऊ, प्रथम फ़रवरी, १९६३ ई.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रार्थना और स्तुति (हमद व नाअत)

सभी विशेषताएँ और सारी ख़ूबियाँ इस संसार के उत्पत्ति कर्ता (स्रष्टा) को शोभती हैं, जिसकी पवित्र ज़ात की वास्तविकता और अद्भुत शक्ति तक पहुँच प्राप्त करने में दर्शन और दार्शनिक सफलता प्राप्त नहीं कर सके। इस असीम समुद्र में बुद्धि और चिंतन के पोत चलाने वाले प्रथम पग पर ही आश्चर्यजनक तूफ़ान से आमने-सामने हो गए और उन्होंने तट पर ख़ामोशी से लंगर डाल दिया, ख़लासियों ने बादबान (पाल) छोड़ दिए। मृत्यु के भंवर में शरण लेने वाले नाश (फ़ना) के समुद्र में डुबकियाँ खाने लगे। नाव के नाविक ने अपने चिंतन और अपने कला के हर संभव तरीक़े से सूझ-बूझ के नेतृत्व में उसकी विशेषता के असीम समुद्र के विस्तार से अवगत होने की कोशिश की। परंतु उसके अनुपम सौंदर्य की किरणों को हसन नहीं कर सका और दृष्टि से वंचित हो गया। यदि विचार का सौदागर अपनी बुद्धि के अमूल्य धन को, स्वभाव के नौका पर लादकर उसकी वास्तविकता की बंदरगाह तक जाना चाहे तो आधा मार्ग भी तय नहीं कर सकेगा। तो आकाशों की छत उसकी क़ुदरत (असीम शक्ति) के समुद्र का एक द्वीप है। उसकी बुलंदी के विस्तार में सात देशों की हैसियत एक द्वीप की तरह है और चाँद का नाव उसकी बुलंद हिम्मत के दफ़्तर की एक पंजी मालूम होती है। और सूर्य की ट्किया उसकी कलाकारी के क्षेत्र में एक बुलबुला है। निश्च्छल मनुष्य जो मिट्टी का मूर्ति है, अपनी योग्यताओं से जो कुछ प्राप्त करता है और जितना उसके ज्ञान-भंडारों के रहस्यों से अवगत होता है और उसकी कृतज्ञता और विशेषताओं की जिस पूँजी को प्राप्त करने पर गर्व करता है वह कुछ भी नहीं। उसका पवित्र अस्तित्व मनुष्य की सोच और अटकलों की पहुँच से दूर है। लेकिन वह उस ईश्वर की प्रशंसा और उसकी महान विशेषताओं को समझते हैं। दुःख, घोर दुःख कि ईश्वर की प्रार्थना और विशेषता वह नहीं है जो उसकी शान और सम्मान के योग्य हो। न वे विशेषताएँ ऐसी हैं जो उसके अस्तित्व के, गरिमा के और प्रतिष्ठा के अनुरूप हों। प्रशंसाएँ हैं ईश्वर के कारख़ानों के रहस्यों के जानने वालों और सत्य की मदिरा पीने वालों की, जो उसकी महानता और तेज में अपनी बुद्धि और ज्ञान को विस्मृति के जल से धोकर अपनी मूर्खता को स्वीकारते हैं और अपनी भाषा की बेज़ुबानी से कहते हैं कि इस संसार के स्रष्टा (उत्पत्ति कर्ता) की वास्तविकता के बारे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में ज़ुबान बंद रखनी चाहिए और अपने आश्चर्य की अभिव्यक्ति मूकता की भेंट करनी चाहिए। ज़ुबान उसके संदर्भ में एक शब्द भी अदा नहीं कर सकती। मांस के इस टुकड़े से उसकी महिमा की अभिव्यक्ति कठिन है।

उस (ईश्वर) के बाद हज़रत मोहम्मद स. की अस्तुति (अस्तुति-कविता अर्थात् नात) लिखनी चाहिए, जिसकी सुंदरता के सूर्य रूपी दीप से मानवता का विकास हुआ और जिसकी प्रशंसा और विशिष्टता, मानवीय बौद्धिकता और बुद्धि-समझ की सीमा और आकलन से अधिक है। मोहम्मद स. बुद्धि और समझ के दर्पण पर पानी चढ़ाने वाले हैं और संसार की सृष्टि के ज्ञानी और राज़दार हैं। आकाश उनकी टोपी का सजावटी पुष्पगुच्छ है। फ़रिश्ते उनके सौंदर्य दीप के परवाने हैं। वे जन्म के मामले में सभी नबियों (देवदूतों) पर बढ़त ले गए और ईश्वर की समीपता की प्राप्ति में भी सबसे आगे रहे। उनकी प्रतिष्ठा और विशेषता के लिए यही दलील प्रयाप्त है कि सभी नबी जो उनकी पैरवी करने वाले हैं, वे पहले आए और आप मार्गदर्शक के रूप में सबों के बाद तशरीफ़ लाए।

बेहतर और उचित बात यह है कि मोहम्मद स. की समीपता में अस्तुति (दरूद और सलाम) पेश करने के बाद मुख्य उद्देश्य की ओर ध्यान दूँ और अपना हाल बयान करूँ।

पुस्तक के संकलन का कारण

ज़माने के अच्छे-बुरे से अवगत, संसार को देखे हुए अनुभवी और प्रबुद्धों पर इस हक़ीक़त की अभिव्यक्ति उचित प्रतीत होती है कि मुझ जैसे अकिंचन को अपनी आर्थिक आवश्यकता के कारण बर्तानिया की यात्रा का संयोग प्राप्त हुआ। यात्रा के क्रम में जो अद्भुत घटनाएँ घटित हुईं और जल-थल की जो विशेषताएँ देखने और सुनने में आईं, उनकी आश्चर्यजनक दास्तान है। १०६६ हिजरी में जब मेरा दिल बेचैन और तबीयत परीशान थी और रोज़गार के परिवर्तन ने आर्थिक विपन्यता का शिकार बना रखा था, मेरे होशो हवास का परिंदा दिमाग़ के महल से उड़ गया था और बुद्धि मंद हो गई थी। स्पष्ट है ऐसे बुरे समय में जब न क़लम चलाने की शक्ति बाक़ी रही और न सुंदर ढंग से कथा सुनाना संभव है। फिर भी अपनों और मित्रों के आग्रह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने धीरे-धीरे तैयार किया कि यह गुलदस्ता यानी [illegible] बतौर शैख़ ताजुद्दीन (मज्मूआ), [illegible], [illegible], किसी तरह एक अनुपम पुस्तक संकलित करे और अपनी क़लम को मख़्मल और [illegible] के चेहरे को संवारने सजाने के लिए तैयार करे, चूँकि मुख्य उद्देश्य स्थितियों और घटनाओं की अभिव्यक्ति है, इसलिए उलझे भाव, कठिन शब्द और उपमाओं आदि से अपनी लेखनी को रंगीन बनाने की कोशिश नहीं की और न ही मुझ जैसे तुच्छ में ऐसी योग्यता है कि अपनी बातों को लयबद्ध करे और वाक्यों को सजा-संवार सके। जो प्रांजलता विद्वानों को प्रिय हो और मेरी यह बातें जो उन्मांद की तरह हैं अन्य रचनाओं की तरह एक रचना में शुमार हो जाए। लेकिन अपनी अल्पबुद्धि और कम समझ के विरूद्ध पुस्तक का नाम, जैसा नाम वैसा के उलट 'शिगर्फ़ नामा विलायत' रखकर संसार में अपनी याद छोड़ी।

"इस उद्देश्य से कि मेरी एक निशानी स्मृति में शेष रह जाए।"

अपनी स्थितियों का उल्लेख

पुस्तक के प्राक्कथन में अपने हालात का उल्लेख है और उस पत्र के लिखने और प्रेषित करने का ज़िक्र है जो विश्वपति एवं समय के सम्राट हज़रत शाह आलम बादशाह ग़ाज़ी की ओर से बर्तानिया के बादशाह के नाम लिखा गया था। और इस पत्र को पहुँचाने के लिए कप्तान अरजियाल सुईटन के साथ मेरा बर्तानिया जाना हुआ। वास्तविक अर्थों को समझने वाले प्रबुद्धजनों से आशा रखता हूँ कि अपने बुज़ुर्ग मुंशी से हुई भूल-चूक को नज़र अंदाज़ करके अपनी कलम से संशोधन कर देंगे और इस तुच्छ और विक्षिप्त के वर्त्तणी में जो त्रुटियाँ नज़र आएँ उन्हें मेरी लाचारी समझेंगे।

कुछ अपनी पूर्व की स्थितियाँ

यह अकिंचन जाफ़र अली ख़ाँ के प्रबंधन के ज़माने में मुंशी सलीमुल्लाह और मिर्ज़ा क़ासिम मीर मुंशी नव्वाब [illegible] के साथ काम करता रहा और लिखने पढ़ने का कुछ सलीक़ा उनके सामीप्य के प्रभाव से प्राप्त हुआ। क़ासिम अली ख़ाँ की [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में ज़ुबान बंद रखनी चाहिए और अपने आश्चर्य की अभिव्यक्ति मूकता की भेंट करनी चाहिए। ज़ुबान उसके संदर्भ में एक शब्द भी अदा नहीं कर सकती। मांस के इस टुकड़े से उसकी महिमा की अभिव्यक्ति कठिन है।

उस (ईश्वर) के बाद हज़रत मोहम्मद स. की अस्तुति (अस्तुति-कविता अर्थात् नात) लिखनी चाहिए, जिसकी सुंदरता के सूर्य रूपी दीप से मानवता का विकास हुआ और जिसकी प्रशंसा और विशिष्टता, मानवीय बौद्धिकता और बुद्धि-समझ की सीमा और आकलंन से अधिक है। मोहम्मद स. बुद्धि और समझ के दर्पण पर पानी चढ़ाने वाले हैं और संसार की सृष्टि के ज्ञानी और राज़दार हैं। आकाश उनकी टोपी का सजावटी पुष्पगुच्छ है। फ़रिश्ते उनके सौंदर्य दीप के परवाने हैं। वे जन्म के मामले में सभी नबियों (देवदूतों) पर बढ़त ले गए और ईश्वर की समीपता की प्राप्ति में भी सबसे आगे रहे। उनकी प्रतिष्ठा और विशेषता के लिए यही दलील प्रयाप्त है कि सभी नबी जो उनकी पैरवी करने वाले हैं, वे पहले आए और आप मार्गदर्शक के रूप में सबों के बाद तशरीफ़ लाए।

बेहतर और उचित बात यह है कि मोहम्मद स. की समीपता में अस्तुति (दरूद और सलाम) पेश करने के बाद मुख्य उद्देश्य की ओर ध्यान दूँ और अपना हाल बयान करूँ।

पुस्तक के संकलन का कारण

ज़माने के अच्छे-बुरे से अवगत, संसार को देखे हुए अनुभवी और प्रबुद्धों पर इस हक़ीत की अभिव्यक्ति उचित प्रतीत होती है कि मुझ जैसे अकिंचन को अपनी आर्थिक आवश्यकता के कारण बर्तानिया की यात्रा का संयोग प्राप्त हुआ। यात्रा के क्रम में जो अद्भुत घटनाएँ घटित हुईं और जल-थल की जो विशेषताएँ देखने और सुनने में आईं, उनकी आश्चर्यजनक दास्तान है। १०६६ हिजरी में जब मेरा दिल बेचैन और तबीयत परीशान थी और रोज़गार के परिवर्तन ने आर्थिक विपन्यता का शिकार बना रखा था, मेरे होशो हवास का परिंदा दिमाग़ के महल से उड़ गया था और बुद्धि मंद हो गई थी। स्पष्ट है ऐसे बुरे समय में जब न क़लम चलाने की शक्ति बाक़ी रही और न सुंदर ढंग से कथा सुनाना संभव है। फिर भी अपनों और मित्रों के आग्रह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने धीरे-धीरे तैयार किया कि यह गुनाहगार यानी एतिसामुद्दीन वल्द शैख़ ताजुद्दीन (मरहूम), साकिन बाजनौर, ज़िला नदिया, किसी तरह एक अनुपम पुस्तक संकलित करे और अपनी क़लम को मकसद और मतलब के चेहरे को संवारने-सजाने के लिए तैयार करे, चूँकि मुख्य उद्देश्य स्थितियों और घटनाओं की अभिव्यक्ति है, इसलिए उलझी भाषा, कठिन शब्द और उपमाओं आदि से अपनी लेखनी को रंगीन बनाने की कोशिश नहीं की और न ही मुझ जैसे तुच्छ में ऐसी योग्यता है कि अपनी बातों को लयबद्ध करे और वाक्यों को सजा-संवार सके। जो प्रांजलता विद्वानों को प्रिय हो और मेरी यह बातें जो उन्मांद की तरह हैं अन्य रचनाओं की तरह एक रचना में शुमार हो जाए। लेकिन अपनी अल्पबुद्धि और कम समझ के विरूद्ध पुस्तक का नाम, जैसा नाम वैसा के उलट 'शिगर्फ़ नामा विलायत' रखकर संसार में अपनी याद छोड़ी।

"इस उद्देश्य से कि मेरी एक निशानी स्मृति में शेष रह जाए।"

अपनी स्थितियों का उल्लेख

पुस्तक के प्राक्कथन में अपने हालात का उल्लेख है और उस पत्र के लिखने और प्रेषित करने का ज़िक्र है जो विश्वपति एवं समय के सम्राट हज़रत शाह आलम बादशाह ग़ाज़ी की ओर से बर्तानिया के बादशाह के नाम लिखा गया था। और इस पत्र को पहुँचाने के लिए कप्तान अरजियाल सुईटन के साथ मेरा बर्तानिया जाना हुआ। वास्तविक अर्थों को समझने वाले प्रबुद्धजनों से आशा रखता हूँ कि अपने बुजुर्ग मुंशी से हुई भूल-चूक को नज़र अंदाज़ करके अपनी क़लम से संशोधन कर देंगे और इस तुच्छ और विक्षिप्त के वर्त्तणी में जो त्रुटियाँ नज़र आएँ उन्हें मेरी लाचारी समझेंगे।

कुछ अपनी पूर्व की स्थितियाँ

यह अकिंचन जाफ़र अली ख़ाँ के प्रबंधन के ज़माने में मुंशी सलीमुल्लाह और मिर्ज़ा क़ासिम मीर मुंशी नव्वाब मरहूम के साथ काम करता रहा और लिखने-पढ़ने का कुछ सलीक़ा उनके सामीप्य के प्रभाव से प्राप्त हुआ। क़ासिम अली ख़ाँ की अमलदारी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में मेजर बारक साहब की सरकार में मुलाज़िम हो गया और असद ज़माँ ख़ाँ बादशाह बीरभूम के युद्ध में शरीक रहा। युद्ध में विजय प्राप्ति के बाद अज़ीमाबाद तक उनके साथ रहा और हज़रत ज़िल्लुल्लाह (ईश्वर की छाया) शाह आलम बादशाह ग़ाज़ी से भेंट का गर्व प्राप्त करने के बाद मेजर साहब के साथ कलकत्ता पहुँचा। उस ज़माने में ईस्ट इंडिया कम्पनी के कार्यालयों में हर जगह काम करने वाले आठ मुंशी थे। एक मुंशी असदुल्लाह, दूसरे मुंशी फ़ख़रुद्दीन बिन मुंशी ताजुद्दीन, तीसरे मुंशी मोहम्मद उसलूब, चौथे मुंशी अबुलबारी और मुंशी मोइज़ जो मेजर कारनाक के मुलाज़िम थे। उनके बाद मुंशी सदरुद्दीन, कर्नल कोट बहादुर के कार्यालय से संबद्ध थे और आख़िर में मुंशी सलीमुल्लाह थे जो कलकत्ता में श्री हनरी वंसरत गवर्नर के मुलाज़िम हो गए थे। जब बारक साहब बर्तानिया चले गए तो मुझको अपने अनुशंसा-पत्र के साथ मेजर अदम साहब के पास अज़ीमाबाद भेजा। साथ ही वीरभूम से अज़ीमाबाद तक के रास्ते का नक़्शा और सवारी के लिए घोड़ागाड़ी दिया। मुंशी बंगस जो उस समय राजा की उपाधि से प्रसिद्ध था, उसके जाल-फ़रेब और मेरे कुभाग्य के कारण वहाँ मुलाज़मत की कोई सूरत नहीं निकली। अंततः चक्ला जलेसर के बख़्शी श्री असतरस के पास मुलाज़िम हो गया। वे कप्तान मेक्स साहब के अधीन थे। वहाँ दो वर्ष रहा। इसके बाद क़ासिम अली ख़ाँ के युद्ध में, जो करपूदताला अवध में हुआ था सेना के साथ रहा। राजमहल से अपने मालिक के साथ वासप हुआ और सैयदनीपुर पहुँचा। वहाँ श्री बरूथ साहब की अमलदारी में एक वर्ष तक कुतुबपुर की तहसीलदारी पर आसीन रहा। असतरस साहब बहुत नेक दिल और बड़े हिम्मत वाले थे। यह सच है कि उनके बाद ऐसा शुभेच्छु स्वामी न मिला। उनकी मृत्यु के बाद एक माह तक आँखों से आँसू जारी रहे और दिल से आहें भरता रहा। अब तक जब भी उनकी याद आती है, दिल का ज़ख़्म हरा हो जाता है।

जब १०७६ हिजरी में नव्वाब शुजाउद्दौला को बक्सर के स्थान पर मेजर मेनरू की सिपहसालारी में पराजय प्राप्त हुआ तो नव्वाब शुजाउद्दौला लखनऊ होते हुए रोहिलखंड की ओर चले गए। उस ज़माने में मुझे कारनाक साहब के कार्यालय में नौकरी मिल गई और चुनारगढ़ के स्थानों पर बादशाह से भेंट का गर्व प्राप्त करके इलाहाबाद गया और वहाँ से लखनऊ पहुँचा जब नव्वाब शुजाउद्दौला कालपी गए और मलहा राव मराठा की सहायता से पचास हज़ार सवारों के साथ कोड़ा जहानाबाद पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धावा बोला और जर्नल कारनाक बहादुर ने फ़ैज़ाबाद अवध से वापस होकर शिवराजपुर के घाट से गंगा नदी को पार किया और मराठों की फ़ौज से मुक़ाबला किया, शुजाउद्दौला कंनौज की ओर चले गए और सुलह की बात-चीत होने लगी। इसलिए इलाहाबाद की ओर प्रस्थान किया और कड़ा मानपुर पहुँचकर हज़रत क़दर क़ुदरत बादशाह से भेंट का गर्व प्राप्त करके सम्मान-वस्त्र पहना और इलाहाबाद के क़िला में प्रवेश कर गए। उस समय लार्ड क्लाइव साबित जंग बहादुर बंगाल मामलों के मुख़्तार होकर बर्तानिया से आए थे और वहाँ से आकर नव्वाब शुजाउद्दौला से सुलह की बात-चीत शुरू की और यह तय पाया कि सूबा इलाहाबाद की आमदनी से २४ लाख रुपया बादशाह के कर्मचारियों के व्यय के लिए निर्धारित किया जाए और सूबा अवध की आमदनी से एक करोड़ पचास लाख और बनारस और ग़ाज़ीपुर से लगभग पंद्रह लाख रुपया नव्वाब शुजाउद्दौला के लिए रहे और पचास लाख रुपया नक़द ईस्ट इंडिया कम्पनी के सिपाहियों के व्यय के लिए नव्वाब शुजाउद्दौला से लिया जाए। इस संबंध में दो सुलहनामे (समझौता-पत्र) लिखे गए। उनपर कम्पनी के अधिकारीगण के हस्ताक्षर हुए और मुहरें लगाई गईं। इसके साथ ही नव्वाब शुजाउद्दौला के दस्तख़त। इस समय लार्ड क्लाइव ने पवित्र इनजील नव्वाब को हाथ में दी और नव्वाब ने कुरान पाक लार्ड क्लाइव के हाथ में दिया और दोनों गले-गले मिले। सात दिनों के बाद नव्वाब शुजाउद्दौला बहादुर ने अपने सूबे की बहाली का वस्त्र शाह आलम बादशाह से प्राप्त किया और अपने सूबा अवध की ओर प्रस्थान किया।

इसके बाद लार्ड क्लाइव बहादुर ने सूबा बंगाल की आमदनी में से २४ लाख वार्षिक बादशाह के लिए निर्धारित किया और सूबा बंगाल की व्यवस्था की सनद नज़मुद्दौला, पुत्र जाफ़र अली ख़ाँ के नाम करा दी और सनद दीवानी कम्पनी के नाम से प्राप्त की और यह तय पाया कि २४ लाख रुपया वार्षिक बादशाह के सरकारी ख़ज़ाना में दाख़िल किया जाए और बाक़ी जागीरें पूर्व के अमीरों और पदधारकों को वासप कर दी जाए और सूबा बंगाल की अन्य आयों को भेंट स्वरूप कम्पनी के नाम सनद लिखवाई और यह निर्धारित किया कि नव्वाब नज़मुद्दौला साठ लाख रुपया अपनी ज़ात के लिए लेंगे और सभी देशी और वित्तीय मामलों की निगरानी करेंगे। फ़ौज की देख-रेख और धन की तहसील का संबंध ईस्ट इंडिया कम्पनी की सरकार से रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभी समझौतों के प्रारूप और सनद की प्रतियाँ नव्वाब शुजाउद्दौला की ओर से और बादशाह के आदेशों के लेखन का कार्य मुंशी मोहम्मद मोइज़ और मैंने अंजाम दिया। इस संबंध में श्री जार्ज विल्सर्ट पत्रजम का परामर्श शामिल रहा।

११८९ हिजरी मुताबिक़ १७७५ ई. में मराठा सरदारों से सुलह और सफ़ाई के लिए कर्नल जान एनीन बहादुर के साथ पूणा सितारा गया। उक्त कर्नल की तरफ़ से पेशवा के दरबार में सवाल-जवाब का काम मैंने अंजाम दिया। पेशवा पंडित प्रधान और सुखा राम और नाना फ़रनवीस से समझौतों की लिखा-पढ़ी का काम मैंने किया, उनकी नक़लें मेरे पास हैं। यह सब काम कप्तान विलसर्ट पत्रजम के परामर्श से संपन्न हुआ। सारांश यह कि मेरी जवानी का संपूर्ण काल अँग्रेज़ों की मुलाज़मत और ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में व्यतीत हुआ। और अब हर हाल में आराम और सकून की ज़रूरत है। लेकिन यह भी अपने हालात और क़िस्मत के तक़ाज़े पर निर्भर है।

बादशाह शाह आलम का पत्र बादशाह बर्तानिया के नाम

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि ११७९ हिजरी में नव्वाव शुजाउद्दौला मरहूम और लार्ड क्लाइव साबित जंग के बीच समझौता हुआ और नव्वाब साहब अपने सूबा अवध चले गए। लार्ड क्लाइव ने सूबा बंगाल और बिहार और उड़ीसा की सनद दीवानी कम्पनी के नाम प्राप्त कर ली और व्यवस्था की सनद नजमुद्दौला, पुत्र मीर जाफ़र अली ख़ाँ को दिलवाकर विदा चाही, तो उस समय हज़रत ज़िल्ले सुबहानी भावविभोर हो गए और लार्ड क्लाइव से फ़र्माया कि आपने कम्पनी का काम अपनी इच्छानुसार पूरा कर लिया और अब विदा हो रहे हैं और मेरी सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं किया कि दिल्ली की राज गद्दी तक सुरक्षित पहुँच सकूँ। मेरे साथ जाने के लिए फ़ौज का प्रबंध नहीं किया और न अधीन किए गए मुल्क की कोई चिंता की। और स्थिति यह है कि मुझे हर ओर से दुश्मनों और नमकहरामों के बीच छोड़कर जा रहे हैं। बादशाह की इस बात से लार्ड क्लाइव और जनरल कारनाक बहुत प्रभावित

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और लज्जित हुए। उन्होंने बादशाह से कहा कि सैनिक सहायता बर्तानिया के बादशाह की अनुमति के बिना नहीं दी जा सकती। यह हो सकता है कि अनुरोध-पत्र भेजा जाए और जब बर्तानिया से अनुमति मिल जाए तो हम सेना की व्यवस्था कर देंगे। वहाँ से जवाब आने तक हमारी राय यह है कि आप इलाहाबाद में रहें। इस बीच जनरल स्मिथ बहादुर की कमान में बर्तानवी सेना की एक पल्टन आपकी सेवा में उपस्थित रहेगी। और आपके आदेश का पालन करेगी। इसके अतिरिक्त जौनपुर की छावनी की अँग्रेज़ सेना, जो यहाँ से निकट है ज़रूरत के वक़्त इसके सभी सिपाही आपकी सेवा में उपस्थित हो जाएँगे। आप हर तरह से इत्मीनान रखें। और हमको उपस्थित और अनुपस्थित दोनों स्थितियों में आदेशपालन के लिए तत्पर जानें। इसके बाद मुनीरुद्दौला और राजा शताब राय की संयुक्त सहमति से और शाह आलम की सहमति से बर्तानिया के बादशाह के नाम अँग्रेज़ फ़ौज की मदद प्राप्त करने के लिए और भारत के शासन की व्यवस्था और सुदृढ़ता के निमित्त पत्र लिखना निर्धारित हुआ। जिसमें सूबा बंगाल की सनद दीवानी और अँग्रेज़ अधिकारियों की सेवा प्रदान करने का उल्लेख करके कुछ उपहार और एक लाख रुपया साथ भेजने की सलाह हुई। इसके बाद मुनीरुद्दौला और राजा शताब राय लार्ड क्लाइव के साथ कलकत्ता गए। और लार्ड साहब जनरल कारनाक और कप्तान सुईटन और जार्ज नसतर्ट और नव्वाब मुनीरुद्दौला और राजा शताब राय के साथ क़िला के बाग़ में गए। और कॉउंसलरों को सूचित नहीं किया। वहाँ बादशाह की ओर से पत्र लिखा गया और उसपर शाही मुहर लगाई गई और बादशाह का पत्र कप्तान सुईटन के हवाले किया गया कि वे पत्र और उपहार और एक लाख रुपया नक़द के साथ बर्तानिया के बादशाह को अर्पित करके उद्देश्य प्राप्ति के बाद वापस आएँ। चूँकि बादशाह की तरफ़ से एक मुंशी का जाना भी आवश्यक था इसलिए उक्त कप्तान के साथ मुझको भेजा जाना निर्धारित हुआ। और मुनीरुद्दौला की मारफ़त व्यय के लिए चार हज़ार रुपया दिए गए और भविष्य के लिए राजकीय पुरस्कार और सम्मान के वादे किए गए।

मुझको भी जवानी की उम्र के तक़ाज़े से बर्तानिया की सैर का शौक़ हुआ, और मैं कप्तान सुईटन के साथ पोत पर सवार हो गया। जब एक सप्ताह का रास्ता तय हो गया तो कप्तान साहब ने मुझे बताया कि बादशाह का पत्र लार्ड क्लाइव ने मुझसे वापस ले लिया और कहा कि बादशाह के भेजे हुए उपहार अभी बनारस से नहीं आए

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं, इसलिए सिर्फ़ बादशाह का पत्र ले जाना हित (मसलहत) के विरूद्ध है। आगामी वर्ष पत्र और उपहार मेरे साथ बर्तानिया पहुँचेंगे और पत्र और उपहार तुम्हारे माध्यम से बादशाह की सेवा में पेश किए जाएँगे। इस बात को सुनते ही मेरे होश और हवास गुम हो गए और मैं समझ गया कि यह बात बिना किसी सबब के नहीं होगी और अंततः इतनी मेहनत और मुशक़्क़त (परिश्रम एवं कठिनाइयों) की यात्रा निषफल और विफल साबित होगी। यदि मुझे पहले से यह बात मालूम होती तो इस यात्रा के लिए तैयार नहीं होता। जब मौक़ा हाथ से निकल गया और तीर कमान से निकल गया तो कोई उपाय नहीं सूझा। मजबूरन अपने दिल और जान को ईश्वर के सुपुर्द कर दिया और भाग्य के लिखे के अनुरूप यात्रा की कठिनाइयों और पोत के कष्टों को बर्दाश्त करके छः माह में बर्तानिया पहुँचा। उस दिन से वहाँ के प्रवास की पूरी अवधि तक सभी सैर-सपाटों और मनोरंजनों के बावजूद कभी दिल खुश न हुआ। चूँकि इस राज़ को ज़ाहिर नहीं करने की कप्तान सुईटन ने हिदायत कर दी थी इसलिए अजीब स्थितियों का शिकार रहा। न धैर्य की शक्ति थी और न कुछ कहने का साहस। रात-दिन दुःख और पश्चाताप में व्यतीत हुए। कठिनाइयों और चिंताओं को दूर करने के लिए अपना समय ऐतिहासिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यतीत करता था। अँग्रेज़ी भाषा और लिपि सीखने की ओर मन आकर्षित नहीं हुआ, बल्कि लन्दन की सैर और तमाशे भी अच्छे नहीं लगते थे। जिस समय मैं बंगाल वापस पहुँचा तो वहाँ लोग पूछते थे कि तुम अँग्रेज़ों के मुल्क में गए थे और उनकी भाषा नहीं सीखी। भला मैं इस बात के कारण को कैसे ज़ाहिर करता जो राज़फ़ाश करने का सबब था। किससे कहूँ और क्या कहूँ और क्या जवाब दूँ, सिवाय इस बात के कि ज़ुबान पर चुप्पी की मुहर लगाए रहूँ और अपनी बेवक़ूफ़ी का एक़रार करूँ इसके सिवाय कोई चारा नज़र नहीं आया।

बादशाह शाह आलम का पत्र बादशाह बर्तानिया तक न पहुँचने का कारण और मेरी विफल वापसी

संक्षिप्त क़िस्सा यह है कि एक वर्ष छः माह तक बादशाह के पत्र का इंतज़ार किया और वहाँ ठहरा रहा। जब लार्ड क्लाइव बर्तानिया पहुँचे तो उन्होंने शाह आलम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के भेजे गए उपहारों को अपनी ओर से बर्तानिया की मलिका को भेंट स्वरूप दे दिया और स्वयं शाही कृपा और पारितोषिक के हक़दार हुए। शाह आलम के पत्र का कोई ज़िक्र नहीं किया। कप्तान सुईटन ने भी इस बात को नज़र अंदाज़ किया, क्योंकि उनको भी लार्ड क्लाइव की बात पर एक क़ौम के होने के कारण भरोसा था और उनके साथ जो संबंध थे उनका ख़्याल था। लेकिन जब वे भी उक्त लार्ड के छल से निराश हो गए, तो मुझसे कहा कि जो कुछ तुम ख़्याल करते थे वही सामने आया। लार्ड ने मेरे साथ छल किया। उक्त कप्तान शाही विशिष्ट जनों से निकटता प्राप्त न होने के कारण लार्ड के विरोध के डर से कम्पनी के ज़िम्मादारों को कुछ बताने का साहस नहीं कर सके थे। इसलिए विवश हो गए परंतु कुछ दिनों के बाद बादशाह का पत्र छुपाने का हाल इस तरह मालूम हुआ कि उस ज़माने में शाही विशिष्ट जन इस बात पर सहमत थे कि कम्पनी महाजन और पूँजीपति है इसका पेशा व्यवसाय है, इसको मुल्कदारी (राजकार्य) से क्या संबंध। बंगाल का देश जो शाही मुजाहदीन की कोशिशों से प्राप्त हुआ, इसमें हस्तक्षेप का अधिकार सरकार को है और व्यवसाय, कम्पनी के क्षेत्र में है। इसका जवाब कम्पनी के कर्मियों ने यह दिया कि नव्वाब सेराजुद्दौला और क़ासिम अली ख़ाँ के युद्ध में कम्पनी की व्यावसायिक कोठियाँ तबाह हो गई हैं जिससे करोड़ों की क्षति हुई है और सिपाहियों पर भी मोटी राशि का व्यय हुआ और कम्पनी की कोशिश से बंगाल पर क़ब्ज़ा हुआ है। यह सब लाभ-हानि व्यवसाय की श्रेणी में दाख़िल है। इसके अतिरिक्त जो समझौता कम्पनी और अँग्रेज़ प्रधान मंत्री के बीच पुराने ज़माने से है, उसके अनुसार कम्पनी कर (टेक्स) देने और निर्धारित राशि का भुगतान करने के लिए तैयार है और शाही कर्मी और सेना की सहायता के लिए कम्पनी के कर्मचारी तैयार रहते हैं। अब इस समझौते के विरूद्ध अमल किया जा रहा है। यह बात न्यायालय के क़ानून के विरूद्ध है और राष्ट्रीय कम्पनी से यह व्यवहार सिद्धांत और नियम के विपरीत है। ग़रज़ (अभिप्रांय) यह कि इस प्रकार के प्रश्नों और उत्तरों का दोनों ओर से आदान-प्रदान होता रहा। शाही सरकारी सदस्यगण इस सिलसिले में अपने दावे का कोई सशक्त तर्क नहीं रखते थे और न उनके पास कोई प्रमाणिक दस्तावेज़ थी। चूँकि लार्ड क्लाइव कम्पनी का शुभेच्छु था, इसलिए उसने कम्पनी के हिस्सेदारों के परामर्श से शाह आलम का पत्र बर्तानिया के बादशाह के समक्ष पेश नहीं किया क्योंकि वह पत्र शाही सदस्यों के पक्ष में था। यह बात मैंने बंगाल वापस पहुँकर सुनी। यह झगड़ा तीन वर्षों तक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कम्पनी के कर्मियों और शाही सदस्यों के बीच जारी रहा। अंततः बादशाह की राय पर यह मामला निर्धारित हुआ कि जो कुछ बादशाह कहें वह मान लिया जाए। बादशाह ने अपनी उच्च साहस और उच्च स्वाभाव के मद्देनज़र फ़र्माया कि शाह आलम बादशाह ने बंगाल देश को तमग़ा (मेडेल) के रूप में, जो दान की एक क़िस्म है, अँग्रेज़ कम्पनी को दिया है और एक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया है। चूँकि मैं बर्तानिया का बादशाह हूँ इसलिए अगर इस देश को अपने कर्मचारियों के इस्तेमाल में ले आऊँ तो मैं दान खाने वाला और भारत के बादशाह के करदाताओं में गिना जाऊँगा जो मेरे लिए बदनामी का कारण होगा। अलबत्ता जब कभी पूरा भारत अँग्रेज़ों की सत्ता में आ जाएगा, उस समय कोई आपत्ति नहीं होगी। परंतु बादशाह के मंत्रियों ने कम्पनी की सहमति से कुछ करोड़ रुपया नज़राना निर्धारित कर दिया और वार्षिक आय में कुछ वृद्धि कर दी। कतिपय लोग कहते हैं कि कुछ वर्षों की अवधि निर्धारित हुई है, जिसके बाद बंगाल कम्पनी की सत्ता से, बर्तानिया के बादशाह के क़ब्ज़े में आ जाएगा। कप्तान सुईटन ने कोशिश की कि मैं चार वर्ष बर्तानिया में रहूँ। मगर मैंने यह बात नहीं मानी। उस ज़माने में ईस्ट इंडिया कम्पनी के क्षेत्र में कोई फ़ारसी जानने वाला नहीं था। और बंगाल की सत्ता मिलने के बाद बर्तानिया के लोगों में फ़ारसी पढ़ने का शौक़ बढ़ गया था। इसलिए कप्तान सुईटन, डॉ. हटोलियन और श्री इस्तर सल और कुछ दूसरे लोगों ने सर्वसम्मति से निर्धारित करके मुझसे कहा कि मैं कुछ वर्षों तक बर्तानिया में रहकर वहाँ के बच्चों और युवकों को फ़ारसी पढ़ाऊँ। इसके बदले में मेरे ख़र्चों की व्यवस्था का प्रस्ताव दिया। लेकिन मैं वतन की जुदाई के कारण और प्रियजनों से दूरी के सबब बहुत परीशान था। और उनकी याद मेरी जान की गरीबान पकड़े थी। इस अवसर पर दिल में यही विचार आया जैसा कि कहा गया है :

"मातृभूमि से प्रेम विश्व की राजगद्दी से अच्छा है।
मातृभूमि का काँटा बालछड़ एवं सुगंधित फूलों से अच्छा है।।
यूसुफ़ जोकि मिस्र देश की राजगद्दी पर आसीन था।
उसने कहा कि कनआन[१] का फ़क़ीर होना अच्छा है।।"

([१]अपनी मतृभूमि)

मुझको कलकत्ता कॉनसिल के पूर्व सदस्य श्री मजंदी के सुपुर्द करके विदा किया गया और मैं ११८३ हिजरी को कातिर्क माह में अपने प्रिय देश बंगाल पहुँच गया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आने और जाने में दो वर्ष नौ माह व्यतीत हुए। एक वर्ष बर्तानिया, स्कॉटलैंड और विद्यायल ऑक्सफोर्ड में गुज़ारा और एक वर्ष सात माह मंदराज में और दो माह पोत पर व्यतीत हुए।

पोत पर सवार होना और समुद्र की विशेषताएँ

६ माह शाबान ११८० हिजरी कुदसी तद्नुसार ११७३ बंगला (१३ माघ) को दृढ़संकल्प के साथ हाफ़िज़ हक़ीक़ी के फ़ज़ल से ईश्वर का नाम लेकर इस बर्कत वाले शेर से अंत तक पहुँचा :

"इस भयंकर तूफ़ान और मौजें मारते हुए समुद्र में।
अल्लाह का नाम लेकर अपने आपको डाल दिया।।"

इसके बाद मूसा मोरिविल नाम के पोत पर सवार हुआ। क़ाज़ी अलीमुल्लाह साथ आए थे, उनको विदा किया। उस समय देश से बिछुड़ने और प्रियजनों की जुदाई के विचार से जो हालत हुई सिर्फ़ ईश्वर पर ज़ाहिर थी। संक्षेप में यह कि जब दयालु नाविक ने पोत का लंगर उठाया और बादबान (पाल) ऊपर खींचे तो चार दिनों की अवधि में पोत खारा पानी के समुद्र की सीमा पार पहुँचा जिसका पानी कलछौना था। पोत को अनुकूल हवा मिल गई। दो माह की यात्रा के बाद पोत दरस के द्वीप में दाख़िल हुआ। यह जानना आवश्यक है कि समुद्र का तट बहुत व्यापक है और समुद्री तट का पानी खारा और मीठा है। पानी के नीचे की मिट्टी क़रीब है और उसका रंग उजला है। जब वहाँ से आगे बढ़ा तो उम्मान की समुद्री सीमा पर पहुँचे जिसका पानी नीला और कलछौना नज़र आता है। पानी की धाराओं के उतार-चढ़ाव से रात में समुद्र चिराग़ों की तरह चमकता है। इसके संबंध में प्रबुद्धों का कहना है कि नीलम (जमुर्रद) पत्थर का पहाड़ संसार को घेरे हुए है जो बहुत ऊँचा है, इसको कोहे काफ़ कहते हैं और पहला आकाश जो शीशा से भी अधिक साफ़ है और आईना की तरह पारदर्शी है वह भी इसी पहाड़ के प्रभाव से नीलम जैसा और नीले रंग का दिखाई देता है और पानी का रंग नीला भी आकाश के प्रतिबिंब के कारण है। इसका तर्क यह है कि जब पानी समुद्र से निकाला जाता है तो उजला रंग का नज़र आता है और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीखा और खारा होता है। इसका कारण ज़मीन के भाँपों का संमिश्रण है। स्नान और पवित्रता हेतु सफ़ाई, मजबूरी के कारण समुद्र के पानी से करते हैं। बर्तानिया के डाक्टर समुद्र की आबो हवा को मरीज़ और स्वस्थ दोनों के लिए लाभकारी बताते हैं। यह बात अनुभव में आई कि समुद्री यात्रा के दौरान कभी बुख़ार नहीं लगा। परंतु पेचिश की बीमारी हुई। जो इसपगोल (एक दवा) की खुराक से दूर हुई।

पुराने ज़माने के जहाज़रानी के क़ानून का उल्लेख और फ़िरंगियों के दकन और बंगाल में आने का हाल, यहाँ बयान करना उचित प्रतीत होता है, इसलिए उस ज़माने का कुछ हाल लिखा जाता है।

पुर्तगालियों और अँग्रेज़ों के बंगाल आने का संक्षिप्त हाल

पूर्व के इतिहासकारों से यह बात गुप्त नहीं है कि आदिकाल में पुर्तगाली क़ौम का बादशाह धन और शक्ति के अतिरिक्त शानो शौकत (वैभव) में अँग्रेज़ों पर ऐसी बढ़त रखता था जिस प्रकार अब अँग्रेज़ों को प्राप्त है। प्रथम पोत जो दकन और बंगाल में लाए यही पुर्तगाली थे। दो सौ वर्ष हुए अकबर बादशाह के काल में पुर्तगाली, मालाबार के द्वीप, सिलौन (श्रीलंका) और पीकू पहुँचे और उन्होंने तटवर्ती क्षेत्रों में प्रजा को ख़ूब सताया और लूटा, जैसा कि खुद अकबर बादशाह के पत्र में लिखा है कि "फ़िरंगी उपद्रवियों ने समुद्र के द्वीपों में अशांति फैलानी और उपद्रव शुरू किया है और मक्का और मदीना के तीर्थयात्रियों के लिए राह के रोड़े बन गए हैं और ईश्वर के बंदों को लूट-मार करके कंगाल करते हैं।" उन उपद्रवियों से पुर्तगाल क़ौम मुराद (अभिप्राय) है। वे बंगाल की उच्च कोटि की सामग्रियों जैसे सफ़ीद कपड़े, रेशम और अफ़ीम इत्यादि जो बर्तानिया के लिए बहुमूल्य उपहार हैं, ले जाते हैं। अतएव सफ़ीद कपड़े का एक थान बंगाल से दस रुपया में ख़रीदते हैं और बर्तानिया में चालीस और पचास रुपये में बेचते हैं चूँकि पहले सूरत और गुजरात के व्यवसायी बंगाल की सामग्रियों को छोटी नौकाओं के द्वारा बसरा (इराक़) तक ले जाते थे और वहाँ से बर्तानिया के प्रत्येक देश में पहुँचाते थे। इसको देखकर फ़िरंगियों को अपने व्यावसायिक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पोत इस ओर लाने का ख़्याल पैदा हुआ। चूँकि उस ज़माने में 'दिशासूचक-यंत्र' (कंपास/कुतुबनुमा) नहीं मिलता था, और पोतों की बनावट, क्षमता और मज़बूती ऐसी नहीं थी, जैसी आज कल है। और न साज-सज्जा की दृष्टि से इस ज़माने के पोत की तरह थे। इसके अतिरिक्त उनको समुद्री मार्गों की जानकारी भी न थी। इसलिए यात्रा करने से विवश थे। यहाँ तक कि पुर्तगाल के बादशाह ने साहस जुटाकर और सामर्थ्य पैदा करके चार-पाँच पोत साज़ और सामान के साथ तैयार कराए। उनके लिए एक वर्ष तक के लिए अन्न की व्यवस्थ की। कुछ प्रबुद्धों और अभियंताओं को रास्तों की पहचान करने के लिए नियुक्त किया। इसके बाद पोतों को रवाना कर दिया। यह पोत कठिन प्रयास से प्रति दिन चार कोस का रास्ता तय करते थे और पानी की गहराइयों की मापी भी करते जाते थे। ख़तरनाक रास्तों पर बड़ी सावधानी के साथ बचकर आगे बढ़ते जाते थे। जैसे पत्थरों की चट्टानें, कम पानी के स्थान और समुद्र के अंदर नज़र नहीं आने वाली चीज़ें। ख़तरे की जगहों पर कोई निशान लगा देते थे ताकि जब पुनः इस रास्ते से लौटें तो भ्रम के शिकार न हो सकें। 'दिशासूचक-यंत्र' नहीं होने के कारण पोत को तट से दूर नहीं ले जाते थे क्योंकि 'दिशासूचक-यंत्र' के बिना समुद्र में आने-जाने का रास्ता मालूम नहीं होता। 'दिशासूचक-यंत्र' का वर्णन ईश्वर ने चाहा तो बाद में किया जाएगा।

संक्षिप्त यह कि इस विधि से एक वर्ष में चालीस-पचास कोस की दूरी तय करते थे और जैसे ही खाने-पीने का सामान समाप्त होने लगता, आसानी के साथ परिचित रास्ते से अपने देश वापस चले आते थे। पुनः उसी परिचित स्थान से आगे के रास्ते पर जाते थे। इस आवा-गमन के दौरान कई पोत डूब गए और आदमी मरे। यहाँ तक कि इस कोशिश में वे काफ़ के स्थान तक पहुँच गए जो बर्तानिया के अर्द्ध मार्ग पर स्थित है और हबश देश के एक भाग में समुद्र तट पर है। अँग्रेज़ी में इसको Goodhope कहते हैं। यहाँ तक पहुँचकर वे समझ गए कि दक्षिणी संसार की सीमा यहाँ से अधिक दूर नहीं होगी और पूरी उम्मीद हो गई कि दकन का देश अब क़रीब है और वे वहाँ तक पहुँच सकते हैं। जब यह ख़बर बर्तानिया पहुँची तो अँग्रेज़ प्रसन्नता में अपनी टोपी हवा में उछालने लगे। खुशी के मारे फूले नहीं समाते थे। इस खुशी में उस स्थान का नाम Goodhope यानी अच्छी आशा रखा था। उन्होंने अपनी कोशिश जारी रखी, यहाँ तक कि नौ वर्ष की अवधि में मालाबार द्वीप, पीको और सिलौन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीखा और खारा होता है। इसका कारण ज़मीन के भाँपों का संमिश्रण है। स्नान और पवित्रता हेतु सफ़ाई, मजबूरी के कारण समुद्र के पानी से करते हैं। बर्तानिया के डाक्टर समुद्र की आबो हवा को मरीज़ और स्वस्थ दोनों के लिए लाभकारी बताते हैं। यह बात अनुभव में आई कि समुद्री यात्रा के दौरान कभी बुख़ार नहीं लगा। परंतु पेचिश की बीमारी हुई। जो इसपगोल (एक दवा) की खुराक से दूर हुई।

पुराने ज़माने के जहाज़रानी के क़ानून का उल्लेख और फ़िरंगियों के दकन और बंगाल में आने का हाल, यहाँ बयान करना उचित प्रतीत होता है, इसलिए उस ज़माने का कुछ हाल लिखा जाता है।

पुर्तगालियों और अँग्रेज़ों के बंगाल आने का संक्षिप्त हाल

पूर्व के इतिहासकारों से यह बात गुप्त नहीं है कि आदिकाल में पुर्तगाली क़ौम का बादशाह धन और शक्ति के अतिरिक्त शानो शौकत (वैभव) में अँग्रेज़ों पर ऐसी बढ़त रखता था जिस प्रकार अब अँग्रेज़ों को प्राप्त है। प्रथम पोत जो दकन और बंगाल में लाए यही पुर्तगाली थे। दो सौ वर्ष हुए अकबर बादशाह के काल में पुर्तगाली, मालाबार के द्वीप, सिलौन (श्रीलंका) और पीकू पहुँचे और उन्होंने तटवर्ती क्षेत्रों में प्रजा को ख़ूब सताया और लूटा, जैसा कि खुद अकबर बादशाह के पत्र में लिखा है कि "फ़िरंगी उपद्रवियों ने समुद्र के द्वीपों में अशांति फैलानी और उपद्रव शुरू किया है और मक्का और मदीना के तीर्थयात्रियों के लिए राह के रोड़े बन गए हैं और ईश्वर के बंदों को लूट-मार करके कंगाल करते हैं।" उन उपद्रवियों से पुर्तगाल क़ौम मुराद (अभिप्राय) है। वे बंगाल की उच्च कोटि की सामग्रियों जैसे सफ़ीद कपड़े, रेशम और अफ़ीम इत्यादि जो बर्तानिया के लिए बहुमूल्य उपहार हैं, ले जाते हैं। अतएव सफ़ीद कपड़े का एक थान बंगाल से दस रुपया में ख़रीदते हैं और बर्तानिया में चालीस और पचास रुपये में बेचते हैं चूँकि पहले सूरत और गुजरात के व्यवसायी बंगाल की सामग्रियों को छोटी नौकाओं के द्वारा बसरा (इराक़) तक ले जाते थे और वहाँ से बर्तानिया के प्रत्येक देश में पहुँचाते थे। इसको देखकर फिरंगियों को अपने व्यावसायिक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पोत इस ओर लाने का ख़्याल पैदा हुआ। चूँकि उस ज़माने में 'दिशासूचक-यंत्र' (कंपास/कुतुबनुमा) नहीं मिलता था, और पोतों की बनावट, क्षमता और मज़बूती ऐसी नहीं थी, जैसी आज कल है। और न साज-सज्जा की दृष्टि से इस ज़माने के पोत की तरह थे। इसके अतिरिक्त उनको समुद्री मार्गों की जानकारी भी न थी। इसलिए यात्रा करने से विवश थे। यहाँ तक कि पुर्तगाल के बादशाह ने साहस जुटाकर और सामर्थ्य पैदा करके चार-पाँच पोत साज़ और सामान के साथ तैयार कराए। उनके लिए एक वर्ष तक के लिए अन्न की व्यवस्थ की। कुछ प्रबुद्धों और अभियंताओं को रास्तों की पहचान करने के लिए नियुक्त किया। इसके बाद पोतों को रवाना कर दिया। यह पोत कठिन प्रयास से प्रति दिन चार कोस का रास्ता तय करते थे और पानी की गहराइयों की मापी भी करते जाते थे। ख़तरनाक रास्तों पर बड़ी सावधानी के साथ बचकर आगे बढ़ते जाते थे। जैसे पत्थरों की चट्टानें, कम पानी के स्थान और समुद्र के अंदर नज़र नहीं आने वाली चीज़ें। ख़तरे की जगहों पर कोई निशान लगा देते थे ताकि जब पुनः इस रास्ते से लौटें तो भ्रम के शिकार न हो सकें। 'दिशासूचक-यंत्र' नहीं होने के कारण पोत को तट से दूर नहीं ले जाते थे क्योंकि 'दिशासूचक-यंत्र' के बिना समुद्र में आने-जाने का रास्ता मालूम नहीं होता। 'दिशासूचक-यंत्र' का वर्णन ईश्वर ने चाहा तो बाद में किया जाएगा।

संक्षिप्त यह कि इस विधि से एक वर्ष में चालीस-पचास कोस की दूरी तय करते थे और जैसे ही खाने-पीने का सामान समाप्त होने लगता, आसानी के साथ परिचित रास्ते से अपने देश वापस चले आते थे। पुनः उसी परिचित स्थान से आगे के रास्ते पर जाते थे। इस आवा-गमन के दौरान कई पोत डूब गए और आदमी मरे। यहाँ तक कि इस कोशिश में वे काफ़ के स्थान तक पहुँच गए जो बर्तानिया के अर्द्ध मार्ग पर स्थित है और हबश देश के एक भाग में समुद्र तट पर है। अँग्रेज़ी में इसको Goodhope कहते हैं। यहाँ तक पहुँचकर वे समझ गए कि दक्षिणी संसार की सीमा यहाँ से अधिक दूर नहीं होगी और पूरी उम्मीद हो गई कि दकन का देश अब क़रीब है और वे वहाँ तक पहुँच सकते हैं। जब यह ख़बर बर्तानिया पहुँची तो अँग्रेज़ प्रसन्नता में अपनी टोपी हवा में उछालने लगे। खुशी के मारे फूले नहीं समाते थे। इस खुशी में उस स्थान का नाम Goodhope यानी अच्छी आशा रखा था। उन्होंने अपनी कोशिश जारी रखी, यहाँ तक कि नौ वर्ष की अवधि में मालाबार द्वीप, पीको और सिलौन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(श्रीलंका) पहुँच गए और उन स्थानों से बहुमूल्य वस्तुएँ और उच्च कोटि की सामग्रियाँ लेकर बर्तानिया वापस जाते थे।

टोपी धारी फिरंगी को इस बड़े उद्देश्य में सफलता की प्राप्ति से इतनी प्रसन्नता हुई जैसे उन्हें सात राज्य की सत्ता मिल गई क्योंकि इतने कठिन मार्ग उनके लिए सरल हो गए और वे कठिनाइयों से ही सही मगर गंतव्य (मंज़िल) तक पहुँच ही गए। इसके बाद तीन वर्षों की अवधि में यहाँ आते-जाते थे। फिर इसके बाद दो वर्षों में फिर एक वर्ष में। और रास्तों और दरियाओं का नक़्शा बनाया और उस देश की विशेषताओं को लिपिबद्ध किया और इन मामलों पर एक पुस्तक लिखकर इसे कार्य-नियमावली के रूप में पूरे फिरंगिस्तान के देशों में प्रचारित करा दिया। इससे यह हुआ कि सभी टोपीधारी, वह फ्रांसीसी हों या अँग्रेज़ या जर्मन या वलंदीज़ी उन नक़्शों के कारण आसानी से एक के बाद दूसरे इस देश में आते रहे और दकन और बंगाल में अपनी कोठियाँ बना लीं और इधर व्यवसाय करने लगे और इस देश के व्यवासियों को बर्तानिया की अच्छी वस्तुएँ उपलब्ध कराने लगे, जो वस्तुएँ यहाँ नहीं होती थीं।

फ़िरंगियों का बंगाल में प्रवेश कोठियाँ और क़िले बनाना

सम्राट अकबर के शासनकाल में पुर्तगालियों ने मालाबार और सिलौन इत्यादि पर आधिपत्त स्थापित किया और तटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाली जनता को तंग करना और नुक़्सान पहुँचाना शुरू किया। उन क्षेत्रों के मर्दों और औरतों को बंदी बनाकर ले जाते और दूसरे देशों में बेच देते थे। कुछ को दूसरे द्वीप में बसा देते थे। इसके कारण शाही कर्मीगण और लुटेरे पुर्तगालियों में लड़ाई और झगड़ा रहता था। जलालुद्दीन अकबर नहीं चाहते थे कि उनको प्रवास की अनुमति दी जाए परंतु जब नूरूद्दीन जहाँगीर का दौर आया तो फ़िरंगियों ने खुशामद और चापलूसी का अंदाज़ अपनाया। अपने देशों के अद्भुत उपहार बादशाह के दरबार में पेश किए। इस प्रकार बादशाह को खुश करके उनसे व्यावसायिक कोठियाँ बनाने का अनुरोध किया। जहाँगीर ने अनुमति दे दी और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनको आदेश दिया कि बर्तानिया की अच्छी वस्तुएँ बेचने के लिए हमारे देश में लाया करें और तटवर्ती क्षेत्र में जहाँ चाहें भवन बना लें। परंतु क़िला और बुर्ज (मीनार) बनाने और क़िला के आस-पास ख़न्दक़ खोदने को निषेध कर दिया। इस सिलसिले में बंगाल के प्रबंधकों के नाम बादशाह के आदेश और फर्मानें मौजूद हैं। परंतु जब औरंगज़ेब ने मृत्यु-यात्रा अख़्तियार किया तो मुग़लिया शासन में अराजकता उत्पन्न हो गया और देश का प्रशासनिक ढ़ाँचा कमज़ोर हो गया। यहाँ तक कि वर्तमान शासकों में विशेषकर मोहम्मद शाह हमेशा शराब, नाच-गाना में लिप्त और ऐश में डुबे रहते थे, देश की कुव्यवस्था की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। यहाँ तक कि उनके काल में मर्दों में भी औरतों के वस्त्र धारण करने का प्रचलन आरंभ हुआ, बर्बत और तंबूर ने रौनक़ पाई। और बहादुरों में मोर्चा संभालने की ख़बरें और आवाज़ें सुनाई देने की बजाए औरतों की ई, उई की आवाज़ें बुलंद होती थीं। भाँडों और नाचने वालों का बाज़ार गर्म था। धार्मिक लोगों के कर्तव्य दोषपूर्ण होते थे। भाँड और नक़लची विशिष्टों के पदों पर आसीन हुए और अमीरों ने किनाराकशी अख़्तियार की। राज्यों के व्यवस्थापकों ने अपने क्षेत्रों की व्यवस्था अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करनी शुरू कर दी। इसी तरह सैनिक भर्ती की व्यवस्था सुस्त पड़ गई और अधिनस्थों ने विद्रोह, उपद्रव और लूट-मार अख़्तियार किया। इन स्थितियों में पुर्तगालियों और दूसरी विलायती क़ौमों ने, राज्यों के व्यवस्थापकों और सैनिक अधिकारियों से सांठ-गांठकर हर जगह साज़िशों का जाल फैलाया। तरह-तरह के हीले-बहानों से और उपहारों की भेंट देकर क़िला बनाने की अनुमति प्राप्त कर ली। संक्षेप में क़िस्सा यह कि पुर्तगालियों ने हुगली के निकट एक ऊँचे स्थान पर उत्तर की ओर क़िलानुमा कोठी बना ली, जहाँ अब तक इस क़ौम की इबादतगाह यानी गिरजा घर बना हुआ है।

अँग्रेज़ों की व्यावसायिक कोठी पहली बार खोल घाट में बनाई गई जो हुगली के क़िला के दक्षिण की ओर थी और अब यह स्थान कलकत्ता में शामिल है। जर्मनों की कोठी नवाबगंज में मौज़ा चाणक्य के उत्तर में थी। और विलंदीज़ियों की कोठी, चरचरा में और डेनर्माक की श्रीरामपूर में अब तक मौजूद है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(श्रीलंका) पहुँच गए और उन स्थानों से बहुमूल्य वस्तुएँ और उच्च कोटि की सामग्रियाँ लेकर बर्तानिया वापस जाते थे।

टोपी धारी फिरंगी को इस बड़े उद्देश्य में सफलता की प्राप्ति से इतनी प्रसन्नता हुई जैसे उन्हें सात राज्य की सत्ता मिल गई क्योंकि इतने कठिन मार्ग उनके लिए सरल हो गए और वे कठिनाइयों से ही सही मगर गंतव्य (मंज़िल) तक पहुँच ही गए। इसके बाद तीन वर्षों की अवधि में यहाँ आते-जाते थे। फिर इसके बाद दो वर्षों में फिर एक वर्ष में। और रास्तों और दरियाओं का नक़्शा बनाया और उस देश की विशेषताओं को लिपिबद्ध किया और इन मामलों पर एक पुस्तक लिखकर इसे कार्य-नियमावली के रूप में पूरे फिरंगिस्तान के देशों में प्रचारित करा दिया। इससे यह हुआ कि सभी टोपीधारी, वह फ्रांसीसी हों या अँग्रेज़ या जर्मन या वलंदीज़ी उन नक़्शों के कारण आसानी से एक के बाद दूसरे इस देश में आते रहे और दकन और बंगाल में अपनी कोठियाँ बना लीं और इधर व्यवसाय करने लगे और इस देश के व्यवासियों को बर्तानिया की अच्छी वस्तुएँ उपलब्ध कराने लगे, जो वस्तुएँ यहाँ नहीं होती थीं।

फ़िरंगियों का बंगाल में प्रवेश कोठियाँ और क़िले बनाना

सम्राट अकबर के शासनकाल में पुर्तगालियों ने मालाबार और सिलौन इत्यादि पर आधिपत्त स्थापित किया और तटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाली जनता को तंग करना और नुक़्सान पहुँचाना शुरू किया। उन क्षेत्रों के मर्दों और औरतों को बंदी बनाकर ले जाते और दूसरे देशों में बेच देते थे। कुछ को दूसरे द्वीप में बसा देते थे। इसके कारण शाही कर्मीगण और लुटेरे पुर्तगालियों में लड़ाई और झगड़ा रहता था। जलालुद्दीन अकबर नहीं चाहते थे कि उनको प्रवास की अनुमति दी जाए परंतु जब नूरूद्दीन जहाँगीर का दौर आया तो फ़िरंगियों ने ख़ुशामद और चापलूसी का अंदाज़ अपनाया। अपने देशों के अद्भुत उपहार बादशाह के दरबार में पेश किए। इस प्रकार बादशाह को ख़ुश करके उनसे व्यावसायिक कोठियाँ बनाने का अनुरोध किया। जहाँगीर ने अनुमति दे दी और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनको आदेश दिया कि बर्तानिया की अच्छी वस्तुएँ बेचने के लिए हमारे देश में लाया करें और तटवर्ती क्षेत्र में जहाँ चाहें भवन बना लें। परंतु क़िला और बुर्ज (मीनार) बनाने और क़िला के आस-पास ख़न्दक़ खोदने को निषेध कर दिया। इस सिलसिले में बंगाल के प्रबंधकों के नाम बादशाह के आदेश और फर्मानें मौजूद हैं। परंतु जब औरंगज़ेब ने मृत्यु-यात्रा अख़्तियार किया तो मुग़लिया शासन में अराजकता उत्पन्न हो गया और देश का प्रशासनिक ढाँचा कमज़ोर हो गया। यहाँ तक कि वर्तमान शासकों में विशेषकर मोहम्मद शाह हमेशा शराब, नाच-गाना में लिप्त और ऐश में डुबे रहते थे, देश की कुव्यवस्था की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। यहाँ तक कि उनके काल में मर्दों में भी औरतों के वस्त्र धारण करने का प्रचलन आरंभ हुआ, बर्बत और तंबूर ने रौनक़ पाई। और बहादुरों में मोर्चा संभालने की ख़बरें और आवाज़ें सुनाई देने की बजाए औरतों की ई, उई की आवाज़ें बुलंद होती थीं। भाँडों और नाचने वालों का बाज़ार गर्म था। धार्मिक लोगों के कर्तव्य दोषपूर्ण होते थे। भाँड और नक़लची विशिष्टों के पदों पर आसीन हुए और अमीरों ने किनाराकशी अख़्तियार की। राज्यों के व्यवस्थापकों ने अपने क्षेत्रों की व्यवस्था अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करनी शुरू कर दी। इसी तरह सैनिक भर्ती की व्यवस्था सुस्त पड़ गई और अधिनस्थों ने विद्रोह, उपद्रव और लूट-मार अख़्तियार किया। इन स्थितियों में पुर्तगालियों और दूसरी विलायती क़ौमों ने, राज्यों के व्यवस्थापकों और सैनिक अधिकारियों से सांठ-गांठकर हर जगह साज़िशों का जाल फैलाया। तरह-तरह के हीले-बहानों से और उपहारों की भेंट देकर क़िला बनाने की अनुमति प्राप्त कर ली। संक्षेप में क़िस्सा यह कि पुर्तगालियों ने हुगली के निकट एक ऊँचे स्थान पर उत्तर की ओर क़िलानुमा कोठी बना ली, जहाँ अब तक इस क़ौम की इबादतगाह यानी गिरजा घर बना हुआ है।

अँग्रेज़ों की व्यावसायिक कोठी पहली बार खोल घाट में बनाई गई जो हुगली के क़िला के दक्षिण की ओर थी और अब यह स्थान कलकत्ता में शामिल है। जर्मनों की कोठी नवाबगंज में मौज़ा चाणक्य के उत्तर में थी। और विलंदीज़ियों की कोठी, चरचरा में और डेनर्माक की श्रीरामपूर में अब तक मौजूद है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुर्तगालियों के द्वारा कोठी ख़ाली कराने का हाल

पुर्तगालियों ने एक ऊँचे स्थान पर कोठी बना ली और प्रार्थना के लिए एक गिरजा घर बनाया और आराधना शुरू की। और अत्यंत बेलगाम होकर दंगा-फ़साद पर उतारू हुए, जो इस क़ौम के अंतरात्मा में शामिल थी। अमीरुलउमरा नव्वाब शाईस्ता ख़ाँ की अमलदारी में पुर्तगालियों ने अपने उपद्रव, आज्ञा का उलंघन और मनमानी से हुगली के फ़ौजदार से झगड़ा शुरू किया और लड़ाई के लिए उतारू हुए। इसका विवरण यह है कि नगर और ग्रामों में सामग्रियों की ख़रीदारी में बेईमानी और मनमानी करते थे और हिंदुओं और मुसलमानों के बच्चों को धोखे और छल से पकड़कर समुद्र के दूसरे द्वीपों में ले जाकर बेच देते थे। इसी प्रकार उन्होंने लोगों के बेचने का धंधा अपनाया और रविवार को जो उनकी पूजा का दिन है, घंटे बजाते थे। उनकी आवाज़ से जामा मस्जिद में क़ुरान पढ़ने और नमाज़ अदा करने में व्यवधान उत्पन्न होता था। फ़ौजदार ने बहुत सख़्ती के साथ मना किया कि जनता को कष्ट पहुँचाने और देह-व्यापार से बाज़ आ जाएँ मगर उन्होंने कोई परवाह न की। बराबर अपनी उक्त आदतों पर क़ायम (स्थिर) रहे और लगातार उपद्रव मचाते रहे। और हुगली के फ़ौजदार के साथ युद्ध के लिए एकजुट हो गए। इसके बावजूद कि उनकी संख्या अस्सी, नौ विलायती गोरों, एक सौ पचास फ़िरंगी सिपाहियों से अधिक न थी। परंतु तोपख़ाने के साथ ही शाही लश्कर से बराबर की टक्कर ली। यहाँ तक कि हुगली क़िला के नीचे लंगर डाला और गोलाबारी करके शाही क़िला के सैनिकों को दम मारने का अवसर नहीं दिया। प्रसिद्ध है कि उस समय मलिक शुक्रुल्लाह ख़ाँ नगर फ़ौजदार के अधीन एक शाही पदधारक और हुगली का क़िलादार था, जो वीरता और साहस में रणक्षेत्र का बेमिसाल योद्धा था। उसने अत्यंत साहस के साथ ईश्वर पर भरोसा करके बहते पानी में अपना घोड़ा डाल दिया और स्वयं उस बाग़ी क़ौम के पोत के पास पहुँच गया और अँधेरी रात में पोत के लंगर की रस्सियाँ काट दीं और पोत को चालू कर दिया। इसी के साथ पानी के बहाव और हवा की तेज़ी ने पोत को दौड़ा दिया और उसको दक्षिण की ओर ले गई। उन अदूरदर्शी उपद्रवियों ने जब विरोधी हवा और प्रतिकूल स्थिति देखी तो पोत के पत्वार को पराजय की दिशा में और स्थिर कर दिया। जिस समय उनका पोत मोछी खोला कलकत्ता के निकट पहुँचा, वहाँ के थानेदार ने फ़ौजदार के आदेश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के अनुरूप दरिया के दोनों किनारों पर पक्का चबूतरा बनाए और बहुत मोटे लोहे की ज़ंजीर दोनों किनारों पर लोहे की बड़ी कीलों से मज़बूती से बाँध दिया और पोत और नाव के आने-जाने का रास्ता रोक दिया। पुर्तगाल के जहाज़ियों ने उस ज़ंजीर को काट दिया और लड़ते हुए बाहर निकल गए। और सिलौन द्वीप और मालाबार की ओर फ़रार हो गए। उनका प्रथम ठिकाना और वास्तविक केंद्र मालाबार द्वीप और सिलौन इत्यादि थे। इसके बाद मद्रास, तिब्बती, बीयूबेहरी (पाण्डी चेरी) इत्यादि इस क़ौम के लोगों की शरणास्थली और प्रवास स्थल हो गए। अतएव पाण्डी चेरी के निकट का एक नगर फ़िरंगीबाद प्रसिद्ध है। अब देश-देश में आबाद हो गए। इसके बाद पुर्तगाली क़ौम के लोग अपने अत्याचार और दुराचार और मानव-पीड़क होने के कारण ईश्वर के कोप में गिरफ़्तार हो गए। इसका संक्षिप्त विवरण यह है कि दैविक कोप से अचानक पुर्तगाल की राजधानी में भंयकर भूकंप आया। नगर और राजधानी दोनों को पानी बहाकर ले गया। उस समय कुछ लोग अपनी बुद्धिमत्ता और चालाकी से भागकर जान बचाई और शेष सभी समाप्त हो गए। ओर सभी व्यावसायिक सामग्रियाँ पानी में डूब गईं। जब धन ने इस देश से मुँह मोड़ लिया तो पुर्तगाल का बादशाह कमज़ोर हो गया और पुनः अपने देश में नहीं आया। अब इस समय बर्तानिया का बादशाह पुर्तगाल का सहायक और सहयोगी है। यद्यपि रूस और स्पेन और जर्मनी इत्यादि ने चाहा कि पुर्तगाल को अपने शासन में शामिल कर लें परंतु ईश्वर ने अँग्रेज़ों को सभी क़ौमों पर बढ़त दे दिया है। इसलिए बादशाह बार्तनिया की सहायता के कारण किसी को पुर्तगाल पर क़ब्ज़ा करने का साहस नहीं हुआ।

कहवल घाट की अँग्रेज़ी कोठी का ख़ातमा और कलकत्ता की आबादी

अँग्रेज़ों की व्यावसायिक कोठी जो कहवल घाट पर हुगली के क़िला के करीब थी। संखनाद और अन्य अनुचित कृत्यों के कारण हुगली के फ़ौजदार के साथ विरोध उत्पन्न हो गया। उस समय हुज़ूर आलम अकबर शाह ने दूसरी जहगह कोठी बनाने का आदेश दिया। श्री चामक ने जो उस ज़माने में कोठी का गर्वनर था कहवल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घाट से उठकर 'चामक' स्थान में निवास अख़्तियार किया। अतएव उस तिथि से आज तक यह चामक के नाम से जाना जाता है। चूँकि पुराने ज़माने से अँग्रेज़ क़ौम बुलंद हौसला और साहसी है इसलिए उसने मेल-जोल से लोकप्रियता प्राप्त की।

जिस ज़माने में बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर दकन में क़िला गोलकुंडा की घेराबंदी किए हुए थे और क़िला पर विजय-प्राप्ति कठिन थी, इसलिए घेराबंदी लंबी हो गई और आलमगीर की सेना का खाने-पीने का सामान कम हो गया। उस समय श्री चामक अन्न एवं विभिन्न सामग्रियों से भरा जहाज़ कलकत्ता से लेकर दकन पहुँचे। जिसकी बदौलत शाही सेना हेतु खाद्य सामग्री प्रयाप्त हो गई और सेना ने भुखमरी से मुक्ति पाई। उसका यह कारनामा उसके लिए उद्देश्य प्राप्ति का माध्यम बन गया। बादशाह के समक्ष उपस्थित होकर सलाम और बंदगी बजा लाया और तरह-तरह के उपहार भेंट कर उन्हें प्रसन्न करके राज्य पुरस्कार का अधिकारी हुआ। उसने क़िला फ़तह करने की व्यवस्था में भी भाग लिया। उस की बताई हुई विधियों से कुछ अवधि के बाद क़िला फ़तह कर लिया गया। उसकी सेवा के बदले बादशाह ने उसको चालीस बीघा ज़मीन कोठी और हवेली भेंट की। इसके अतिरिक्त उसने कम्पनी के लिए व्यावसायिक कर माफ़ होने की सनद भी प्राप्त कर ली और कलकत्ता में कोठी बनवाई। ईश्वर की महिमा भाग्य की विचित्रता जब ग़फ़्लत (प्रमाद) की आँखों पर से पर्दा हटाती है तो मालूम होता है कि गर्व और अहंकार में मस्त सत्तासीनों की अदूरदर्शिता ने यह दिन दिखाया कि :

जो व्यक्ति एक बीघा ज़मीन का मुहताज था उसको आधे भारत का स्वमी बना दिया। सभी उपद्रवियों एवं बाग़ियों को बलशाली और शासक बना दिया। एक कवि के कथनानुसार :

"भयानक बाघ चूँटी से पराजय प्राप्त करता है।
वही चूँटी बहादुर योद्धा हाथी की पीठ पर सवारी करता है।।"

वास्तविकता यह है कि यह सब कर्मों की सज़ा है। किसी क़ौम को उसकी अच्छी नीयत और सत्यकर्मों के कारण देश का शासक बनाया जाता है। और किसी समुदाय को अत्याचार और नमकहरामी के सबब मुसीबत में मुबतला करते हैं। यही प्रकृति की व्यवस्था है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जर्मन क़ौम का फ़रार होना

नव्वाब अली वरदी ख़ाँ महाबत जंग के काल में, जर्मन क़ौम के लोगों ने हुगली के फ़ौजदार से विद्रोह किया और युद्ध के लिए उतारू हो गए। एक वर्ष तक लड़ाई-झगड़े करते रहे। उस ज़माने में नव्वाब के बख़्शी सेना जाफ़र अली थे। उनको बारह हज़ार सवारों और प्यादों (थल सेना) और शाही तोप के साथ युद्ध के लिए नियुक्त किया गया। वह मुर्शिदाबाद से मोर्चे और दमदमे (अस्थाई क़िला आदि) बनाते हुए जर्मनों के क़िला के निकट पहुँचे। छः माह तक दोनों ओर से भयंकर युद्ध जारी रहा। अंततः जर्मन टिक न सके। विवश होकर अपने पोत पर साज़-सामानों के साथ सवार हुए और युद्ध करते हुए बहादुरी के साथ भाग गए। उनके हालात इतने मालूम हो सके कि जर्मन क़ौम के लोग बहुत बहादुर होते हैं। उनके सिपाही बहुत हिम्मत वाले अद्वितीय होते हैं। उनका देश फ़्रांस से अधिक व्यापक है। जब इस देश के शासकों में मेल-जोल समाप्त हुआ और देश के हर राज्य में अराजकता उत्पन्न हुई तो उस समय उस राष्ट्र के वैभव पर पतन आया। फिर पुनः उस देश में नहीं आए।

समुद्र की व्यापकता और गहराई का उल्लेख

जानना चाहिए कि समुद्र की व्यापकता और पानी की गहराई सृष्टिकर्ता के अतिरिक्त किसी को मालूम नहीं है। मानव बुद्धि इसके बारे में काम नहीं करती। पोत पर सवार होने की हालत में जब समुद्र और आकाश की व्यापकता पर नज़र पड़ती है तो प्रकृति का चमत्कार प्रकट होता है। दुनिया एक अंडे की तरह मालूम होती है। कहते हैं कि अँग्रेज़ों के एक बादशाह ने समुद्र के किनारे कई मील अंदर जाकर पानी की गहराई नापने के लिए उसमें रस्सी डाली थी। लाखों गज़ रस्सी लग गई परंतु समुद्र की गहराई तक नहीं पहुँची। इसके संदर्भ में जानकार अनुमान लगाकर कहते हैं कि यदि एक ऊंगुली मोटी रस्सी एक ... पोत पर लादी जाए और इतनी हो जितनी उसपर लादना संभव है। इसके बाद वह समुद्र में डाली जाए तब भी गहराई तक नहीं पहुँचेगी। इस स्थिति में 'शिगर्फ़ नामा' का लेखक ज़माना के प्रबुद्धों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से इस बात के लिए न्याय तलब करता है कि शैख़ निज़ामी के इस बिना सबूत दावा के संबंध में क्या कहा जाएगा, वह कहते हैं कि :

"दो नावों को एक साथ एक दूसरे से बाँध दिया।
दोनों नावों के बीच रस्सी बाँध दी गई।।
एक नाव को उसके लंगर से बँधा छोड़ दिया।
दूसरे नाव को रस्सी की लंबाई भर आगे बढ़ा दिया।।
बँधी हुई रस्सी से लंबाई का अनुमान लग गया।
एवं इसी से गनतव्य की दूरी भी स्पष्ट हो गई।।"

उस देश के लोगों ने समुद्र नहीं देखा था। उनका विचार, बल्कि विश्वास है कि सिकन्दर ज़ुलक़रनैन ने सात समुद्र को नापा था। यह बात बिल्कुल ग़लत है। इसलिए कि यह किसी स्थिति में संभव नहीं है। क्योंकि समुद्र की गहराई का कोई अंत नहीं है और पोत के लंगर के बिना ज़मीन का एक जगह स्थिर रहना संभाव नहीं है। और समुद्र की लंबाई चौराई का पता नहीं है। फिर भला सिकन्दर और उसके बुद्धिमान परामर्शी भी इंसान थे। उनकी क्या शक्ति थी कि सारे समुद्र की मापी करते और पोत को समुद्र में लंगर डालकर खड़ा कर सकते। शैख़ निज़ामी की बात को ग़लत नहीं कहना चाहिए। वास्तव में शैख़ का उद्देश्य समुद्र का तट होगा, बल्कि शैख़ ने मंज़िल की दूरी कहा होगा, दरिया की दूरी न कहा होगा इसलिए फ़िरंगिस्तान के इतिहास से मालूम हुआ चूँकि थल और जल नापने का काम सिकन्दर ने किया है। और वह भी रोम से फ़िरंगिस्तान तक चंद मंज़िल समुद्र के किनारे की मापी की थी। वरना उस ज़माने में दिशासूचक यंत्र मौजूद न था और दिशासूचक लोहा भी दरयाफ़्त नहीं हुआ था। इसलिए दिशासूचक यंत्र की सहायता और नक़्शा देखे बिना समुद्र के अंदरूनी और बाहरी रास्ता का पता लगाना व्यक्ति के वश की बात नहीं। इसलिए भूमिमापक यंत्र से पूरा समुद्र कैसे नाप सकते हैं। कहते हैं कि सिकन्दर समुद्री तट के साथ-साथ चंद मंज़िलों तक समुद्र को नापता हुआ जाता था। परंतु जब कभी विपरीत हवा उसके पोत को समुद्र के किनारे से सौ दो सौ मील दूल ले जाती थी, उस समय यूनानी खगौलशास्त्री बुद्धिमान परामर्शी पोत के लंगर को बड़ी सावधानी से और हज़ारों विधियों से अपनी अनुकूल दिशा करके सुरक्षा के साथ तट पर पहुँचते थे और इसको अपनी बहुत बड़ी बुद्धिमानी समझते थे। फ़िरंगिस्तान के बुद्धिमान कहते हैं कि अरबी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और फ़ारसी के इतिहासकारों ने देवदूतों (पैग़ंबरों) और बादशाहों और प्रबुद्धजनों ने सुनी-सुनाई परंपराओं के अनुसार इस सिलसिले में बहुत विरोध किया है। और एक बात पर समहत नहीं हैं। विशेषकर सिकन्दर के हालात में अति रंजना से काम लिया गया और अश्लील बातें लिखी हैं। प्रथमतः यह कि अत्याचारी था और न्यायी नाम रखा। और अत्यंत नास्तिक था इसलिए ईश्वरीय दावा किया था। उसको धार्मिक और देवदूत कहते हैं। दूसरे विधर्मी था और महिलाओं को पसंद करता था। उसको सुनाम और कुंवारा कहते हैं। परंतु सिकन्दर के एक यूनानी सहयात्री ने 'तवारीख़ सिकन्दर' नाम की एक पुस्तक लिखी है और वह पुस्तक अब तक रोम में मौजूद है। और वहाँ के लोग हर देश के इतिहास से अवगत हैं। वह लिखते है कि चूँकि सिकन्दर रोम का निवासी था। और रोम हमारा देश है। अरब और फ़ारस के इतिहासकारों ने जो हमारे देश से सुदूर हैं दूसरों की ज़ुबानी सुनी हुई बातें लिखी हैं परंतु देखने और सुनने में बहुत अंतर होता है।

दिशासूचक यंत्र यानी कम्पास बनाना

इतिहासकारों ने लिखा है कि प्राचीन कालीन वैज्ञानिकों एवं सिकन्दर के ज़माने में चुम्बक नहीं मिलता था, जिससे कम्पास और दिशासूचक यंत्र बनाया जाता है। बाद के वैज्ञानिकों के काल में अब से दो सौ वर्ष पूर्व बहुत खोज और अनुसंधान के बाद अरब की पहाड़ियों से बरामद हुआ। इसकी विशेषता काहरुबा (एक प्रकार का गोंद जिसकी विशेषता है कि उसे कपड़े या चमड़े पर रगड़कर घास के तिंके के पास लाया जाए तो वह उसे चुम्बक की भाँति अपनी ओर आकर्षित करता है) की तरह है, जो घास को खींचती है और चुंबकीय पत्थर की तरह जो लोहे को खींच लेता है। यह भी लोहे की एक क़िस्म है जो उसको सोख लेता है और उससे कम्पास भी बनाते हैं, जिसको फ़ारसी में क़िबलानुमा कहते हैं। और हिंदुस्तान के लोग इसको हल्क़ा कहते हैं। कम्पास बनाने की विधि यह है कि तकला बनाते हैं। उसका एक हिस्सा बड़ा गोल बंद प्याले की तरह होता है और दूसरा छतरी के आकार का होता है, जो प्याले के बराबर गोल होता है और बहुत हल्का कपड़े से बनाते हैं, उसपर पूरब, पश्चिम,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर और दक्षिण की रेखाएँ बनी होती हैं और उसके बीच ६४ छोटी रेखाएँ होती हैं। प्रत्येक के नाम निर्धारित हैं, उस छतरी को उसी तख़्ते पर लटका देते हैं और उक्त छतरी गति से घूमती है और सीधे पश्चिम की ओर रुख़ करके ठहर जाती है। मुसलमान इस दिशा को क़िबला (पश्चिम) की दलील बताते हैं और अँग्रेज़ इससे उत्तर का निर्धारण करते हैं। जिस समय पोत में बैठे हुए आकाश और समुद्र के पानी के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आता और तट का निशान नहीं मिलता, उस समय कम्पास की चैहद्दी और उसकी रेखाएँ देखकर पोत के आगमन और प्रस्थान का पता चलाया जाता है। और आने-जाने के रास्तों का निर्धारण करते हैं और उनके नक़्शे बनाकर पूरा हाल पुस्तकों में अंकित करते हैं। इस तरह जो मालूमात पहले लोग अंकित कर गए हैं उनसे लाभ उठाते हैं और अपने अनुभव लिखते हैं। उन्हीं की सहायता से यह बता सकते हैं। उस स्थान से अमुक स्थान कितने मील दूर है और वहाँ तक कितने दिनों में पहुँच सकते हैं। वास्तविकता यह है कि इस काम में यह लोग दक्षता रखते हैं। उन्होंने इसे ज्ञान की तरह प्रत्येक ज्ञान को सरल बना दिया है। अब बर्तानिया के लोगों को शिक्षा की प्राप्ति में कोई कठिनाई नहीं होती है।

संक्षिप्त कथा यह कि पोत का कप्तान और उसका उप कप्तान बारी-बारी पोत के पत्वार के क़रीब रहते हैं और कम्पास और पोत के अगले भाग पर विशेष नज़र रखते हैं ताकि बाल बराबर भी इधर से उधर न हो जाए। और संतुलन की स्थिति में एक गोरा मुलाज़िम उस चर्खी को घुमाता है, जिस पर बादबानों (पालों) को गति प्रदान करने वाली रस्सी लिपटी हुई होती है। और तेज़ और ज़ोरदार आँधी के समय दो चर्खियों को मज़बूती से पकड़कर सीधा घुमाते हैं, उस समय कप्तान और उसका उप कप्तान प्रति क्षण कम्पास और पोत के अगले भाग पर नज़र रखते हैं और बुलंद आवाज़ में कम्पास की रेखा का नाम लेते हैं ताकि पत्वार को सीधी दिशा में मज़बूती से पकड़ें और बाल बराबर भी ग़लती न करें। इस तरीक़ा पर पोत रात दिन चलता है और डोलने की संभावना नहीं होती। अलबत्ता द्वीप के किनारे आवश्यकतानुसार खाने-पीने की सामग्री, फल और सब्ज़ियाँ और जलाने की लकड़ियाँ इत्यादि लेने के अतिरिक्त पोत की मरम्मत के लिए एक घन्टे का अंतराल एक माह ठहरने के बराबर ख़्याल करते हैं। और यह बाधा डालने के बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रास्ते की मापी

समुद्र के रास्ते की मापी इस तरह करते हैं कि एक बित्ता (९ इंच) का एक तिकोना लकड़ी का टुकड़ा लेकर रस्सी के एक सिरे को उसमें बाँध देते हैं और तीन-चार बीघा ज़मीन के रक़्बे भर लंबी रस्सी का दूसरा सिरा लकड़ी की चर्खी में लपेट देते हैं, और एक आदमी चर्खी के दस्ते को दोनों ओर से पकड़े रहता है। दूसरा आदमी घड़ी का शीशा हाथ में रखता है। जब रस्सी पकड़ने वाला आदमी रस्सी को तख़्ते सहित पानी में डालता है तो वह दूसरा आदमी घड़ी के शीशे को ऊपर-नीचे करता है चूँकि उस समय समुद्र में ज्वार-भाटा बिल्कुल नहीं होता इसलिए पानी में आकर्षण नहीं होता। इसलिए वह तख़्ता खड़ा हो जाता है और उसका एक कोना बाहर निकला रहता है और दो कोना बॉल के अंदर डुबे रहते हैं। जब पानी से बाहर निकला हुआ कोना एक स्थान पर ठहर जाता है उस समय पोत के आकर्षण से चर्खी में लपेटी हुई रस्सी खुल जाती है और घड़ी का शीशा एक ओर से दूसरी ओर पहुँच जाता है और शीशा रखने वाला आदमी बुलंद आवाज़ से कहता है होशियार! रस्सी पकड़ो और उसी समय रस्सी को मज़बूती से पकड़ लेता है। थोड़ा-सा भी इधर-उधर नहीं होने देता है। और धीरे-धीरे रस्सी को पोत के ऊपर खींचते हैं। और रस्सी पर बीघा और बिसुआ के जो निशान बने होते हैं उन से हिसाब लगाते हैं कि कितनी यात्रा तय कर चुके हैं। इस तरह हर दो घन्टे के बाद मापी करते जाते हैं और इसको पुस्तक (दैनिकी) में अंकित कर लेते हैं। चूँकि पोत के चलने की रफ़्तार हवा के चलने पर निर्भर है और हवा रात-दिन एक ढंग पर नहीं चलती। कभी तेज़ चलती है और सौ मील प्रति घन्टे की रफ़्तार से चलती है। कभी सत्तर मील और कभी चालीस-पचास मील की रफ़्तार से चलने लगती है। और किसी समय उससे भी कम हो जाती है। फ़िरंगियों ने आधी रात से आधे दिन तक का समय एक तरह का क़रार दिया है और दोनों को चौबीस घन्टों में विभाजित कर दिया है। और हर घन्टा भारत के दो अर्द्ध घन्टों के बराबर होता है। जब एक दिन पूरा हो जाता है तो हवा की कमी और अधिकता की क्षति को नज़र अंदाज़ करके हिसाब लगाते हैं कि आज कितना रास्ता तय किया है और इसको दैनिकी में अंकित करते हैं। इसी तरह बंगाल से बर्तानिया तक पूरी यात्रा का हाल लिपिबद्ध कर देते हैं। इसी में मासिक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर और दक्षिण की रेखाएँ बनी होती हैं और उसके बीच ६४ छोटी रेखाएँ होती हैं। प्रत्येक के नाम निर्धारित हैं, उस छतरी को उसी तक्ले पर लटका देते हैं और उक्त छतरी गति से घूमती है और सीधे पश्चिम की ओर रुख़ करके ठहर जाती है। मुसलमान इस दिशा को क़िब्ला (पश्चिम) की दलील बताते हैं और अँग्रेज़ इससे उत्तर का निर्धारण करते हैं। जिस समय पोत में बैठे हुए आकाश और समुद्र के पानी के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आता और तट का निशान नहीं मिलता, उस समय कम्पास की चैहद्दी और उसकी रेखाएँ देखकर पोत के आगमन और प्रस्थान का पता चलाया जाता है। और आने-जाने के रास्तों का निर्धारण करते हैं और उनके नक़्शे बनाकर पूरा हाल पुस्तकों में अंकित करते हैं। इस तरह जो मालूमात पहले लोग अंकित कर गए हैं उनसे लाभ उठाते हैं और अपने अनुभव लिखते हैं। उन्हीं की सहायता से यह बता सकते हैं। उस स्थान से अमुक स्थान कितने मील दूर है और वहाँ तक कितने दिनों में पहुँच सकते हैं। वास्तविकता यह है कि इस काम में यह लोग दक्षता रखते हैं। उन्होंने इसे ज्ञान की तरह प्रत्येक ज्ञान को सरल बना दिया है। अब बर्तानिया के लोगों को शिक्षा की प्राप्ति में कोई कठिनाई नहीं होती है।

संक्षिप्त कथा यह कि पोत का कप्तान और उसका उप कप्तान बारी-बारी पोत के पत्वार के क़रीब रहते हैं और कम्पास और पोत के अगले भाग पर विशेष नज़र रखते हैं ताकि बाल बराबर भी इधर से उधर न हो जाए। और संतुलन की स्थिति में एक गोरा मुलाज़िम उस चर्खी को घुमाता है, जिस पर बादबानों (पालों) को गति प्रदान करने वाली रस्सी लिपटी हुई होती है। और तेज़ और ज़ोरदार आँधी के समय दो चर्खियों को मज़बूती से पकड़कर सीधा घुमाते हैं, उस समय कप्तान और उसका उप कप्तान प्रति क्षण कम्पास और पोत के अगले भाग पर नज़र रखते हैं और बुलंद आवाज़ में कम्पास की रेखा का नाम लेते हैं ताकि पत्वार को सीधी दिशा में मज़बूती से पकड़ें और बाल बराबर भी ग़लती न करें। इस तरीक़ा पर पोत रात दिन चलता है और डोलने की संभावना नहीं होती। अलबत्ता द्वीप के किनारे आवश्यकतानुसार खाने-पीने की सामग्री, फल और सब्ज़ियाँ और जलाने की लकड़ियाँ इत्यादि लेने के अतिरिक्त पोत की मरम्मत के लिए एक घन्टे का अंतराल एक माह ठहरने के बराबर ख़्याल करते हैं। और यह बाधा डालने के बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रास्ते की मापी

समुद्र के रास्ते की मापी इस तरह करते हैं कि एक बित्ता (६ इंच) का एक तिकोना लकड़ी का टुकड़ा लेकर रस्सी के एक सिरे को उसमें बाँध देते हैं और तीन-चार बीघा ज़मीन के रक़्बे भर लंबी रस्सी का दूसरा सिरा लकड़ी की चर्खी में लपेट देते हैं, और एक आदमी चर्खी के दस्ते को दोनों ओर से पकड़े रहता है। दूसरा आदमी घड़ी का शीशा हाथ में रखता है। जब रस्सी पकड़ने वाला आदमी रस्सी को तख़्ते सहित पानी में डालता है तो वह दूसरा आदमी घड़ी के शीशे को ऊपर-नीचे करता है चूँकि उस समय समुद्र में ज्वार-भाटा बिल्कुल नहीं होता इसलिए पानी में आकर्षण नहीं होता। इसलिए वह तख़्ता खड़ा हो जाता है और उसका एक कोना बाहर निकला रहता है और दो कोना बॉल के अंदर डुबे रहते हैं। जब पानी से बाहर निकला हुआ कोना एक स्थान पर ठहर जाता है उस समय पोत के आकर्षण से चर्खी में लपेटी हुई रस्सी खुल जाती है और घड़ी का शीशा एक ओर से दूसरी ओर पहुँच जाता है और शीशा रखने वाला आदमी बुलंद आवाज़ से कहता है होशियार! रस्सी पकड़ो और उसी समय रस्सी को मज़बूती से पकड़ लेता है। थोड़ा-सा भी इधर-उधर नहीं होने देता है। और धीरे-धीरे रस्सी को पोत के ऊपर खींचते हैं। और रस्सी पर बीघा और बिसुआ के जो निशान बने होते हैं उन से हिसाब लगाते हैं कि कितनी यात्रा तय कर चुके हैं। इस तरह हर दो घन्टे के बाद मापी करते जाते हैं और इसको पुस्तक (दिनिकी) में अंकित कर लेते हैं। चूँकि पोत के चलने की रफ़्तार हवा के चलने पर निर्भर है और हवा रात-दिन एक ढंग पर नहीं चलती। कभी तेज़ चलती है और सौ मील प्रति घन्टे की रफ़्तार से चलती है। कभी सत्तर मील और कभी चालीस-पचास मील की रफ़्तार से चलने लगती है। और किसी समय उससे भी कम हो जाती है। फ़िरंगियों ने आधी रात से आधे दिन तक का समय एक तरह का क़रार दिया है और दोनों को चौबीस घन्टों में विभाजित कर दिया है। और हर घन्टा भारत के दो अर्द्ध घन्टों के बराबर होता है। जब एक दिन पूरा हो जाता है तो हवा की कमी और अधिकता की क्षति को नज़र अंदाज़ करके हिसाब लगाते हैं कि आज कितना रास्ता तय किया है और इसको दैनिकी में अंकित करते हैं। इसी तरह बंगाल से बर्तानिया तक पूरी यात्रा का हाल लिपिबद्ध कर देते हैं। इसी में मासिक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और वार्षिक व्यय, मंज़िल, स्थान, घटना और दुर्घटना और ज़मीनी और आकाशीय आपदा, सब का हाल अंकित करते हैं।

पोतों की क़िस्में

जैसा कि प्रसिद्ध है एक बादबान (पाल) वाले पोत को सेल्फ़ कहते हैं और दो बादबान हो तो गुराब कहा जाता है और छः बादबानों को पोत का नाम दिया जाता है। पोत के नीचे की लकड़ी जिसको डोल कहते हैं, बहुत मोटी और मज़बूत होती है। आँधी चाहे जितनी भयंकर हो वह टूटती नहीं और उसके ऊपर बीच की लकड़ी डोल से पतली होती है और टूट भी जाती है। इसलिए पोत के रक्षक जब आकाश पर धूल देखते हैं तो तेज़ हवा और आँधी के भय से सभी ऊँचे बादबानों को नीचे कर देते हैं। परंतु नीचे के बादबान की लकड़ी उसी तरह रहने देते हैं संयोगवश यदि अँधेरी रात में बरसने वाला बादल घिर आए तो सावधानी नहीं कर सकेंगे और अचानक आँधी आ जाए तो दोनों ऊपर की लकड़ी टूट जाएँगी। अतएव वापसी की यात्रा में पोत करापट्टी में यह स्थिति पेश आई और मुझको उससे दो-चार होना पड़ा। चूँकि लकड़ी और दूसरा सामान पोत में मौजूद रहता है अगर ज़रूरत पड़े तो मरम्मत कर लेते हैं। और पोत के चलने में व्यवधान उत्पन्न नहीं होता है और बादबान के टूटने से पोत के डूब जाने का ख़तरा नहीं होता। क्योंकि पुस्तकों में लिखा है कि पोत की बनावट मुर्ग़ी के सीने की हड्डियों जैसी होती है। इसको दुनिया में पहली बार पैग़म्बर हज़रम नूह अलैहिस्सलाम ने देवदूत हज़रत जिबरईल के निर्देश के अनुरूप ईजाद किया था। हमारे देश की नौकाओं की तरह जो जहाज़ इस तरह बनाया गया है, वह नहीं डूबता, हमारे देश की नौकाएँ भंकर तेज़ हवाओं और आँधियों में न पलटती हैं और न ही डूबती हैं। पोत के बादबान मज़बूत रस्सियों से बँधे होते हैं। तनाबों (रस्सियों) और बादबानों (पालों) के अलग-अलग नाम रख छोड़े हैं। जब पोत की गति और हवा का रुख़ अनुकूल नहीं होते और हवा बादबान को कभी टेढा और कभी सीधा और कुछ को बराबर कर देती है तो कुछ बादबानों को नीचे उतार लेते हैं। कप्तान, उप कप्तान और नाविक सभी बारी-बारी बादबानों पर नज़र रखते हैं और बादबानों के खिंचाव एवं गति के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिए तनाबों का नाम बुलंद आवाज़ में लेते हैं और ख़लासी बहुत तेज़ी से तनाबों को खींच लेते हैं और बादबानों को दुरुस्त करते हैं।

पोत में पाँच दर्जे होते हैं। सबसे ऊपर का दर्जा जो पोत के पीछे होता है वह कप्तान और उसके उप कप्तान के लिए होता है। और अन्य गण्यमान्यों का आसन इसी में होता है। दूसरे वर्ग में एक भाग रसोई घर के लिए होता है और मध्य वर्ग ख़लासियों के लिए विशेष है। इसमें लटकते हुए झूले होते हैं जिनमें ख़लासी लेटते हैं। पोत के दोनों किनारों और बग़ली भाग में तोपें फिट होती हैं। तीसरे भाग में खाने-पीने का भंडार होता है और चौथे भाग में व्यावसायिक सामग्रियाँ रखी जाती हैं। और पाँचवें भाग में जो नीचे होता है पोत को वज़नी रखने के लिए पत्थर के टुकड़े रखे जाते हैं। जब पोत समुद्र की भाँपों की गर्मी से पसीजता है तो इसके अंदर पानी जमा हो जाता है। उस समय चापा नल के द्वारा पानी को ऊपर खींचकर बाहर फेंक देते हैं। चूँकि पोत के तख़्ते एक दूसरे के साथ बहुत मज़बूती से जुड़े होते हैं उनके सुराख़ों से पानी बाहर नहीं निकल सकता है। तेज़ हवाओं के समय समुद्र की धाराएँ जब पोत के नीचले भोग से टकराती हैं तो तराक़-तराक़ की आवाज़ उत्पन्न होती है। इससे बहुत कष्ठ होता है क्योंकि पूरा पोत गतिमान होता है और मालूम होता है जैसे भूकंप आ गया हो। अनभिज्ञ यात्री सोचते हैं कि अब पोत टूट जाएगी। मुझपर भी यह स्थिति गुज़री है। परंतु जब असल हाल मालूम हो गया तो मुझे इत्मीनान हुआ। जब पोत टेढ़ा-मेढ़ा चलता है और पानी की धाराएँ पोत के दोनों बग़लों में थपेड़े मारती हैं, उस समय पानी ऊपर आ जाता है और सुराख़ों से बाहर चला जाता है और पोत में कोई व्यवधान पैदा नहीं होता।

हवा की क़िस्में उनका लाभ-हानि

जो हवा पोत के पीछे से आती है यह पिछले बादबानों पर अधिक प्रभाव डालती है और अगले बादबानों पर कम। किसी समय कुछ भी प्रभाव नहीं डालती। पिछे वाली हवा पोत को गति देती है और उसे नीचे-ऊपर कर देती है। जिससे लोगों को बहुत कष्ट होता है। परंतु किनारे की हवा जो कोने वाली हवा है, चाहे बाईं ओर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और वार्षिक व्यय, मंज़िल, स्थान, घटना और दुर्घटना और ज़मीनी और आकाशीय आपदा, सब का हाल अंकित करते हैं।

पोतों की क़िस्में

जैसा कि प्रसिद्ध है एक बादबान (पाल) वाले पोत को सेल्फ़ कहते हैं और दो बादबान हो तो गुराब कहा जाता है और छः बादबानों को पोत का नाम दिया जाता है। पोत के नीचे की लकड़ी जिसको डोल कहते हैं, बहुत मोटी और मज़बूत होती है। आँधी चाहे जितनी भयंकर हो वह टूटती नहीं और उसके ऊपर बीच की लकड़ी डोल से पतली होती है और टूट भी जाती है। इसलिए पोत के रक्षक जब आकाश पर धूल देखते हैं तो तेज़ हवा और आँधी के भय से सभी ऊँचे बादबानों को नीचे कर देते हैं। परंतु नीचे के बादबान की लकड़ी उसी तरह रहने देते हैं संयोगवश यदि अँधेरी रात में बरसने वाला बादल घिर आए तो सावधानी नहीं कर सकेंगे और अचानक आँधी आ जाए तो दोनों ऊपर की लकड़ी टूट जाएँगी। अतएव वापसी की यात्रा में पोत करापट्टी में यह स्थिति पेश आई और मुझको उससे दो-चार होना पड़ा। चूँकि लकड़ी और दूसरा सामान पोत में मौजूद रहता है अगर ज़रूरत पड़े तो मरम्मत कर लेते हैं। और पोत के चलने में व्यवधान उत्पन्न नहीं होता है और बादबान के टूटने से पोत के डूब जाने का ख़तरा नहीं होता। क्योंकि पुस्तकों में लिखा है कि पोत की बनावट मुर्ग़ी के सीने की हड्डियों जैसी होती है। इसको दुनिया में पहली बार पैग़म्बर हज़रम नूह अलैहिस्सलाम ने देवदूत हज़रत जिबरईल के निर्देश के अनुरूप ईजाद किया था। हमारे देश की नौकाओं की तरह जो जहाज़ इस तरह बनाया गया है, वह नहीं डूबता, हमारे देश की नौकाएँ भंकर तेज़ हवाओं और आँधियों में न पलटती हैं और न ही डूबती हैं। पोत के बादबान मज़बूत रस्सियों से बँधे होते हैं। तनाबों (रस्सियों) और बादबानों (पालों) के अलग-अलग नाम रख छोड़े हैं। जब पोत की गति और हवा का रुख़ अनुकूल नहीं होते और हवा बादबान को कभी टेढा और कभी सीधा और कुछ को बराबर कर देती है तो कुछ बादबानों को नीचे उतार लेते हैं। कप्तान, उप कप्तान और नाविक सभी बारी-बारी बादबानों पर नज़र रखते हैं और बादबानों के खिंचाव एवं गति के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिए तनाबों का नाम बुलंद आवाज़ में लेते हैं और ख़लासी बहुत तेज़ी से तनाबों को खींच लेते हैं और बादबानों को दुरुस्त करते हैं।

पोत में पाँच दर्जे होते हैं। सबसे ऊपर का दर्जा जो पोत के पीछे होता है वह कप्तान और उसके उप कप्तान के लिए होता है। और अन्य गण्यमान्यों का आसन इसी में होता है। दूसरे वर्ग में एक भाग रसोई घर के लिए होता है और मध्य वर्ग ख़लासियों के लिए विशेष है। इसमें लटकते हुए झूले होते हैं जिनमें ख़लासी लेटते हैं। पोत के दोनों किनारों और बग़ली भाग में तोपें फिट होती हैं। तीसरे भाग में खाने-पीने का भंडार होता है और चौथे भाग में व्यावसायिक सामग्रियाँ रखी जाती हैं। और पाँचवें भाग में जो नीचे होता है पोत को वज़नी रखने के लिए पत्थर के टुकड़े रखे जाते हैं। जब पोत समुद्र की भाँपों की गर्मी से पसीजता है तो इसके अंदर पानी जमा हो जाता है। उस समय चापा नल के द्वारा पानी को ऊपर खींचकर बाहर फेंक देते हैं। चूँकि पोत के तख़्ते एक दूसरे के साथ बहुत मज़बूती से जुड़े होते हैं उनके सुराख़ों से पानी बाहर नहीं निकल सकता है। तेज़ हवाओं के समय समुद्र की धाराएँ जब पोत के नीचले भोग से टकराती हैं तो तराक़-तराक़ की आवाज़ उत्पन्न होती है। इससे बहुत कष्ठ होता है क्योंकि पूरा पोत गतिमान होता है और मालूम होता है जैसे भूकंप आ गया हो। अनभिज्ञ यात्री सोचते हैं कि अब पोत टूट जाएगी। मुझपर भी यह स्थिति गुज़री है। परंतु जब असल हाल मालूम हो गया तो मुझे इत्मीनान हुआ। जब पोत टेढ़ा-मेढ़ा चलता है और पानी की धाराएँ पोत के दोनों बग़लों में थपेड़े मारती हैं, उस समय पानी ऊपर आ जाता है और सुराख़ों से बाहर चला जाता है और पोत में कोई व्यवधान पैदा नहीं होता।

हवा की क़िस्में उनका लाभ-हानि

जो हवा पोत के पीछे से आती है यह पिछले बादबानों पर अधिक प्रभाव डालती है और अगले बादबानों पर कम। किसी समय कुछ भी प्रभाव नहीं डालती। पिछे वाली हवा पोत को गति देती है और उसे नीचे-ऊपर कर देती है। जिससे लोगों को बहुत कष्ट होता है। परंतु किनारे की हवा जो कोने वाली हवा है, चाहे बाईं ओर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से आए या फिर दाईं ओर से वह सब हवाओं से अच्छी है। इस स्थिति में वह हवा पोत को तेज़ चलाती है। और पोत को हिलाती और गति नहीं देती। परंतु इसकी वजह से पोत का एक किनारा ऊपर हो जाता है और दूसरा किनारा नीचे झुक जाता है और समुद्र के पानी से एक-दो हाथ करीब हो जाता है। पहली बार यह देखकर आभास हुआ कि डूब जाने में कोई कसर नहीं रह गई, शायद पोत पलट जाए और डूब जाए। कप्तान सुईटन ने कहा कि यह तुम्हारे देश का नाव नहीं कि डूब जाए। जो हवा बाईं ओर से आती है वह पीछे की विरोधी हवा सें बेहतर है इससे कोई नुक़्सान नहीं होता। लेकिन विरोधी हवा जो सामने से आती है और मध्यम दर्जा की हवा है टेढ़ी-मेढ़ी होकर साँप की रफ़्तार से चलती है और थोड़ा रास्ता तय करती है परंतु वास्तव में इसके द्वारा नुक़्सान नहीं होता है यानी पोत पीछे नहीं होता। अतएव देखा गया है कि एक दूसरे के विरूद्ध दिशा में चलने वाले पोत एक दूसरे के बराबर एक दूसरे से मोतिल नहीं होते लेकिन एक के अनुकूल आसानी से शीघ्र गुज़र जाता है। और दूसरा विरोधी होता है, जो कठिनाई और धीरे से गुज़रता है लेकिन अगर विरोधी हवा बहुत तेज़ हो तो हज़ार पाँच सौ मील का मार्ग पीछे ढकेल दिया जाता है और यह मार्ग का बहुत बड़ा व्यवधान होता है। हम ईश्वर से पनाह माँगते हैं यदि भयंकर आँधी चाहे आगे से आई हो या पीछे से उत्पन्न हुई हो तो वह दो दिन का मार्ग फिर पीछे ढकेल देती है उस समय जब आँधी के कारण धूल में रात और दिन एक प्रकार के होते हैं और किसी द्वीप का थल नज़र नहीं आता तो अगर पोत को पानी के अंदर गुप्त किसी ख़तरे की जगह का पता नहीं चलता है या ऐसी दिशा में चला जाता है जिधर पोत नहीं जाते और न उसका उल्लेख दैनिकी-पुस्तक में होता है तो फिर पोत टूट-फूटकर तबाह हो जाता है।

यदि पोत किसी दिशा में एक बार गया हो और उस ओर के ख़तरों से अवगत हो और उसका हाल दैनिकी और मार्गों के नक़्शे में मौजूद हो तो फ़ौरन पोत को उस ओर से दूसरी दिशा में चलाते हैं और ख़तरे की जगह से निकाल लेते हैं। और आँधी समाप्त हो जाने के बाद कम्पास की सहायता से असल रास्ते पर ले आते हैं। परंतु यदि अवधि लंबी हो जाए और पोत के बादबान टूट-फूट जाएँ और खाद्य-सामग्री समाप्त हो जाएँ और करीब में कोई द्वीप भी न हो तो फिर मृत्यु से दो-चार होना पड़ता है। इस प्रकार की कई घटनाएँ सुनने में आई हैं। इनमें से एक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घटना यह है कि सिराजुद्दौला और अँग्रेज़ों के युद्ध के बाद जब कलकत्ता में नया क़िला बनाया गया तो एक सौ पचास तोपें, नए क़िले में लगाने के लिए बहुत बड़े पोत पर लादी गईं और साथ में पाँच सौ अँग्रेज़ और एक कप्तान अन्य कर्मियों के साथ उस पोत पर सवार होकर बर्तानिया से भारत आ रहे थे। जब वह पोत काफ़ के स्थान के उस ओर पहुँचा तो समुद्र में तूफ़ान आ गया और पोत एक चट्टान से टकराया और टुकड़े-टुकड़े हो गया। मात्र साठ व्यक्ति लकड़ी के तख़्तों के सहारे और कुछ तैरकर तट तक पहुँचे और शेष सभी डूब गए। व्यावसायिक सामग्री के संदूक़ और लकड़ी के तख़्ते, शराब की बोतलें और दूसरी चीज़ें समुद्र के थपेड़ों से किनारे आ गईं। चूँकि उस समय हवा साफ़ थी धूप की गर्मी से अर्द्ध मरे लोगों में जब थोड़ी शक्ति पैदा हुई जब वे लोग जीवन रक्षक वस्तुओं को उठा-उठाकर सूखे में ले आए। उन लोगों में एक महिला भी थी जब उसने किनारे आकर अपने पति का शव देखा तो ज़ोर से एक आह भरी और उसके प्राण निकल गए। थल का यह भाग जहाँ वे लोग ठहरे थे वास्तव में यह एक पहाड़ी चट्टान जैसा स्थान था जो दस मील लंबा और चौड़ा था। वहाँ किसी आदमी का नाम और निशान नहीं था। अलबत्ता जलपक्षी की बाहुल्यता थी। उनकी बाहुलता की यह स्थिति है कि उनकी बीट ज़मीन से दो हाथ ऊँची हो गई थी। क़िस्सा यह कि उन बचे हुए लोगों ने दिन-रात मेहनत करके सोलह दिनों में लकड़ी के तख़्तों का नाव तैया कर लिया और किसी न किसी तरह पंद्रह दिनों में मद्रास के तट पर पहुँचे। ग़रज़ यह कि बर्तानिया के लोग जहाज़रानी की कला में अपनी निपुणता के कारण सब का मार्ग-दशर्न करते हैं। और यह कठिन और ख़तरों से भरे हुए कार्य अपने साहस और वीरता से संपन्न करते हैं। यह कार्य उसी क़ौम के दम से पूरे होते हैं। किसी दूसरी क़ौम के बस की बात नहीं है। अतएव आँधी की तीव्रता के समय तनाबों को सीधा करने के लिए और बादबानों को नीचे उतारने के लिए दूसरे और तीसरे मस्तूलों (मरुत्पटों) पर चढ़कर हवा की तेज़ी के बावजूद पतली रस्सियों पर वे पैर रखकर करतबबाज़ों, शोख़ और फुर्तिले बंदरों की तरह काम करते हैं और कभी अंधेरी रात में चमगादड़ों की तरह रस्सियों पर लटक जाते हैं। और ख़तरों की बिल्कुल परवाह नहीं करते हैं। बर्तानिया से वापसी के समय यह दृश्य देखने में आए। एक रात को आँधी का ज़ोर हुआ और ऊपर के तीनों मस्तूल टूट गए। एक गोरा जो तीसरे बादबान की लकड़ी के ऊपर था बादबान सहित समुद्र में गिर गया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से आए या फिर दाईं ओर से वह सब हवाओं से अच्छी है। इस स्थिति में वह हवा पोत को तेज़ चलाती है। और पोत को हिलाती और गति नहीं देती। परंतु इसकी वजह से पोत का एक किनारा ऊपर हो जाता है और दूसरा किनारा नीचे झुक जाता है और समुद्र के पानी से एक-दो हाथ करीब हो जाता है। पहली बार यह देखकर आभास हुआ कि डूब जाने में कोई कसर नहीं रह गई, शायद पोत पलट जाए और डूब जाए। कप्तान सुईटन ने कहा कि यह तुम्हारे देश का नाव नहीं कि डूब जाए। जो हवा बाईं ओर से आती है वह पीछे की विरोधी हवा सें बेहतर है इससे कोई नुक़्सान नहीं होता। लेकिन विरोधी हवा जो सामने से आती है और मध्यम दर्जा की हवा है टेढ़ी-मेढ़ी होकर साँप की रफ़्तार से चलती है और थोड़ा रास्ता तय करती है परंतु वास्तव में इसके द्वारा नुक़्सान नहीं होता है यानी पोत पीछे नहीं होता। अतएव देखा गया है कि एक दूसरे के विरूद्ध दिशा में चलने वाले पोत एक दूसरे के बराबर एक दूसरे से मोतिल नहीं होते लेकिन एक के अनुकूल आसानी से शीघ्र गुज़र जाता है। और दूसरा विरोधी होता है, जो कठिनाई और धीरे से गुज़रता है लेकिन अगर विरोधी हवा बहुत तेज़ हो तो हज़ार पाँच सौ मील का मार्ग पीछे ढकेल दिया जाता है और यह मार्ग का बहुत बड़ा व्यवधान होता है। हम ईश्वर से पनाह माँगते हैं यदि भयंकर आँधी चाहे आगे से आई हो या पीछे से उत्पन्न हुई हो तो वह दो दिन का मार्ग फिर पीछे ढकेल देती है उस समय जब आँधी के कारण धूल में रात और दिन एक प्रकार के होते हैं और किसी द्वीप का थल नज़र नहीं आता तो अगर पोत को पानी के अंदर गुप्त किसी ख़तरे की जगह का पता नहीं चलता है या ऐसी दिशा में चला जाता है जिधर पोत नहीं जाते और न उसका उल्लेख दैनिकी-पुस्तक में होता है तो फिर पोत टूट-फूटकर तबाह हो जाता है।

यदि पोत किसी दिशा में एक बार गया हो और उस ओर के ख़तरों से अवगत हो और उसका हाल दैनिकी और मार्गों के नक़्शे में मौजूद हो तो फ़ौरन पोत को उस ओर से दूसरी दिशा में चलाते हैं और ख़तरे की जगह से निकाल लेते हैं। और आँधी समाप्त हो जाने के बाद कम्पास की सहायता से असल रास्ते पर ले आते हैं। परंतु यदि अवधि लंबी हो जाए और पोत के बादबान टूट-फूट जाएँ और खाद्य-सामग्री समाप्त हो जाएँ और करीब में कोई द्वीप भी न हो तो फिर मृत्यु से दो-चार होना पड़ता है। इस प्रकार की कई घटनाएँ सुनने में आई हैं। इनमें से एक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घटना यह है कि सिराजुद्दौला और अँग्रेज़ों के युद्ध के बाद जब कलकत्ता में नया क़िला बनाया गया तो एक सौ पचास तोपें, नए क़िले में लगाने के लिए बहुत बड़े पोत पर लादी गईं और साथ में पाँच सौ अँग्रेज़ और एक कप्तान अन्य कर्मियों के साथ उस पोत पर सवार होकर बर्तानिया से भारत आ रहे थे। जब वह पोत काफ़ के स्थान के उस ओर पहुँचा तो समुद्र में तूफ़ान आ गया और पोत एक चट्टान से टकराया और टुकड़े-टुकड़े हो गया। मात्र साठ व्यक्ति लकड़ी के तख़्तों के सहारे और कुछ तैरकर तट तक पहुँचे और शेष सभी डूब गए। व्यावसायिक सामग्री के संदूक़ और लकड़ी के तख़्ते, शराब की बोतलें और दूसरी चीज़ें समुद्र के थपेड़ों से किनारे आ गईं। चूँकि उस समय हवा साफ़ थी धूप की गर्मी से अर्द्ध मरे लोगों में जब थोड़ी शक्ति पैदा हुई जब वे लोग जीवन रक्षक वस्तुओं को उठा-उठाकर सूखे में ले आए। उन लोगों में एक महिला भी थी जब उसने किनारे आकर अपने पति का शव देखा तो ज़ोर से एक आह भरी और उसके प्राण निकल गए। थल का यह भाग जहाँ वे लोग ठहरे थे वास्तव में यह एक पहाड़ी चट्टान जैसा स्थान था जो दस मील लंबा और चौड़ा था। वहाँ किसी आदमी का नाम और निशान नहीं था। अलबत्ता जलपक्षी की बाहुल्यता थी। उनकी बाहुलता की यह स्थिति है कि उनकी बीट ज़मीन से दो हाथ ऊँची हो गई थी। क़िस्सा यह कि उन बचे हुए लोगों ने दिन-रात मेहनत करके सोलह दिनों में लकड़ी के तख़्तों का नाव तैया कर लिया और किसी न किसी तरह पंद्रह दिनों में मद्रास के तट पर पहुँचे। ग़रज़ यह कि बर्तानिया के लोग जहाज़रानी की कला में अपनी निपुणता के कारण सब का मार्ग-दशर्न करते हैं। और यह कठिन और ख़तरों से भरे हुए कार्य अपने साहस और वीरता से संपन्न करते हैं। यह कार्य उसी क़ौम के दम से पूरे होते हैं। किसी दूसरी क़ौम के बस की बात नहीं है। अतएव आँधी की तीव्रता के समय तनाबों को सीधा करने के लिए और बादबानों को नीचे उतारने के लिए दूसरे और तीसरे मस्तूलों (मरुत्पटों) पर चढ़कर हवा की तेज़ी के बावजूद पतली रस्सियों पर वे पैर रखकर करतबबाज़ों, शोख़ और फुर्तिले बंदरों की तरह काम करते हैं और कभी अंधेरी रात में चमगादड़ों की तरह रस्सियों पर लटक जाते हैं। और ख़तरों की बिल्कुल परवाह नहीं करते हैं। बर्तानिया से वापसी के समय यह दृश्य देखने में आए। एक रात को आँधी का ज़ोर हुआ और ऊपर के तीनों मस्तूल टूट गए। एक गोरा जो तीसरे बादबान की लकड़ी के ऊपर था बादबान सहित समुद्र में गिर गया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पोत का चौकीदार जो पोत के किनारे खड़ा था और उसकी ओर देख रहा था, उसने तत्काल एक रस्सी पानी में फेंक दी और पुकारकर कहा कि इसको पकड़ लो उस गोरे ने रस्सी को फ़ौरन मज़बूती से पकड़ लिया और चौकीदार ने उसको ऊपर खींच लिया और उसको कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा। कुछ घन्टों के बाद वह अपने काम में पुनः लग गया। उसी समय अनुकूल हवा चलने लगी।

बादे शुर्त (नाव के अनुकूल चलने वाली हवा) का हाल

उस हवा को बादे शुर्त कहा जाता है, जो आँधी के बाद चलती है। यह हवा अत्यंत मनोरम प्रभात-व्यार की तरह होती है। अँग्रेज़ी भाषा में इसको समर कहते हैं। इस हवा के प्रभाव से पोत में झटका नहीं लगता और पोत के सवारों को आँधी के बाद राहत और सकून प्राप्त होता है। और शैख़ सादी की इस पंक्ति का मतलब यही है कि "बादे शुर्त हमेशा नाव के अनुकूल ही नहीं होती।" कभी ऐसा समय भी होता है कि हवा बिल्कुल नहीं चलती और पोत हर जगह ठहर जाता है। और मस्तूल के बोझिल होने की वजह से कभी इधर और कभी उधर लुढ़कता है और इस समय पानी की सतह एक नीले शीशे की तरह बिल्कुल सपाट और बराबर नज़र आती है। इन स्थितियों में किसी जगह एक सप्ताह और कहीं दो सप्ताह पोत ठहरा रहता है। जिस समय मेरे पोत को इस स्थिति से दो-चार होना पड़ा तो ख़लासी गाने-बजाने लगे और महिलाएँ नाचने लगीं। लेकिन मुझपर अजीब स्थिति उत्पन्न हुई और इस बात से दिल मायूस हुआ कि अगर पोत इस जहग लंबे समय तक ठहरा रहा तो ज़िंदगी दूभर हो जाएगी और अपने वतन कब पहुँचूंगा।

मॉरिशस द्वीप का हाल

हमारा पोत ७ माह शव्वाल ११७८ हिजरी को मॉरिशस द्वीप पहुँचा,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़लासियों के सरदार और सात मुसलमान ख़लासियों से भेंट हुई, यह हुगली के रहने वाले थे। जिन्होंने ईद की नमाज़ अदा की थी। यह सब विवाहित और बाल-बच्चेदार हैं और मॉरिशस में स्थाई निवास धारण कर लिया है और उन्हें वतन की परवाह भी नहीं है। उन लोगों ने फ्रांस की लौंडियों (दासियों) से शादी कर लीं और ग़ुलामों की श्रेणी में शामिल हो गए हैं। अब उनको छोड़ भी नहीं सकते कि वतन वापस जा सकें। मुझे अपने देशवासियों को देखकर प्रसन्नता हुई। उन लोगों की उपस्थिति के कारण सोलह दिन बहुत आराम से वहाँ रहने का अवसर मिला।

मॉरिशस तीन हज़ार मील के क्षेत्रफल में आबाद है। इसके मध्य भाग में पहाड़, जंगल और ग़ैर आबाद ज़मीन है लेकिन पूर्वी तट पर दो-तीन हज़ार बीघा ज़मीन कृषि के योग्य है, जहाँ एक छोटा-सा नगर आबाद है। फ्रांस वालों का किला और कोठी पत्थरों से बनी हुई हैं और इनके चारों ओर बाग़ीचे हैं। हर फ्रांसीसी ने दो-ढ़ाई बीघा ज़मीन को घेर लिया है मानो ज़मीनदारी की सूरत क़ायम की है और काश्तकारी (खेती) करते हैं, एक सौ ग़ुलाम और लौंडियाँ खेती के लिए रखी हैं। साग, सब्ज़ियाँ और फल बड़ी संख्या में पैदा होते हैं, आधा ज़मीनदार स्वयं लेते हैं और आधा कामगार लौंडी और ग़ुलामों को देते हैं। जिन्हें बंगाल, दकन और मालाबार से किशोरावस्था में जहाज़ी मानव विक्रेता से ख़रीद लेते हैं और उनको खेती के काम में लगा देते हैं। इस जगह धान, जवार और गेहूँ इत्यादि अन्न पैदा नहीं होते हैं। धनी लोग गेहूँ और चावल बंगाल और अन्य देशों से लाकर काम चलाते है। ग़रीबों और ग़ुलामों के लिए भत्ता है जिसकी दाल बनाकर खाते हैं और एक वृक्ष की जड़ का आटा बनाकर रोटी बनाते हैं। यह जड़ मूली की तरह होती है। मैंने इसकी रोटी का एक टुकड़ा ज़ुबान पर रखा था, उसका स्वाद न मीठा न नमकीन और न खट्टा था। आम, तरबूज़ और ककड़ी और ख़र्बूज़े इत्यादि बंगाल के फल चैत माह में ख़लासियों के द्वारा मिल जाते हैं। अतएव वहाँ पाव भर और आधा सेर वज़न के आम बिना रेशा वाले स्वादिष्ट खाने में आए जो देखने में पीले और अंदर से नीले थे। आम की यह किस्म बंगाल में कम नज़र आई। काग़ज़ी नीबू और लाल मिर्च बहुत छोटी होती है। ग़रीब लोग जंगल से तोड़कर लाते हैं और बाज़ार में बेचते हैं। इस द्वीप में पैसे और कौड़ी का रिवाज नहीं है। सौ रुपया से एक रुपया और चार आने तक के काग़ज़ी नोट प्रचलित हैं, उन्हीं से बाज़ारों में ख़रीदारी होती है। चूँकि यह स्थान ठंडा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है और नमी बहुत है। मिट्टी में रेत मिली हुई है इसलिए मिट्टी और उसकी बनी ईंट मज़बूत नहीं होती। इसलिए मकानात लकड़ी के बनाते हैं। घर के चारों ओर दीवार की जगह तख़्ताबंदी करते हैं और भवन का आँगन भी तख़्ताबंद होता है। और ज़मीन से एक या दो हाथ ऊँचा होता है। इसको मचान के रूप में बनाते हैं। तख़्तों के नीचे पाये देते हैं चूँकि घास वहाँ दुर्लभ है इसलिए भवन की छत लकड़ी के तख़्तों से खपरैल की तरह बनाते हैं। एक तख़्ता दूसरे तख़्ता पर तह-ब-तह रखेते हैं और उनको लोहे की कीलों से जड़ देते हैं, पानी बरसता तो अंदर टपकता नहीं है। एक मकान एक सौ पचास वर्षों तक मरम्मत के क़ाबिल नहीं होता। आश्चर्यजनक बात यह है कि भवन की बुनियाद लकड़ी के तख़्तों पर टिकी है। जिस प्रकार पाईं गाड़ी को खींचकर क़रीब या दूर ले जा सकते हैं। यह द्वीप अत्यंत केंद्र के स्थान में स्थित है। तीन ओर से वीरान है और पोत का वहाँ से गुज़रना संभव नहीं है। दूसरा मार्ग जो पूरब की ओर है उस मार्ग में भी तीन मील का वीराना ख़तरनाक है। बड़ी मेहनत और मुशक़्क़्त से पोत को उस स्थान से निकालते हैं। अनभिज्ञ लोगों का वहाँ तक पहुँच पाना कठिन है। इसलिए पूर्व काल में जब अँग्रेज़ों और फ्रांसीसियों के बीच बारह वर्ष तक युद्ध जारी रहा तो अँग्रेज़ों ने फ्रांस से संबंध रखने वाले सारे द्वीपों पर विजय प्राप्त कर लिया था मगर इस द्वीप पर क़ब्ज़ा न कर सके। कहते हैं कि अँग्रेज़ों के युद्धक पोत का कप्तान औदरमान की गिनती अत्यंत अनुभवी सरदारों में किया जाता था। उसने कई बार इस द्वीप पर आक्रमण किया लेकिन विजय प्राप्त न कर सका। कहते हैं कि इस द्वीप को पहले पुर्तगालियों ने आबाद किया था। चूँकि इसमें अजगर, साँप और बिच्छू बहुत थे। लोग आबाद न हो सके। इसलिए फ्रांस वालों के लिए छोड़ दिया। फ्रांसीसी पादरियों ने जादू-मंत्र के द्वारा साँप और बिच्छुओं को एक स्थान पर जमा किया और नावों में लादकर वहाँ से तीन मील दूर ले जाकर समुद्र में डाल दिया। अतएव उस तिथि से साँपों और बिच्छुओं का द्वीप में अस्तित्व भी न रहा। वास्तविक स्थिति ईश्वर जानता है। इस द्वीप के आस-पास में मछलियाँ बहुत हैं। काँटे और जाल से पकड़ते हैं। कोई मछली बंगाल की मछलियों की तरह नज़र नहीं आई। यद्यपि कुछ कवई और सरनपोठा से रंग में मिलती चुलती हैं परंतु उनका मुँह बहुत बड़ा और चौड़ा होता है। इनमें पोठा सुंदर रंग की और बहुत स्वादिष्ट होती है। इसका रंग उजला है और इसपर लाल रंग के बिंदु पड़े हुए होते हैं। दूसरी मछलियाँ तवानी और दमवी इत्यादी की तरह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी नज़र आईं जो स्वाद में बहुत सुस्वादु और ग्राह्य हैं। जिस दिन मैं इस द्वीप में दाख़िल हुआ, उसके दूसरे दिन से बारिश और तेज़ हवाओं का सिलसिला शुरू हुआ। तीन-चार रोज़ भयंकर आँधी का कहर बर्पा रहा। फ्रांस के दो पोत जिनपर अन्न लदा था और उनका लंगर मज़बूत था। दस मील तक पोत को लंगर सहित धीरे-धीरे खीचते हुए तट के निकट वीराने में पहुँचा दिया और तबाह कर दिया। हमारे पोत को भी आँधी के खंडर के क़रीब स्पेनी क़ौम के युद्धक पोत के पास पहुँचा दिया जो दुर्घटना से दो-चार हो चुका था। शुक्र है ईश्वर की अनुकंपा और मेहनतकशों (श्रमजीवियों) की कोशिश से सकुशल गुज़र गई। परंतु स्पेन के पोत के नीचले हिस्से के तख़्तों के ऊपर से गुज़रा तो दो मंज़िलों की छोटी नाव जो पोत के ऊपर थी टूट गई। तख़्ते टुकड़े-टुकड़े हो गए। सोलह दिन पोत की मरम्मत के कारण वहाँ ठहरे रहे। इस आँधी में प्रायः पोत जो आने या जाने वाले थे तबाह हालत में पहुँचे।

इसके बाद बर्तानिया तक इतनी भयंकर आँधी नहीं देखी और न कोई मुसीबत पेश आई। कप्तान सुईटन बहादुर और श्री बेकाक एक रोज़ मज़ाक़ के रूप में कहने लगे कि तुम्हारी बर्कत (नेकी) से हजाज़ को ख़तरा पेश नहीं आया। मैंने जवाब दिया कि मेरी क्या बर्कत हो सकती है, लेकिन ईश्वर जो वास्तविक रक्षक है, उसने अपने बंदों की उम्मीद की खेती को हराभरा रखा।

मनदिला द्वीप का उल्लेख और अँग्रेज़ों और स्पेनियों का संबंध

समुद्र में द्वीपों की संख्या बहुत है, कतिपय आबाद और कुछ वीरान हैं। इनमें जो प्रसिद्ध हैं उनका संक्षिप्त उल्लेख किया जाएगा। मंदेला द्वीप बंगाल के दक्षिण और पूरब की दिशा में दो माह की यात्रा के बराबर की दूरी पर स्थित है और वहाँ स्पेन का शासन है। बहुत आबाद द्वीप है। वहाँ का किला बहुत मज़बूत है। प्रसिद्ध है कि पूर्व काल में स्पेन ने फ्रांस की सहायता से बारह वर्षों तक अँग्रेज़ों से भयंकर युद्ध जारी रखा। अँग्रेज़ क़ौम ने सेना की कमी के बावजूद उक्त दोनों देशों की आठ गुना से अधिक सेना से मुक़ाबला किया और उन्हें पराजित किया। विवश होकर उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुलह कर ली। इस युद्ध में बंगाल और दकन की कोठियाँ और सभी द्वीप फ़तह कर लिए। इसके अतिरिक्त उनमें क़िला मंदेला भी है। जिसके हालात विचित्र हैं। कहते हैं कि अँग्रेज़ कुछ वर्षों से इसको फ़तह करना चाहते थे। परंतु विरोधी सेना के अस्त्र-शस्त्र की अधिकता और क़िला की मज़बूती के कारण विजय प्राप्त नहीं कर से। अंततः दस-बारह युद्ध पोतों की सहायता से स्पेन के पोतों को पराजित किया और क़िला की चारों दिशाओं से नाकाबंदी जारी रखी। थल और जल दोनों ओर से तोपों के द्वारा आक्रमण किया और क़िला में रहने वालों को दम मारने की फ़ुर्सत नहीं दी। अंततः तोप की मार से क़िला की एक दीवार को तोड़ दिया। इसमें इतना बड़ा छिद्र हो गया कि दो-तीन आदमी सिर झुकाकर इसमें प्रवेश कर सकते थे। इसके बाद ज़ोरदार आक्रमण कर दिया जिसमें बहुत लोग मारे गए और अधिकांश घायल हुए। क़िला के अंदर बंदूक़ों और संगीनों से युद्ध हुआ। अँग्रेज़ भारी पड़े और क़िला फ़तह हो गया। अँग्रेज़ों की ऐसी वीरता का हाल बहुत देखा और सुना है।

पीकू द्वीप का हाल

पीकू द्वीप बंगाल के दक्षिण में पंद्रह दिनों के रास्ते पर प्राचीन काल से आबाद है। शैख़ जमालुद्दीन हुसैन अंजू ने अपनी पुस्तक 'रौज़तुल ताहरीन' में इस द्वीप के हालात लिखे हैं। शैख़ अंजू अकबर बादशाह के उमरा (विशिष्टों) में थे उनको अकबर ने आदिल शाह वाली बेजापुर के पास अपना दूत बनाकर भेजा था। वे बहुत दिनों तक उस देश में रहे। उन्होंने दकन के हालात पर जो पुस्तक लिखी उसमें द्वीपों के हालात भी लिखे हैं। उन्होंने पीकू द्वीप के हालात में लिखा है कि यहाँ के लोग पहले किसी धर्म के पाबंद नहीं थे। न हलाल और हराम में फ़र्क़ जानते थे। संयोग से सैयदों के परिवार से एक बुज़ुर्ग किसी व्यावसायिक पोत पर इस द्वीप में पहुँचे। उन्होंने वहाँ के निवासियों के सामने इस्लामी जीवन-पद्धति पेश की। नमाज़, रोज़ा, कुरान का पाठ और अज़ान इत्यादि के तरीक़े बताए। कुरान के पाठ और इस्लामी इबादत (प्रार्थना) के तरीक़ों से वे लोग बहुत प्रभावित हुए। उन लोगों ने इस्लामी शिक्षा शैख़ अंजू से प्राप्त करना शुरू किया। वहाँ के विशिष्टों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शैख़ को, जो स्वच्छ छवि के हैं सात वर्षों तक द्वीप में रोके रखें। उस समय से सैयद जी उस कौम के बंदी हैं। इस्लामी शिक्षा के प्रकाशन का सिलसिला जारी है। इस सैयद साहब के संबंध में यह क़िस्सा प्रसिद्ध है कि उन्होंने एक परी को अपने वश में रखकर उसे सात वर्षों तक अपनी सेवा में रखा। उससे बच्चे भी पैदा हुए। अंततः उस परी ने अपने उड़ने वाले वस्त्र को धारण किया और बेवफ़ाई कर बच्चों को छोड़कर प्रस्थान कर गई। यह क़िस्सा 'रौज़तुल ताहिरीन' में विस्तारपूर्वक अंकित है। बंगाल में यह क़िस्सा अद्भुत क़िस्सों की तरह प्रसिद्ध है। वास्तविक हाल ईश्वर ही बेहतर जानने वाला है। इस द्वीप में चाय और कतिपय अन्न पैदा होते हैं, उनके अतिरिक्त आम, नारियल, तरबूज़, ककड़ी और खीरे भी होते हैं। जानवरों में बैल, बकरी, हिरन और पक्षियों में मुर्ग़ और बत्तख़ बहुत हैं। द्वीप के मध्य में दरिया है। इसके दूसरी ओर काले रंग के देव स्वभाव समुदाय आबाद है। उसको सिंह कहा जाता है। उनका कोई धर्म नहीं। कभी-कभी दरिया पार करके द्वीप के लोगों पर आक्रमण कर देते हैं। अतएव दोनों के बीच प्रायः लड़ाई होती रहती है। इस देश के जंगलों और पहाड़ों के अंदर सागवान की लकड़ी और कई प्रकार के हिरन, बैल, घोड़े और भैंसें बहुल्यता से मौजूद हैं। वहाँ के लोगों का भोजन कच्चा मांस है और वस्त्र कच्चे चमड़े से बनाते हैं। 'रौज़तुल ताहिरीन' में लिखा है कि इस देश के काले लोगों में यह रस्म है कि यदि किसी को बुख़ार आता है तो वह बिस्तर पर सो जाता है। मुहल्ले के लोग एकत्र होकर खुशी की महफ़िल जमाते हैं और बुख़ार से पीड़ित उस रोगी को सब मिलकर मार डालते हैं और उसका मांस सबको बराबर-बराबर बाँट दिया जाता है। वहाँ यदि दो आदमी किसी बात पर शर्त लगाते हैं तो उसमें हारने पर अपने शरीर के किसी भाग का मांस काटकर दे देते हैं। एक सेर या पाव भर मांस देकर अपने प्रतिद्वंदी से किए गए वचन को पूरा करते हैं। इसके बाद एक विशेष वृक्ष के पत्तों को पीसकर घाव की जगह लगा देते हैं। दस-बारह दिनों में घाव भर जाता है। और उसका प्रभाव बिल्कुल नहीं रहता। वह जो चाहे खाए और चलना-फिरना बंद न करे। एक अजीब बात यह है कि यह लोग अपने लिंग को एक कील से छेदकर उसमें घुंघरू बाँध देते हैं और घाव पर पिसी हुई पत्ती का लेप बाँध देते हैं। वह अच्छ हो जाता है। संभोग करते समय जब घुंघरू की आवाज़ आती है तो उससे आनंदित होते हैं। स्खलन के बाद लिंग औरत की बच्चादानी में फंस जाता है और अलग नहीं होता, यहाँ तक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि दो-चार घन्टे नर-नारी नीचे-ऊपर होते रहते हैं और मुहल्ले के लोग एकत्र होकर तमाशा देखते हैं। दोनों को खींचकर एक दूसरे अलग करते हैं।

मालद्वीप

यह द्वीप मद्रास के निकट एक किनारे स्थित है। वहाँ का बादशाह हमारे मुल्क के ज़मीनदारों से भी कम हैसियत है। परंतु बादशाह कहलाता है। वहाँ के निवासी निमाज़ पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं और पवित्र कुरान का पाठ करते हैं। वे आस्था की पुस्तकों से अधिक अवगत नहीं हैं। मरूभूमि का देश है। वहाँ कृषि नहीं होती। परंतु नारियल बहुत होता है। लोगों की जीविका नारियल पर है। इसका गुद्दा खाते हैं और इसके तेल से खाना पकाते हैं, जलाने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। घर और उसकी छत सब लकड़ी के तख़्तों और नारियल के पत्तों से मचान की तरह बनाते है। पोत के लंगर के वास्ते पतली और मोटी रस्सियाँ नारियल के रेशे से बनाते हैं। यह वहाँ बड़े पैमाने पर होता है। व्यावसायिक पोत यह चीज़ें मालद्वीप से ख़रीद कर दूसरे देशों में ले जाते हैं। बंगाल और देश के दूसरे भागों में नारियल का तेल वहीं से आता है। वहाँ के लोग छोटी और बड़ी नौकाएँ नारियल के तख़्तों से बनाते हैं। उनमें लोहे की कीलें इस्तेमाल नहीं करते उन की जगह नारियल की रस्सियों से बाँध देते हैं। नाव इसी तरह बनाते हैं कि आँधी से कोई ख़तरा नहीं रहता है। वहाँ के व्यवसायी नारियल और ख़ुर्मा नौकाओं द्वारा व्यावसायिक उद्देश्य से मद्रास और मालाबार ले जाते हैं और वहाँ से चावल, कपड़ा और अन्य सामग्री ख़रीदकर अपने देश लाते हैं। कहा जाता है कि कई हज़ार आबाद और वीरान द्वीप मालद्वीप में शामिल हैं, ख़ुर्मा वहीं पैदा होता है। कौड़ी जमा करने का तरीक़ा यह है कि बादशाह की तरफ़ से वहाँ हज़ार पाँच सौ नौका चलाने वाले नियुक्त हैं। जब समुद्र में ज्वार-भाटा होता है तो कठिन परिश्रम से जल्दी-जल्दी गढ़े बनाए जाते हैं और ज्वार के समय जब समुद्र उफ़ान पर होता है तो ज़िंदा कौड़ियाँ लहरों के थपेड़े से द्वीप के वीरान स्थनों पर चली जाती हैं और भाटा के बाद वह कौड़ियाँ उन गढ़ों में चली जाती हैं। नाविक जल्दी-जल्दी कौड़ियों को नौका में लाद देते हैं और कुछ दिन उनको किसी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गढ़े में जमा करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं। जब उनके अंदर का तत्त्व सूख जाता है तो उन कौड़ियों को गढ़ों से निकालकर बेचने के लिए बंगाल ले जाते हैं या वहाँ व्यवसायियों के हाथों बेच देते हैं।

बल्कास द्वीप

यह द्वीप सभी द्वीपों से अधिक बड़ा है। उसकी लंबाई चौड़ाई बंगाल के बराबर है। बहुत आबाद है। इसके निवासी हबशियों की तरह काले, सशक्त और डील-डौल वाले होते हैं। धर्म और क़ानून से अनभिज्ञ हैं। यहाँ धान और अन्न की कई क़िस्में होती हैं। आम, केला और बंगाल के कई फल बहुत मिलते हैं। बर्तानिया की ओर यात्रा करते समय यह द्वीप दाएँ हाथ पड़ता है और दूर से काला नज़र आता है।

मालाबार द्वीप

मद्रास के निकट प्रसिद्ध द्वीप है। इसको विलायत पोस्ता भी कहते हैं। वहाँ के लोग क्रूप होते हैं, नाक मोटी, चेहरा तेज रहित नज़र आता है। वहाँ के पक्षी हरे होते हैं। इस द्वीप के निवासी कतिपय मुसलमान हैं और कुछ आधे मुसलमान। अधिकतर गुमराह हैं कुछ फ़िरंगियों की काली वंश से हैं। 'रौज़तुल ताहिरीन' में लिखा है कि प्रथम ख़लीफ़ा के काल में अरब से एक सहाबी (मोहम्मद स. के मित्र) जो ईश्वर के प्रेम भावनाओं में लीन थे, उनके दिल में घूमने-फिरने का ख़्याल पैदा हुआ। उन्होंने संसार की यात्रा शुरू की। विभिन्न देशों में जाकर इस्लामी आस्थाओं का प्रचार करते रहे। इसी दौरान अपने सच्चे दिल और दिव्य आत्मा के मार्ग-दर्शन की बदौलत इस देश में पहुँचे। और वहाँ के निवासियों के समक्ष इस्लाम के अरकान (स्तंभों को) प्रस्तुत किए। नमाज़, रोज़ा, अज़ान, इबादत और कुरान के पाठ से उनको प्रभावित किया। उन लोगों को यह बातें पसंद आईं और उनके पास जमा होकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धार्मिक बातें सीखने लगे। और उनसे धर्म के रहस्यों और अन्य तथ्यों के संबंध में प्रश्न करने लगे। वह ज्ञानी सहाबी उन को ईश्वर और रसूल से संबंधित ज़रूरी बातें बताते थे। उनके प्रशनों के उत्तर देते थे। ईश्वर की विशेषताएँ और मोहम्मद स. के हालात उनको सुनाते, धार्मिक आदेशों और पवित्र कुरान के श्लोकों को उन्हें समझाते थे। इसका प्रभाव यह हुआ कि उस देश के आधे लोग इस्लाम में दाख़िल हो गए। परंतु आस-पास के लोग अपने पुराने तकरीक़ें (धर्म) पर क़ायम रहे और पूर्वत् गुमराही के रास्तों पर चलते रहे। उन सहाबी को वह जगह पसंद आई। वहाँ के लोग उनसे बहुत मुहब्बत करते थे और एक लम्हा भी उनसे जुदा होना गवारा नहीं करते थे। उनको अपने यहाँ रोकने के लिए बहुत अधिक आग्रह किया। गुणवान सहाबी ने उन लोगों को हर तरह से इत्मीनान दिलाया और व्यावसायिक पोत पर सवार होकर 'बसरा' पहुँचे। वहाँ से मदीना मुनव्वरा गए और इस द्वीप के हालात सबों को बताए। उनकी ख़ूब प्रशंसाएँ की गईं। वे ख़लीफ़ा से अनुमति प्राप्त कर अपने परिवार के साथ इस द्वीप में वापस आए और स्थाई निवास अख़्तियार किया। इस देश के लोगों ने उनको ईमानदारी और अमानतदारी का नमूना बनाया।

सिलौन द्वीप

यह द्वीप सरांदीप के नाम से प्रसिद्ध है। मद्रास से पचास समुद्री मील की दूरी पर स्थित है। पांडीचरी से निकट है। नाव से समुद्र के किनारे से एक रोज़ में वहाँ पहुँच सकते हैं। यह स्थान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के क़मदों के कारण श्रद्धामयी है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का दीप्त कब्र भी पहाड़र पर स्थित है। (मौलाना आज़ाद बिलग्रामी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सुब्हतुल मर्जान फ़ी आसारे हिंदुस्तान' में भी यही लिखा है। यह द्वीप अब श्रीलंका के नाम से प्रसिद्ध है।) भारत की पुस्तकों में वहाँ के लोगों के सौंदर्य की प्रशंसा की गई है। जो उस ज़माने में ग़लत मालूम होती है क्योंकि उसके विपरीत है। शायद उस ज़माने में सुंदरता रही हो। कहते हैं आदि काल में यह परीज़ादों के रहने की जगह थी। ईश्वर बेहतर जानता है। वहाँ जवाहरात की खान है। इसमें पुलक और पन्ना पाए जाते हैं। यह द्वीप इस समय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत आंबाद है। इसका क्षेत्रफल सात सौ समुद्र मील होगा।

आदमख़ोर (नरभक्षी) द्वीप

इस द्वीप के निवासी हैं तो मनुष्य। परंतु रूप में देवों की तरह हैं। इनका वस्त्र कच्चे चमड़े का और भोजन कच्चा और अर्द्ध जला मांस है। वे मनुष्य का मांस बहुत पसंद करते हैं। इस द्वीप में सोने का खान भी है। लोगों को उनके वज़न के बराबर बदले में सोना देते हैं। वह जब किसी पोत को दूर से देखते हैं तो पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर आग जला देते हैं। यह पोत को अपनी ओर बुलाने का संकेत होता है। जो अनभिज्ञ होता है वह ख़्याल करता है कि यह पोत को बुलाने का संकेत है ताकि वहाँ से मीठा पानी, जलाने की लकड़ी, साग, सब्ज़ी और दूध, दही प्राप्त कर सकें। वह उन चीज़ों की लालच में और उस स्थान को देखने के लिए पोत को ले जाकर किनारे लंगर डाल देते हैं। वे दानव स्वभाव लोग हर ओर से आ-आकर धोका और छल से पोत अपने क़ाबू में कर लेते हैं। और ख़ूब लूट-मार करते हैं। और आदमियों को अपना भोजन बनाते हैं। यह घटना बहुत प्रसिद्ध है कि श्री मोरी बर्तानिया जा रहे थे। उनका पोत आँधी की चपेट में आकर उसी स्थान पर पहुँचा। उन लोगों ने पोत के सभी लोगों को अपना भोजन बनाया। कहते हैं कि पुराने ज़माने में जो जहाज़ इस द्वीप को देखने या कतिपय सामग्री प्राप्त करने के लिए इस द्वीप के किनारे पहुँचता था, जैसा कि बताया गया है वह तबाह हो जाता। उस तिथि से कोई भी जान-बूझकर उस ओर नहीं जाता यदि जाता भी है तो पोत को तट से दूर रखता है और नौका के द्वारा जाकर वस्तुएँ ख़रीद लेता है। जिस किसी को सोना ख़रीदना हुआ तो वह पोत की सवारियों से किसी हत्यारे या अपराधी को मूल्य के बदले में देकर सोना प्राप्त करता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमदख़ोर द्वीप का उल्लेख जो पहले के पड़ोस में है

पहले जिस आमदख़ोर (नरभक्षी) द्वीप का उल्लेख किया गया है। उसके पड़ोस में यह द्वीप स्थित है। इसमें गाय, बैल, भेड़, बकरियाँ और दूध एवं दही बहुत होते हैं। आम और दूसरे फल बहुत हैं। जब कोई पोत इस द्वीप के तट पर लंगर डालता है तो वहाँ के निवासी खाने-पीने की समग्रियों को विषाक्त कर देते थे। और उनको जहाज़ियों के हाथों बेच देते थे। पोत के ख़लासी जो मुद्दतों खाने-पीने की चीज़ें नहीं पाते थे वे उन पर टूट पड़ते थे और खाकर मर जाते थे। पोत के कप्तान ने जब कुछ लोगों की यह हालत देखी तो वह जल्दी से पोत का लंगर उठा दिया और जान बचाकर आगे बढ़ गया। इस घटना से लोग सावधान हो गए और अब उस द्वीप पर कम जाते हैं। और जो जाते हैं वे खाद्य सामग्री जाँच परखकर ख़रीदते हैं। उस जंगली क़ौम ने यह हालत देखकर अब अपनी हरकतें कम कर दी हैं। यदि खाने के लिए उनको कोई आदमी दरकार होता है तो सोना देकर व्यवसाइयों से ख़रीद लेते हैं। मैंने उस आदमख़ोर द्वीप को दूर से देखा है। पहाड़ की चोटी पर आग जल रही थी। इस द्वीप के हालात मैंने श्री मजंदी चक तारलीक और श्री कर्नीकल आदि से सुने हैं।

काफ़ द्वीप के हालात [१]

([१] काफ़ नाम का कोई द्वीप प्रसिद्ध नहीं है। लेखक ने यह नाम संभवतः अफ़्रीक़ा के लिए प्रयोग किया होगा।)

जब मॉरिशस द्वीप से पोत ने लंगर उठाया तो उसका रुख़ पश्चिम की ओर था। एक माह के बाद जब ख़ते इस्तवा (यह वह फ़र्ज़ी रेखा है जो पूरब से पश्चिम तक माना गया है। जब सूर्य इस स्थान पर आता है तो दिन और रात बराबर होते हैं।) के बराबर पहुँचा तो हम गर्मी की शिद्‌दत से बेहाल हो गए। कप्तान सुईटन ने दिशा बताने के लिए मुझे नक़्शा दिखाया कि अरब देश और मुसलमानों का नगर मक्का इस

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान से ठीक उत्तर की ओर है। जब इस स्थान से पोत काफ़ के स्थान पर पहुँचा तो तेज़ और ज़ोरदार हवा के कारण आगे न बढ़ सका और मक्का नगर पाँच सौ मील पीछे रह गया। प्रतिकूल हवा पचीस दिनों तक एक रफ़्तार से चलती रही। सुना है कि इस स्थान पर हमेशा आँधी रहती है। और इस जगह से पोत बहुत कठिनाइयों से गुज़रता है। ग़रज़ कि जब प्रतिकूल हवा कुछ कम हुई तो बहुत कोशिश के बाद काफ़ के क्षेत्र से पोत बाहर निकला और उस जगह से पोत का रुख़ उत्तर-पश्चिम हो गया। चूँकि बर्तानिया का पोत काफ़ में लंगर डालता था। इसलिए वहाँ जो हालात देखे और सुने वे यह हैं कि काफ़ हबश देश के एक कोने में है, जो गोलाई में दक्षिण की ओर समुद्री तट से मिला हुआ है। क्योंकि संसार यहीं तक है। इसके बाद से सात सौ मील तक उत्तर की ओर आबादी नहीं है। जंगल, सुनसान और पहाड़ियाँ हैं। इसके बाद एक दरिया है जिसकी चौड़ाई तीन मील और लंबाई पूरब से पश्चिम तक समुद्र मिली हुई है। इसकी दूरी नहीं मालूम है। सुखाड़ के ज़माने में इसका पानी जाँघ तक नहीं पहुँचता है। इसके दोनों किनारे सूखे और रेतीले हैं। क़ाफ़ देश की सीमा इस दरिया तक है और इस दरिया में एक देव मुवक्किल है जो सीमा की रक्षा करता है। यदि किसी ग़ैर देश का आदमी दरिया को पार करने के उद्देश्य से पानी में पाँव रखता है तो उसी समय दरिया के पानी में उफान पैदा होता है और आँधी उठती है और उसको डुबो देती है। और वही देव उसको खा जाता है। कहा जाता है कि पुराने ज़माने में कुछ आदमी अपनी टूटी-फूटी नौका के साथ इस स्थान पर पहुँचे और पाँव चलकर इसको पार करने लगे, उसी समय दरिया के पानी में उफान आया और सबों को डुबो दिया। उसके बाद दरिया अपनी पूर्व स्थिति में लौट आया। संयोगवश उन लोगों में एक बुज़ुर्ग ईश्वर वाले भी थे। वे दरिया के किनारे दूर खड़े हुए और उसको पार करने में संकोच किया और पानी का जोश देखकर फ़रार हो गए। इस तरह अपनी जान बचाई। उनको रात भर अपने मित्रों से वंचित होने का ग़म रहा। उन्होंने ईश्वर से उसकी कृपा और अनुकंपा के लिए दुआ माँगी, उस रात में सपना देखा और उसके कान में दिव्यवाणी आई कि पानी में पैर मत रखो। लकड़ियों का एक गट्ठर बनाओ और उसपर सवार होकर दरिया पार करो। उन्होंने ऐसा ही किया और इस विधि से उन्होंने दरिया पार किया। और ईश्वर का शुक्रिया अदा किया। जंगल का फल खाकर भूख मिटाई। उसके बाद हबश देश चले गए। वहाँ से अपने देश लौट गए। कहते हैं कि हबश देश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत विशाल है और सात महाद्वीपों की तरह इस देश में सात बादशाह हैं। जो देश समुद्र के किनारे हैं उसके निवासी जंगली और पशु प्रवृत्ति के हैं। इसके बाद जो देश स्थित है उसके निवासी नरभक्षी (आदमख़ोर) हैं। वहाँ सोने की खान भी है। व्यवसाइयों और पोत चालकों से संबंध रखते हैं। सोने के बदले आदमी ख़रीद लेते हैं। विलायती बंदूक़ और चक़माक़ (अग्नि पासान) बहुत पसंद करते हैं। इस देश में एक दरिया बहता है जो समुद्र से मिल जाता है। बर्तानिया के पोतों को इस दरिया में ले जाते हैं और उसके तट पर क्रय-विक्रय करते हैं।

ज़ंगियों का देश

हबश के उत्तर में ज़ंगियों का देश है, जिसका रंग काला, बाल घने और होंठ मोटे होते हैं। वे हबशी के नाम से प्रसिद्ध हैं। हबशी अरब के क़रीब हैं। नजाशी इस देश के बादशाह का नाम है। इस देश का हर व्यक्ति नजाशी कहलाता है। वहाँ के कुछ निवासी काले रंग और सांवले होते हैं और कुछ का रंग गेहुँआ होता है। हबश के बादशाह नजाशी ने हज़रत मोहममद स. की पैग़म्बरी के बाद बादशाहों में सबसे पहले इस्लाम क़बूल किया था। जैसा कि 'रौज़तुस्सफ़ा' और इतिहास की दूसरी पुस्तकों में लिखा है। मुसलमान हमेशा ज़ंगियों से जहाद करते थे और ज़ंगियों के छोटे-बड़े आदमी जो गिरफ़्तार होते थे उनको बेच देते थे। वहाँ से सौदागर उनको ख़रीदकर अन्य देशों में ले जाकर बेच देते थे, जिस ज़माने से अँग्रेज़ों के पोत इस ओर आने लगे हैं। उन्होंने आबद और ग़ैर आबाद द्वीपों पर क़ब्ज़ा कर लिया और उनको आबाद किया। काफ़ वलन्दीज़ी क़ौम के क़ब्ज़ा में आया, उन्होंने समुद्र के किनारे एक सुंदर नगर आबाद किया और तरह-तरह के विलायती और हिंदुस्तानी फलों के बाग़ लगाए। इसलिए वहाँ अंगूर, सेब, बही, आम और केले इत्यादि बहुत मीठे और स्वादिष्ट मिलते हैं और सर्व और शमूशाद आदि के वृक्ष पंक्ति से लगाए हैं और अच्छी तरह सजाए हैं। केले और विलायती फल वहाँ खाने को मिले। कहते हैं कि आबादी से पूर्व काफ़ वीरान था। वहाँ काले रंग के जंगली बनजारे लोग रहते थे। भारतीय नटों की तरह। सात आठ हज़ार मर्द औरतें और बच्चे अपने घोड़े, बैल, बकरी और मुर्ग़ी, कबूतर और बत्तख़ों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को साथ रखते थे। तीन-चार वर्ष एक स्थान पर रहते इसके बाद किसी और तरफ़ चले जाते। उनका वस्त्र कच्चे चमड़े का होता था और भोजन में गाय और बकरियों के दूध जंगली हिरणों का मांस इस्तेमाल करते थे। वे लोग भीमकाय, स्वस्थ और गठीले शरीर वाले थे। दौड़ने में इतना तेज़ और चालाक थे कि जंगली सूअर और हिरणों को आसानी से पकड़ लेते और शेरों से मुक़ाबला करते थे। हाथियों को उनके दाँत प्राप्त करने के लिए मारते हैं। हाथियों का शिकार इस तरह करते हैं। उनकी चारागाह में जगह-जगह गड्ढे खोद देते हैं। जब हाथी जंगल और पहाड़ों से उतरकर नीचे आते हैं और उनके झुण्ड मैदान में चरने लगते हैं, उस समय लोग बंदूक़ें चलाकर और शोर मचाकर उनको हंकाते हैं और गड्ढों की ओर ले जाते हैं, वह हाथी गदहों और अन्य चौपायों की तरह घबराकर बेअख़्तियार उन जानलेवा गड्ढों की ओर दौड़ते हैं और उनमें गिर जाते हैं और कुछ दिनों तक भूखे-प्यासे रहकर मर जाते हैं। वे लोग हाथियों के दाँत निकाल लेते और व्यपारियों के हाथों बेच लेते हैं। इस ज़माने में वहाँ वलंडीज़ियों का अमल-दख़ल है। वे लोग आवा-गमन कम रखते हैं। कुछ लोग वहीं बस गए हैं। वलंडीज़ी बंगाल आदि से बच्चों को ख़रीदकर लाते हैं और इस देश के लोगों से उनका मेल-मिलाप कराते हैं। और औरतों और मर्दों को ख़रीदकर ले जाते हैं और काफ़ में रखते हैं। मेरी मुलाक़ात उनलोगों से हुई वे लोग बंगाली और हिंदी भाषा भूल चुके हैं। हर व्यक्ति संकेत से कुछ बातें कर लेता है। वहाँ के प्रायः हालात उनकी ही ज़ुबानी मालूम हुए। उन्होंने मछली का शिकार करके मुझे दी। उनके ज़रिया आम, इंजीर और अमरूद खाने में आए। वहाँ तेजपत्ता के वृक्ष भी देखे। उनके वृक्ष बाग़ के किनारे लगाते हैं जिनसे बाग़ का हाता बन जाता है। मैं उनकी पत्तियाँ और फल अपने साथ घर लाया था।

सामून द्वीप

सामून द्वीप काफ़ के पश्चिम में स्थित है। एक माह की अवधि में वहाँ पहुँचे परंतु जिस समय हम काफ़ से रवाना हुए उसके चंद दिनों बाद कप्तान सुईटन ने मुझसे कहा कि रोम देश इस स्थान से दक्षिण की ओर स्थित है और इस समय हम मिस्र

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देश के सामने आ गए हैं। सामून से बीस दिनों की दूरी के मार्ग पर है। सामून द्वीप एक ऐसा स्थान है जो तीन सौ मील के वृत्त में स्थित है और पूरा द्वीप पहाड़ी और पत्थरीला है। परंतु इसमें मिट्टी भी मिली हुई है। द्वीप के मध्य में तालाब की तरह एक ढलान वाला स्थान है, जिसमें बारिश का पानी जमा होता है। पोत के लोग मीठा पानी वहाँ से लेते हैं। वहाँ के सभी पत्थर जले हुए और राख का ढेर हैं। जगह-जगह उनके ढेर पड़े हैं। अर्द्ध जले हुए पत्थर ऐसे हैं, जिनको भारत में झामा कहा जाता है। उनकी संख्या बहुत है। प्रबुद्ध फ़िरंगी कहते हैं वहाँ पहाड़ के बीच लाल गंधक का खान था। गंधक की आग ने पत्थरों को जला दिया और कालांतर में इसको राख बना दिया। गंधक की आग की तेज़ी ने पत्थर के पुश्तों (बाँधों) को तोड़ दिया तो ख़ौफ़नाक आवाज़ उत्पन्न हुई और जहाँ-जहाँ पत्थरों के टुकड़े गिरे पुश्ता बन गया। मैंने हर जगह मिट्टी की शकल के ढेर देखे। इस द्वीप के किनारे मछिलयाँ बहुत हैं। उनमें एक छोटी मछली गंधक की तरह है जिसका मुँह बड़ा और रंग काला है। बहुत स्वादिष्ट होती है। पोत के ख़लासियों ने जाल के द्वारा पकड़ीं। कछुए बहुत बड़े होते हैं। उनका वज़न दो मन से भी अधिक होता है। बड़े छाते की तरह। चाँदनी रात में अंडे देने के लिए द्वीप के किनारे रेत पर चले जाते हैं। पोत के गोरे घात लगाकर दूर बैठते हैं। जब कछुए समुद्र के पानी से दूर आ जाते हैं तो उनको भाले से घायल करके रस्सी से उनके पाँव मज़बूती से बाँधकर थोड़ी दूर से उनपर नज़र रखते हैं। इस तरह रात में चालीस-पचास कछुए पकड़कर पोत के लोगों को उनके मांस और अंडों से संतुष्ट कर देते हैं। एक दिन में एक कछुआ जहाज़ियों के भोजन के लिए प्रयाप्त होता है। वह पक्षी जिनका खाना हलाल है मसलन क़ाज़, मुर्ग़, सुर्ख़ाब, कलिंग इत्यादि बहुत हैं। परंतु उनके घोंसले नहीं हैं। इसलिए कि वहाँ वृक्ष, घास, झाड़ियाँ नहीं होती हैं। ज़मीन से भी घास नहीं उगती है तो घोंसला किस चीज़ से बनाएँ। जानवरों का हर जोड़ा पहाड़ के ऊपर पत्थर का पुश्ता बनाकर उस जगह रहना-सहना अख़्तियार करता है और उसी जगह बैठकर पंख साफ़ करते और अंडे देकर बच्चे निकालते हैं। अजीब बात यह है कि जब तक इन जानवरों ने आदमी की सूरत नहीं देखी थी और लोगों के हाथों यातनाओं से पीड़ीत नहीं हुए थे न कोई नुक़्सान उठाया था उस समय तक इंसान को भी पशुओं में समझते थे और उससे नफ़रत नहीं करते थे। उस ज़माने में पोतों के आवा-गमन के कारण उन्होंने आदमी की सूरत देखी लेकिन उनका पूरा विरोध

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं करते थे। अतएव आँखों से देखा गया है कि पोत के गोरे लोग उन जानवरों को पकड़ने का निश्चय करते हैं उनमें से कुछ जानवर शोर मचाते हैं और अपनी चोंचें गोरों को मारते हैं, अंततः पकड़ लिए जाते हैं। कतिपय कुछ दूर उड़कर चले जाते और कुछ दूरी पर बैठ जाते हैं। गोरे लोग पत्थर मारकर उनको घायल करते हैं और पकड़ लेते हैं। मैंने भी दो जानवर गोरों से ख़रीदे और पोत पर लाया। मेरे साथ मो. नईम नाम का एक व्यक्ति था वह जानवर को देखकर बहुत खुश हुआ। उनको हलाल किया, साफ़ करके घी और गर्म मसाला डालकर बहुत सलीक़े से उन्हें पकाया। लेकिन मांस नहीं सिझा। और उनका दुर्गंध और गंदगी दूर नहीं हुई। मजबूरन उन्हें समुद्र में डाल दिया। गोरे उन जानवरों को आग पर भूनकर खाते हैं। वास्तविकता यह है कि बर्तानिया के गोरे विशेषकर फ़्रांस के निवासी गंदे और गंदा खाने वाले होते हैं। फ़्रांसीसी पोत पर एक मक्खीचूस गोरा गंदे स्वभाव का था। वह प्यास की तीव्रता के समय पेशाब हाथ में लेकर मुँह में डालता और ग़रारा करता था। चूँकि उस स्थान पर सब्ज़ा और घास कम उगती हैं इस स्थिति में वहाँ जानवरों का कोई अस्तित्व नहीं था। एक अँग्रेज़ जिसका नाम कप्तान फ़्रांस है। उसने बकरे और बकरियों के दो जोड़े वहाँ लाकर छोड़ दिए और उनका शिकार करने से रोकने के लिए काग़ज़ पर शिकार न करने का निर्देश लिखकर उसको शीशा के अंदर बंद किया और ऊँचे पहाड़ की चोटी पर रखा। एक लकड़ी में फ़्रांस का झंडा बाँधकर उस जगह गाड़ दिया ताकि जहाज़ियों में से जो व्यक्ति पहाड़ की चोटी पर जाकर काग़ज़ को पढ़े और बकरियों को न पकड़े। उसके बाद से जब किसी पोत का कप्तान उस स्थान पर जाता था, वह अपने यात्रा वृत्तांत और घटनाओं का हाल लिखकर उसी शीशे में रख जाता था ताकि बाद में आने वालों को अपने पूर्व के जहाज़ियों की स्थितियाँ मालूम हो सकें। ग़रज़ यह कि इस शीशे में दूसरे जहाज़ियों के लिखे हुए काग़ज़ात बहुत हैं। उन बकरियों के बच्चे पैदा हुए और कालांतर के बाद उनकी संख्या बढ़ गई और उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त की। अब छोटे-बड़े बकरे और बकरियों की संख्या करीब सौ हो गई। वे पशुओं की तरह मनुष्य के साये से भी घृणा करते हैं। जब कोई व्यक्ति उन्हें देखने जाता है तब वे बिजली जैसी तेज़ी से उचकते-फांदते हिरणों की तरह भाग जाते और हवा से बातें करते हैं। उनमें एक बीमार और कमज़ोर था, वह पकड़कर पोत में लाया गया। यह आश्चर्यजनक बात है कि गर्मी और सर्दी के मौसम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में वहाँ घास और सब्ज़ा बिल्कुल नहीं होता है। अलबत्ता बरसात के मौसम में जगह-जगह सब्ज़ा नज़र आता है। ऐसी स्थिति में यह बकरियाँ क्या खाती होंगी और चारा कहाँ से पाती हैं? शायद मिट्टी खाकर गुज़ारा करती होंगी। वहाँ एक बीघा ज़मीन भी बराबर और समतल नहीं है। वह बकरियाँ बंदरों की तरह कभी नीचे आतीं और कभी ऊपर जाती हैं।

पानी में डूबा हुआ द्वीप

जब पोत उस स्थान से प्रस्थान कर बर्तानिया के सामने पहुँचा तो पोत की दिशा सीधी उत्तर की ओर हो गई थी। बीस दिनों की अवधि में पोत एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ सब्ज़ा नज़र आया, जिसको हिंदुस्तानी सीयाला कहते हैं। प्रबुद्ध फ़िरंगी अपने अनुमान से कहते हैं कि यह सब्ज़ा ज़मीन की सूचक है। और किसी डूबे हुए देश का सूचक है। यह सब्ज़ा पानी के नीचे गहराई में है मगर पानी की सतह के बराबर है। लंगर डालने में बहुत अधिक सावधानी बरतते हैं। क्योंकि समुद्र में डूबी हुई ज़मीन पानी के ऊपर एक जगह ठहर गई और गतिमान नहीं है।

सुम्बुला द्वीप का उल्लेख

इसके बाद सुम्बुला द्वीप है, जिसको अँग्रेज़ों ने आबाद किया है। पहाड़ के ऊपर एक सशक्त किला बना हुआ है। और एक नगर आबाद है, जो बाग़ों से सजा है और दूर से स्पष्ट नज़र आता है। परंतु हमारे पोत से बाईं ओर रह जाता है। इसलिए देखने में नहीं आया।

फ़ाकिर द्वीप

यह द्वीप और अन्य द्वीपें जो बादशाह पुर्तगाल के शासनाधीन हैं, देखने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में आए। इनमें से एक द्वीप में रात-दिन आग की ज्वाला उठती रहती है। कहते हैं इसमें लाल गंधक का खान है। गंधक ने इस पहाड़ को जला दिया और उसकी आग की ज्वालाएँ उठती रहती हैं। परंतु आमजन कहते हैं कि वहाँ दानव का प्रभाव है, ईश्वर बेहतर जानता है। इस आग की गर्मी ऐसी है कि बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़कर बुलंद होती है। उन पत्थरों को दो-तीन मील की दूरी पर फेंक देती है, जिससे बड़ी तोप जैसी भयानक आवाज़ उत्पन्न होती है। यदि किसी जीवित व्यक्ति के ऊपर पड़े तो जलाकर भून डाले और वह मर जाए। उस स्थान से फ्रांस निकट है।

पश्चिमी बर्तानिया (वेस्टइंडीज़)

इसके बाद पश्चिमी देश नज़र आया। अँग्रेज़ इसको वेस्टइंडीज़ कहते हैं और पूर्वी देशों को ईस्ट कहते हैं। क्योंकि अँग्रेज़ी भाषा में ईस्ट पूरब को और वेस्ट पश्चिम को कहा जाता है, यह देश भी एक द्वीप है। फ्रांस से नाव पर सवार होकर दो दिनों में समुद्र पार कर सकते हैं। यह सात महाद्वीपों से बाहर है यद्यपि इसको बर्तानिया में शामिल समझा जाता है। यह देश क्षेत्रफल में भारत से तीन गुना बड़ा होगा। इसके बीच कई द्वीपें हैं, जो एक दूसरे से अलग हैं। वहाँ के निवासी काले रंग के और बुद्धू और नासमझ होते हैं। वे धार्मिकता, प्रशासन और युद्ध के नियम और सैनिक संगठन से अनभिज्ञ हैं इसीलिए अँग्रेज़ों ने अपनी शक्ति और वैभव के बल पर इस देश पर कब्ज़ा कर लिया। वहाँ बर्तानिया के उजले लोगों को बसा दिया है। खाद्य एवं अन्य व्यावसायिक सामग्रियों के क्रय-विक्रय के लिए वहाँ आवा-गमन जारी रखते हैं। इस देश में बंगाल की तरह बारिश होती है और बर्फ़ कम गिरती है। वहाँ धान, गेहूँ और जौ इत्यादि पैदा होते हैं। थोड़े-बहुत फल भी मिल जाते हैं।

समुद्र के अद्‌भुतों का हाल 'जो देखे और सुने'

समुद्र की विलक्षणताएँ और विचित्रताएँ अनेक हैं। यदि सब का हाल लिखा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाए तो एक भीमकाय ग्रंथ होगा। इसलिए कुछ चीज़ों का उल्लेख संक्षेप के साथ किया जाता है।

पहली अद्भुत वस्तु उड़ने वाली मछली है। जो बीस अंगुल लंबी होती है और उसके दोनों ओर दस पंख बारह अंगुल के बराबर हेते हैं, जो मकड़ी के जाले की तरह हैं, बल्कि रेशमी काग़ज़ से भी बारीक। जब पोत उन मछलियों के क्षेत्र में पहुँचता है तो वे खुशी से उड़ने लगती हैं। और पचीस-तीस हाथ ऊँची उड़ती हुई दायें और बायें उछलती हैं फिर पानी में गिर जाती हैं। यह भी मालूम हुआ कि जब तक इस मछली के पंख पानी से भीगे रहते हैं उस समय तक उड़ान की शक्ति बनी रहती है और जिस समय सूर्य की गर्मी से या हवा की खुस्की से पंख सूख जाते हैं तुरत कभी पानी में और कभी पोत पर गिर जाती हैं। पोत के ख़लासी उन्हें पकड़ लेते हैं और थोड़ी-सी अफ़ीम उनके पेट में डालकर उनको सुखाते और सुरक्षित रखते हैं। उनको भारत और दूसरे देशों में ऊँची क़ीमत पर बेचते हैं। वैद्यों का कहना है कि काम-शक्ति के इलाज के लिए बहुत लाभकारी होती हैं। उनके सेवन से नामर्द भी मर्द बन जाता है। रेग मछली की भी यही विशेषता होती है।

दूसरी अद्भुत चीज़ सूअर मछली है, इसका सिर सूअर की तरह है और दो पैर भी हैं इस कारण इसको अँग्रेज़ी भाषा में 'हॉक फ़िश' कहते हैं। हॉक सूअर को कहते हैं और मछली को 'फ़िश'। इसका रंग काला है, जिस्म पर छाती नहीं होती है। प्रत्येक का वज़न दो मन होगा। जैसे ही पोत की महक उनकी नाक में पहुँचती है, हज़ारों मछलियाँ खुश होकर जंगली हिरणों की तरह तेज़ी से कूदती-फाँदती पोत के पीछे आ जाती हैं और दायें-बायें नीचे-ऊपर सेवकों की तरह चाली-पचास मील तक पोत के साथ चली जाती हैं। जब वे हज़ारों की संख्या में आ जाती हैं तो समुद्र में हल्ला-गुल्ला की एक आँधी आ जाती है और लोगों के मनोरंजन का सामान हो जाता है। एक गोरे ने फावड़ा से चोट देकर एक मछली पकड़ी और उसका मांस आग पर भूना। सबों ने खाया। अत्यंत बदमज़ा और बदबूदार था। अँग्रेज़ वैद्यों का कथन है कि बड़ी मछलियों का मांस आदमी के लिए हानिकारक होता है। लेकिन बर्तानिया के गोरे लोगों के लिए जो उजले देव जैसे हैं कोई नुक़्सान नहीं पहुँचता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मगरमच्छ का उल्लेख

दरियाई मगरमच्छ या घड़ियाल के संबंध में सुना था, अब देखने में आया। भारत के लोग बेहुनर आदमी को मगरमच्छ कहते हैं, यह ग़लत है। इसको अँग्रेज़ी भाषा में क्राईस कहते हैं। उसका शरीर दो बड़े हाथियों के बराबर है, बल्कि और अधिक होगा। उसका सिर हाथी के बराबर और नाक हाथी के सूँड़ जैसी है मगर लंबी नहीं है। नाक का छिद्र सिर के ऊपर होता है। इसका चेहरा हाथी से मिलता जुलता होता है। जब साँस खींचता है तो पानी कंठ में चला जाता है और जब साँस छोड़ता है तो पानी का फौवारा ताड़ के पेड़ के बराबर ऊँचा उठता है। इसकी आवाज़ से बहुत शोर होता है, जो आधे मील तक सुनाई देता है। वह खाने की चीज़ों की लालच में और पोत का तमाशा देखने के लिए पोत के क़रीब आकर दायें बायें घूमता है और कभी डुबकी लगाता है, कभी पानी से बाहर आ जाता है। यदि अधिक मस्ती में वह पोत को टक्कर मारे तो शायद वह टूट जाए। इसको देखने से भय मालूम होता है। कमाल यह कि पोत से टकराने का निश्चय नहीं करता है। कतिपय जहाज़ियों ने बताया कि पूर्व काल में जब मगरमच्छों ने आदमी और पोत को नहीं देखा था तो पोत के पास आकर उसको क्षति पहुँचाते थे और पोत थपेड़े खाने लगता था। उस समय जहाज़ियों ने तोप लचाई और उसको घायल कर दिया वह डरकर चला गया। उसके बाद जब पोतों का आवा-गमन अधिक होने लगा तब वह डरने लगे।

(शिगर्फ़ नामा के लेखक ने मगरमच्छ के संदर्भ में जो कुछ लिखा है वह भ्रम और अज्ञानता पर आधारित है। उक्त विशेषताएँ वील मछली की हैं, मगरमच्छ की नहीं। मगरमच्छ की काया और हुलिया इससे बिल्कुल भिन्न है- नूरानी)

समुद्री बैल और गदहे का हाल

प्रबुद्धों का कहना है कि ईश्वर ने ज़मीन पर अठारह हज़ार संसार की उत्पत्ति की और इसी तरह अद्‌भुत जीवों को पैदा किया। समुद्र में और ज़मीन पर। मनुष्य, जिन, घोड़ा, बैल इत्यादि और समुद्र के अंदर असंख्य प्रकार के जीव हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समुद्री गाय रात को थल में चरती है और गोबर छोड़ती है। इस गोबर से अंबर बनाते हैं। असली अंबर वही होता है। इसकी सच्चाई इस तरह है कि समुद्री गायों का गोबर द्वीप की ज़मीन पर सूख जाता है और ज्वार-भाटा के समय पानी उसको नहलाता है। जहाज़ी उसे उठा ले जाते हैं। ब्राह्मण और वेद पढ़ने वाले भारतीय उसको कन्हैया की गाय कहते हैं। अर्थात् स्वर्ग की गाय। कहते हैं कि कन्हैया की गाय के दो पैर होते हैं जिनकी सहायता से वह उड़कर संसार में आती है और फिर चली जाती है।

मानवरूपी जलपरी [१]

([१] समुद्री जीव में एक मनुष्यरूपी पशु का उल्लेख 'अजाएबुल मख़्लूक़ात' और अन्य पुस्तकों में मौजूद है और कतिपय पर्यटकों ने भी लिखा है, जिसको जलपरी कहा जाता है। यह इसी का उल्लेख मालूम होता है)

यह एक समुद्री जीव है, जो सिर से कमर तक शक्ल-सूरत में एक सुंदर नारी नज़र आती है, जिसकी छातियाँ उभरी हुईं, आँखें हिरणी जैसी, क़द सर्व से मिलता-जुलता, भौंव धनुष्य की तरह। इसको देखकर हृदयहीनों का दिल भी उसका शिकार हो जाता है और प्रेमी उसके प्रेम में बंध जाते हैं। परंतु कमर के नीचे से उसका शरीर दुमदार मछली की तरह होता है। इसी रूप में पोतों के आस-पास नज़र आती हैं। यद्यपि इस देश में नज़र नहीं आईं। परंतु जहाज़ियों ने उनको द्वीपों के आस-पास देखा है और उनकी आज़माईश की है। यह अद्भुत चेहरे कि ईश्वर ने किसी को उसका नाम व निशान नहीं बताया। यह जिन (ग़ैर मानव) के संसार से संबंध रखती हैं। जब कभी वह रूप कमर तक पानी के ऊपर खड़ी होकर सूरत दिखाती है तो पोत के लोग इसका आकर्षक रूप देखकर दीवाने हो जाते हैं। वह परी चेहरा पोतों में से किसी एक का नाम लेकर पुकारती है। वह व्यक्ति उसकी बुलंद आवाज़ सुनकर बेचैन हो जाता है। और दूसरी आवाज़ पर जाने का निश्चय करता है और तीसरी आवाज़ पर विवश होकर पानी में कूद जाता है। और पानी में डूब जाता है। कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति के पाँव में जंज़ीर बाँध दी जाती है और उसको द्वीप के सूखे स्थान पर लाते

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं और देख-भाल करते हैं। जब तक स्वस्थ नहीं हो जाता उसको फल और मेवा खिलाते हैं और उसको हमेशा साथ रखते हैं। नक़्ल (उद्धरण) है कि विगत ज़माने में एक तबाह हाल पोत अज्ञात समुद्र तट पर पहुँचा था वहाँ पर एक परी पीड़ित, मुसीबत का मारा व्यक्ति तट के सूखे पर मिला। उसको पोत पर सवार करके लाए थे। परंतु वह मूक था। इसलिए उसका हाल मालूम नहीं हो सका।

नगर पारबपुर बालोन फ़्रांस का क्षेत्र

जब पोत फ़्रांस के नगर पारबपुर के तट से चौदह पंद्रह मील की दूरी पर लंगर डाला और तोप दाग़ी गई तो उसकी आवाज़ सुनकर नगर के अधिकारीगण पोत पर पहुँचे और पाल पकड़कर पोत को चलाने के लिए सक्रिय हो गए और पोत को दो दिनों में फ़्रांस की व्यावसायिक कम्पनी के घाट तक पहुँचाया। यह बात जानना आवश्यक है कि नगर के किनारे से पोत के लंगर डालने की जगह तक रास्ता बहुत तंग और ख़तरनाक है। पोत को वहाँ तक ले जाने और ले आने में पोत चलाने वालों को बहुत सावधानी चाहिए। अतएव दो पदाधिकारी, दो अनुभवी मार्गदर्शक और ख़लासियों के साथ वहाँ तक पोत ले जाने के लिए निर्धारित हैं। जैसे ही वह पोत का झंडा पहचानते हैं और उसके बाद तोप की आवाज़ सुनते हैं तो समझ जाते हैं कि यह उनके बुलावे का संकेत है और तत्काल पदाधिकारीगण कार्यकर्ताओं को साथ लेकर उसके स्वागत के लिए जाते हैं। वह पोत चाहे उनकी क़ौम का हो या किसी दूसरी क़ौम का, वह पोत पर आकर उसके पाल खोल देते हैं और एक या दो पाल जो हवा के अनुकूल होते हैं उन की सहायता से पोत को सावधानी के साथ धीरे-धीरे पोत चलाने के नियमों के अनुकूल तट पर पहुँचा देते हैं। यदि इस दौरान पोत में कोई दुर्घटना घटित हो जाए तो उनकी ज़िम्मेदारी नहीं है। और पोत के कप्तान की ज़िम्मेदारी उस समुद्र से बाहर होती है। वह पोत को तट तक पहुँचाने में सावधानी बरतने में कोई ग़लती या कमी न करते। अलबत्ता वे प्राकृतिक आपदाओं से विवश हैं, उन पर कोई जवाबतलबी नहीं करनी चाहिए।

नगर के लोग खुर्मा विक्रेता हैं। तरह-तरह के मेवे, रोटी, पनीर और मस्का

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेचने के लिए लाते हैं। मेरे पोत के लोगों ने छः मीहने से रोटी, पनीर और मस्का नहीं देखा। वे यह चीज़ें खाकर बहुत प्रसन्न हुए और अपने देश को देखकर मारे ख़ुशी के फूले नहीं समाते थे। मुझे इस अवधि में पानी और आकाश के अतिरिक्त कोई चीज़ नज़र नहीं आई, बिल्कुल जंगली पक्षियों की तरह पिंजरे में बंद रहा और पोत के तख़्ते गिनता रहा। मुझे यह गुमान था कि शायद इस अनंत समुद्र का कोई किनारा नहीं होगा। संक्षिप्त यह कि थल और आबादी को देखकर मानो नया जीवन पाया और निराशा कम हुई। वहाँ की अजीब बातों में से एक यह है कि फ़्रांस के लोग जूते ख़रीदने का सामर्थ्य नहीं रखते हैं। पाँव में लकड़ी के जूते पहनते हैं। और वह इस तरह बनाते हैं कि अपने पाँव के नाप की एक लकड़ी काटते हैं और उसके बीच में ख़ोल बनाते हैं, और उसके अंदर पाँव डालकर उपहासजनक तरीक़े से चलते हैं। और बर्तानिया के देश में यद्यपि ग़रीब लोग हैं परंतु मोज़े और जूते के लिए मोहताज नहीं होते। कप्तान सुईटन और श्री बेकाक उन लोगों के जूते देखकर हँसते थे और कहते थे कि यह लोग अँग्रेज़ों के मुक़ाबले में मेहनत और मुशक़्क़त करने में आलसी हैं। इसलिए बहुत ग़रीब हैं। ग़रज़ कि फ्रांसीसी कम्पनी की कोठी में पहुँचे, वहाँ बादशाह की ओर से निर्धारित व्यक्ति सुरक्षा के लिए तैनात थे जो कम्पनी और दूसरों के माल को अलग-अलग करने के लिए पोत पर आए और एक ऊँचे स्थान पर बैठे। क्योंकि बादशाह का अपनी क़ौम को आदेश था कि कोई दूसरी सामग्री और व्यावसायिक माल इस देश में न लाए और न बेचे। यदि लाएगा तो बादशाह के आदेश से ज़ब्त कर लिया जाएगा या इसका जुर्माना अदा करना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में कप्तान के अधीनस्थों ने और डाक्टर और पादरी इत्यादि ने जो बंगाल से कपड़े लाए थे यह हाल देखकर चोरों की तरह जेब और पॉकिट और शरीर में लपेटकर और बदन के कपड़ों में छुपाकर अपने घर ले गए और कप्तान सुईटन श्री बेकाक हवेली का किराया अदा करने ऊपर चले गए। मुझे दो-तीन रोज़ पोत पर ठहरना पड़ा वहाँ के लोगों का रंग-ढंग और उस देश के क़ानून देखकर आश्चर्यचकित रहा और जो कुछ सुना था कि लोग अपना ही माल चुराते हैं देखने में भी आया। कप्तान सुईटन और श्री बेकाक जिनके पास कई क़िस्म के कपड़े और वस्तुएँ थीं उनको फ़्रांस के अधिकारियों ने अँग्रेज़ क़ौम और विदेशी जानकर कोई रोक-टोक नहीं की और छोड़ दिया। उन्होंने सभी बहुमूल्य वस्तुओं और सामग्रियों को थल के क़ाफ़िले वालों के हवाले कर दिया। जिन्हें

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन लोगों ने छकड़ों पर लादकर गुप्त तरीक़े से बर्तानिया पहुँचा दिया। सोलह दिन नगर पारबपुर में ठहरकर उक्त कप्तान और श्री बेकाक डाक गाड़ी पर सवार होकर बर्तानिया के लिए रवाना हो गए। मैं सामान के साथ एक छोटे पोत में एक सप्ताह के बाद कैपकिरण स्थान पहुँचा जो फ़्रांस के देश में है और पोत के मालिक का कमान वहीं है। वहाँ दो सप्ताह ठहरा। वहाँ के स्थलों की सैर की और लोगों का रहन-सहन देखा। नगर की आबादी और देहातों की आबादी रास्तों और बाज़ारों का क्रम। खेती के तरीक़े देखे, गेहूँ, जौ, धान, मूंग, चना, मटर की खेती देखी। निबू, अनार, अंगूर, सेब, अंजीर, नाशपाती, शहतूत और बिदाना इत्यादि बर्तानिया के मुक़ाबले अधिक होते हैं। इसका कारण यह है कि बर्फ़ और सर्दी के मौसम की ठंडक के सबब बर्तानिया के अंदर जो फ़्रांस के उत्तर में स्थित है। खजूर, बादाम और पिस्ता इत्यादि पैदा नहीं होते हैं जो अरब और ईरान के ख़ास मेवे हैं। इसी तरह धान, माश, मसूर इत्यादि अनाज और नारियल और ताड़, केला और कोला भी नहीं होते जो भारतीय फल हैं। वहाँ के आमजन अपने घर मिट्टी और पत्थर से बनाते हैं। छत खपरैल की होती है। पहले लकड़ी के छप्पड़ बनाकर रखते हैं इसी पर मिट्टी के बने हुए खपरे लगाते हैं। इसी तरह दो मंज़िल भवन भी बना लेते हैं। बर्तानिया में बाँस नहीं होता, इसी तरह छप्पर लकड़ी से बनाते हैं। उन लागों का ग़रीबी का भोजन जौ की रोटी और जौ का रस्सा है। वस्त्र पश्मीना (ऊन) का या मोटे कपड़े का पहनते हैं। कुछ लागों के पाँव में जूते और मोज़े भी नज़र आते हैं। परंतु अधिकांश लोगों को यह भी उपलब्ध नहीं। नगर पेरिस फ़्रांस की राजधानी है। और नगर पारबपुर बालून से पाँच सौ मील की दूरी पर अवस्थित है। फ़्रांस के लोग इसके विस्तार, आबादी, भवनों की सुंदरता और बाग़ों की बहुत प्रशंसा करते हैं। नगर के लोग उद्योग-धंधे, अविष्कार, अनुसंधान में निपुणता रखते हैं। शिष्टाचार, मेल-जोल, मृदुभाषा और हास्य और विनोद में बर्तानिया और दूसरे बर्तानवी देशों के लोगों पर प्राथमिकता रखते हैं। फ़्रांसीसी कहते हैं कि बर्तानिया के लोग संगीत और घुड़सवारी की शिक्षा फ़्रांस के शिक्षकों और कला निपुणों से प्राप्त करते हैं। अतएव अधिकांश धनी अँग्रेज़ अपने लड़कों और लड़कियों को फ़्रांस के विद्यालयों में भेजते हैं। इसीलिए वर्तमान युग में अँग्रेज़ों ने विद्या, कला, व्यवसाय और कारोबार में जो प्रसिद्धि और विशिष्टता प्राप्त की है वह फ़्रांस के प्रशिक्षण के प्रभाव से है वरन् विगत काल में इतनी योग्यता और क्षमता इनमें मौजूद न थी। अधिकतर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूर्खता और सीधेपन में भारतियों की तरह प्रसिद्ध थे। परंतु सिपाहीगिरी के पेशा में अँग्रेज़ बहुत महारत रखते हैं। फ्रांसीसी कहते हैं कि अँग्रेज़ बहुत नीच और घटिया क़ौम है क्योंकि वह रोज़ी-रोटी की तलाश और व्यवसाय का तरीक़ा सीखने के लिए दूसरे देशों में भी जाते हैं, इसलिए कि अनपढ़ और गँवार हैं और कमाने के तरीक़ों और हुनर से वंचित और बदनसीब हैं। यदि वे दूसरे देशों में न जाएँ तो वहाँ के लोग उनको नीच समझकर किसी गिनती में न लाएँ और न कोई महत्त्व दें यहाँ तक कि वे कंगाल रह जाएँ। परंतु फ्रांस के लोग सभी हुनर और कला में निपुण हैं। जहाँ जाते हैं लोकप्रिय हो जाते हैं। उनका सम्मान किया जाता है। सच यह है कि शिक्षा और हुनर मानव के लिए ईश्वर का बहुत बड़ा वरदान है। इसी को हर काम का माध्यम और लोक और प्रलोक की भलाई और मानव सम्मान और प्रतिष्ठा का कारण बनाया है। इंसान यदि शिक्षा और हुनर प्राप्त करने में उदासीनता बरते तो इसे उसकी नासमझी के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है। मुझ गुनाहगार पर भी यह हालत गुज़र चुकी है और गुज़र रही है। अफ़सोस कि दूसरों को उपदेश और अपने लिए रूसवाई से कोई फ़ायदा नहीं हासिल होता। यह उक्ति मैं अपने लिए उपयुक्त मानता हूँ क्योंकि मुझ लापरवाह की उम्र बेफ़ायदा गुज़री और जो बाक़ी रह गई है वह भी बेकार बर्बाद हो रही है। अब मौत सामने है और व्यवसाय की चिंता सिर में समाई है।

"आँचे मा करदीम बा खुद हेच नाबीना नकरदा"

अर्थात् जो कुछ हमने अपने साथ किया वह किसी अंधे ने भी न किया।

कहा जाता है कि दो फ्रांसीसी पादरी एक धनवान के पास जाते-आते थे। धनवान उनका बड़ा आदर करता था और उनको अपने साथ खाने में शरीक करता था। पादरी स्वादिष्ट खाने की लालच में स्थाई रूप से प्रतिदिन जाने लगे। वह धनवान उनके सामीप्य से तंग आ गया। उसका समय बर्बाद होता था, इसलिए उनको रोकने का उपाय किया और एक रात को अपने घर उनके रहने की व्यवस्था की। जिस कमरे में उनके रात में ठहरने के लिए व्यवस्था की थी, उसकी छत में छिद्र किया और चारपाई के चारों पायों में रस्सियाँ बाँध दीं और उन रस्सियों को छत के छिद्र से बाहर निकाला और सावधानी से रखा। दूसरे दिन पादरियों से कहा कि उक्त कमरे में भूत का प्रभाव है। इसको प्रार्थनाओं और मंत्रों से दूर कर दें, अपार कृपा होगी। पादरियों ने कहा यह कौन-सा बड़ा काम है। रात को भोजन से निवृत्त होकर वे दोनों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस कमरे में गए और प्रार्थना और मंत्र पढ़कर उन चारपाइयों पर सो गए। जब आधी रात हुई और वे गहरी नींद सो गए तो धनवान छत के ऊपर गया और रस्सियों को पकड़कर धीरे-धीरे खींचकर चारपाइयों को छत की बीम तक लाकर बाँध दिया। संयोगवश एक को पेशाब लगी तो वह उठा और अपने दुर्भागय से नीचे गिरा और उसे गहरी चोटें लगीं और भूत के ख़तरे से सहम गया और दिल हिला देने वाली आवाज़ में चींखा। उसकी आवाज़ सुनकर दूसरा साथी जागा तो तत्काल वह भी नीचे गिर पड़ा। आपदा में वह भी अपने साथी का शरीक हो गया। उस धनवान ने रसिसयों को ढीला कर दिया और चारपाइयाँ नीचे अपने स्थान पर आ गईं और स्वयं दीप हाथ में लेकर उस कमरे में आया तो देखा कि पादरियों के सिर और चेहरे ज़ख़्मी हैं। धनवान ने अफ़्सोस किया और आश्चर्य से उंगली दाँतों में दबाई और पूछा ऐ मार्गदर्शको! यह क्या हाल है। पादरियों ने जवाब दिया ऐ धनवान! यहाँ बहुत बड़ा भूत है, जिसने हमारी यह हालत बनाई। इतना कहा और रोते हुए दोनों धनवान के घर से बाहर निकल गए। उसके बाद वे फिर उस धनवान के घर नहीं आए। दूसरी घटना बयान करते हैं कि फ़्रांस के बादशाह का एक रईस राज्य का बड़ा शुभेच्छु था और बादशाह की अनुकंपा के कारण बहुत विशिष्ट था। संयोगवश एक बार किसी ग़लती का दोषी हुआ। न्यायालय ने इसको मृत्युदण्ड की सज़ा सुनाई। वह जान बचाने के लिए भूमिगत हो गया। अँधेरी रात में एक तेज़ घोड़े पर सवार हुआ और यात्रा के सामान को पीठ पर बाँधा और प्रस्थान कर गया। न्यायालय की ओर से डेढ़ सौ सिपाही उसकी गिरफ़्तारी के लिए भेजे गए। वह रईस जो बहुत बड़ा फ़रेबी था, अपनी चालाकी से डेढ़ सौ मील का सफर तय करके एक सराय में ठहर गया। सराय के मालिक को बहुत अधिक बख़्शिश देकर अपना आज्ञाकारी बना लिया। और कहा कि मेरे घोड़े की देखभाल करो और मुझे कहीं छुपाकर खाना और शराब दो। इसी दौरान उसका पीछा करने वाले सरकारी सवार पहुँच गए। सराय के अंदर और बाहर आस-पास तलाश करने लगे। परंतु उनको रईस का कहीं निशान भी नहीं मिला। इसके बाद सराय के मुलाज़िम को खाना लाने का आदेश दिया। सराय के मालिक ने घोड़ों को अस्तबल में जगह दी और दाने घास की व्यवस्था में लग गया। और सराय के अंदर खाना लगा दिया। जब सभी सवार खाने के लिए बैठ गए तो वह चालबाज़ रईस उठा और अस्तबल में जाकर उन सवारों के घोड़ों की ज़ीन के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ़ीते काट दिए मगर थोड़ा-सा रहने दिया ताकि देखने में मालूम न हो और ज़ीन घोड़े की पीठ से गिर न जाए। इसके बाद अपने तेज़ रफ़्तार घोड़े पर सवार हुआ और सराय के दरवाज़े पर खड़ा होकर बुलंद आवाज़ में कहा, ऐ बादशाह के सवारो! तुम मुझे पकड़ने आए हो। जान लो कि मैं तुमसे छुपकर जा रहा हूँ। इस समय सराय के दरवाज़े पर हाज़िर हूँ और तुम से विदा होता हूँ। तुम सुरक्षित और मैं सही सलामत हूँ। यह कहकर घोड़े को ऐड़ लगाई और उसकी रफ़्तार तेज़ कर दी। सवार उसकी साहस देखकर आश्चर्यचकित रह गए और उसकी बातों से गुस्से में लाल हो गए। तत्काल उसका पीछा करने के लिए तैयार हो गए। जब उन्होंने घोड़ों पर सवार होना चाहा और रकाब में पाँव रखे तो ज़ीन सहित गिर गए। जब तक फ़ीते को बाँधते और सवार होते तब तक रईस बिजली-सी तेज़ी से दूर जा चुका था। सवारों ने दूर तक उसका पीछा किया मगर कुछ प्राप्त न हो सका। हाथ मलकर रह गए। रईस बर्तानिया पहुँच गया। तीन साल वहाँ रहा। जब बादशाह के गुस्से की आग ठंडी हुई तो गुप्त रूप से वह अपने घर वापस आ गया। इसके बाद एक और गुल खिलाया। उसने अपने लिए एक ताबूत (कोफीन) बनवाया और उसमें मुर्दों की तरह लेट गया। चार-पाँच सौ काले वस्त्रधारी व्यकितयों को साथ लिए जो हाथों में मशाल लिए हुए थे। वे सभी धार्मिक निशान लिए प्रार्थना और जाप करते जाते थे। रईस के निर्देशानुसार शाही महल के बाग़ के निकटवर्ती सड़क से उसका ताबूत लेकर गुज़रे। धार्मिक प्रार्थना और शोर-सराबा बादशाह ने सुना तो ख़्याल आया कि इस भव्यता से जो शवयात्रा निकली है वह शायद किसी शाही रईस की होगी, आश्चर्य है कि मुझे किसी ने ख़बर नहीं की। वह अपने विश्राम-कक्ष से बाहर आया और दरवाज़े के पास खड़ा हो गया और दुःख व्यक्त करने लगा। इस बीच ताबूत क़रबी आ गया। बादशाह ने पूछा यह किसका ताबूत है? बताया गया कि उक्त रईस की शवयात्रा है। उसने दुःख व्यक्त करते हुए कहा यह रईस अच्छा व्यक्ति था। ईश्वर इसे माफ़ करे। मैंने दुनिया में इसका दोष माफ़ कर दिया। उसी समय वह चालबाज़ रईस ताबूत से कफ़न सहित उठ खड़ा हुआ और बादशाह के क़दमों में गिर गया। बादशाह ने कहा, तू मर गया था। ज़िंदा कैसे हो गया। रईस ने कहा कि बादशाह के भय से मृतप्राप्य था। अब जब दोषमुक्ति का फ़रमान सुना तो ज़िंदा हो गया। बादशाह को यह चुटकुला पसंद आया और उसका दोष माफ़ कर दिया और पूर्वत शाही अनुकंपा और अनुदानों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से वह सम्मनित किया गया। सत्य है ईश्वर की अनुकंपा सुमार्ग से भटके हुए लोगों के साथ होती है। शेर

"बड़ाई और करुणायें सभी अल्लाह ही के लिए हैं।
क्योंकि वह मनुष्य का अत्याचार देखता है फिर भी रोज़ी देता रहता है।।"

अर्थात् बड़ाई और अनुकंपाएँ मात्र ईश्वर के लिए पूर्ण हैं कि जो अपराध करते देखता है और फिर भी रोज़ी बरक़रार रखता है। गुज़रे ज़माने में यह हाल था कि एक चुटकुला पर हत्यारे को माफ़ कर देते थे। इस ज़माने में यह हाल है कि एक दूसरे के विरोध में इतनी अतिशयोक्ति करते हैं कि यदि किसी पुराने मुलाज़िम से मानवीय भूल हो जाए तो उसको मुलाज़मत से निकालकर रोज़ी से वंचित कर देते हैं। अत्याचार यह कि फिर कोई दूसरा उम्र भर उसको मुलाज़िम नहीं रखता है और मुलाज़िम को दरबदर की ठोकरें खानी पड़ती हैं और भीख माँगकर गुज़र करता है। अधिकांश लोग पुराने मुलाज़िम को मितव्यता की दृष्टि से बिना कुसूर के बर्ख़ास्त कर देते हैं, जो दुर्दशा के शिकार हो जाते हैं। मुझ ग़रीब पर भी यह हाल गुज़रा था और गुज़र रहा है। यह सब अपने कर्मों का फल है। वैसे वास्तविकता यह है कि ईश्वर हर स्थिति में सभी प्राणियों को रोज़ी पहुँचाने वाला है। और अपने बंदों के गुनाहों को माफ़ और अवज्ञा पर उनकी पकड़ नहीं करता है।

बर्तानिया के तट पर पहुँचना

जब फ्रांस के स्थान कैपकिरण से रवाना हुए तो एक सप्ताह बाद उस देश के छोटे तटवर्ती नगर में पहुँच गए। उस बंदरगाह के अधकारीगण पोत की तलाशी लेने आए। संयोग से एक निग्रो पुर्तगाली बीबी बंकाक के पास कपड़े के दो थान निकले। एक रेशमी और दूसरा गुलबुटेदार। इसके कारण उसको दोषी क़रार दिया गया। सामान सहित उसे समुद्र से संलग्न एक नाले में ले गए जिसपर लकड़ी का पुल बना हुआ था। उसको पुल के अंदर कर दिया गया और द्वार बंद हो गया। मैं स्वयं छोटी नौका के ऊपर से नीचे आया और एक सराय में ठहरा। इसके बाद एक पत्र में सामग्री ज़ब्त होने का हाल लिखा गया और उसका अँग्रेज़ी में अनुवाद कराकर डाक द्वारा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लन्दन प्रेषित कर दिया। इसके बाद उस नगर के आस-पास और गली-कूचों में सैर करने लगा। बर्तानिया के जिन लोगों ने किसी भारतीय पुरुष को इस वस्त्र में नहीं देखा था, वह मुझको अजूबा समझकर मेरे आस-पास जमा हो जाते थे और विदेशी यात्री होने के नाते सम्मान करते थे। कुछ दिनों की मुलाक़ातों में इस नगर के छोटे-बड़े पुराने मित्रों की तरह मिलने-जुलने लगे और स्नेह और मेहरबानी से पेश आते थे। यात्री-स्वागत के ख़्याल से ख़ूब सत्कार करते थे। मेरी एकांत पीड़ा उन विदेशियों के सत्कार और सदाचार से दूर हुई और प्रसन्नता और संतोष का कारण बनी।

एक दिन नाच घर में उन लोगों ने मुझे भी बुलाया। जहाँ नगर के गन्यमाण पुरुष महिलाएँ नाच देखने गाना सुनने के लिए एकत्र हुए थे। मैं जैसे ही नाच घर में पहुँचा तो नाच बंद हो गया और सभी लोग मेरी ओर ध्यान देने लगे। मेरा वस्त्र, पगड़ी जो नृत्य करने वालों से मिलते-जुलते थे, देखकर मुझको भी नृत्यक समझे और नृत्य में भाग लेने के लिए आग्रह करने लगे। मैंने बहुत इन्कार किया और अपनी अनभिज्ञता व्यक्त करता रहा, मगर उन लोगों ने विश्वास नहीं किया। और आसप में एक दूसरे से कहने लगे कि जो व्यक्ति नाच और गाना नहीं जानता ऐसा दुनिया में कौन है? चूँकि इस देश में नया आया है इसलिए विदेशी लोगों से लजाता है। ग़रज़ यह कि छोटे-बड़े सब मेरी सूरत-शक्ल और क्रिया-कलापों को ग़ौर से देखते थे। और मैं उनके सौंदर्य और सूरतों को देखकर हैरान था। यद्यपि मैं तमाशा देखने गया था मगर खुद तमाशा बन गया। अक़्ल को हैरत में डालने वाली उस आकर्षक सभा में जहाँ अप्सराओं जैसी बेशर्म सुन्दरियों को देखकर परियाँ भी लज्जित हो जाएँ और ग़िल्मान (परी परिवार के सुंदर युवक) सिर झुकाएँ, मैं तो सुधबुध खो बैठा। दीपों की रोशनी और उन सुकोमलांगों के चेहरों की चमक में फ़र्क़ करना कठिन हो गया। मैं तस्वीर की तरह अपनी जगह खड़ा रह गया और स्रष्टा की कारीगरी देखकर शुक्र बजा लाया और शेर कहा :

"मिट्टी की आकृति को सजाता है।
एक बूँद पानी को सुंदर रूप प्रदान करता है।"

संक्षिप्त क़िस्सा यह कि कप्तान सुईटन और श्री बेकाक, कुर्क़ किए गए माल की वासपी का आदेश लेकर लन्दन से वहाँ पहुँचे और सामान वापस लेकर लन्दन भेजा। मुझे और मो. मोक़ीम को अपने साथ सवारी गाड़ी में बैठाकर लन्दन पहुँचे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और अपने भाई के मकान में ठहराया। यह भवन काऊंट स्ट्रीट में स्थित है। मेरा दिल यात्रा की तकलीफ़ों से परीशान हो गया था। लन्दन नगर को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ और खुशी महसूस करने लगा। मेरी हालत उस घास जैसी थी जो बाग़ के पहलू में उगी हो मगर सौंदर्य और सदाचार का कमाल है, उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। एक विदेशी यात्री को जान से अधकि प्रिय रखते हैं। और यात्री के सत्कार की बेहद कोशिश करते हैं। इस यात्रा वृत्तांत के लेखक से पहले जाटगाम और जहाँगीरी के ख़लासियों के अतिरिक्त कोई मुंशी मेरे जैसे वस्त्र में लन्दन नहीं गया था। वहाँ के लोग भारतीयों के वेशभूषा और आचार-व्यवहार से अधिक अवगत नहीं थे। मुझको बंगाल के विशिष्ट लोगों में शुमार करते थे, बल्कि नव्वाब परिवार का एक सदस्य समझते थे। लोग दूर और क़रीब से भेंट करने के लिए आते थे। जब कभी मैं नगर की सैर करने के लिए जात था, लोगों की भीड़ मेरे साथ हो जाती थी। विभिन्न मुहल्लों के लोग मेरी प्रतीक्षा करते थे। प्रायः बच्चे, जवान और बड़ी-छोटी महिलाएँ मुझको अद्‌भुत जीव समझती हैं। कतिपय लोग अपने घर से दौड़कर अगले मुहल्ले वालों को मेरे आगमन की सूचना देते। वे सब मुझे देखकर हैरान होते थे। प्रायः लड़के, जवान और महिलाएँ बुलंद आवाज़ से आपस में कहती थीं कि आओ काले आदमी को देखो। उनकी बातें सुनकर लोग दो मंज़िला भवन से नीचे उतरकर आते और मुझे देखते थे। प्रायः लड़के और जवान अपनी भाषा में मुझे काला देव कहते और बहुत भयभीत होकर मेरे पास नहीं आते थे।

उस ज़माने में वहाँ गर्मी का मौसम था। उस मौसम में प्रायः क़बा, साफ़ा, शाल और कमरबंद और कमर में ख़नजर लगाकर भारतीयों की तरह सैर के लिए जाता था। कुछ को यह वस्त्र पसंद आता था। प्रायः इस वस्त्र को महिलाओं कोमलांगनियों का वस्त्र समझते थे। जब दो माह इस हालत में गुज़र गए तो उसके बाद हर एक आवभगत करने लगा। अब मुझे देखकर कोई भयभीत नहीं होता था। कतिपय मंचले और धृष्ट, बाज़ारी लोग कहते थे, आओ मेरी जान एक चुंबन लेने दो। यह बात वह अँग्रेज़ी भाषा में कहते थे। मैंने इसका मतलब कतिपय लोगों से पूछकर मालूम किया। वास्तव में महिलाओं के साथ यौन संबंध स्थापित करने हेतु राज़ी करने के लिए यह शब्द संकेत के रूप में प्रयोग करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लन्दन नगर की विशेषताएँ

लन्दन नगर दक्षिण से उत्तर की ओर लंबाई में आबाद है। इसलिए दक्षिण की ओर शाही बाग़ से क़िला मटकन तक क़रीब तीन मील और पूरब से पश्चिम की तरफ़ चौड़ा है और नगर के बीच दरिया बहता है जो समुद्र से मिला हुआ है। पोत कम्पनी की व्यावसायिक कोठी के क़रीब घाट रास्टी पर लंगर डालते हैं। यह स्थान शाही महल से दो मील की दूरी पर स्थित है। रास्टी अँग्रेज़ी भाषा में महाजन को कहते हैं। सारे महाजन और व्यवसायी इसी मुहल्ले में रहते हैं। और लन्दन नगर नदी की ओर अवस्थित है और वे क़रीब एक मील के क्षेत्र में होगा। पूरब की ओर जगह-जगह भवने और बाग़ात हैं। इस प्रकार की चौड़ाई चौथायी मील होगी। नगर के बाहर काले पत्थर का सशक्त क़िला निर्मित है और पुराना क़िला जो महाजन टोला के क़रीब नगर के मध्य में अवस्थित है इसको ज़बूर कहते हैं। इसके अंदर बहुत सारे शस्त्रालय हैं। उनके अंदर छोटी-बड़ी तोपें हैं, जो लोहे और इस्पात से निर्मित की गई हैं। कुछ साधारण कुछ चित्रित, जिनपर फ़्रांस और स्पेन के सरकारी निशान हैं। इनमें फ़्रांस की कुछ वह तोपें हैं जो दोनों देशों के युद्ध में अँग्रेज़ों के हाथ लगी थीं। उनको वहाँ विजय-स्मृति के रूप में रखा गया है। उनमें एक बहुत बड़ी तोप है, जिसकी लंबाई १६ हाथ और मोटाई इतनी है कि इसके अंदर बैठकर दर्ज़ी कपड़ा सी सकता है। कहते हैं कि यह स्कॉटलैंड की निर्मित है, जो अडहेरा के क़िला में लगी थी। जब स्कॉटलैंड लन्दन में शामिल हो गया तो वह तोप लन्दन में ले आए और ज़बूर में रखी। कहते हैं कि नगर स्काटीन में एक बलात्कारी महिला गर्भवती हुई तो एक वर्ष तक इस तोप की नाल में छुपी रही, इसी में बच्चा को जन्म दिया और मर गई। बलात्कारी व्यक्ति उस महिला को उसी में खाना-पानी पहुँचाता रहा। किसी को इसके हाल की ख़बर नहीं हुई। मैंने बंगाल में प्रायः अँग्रेज़ों की ज़ुबान से उस तोप की प्रशंसा सुनी थी। इस जगह पहुँचकर बिल्कुल वैसी ही देखी। एक बड़े सभागर में एक लाख बंदूक़ें बीम से लटका कर रखी हैं। एक अन्य हॉल में लोहे की टोपी, सुरक्षा कवच, तलवारें, बरछियाँ और अन्य शस्त्र लटके हुए हैं। इसके आँगन में बादशाहों की प्रतिमाएँ लगी हैं, जो कांसे, तांबे और सात धातुओं के बने हुए हैं और लकड़ी के घोड़ों पर सवार हैं। उनके शरीर पर सुरक्षा कवच, लोहे की टोपी और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तलवारें भी हैं ताकि पूर्व के बादशाहों की वेश-भूषा पर किसी को भ्रम हो तो उनकी असली रूप देख ले। इसी तरह एक अन्य भवन में टक्साल है, जहाँ सोने और चाँदी के टुकड़े ढाले जाते हैं।

लन्दन के भवन

लन्दन में पत्थर के भवन कम और ईंटों के अधिक हैं। परंतु पुराने और नए गिरजा घर अधिकतर पत्थरों से निर्मित किए गए हैं। सबसे अधिक प्रसिद्ध और भव्य गिरजा घर सेंटपाल है। इसका निर्माण अत्यंत प्रिय तरीक़े से विशेष रूप में किया गया है। यह देखने से संबंध रखता है। उसकी विशेषताएँ मुहँ से बयान करना कठिन है। अर्द्ध भवन सात भागों वाला है। मध्य में वृत्ताकार है। छोटा-सा बरामदा है, जिसमें एक व्यक्ति चल-फिर सकता है ताकि लोग इससे दूर रखे जा सकें। इसकी छत गोल गुंबद जैसी बनाई है। सभी गुंबदों के अंदर चमकदार शीशे नज़र आते हैं। और हवा भवन के नीचे से ऊपर पहुँचती है। सीढ़ी बाहर की ओर है। जब हम हॉलों के मध्य में पहुँचे तो कप्तान सुईटन एक स्थान से बाहर निकलकर पश्चिम् की ओर गया और फुसफुसाकर बोला कि मुंशी क्या कर रहे हो। मैंने देखा कि उसके और मेरे बीच चालीस हाथ की दूरी होगी। परंतु उसकी बात मैंने अपने कान से सुनी और जवाब दिया कि तमाशा देख रहा हूँ। मेरी बात कप्तान ने भी सुनी। संभवतः यह बात हवा के दूसरी ओर से बाहर निकलने के कारण होगी। जिस समय उस स्थान से अर्थात् बाहरी भवनों से निकलकर लकड़ी की सीढ़ियों से गुंबद के निकट आया तो बारह मील तक की चीज़ें दिखाई दे रही थीं। और नगर के सभी भव्य भवन, पाँच और सात मंज़िला भी बहुत नीचा नज़र आते थे। आदमी और घोड़े सब भेड़ों, बल्कि बिल्लियों के बराबर मालूम होते थे। उसके दक्षिण में पुस्तकालय और स्कूल इत्यादि के भवन सब पत्थर के बने हुए हैं। नीचे भी एक तहख़ाना बना है, इसमें कई कोठियाँ हैं, जिसमें संदूक़ और अन्य चीज़ें रखते हैं और आँगन में एक रौशनदान बनाया है ताकि रोशनी तहख़ाना तक पहुँच सके। वास्तविकता यह है कि बड़ा आकर्षक और आनन्ददायक स्थान है। पत्थर का बना हुआ इतना सशक्त और भव्य भवन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत में नहीं हैं।[१] और दक्षिण में क़िला दौलताबाद के अतिरिक्त और कहीं नहीं। ([१] शिगर्फ़ नामा के लेखक ने अज्ञानतावश लिखा है।) कहते हैं कि रोम में ऐसा दूसरा भवन है, जिसकी नक़ल यह गिरजा घर है, जिसका भवन, जो डेनमार्क के बादशाह ने निर्मित कराया था, बहुत प्राचीन है। परंतु अब तक नए भवन की तरह सुंदर और सुसज्जित है। इसके अंदर प्राचीन वस्तुओं के चित्र और अद्‌भुत चेहरे हैं, जो मानी पेशा चित्रकारों और कला मर्मज्ञ उस्तादों द्वारा बनाए गए हैं। इसको देखकर वर्तमान काल के क्लाकार चकित हैं। आज कल के चित्रकार उनकी विशेषताओं पर चिंतन-मनन करते हैं। अद्‌भुत वस्तुओं के अतिरिक्त एक सुंदर महिला की मरमर की प्रतिमा है जो मरमर के चबुतरे पर साढ़े तीन हाथ लंबी उँचाई पर लगी है और भवन के आँगन में अवस्थित है। दूर से ऐसा प्रतीत होता है कि कोई महिला उजली चादर सिर पर रखे खड़ी है। इसकी आकृति, तंतुओं, नाज़-अदा और हड्डियों के उभार काले घुंघराले बाल, दामन की शिकनें दुपट्‌टा सब साफ़ नज़र आते हैं। असल से रत्ती बराबर अंतर नहीं। मैं दूर से देखकर जीवित और मृत का अंतर नहीं कर सका। जब क़रीब पहुँचा तो ऐसा अनुपम रूप देखकर चकित रह गया। इसके अतिरिक्त भी बहुत सारे चित्र और प्रतिमाएँ देखीं, जिनको देखने से हृदय अत्यंत प्रसन्न हुआ। कहते हैं कि डेनमार्क के बादशाह ने बहुत समय तक लन्दन पर शासन किया और इस प्रकार के भवन भी बनवाए। परंतु संगमरमर द्वारा निर्मित प्रतिमाएँ और चित्र रोम, शाम और मिस्र के निपुण कलाकारों की बनाई हुई हैं। जिनको डेनमार्क के बादशाह के कर्मचारीगण उन स्थानों से तीस चालीस हज़ार रुपया में ख़रीद कर लाए थे। अब उन जैसे शाहकार कोई पेश नहीं कर सकता। वास्तविकता यह है कि ऐसे चित्र और भवन किसी दूसरे स्थान में देखने में नहीं आया।

वेस्टमिनिस्टर पुल और गिरजा घर

यह पत्थर से निर्मित पुल है, जिसकी लंबाई दरिया की चौड़ाई के बराबर है। इतना चौड़ा है कि इस पर चार गाड़ियाँ एक दूसरे के बराबर चल सकती हैं। उनके नीचे मेहराबदार द्वार हैं, जिनके अंदर नाव पाल सहित सुगमता से गुज़र जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो पुल और भी हैं परंतु यह बहुत बड़ा है। कहते हैं ऐसे पुल संसार में दो स्थानों पर और हैं, एक रोम में और एक बग़दाद में। सुना गया है कि उन पुलों जैसे और कहीं नहीं बनाए गए हैं।

इसके अतिरिक्त बड़ा गिरजा घर का भवन है, जो वेस्टमिनिस्टर गिरजा घर से दक्षिण की ओर है और बहुत ऊँचा और सशक्त पत्थर द्वारा निर्मित है। उसके अंदर दोनों ओर उस देश के प्रसिद्ध धनवानों की लाशें बड़े-बड़े ताबूतों में बंद रखी हैं। यद्यपि रस्म यह है कि बड़े लोगों की लाशें क़ब्रिस्तान में दफ़न करते हैं और धनवानों की क़ब्र पर भवन बनाते हैं परंतु प्राचीन परंपरा यह है कि धनवानों की लाशें, जो अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय थे, उनके शरीर पर मसालायुक्त दवाएँ मिश्रित कंबल और वृक्षों के पत्तों में लपेटकर ताबूत में रख देते थे और उसके चारों ओर वृक्षों के पत्ते डाल देते थे। ऐसी लाश सदैव असल हालत में ताज़ा रहती है। जब कोई विशेष व्यक्ति यह इच्छा व्यक्त करे कि उस व्यक्ति के रूप-रंग को देखे तो ताबूत खोल देते हैं और देखकर पुनः बंद कर देते हैं। परंतु रखने और खोलने में बहुत सावधानी बरती जाती है। यदि उसके शरीर में हवा लग जाए तो लाश ख़राब हो जाती है। और ग़रीबों के लिए मामूली गड्डा खोदते और उसमें पत्थर और ईंटों से फ़र्श बनाते हैं, उसमें रखकर ऊपर पत्थर और तख़्ते रख देते हैं। ऐसा क़ब्र वेस्टमिनिस्टर गिरजा घर के निकट है। उक्त बातें लन्दन के विभिन्न लोगों से ज्ञात हुईं। उस समय श्री माओ सेन ने बताया कि इस देश में अमीरों और ग़रीबों की क़ब्रें अलग-अलग होती हैं।

'शाही महल' और अन्य भवन

बादशाह का महल बाहर से साधारण नज़र आता है। दीवारों पर प्लास्टर भी नहीं है। बिल्कुल महाजन की हवेली जैसा मालूम होता है परंतु रानी की हवेली बहुत सुंदर है। कहते हैं कि इस हवेली के अंदर विभिन्न जनाना महल हैं। उनके फाटक भव्य हैं। अंदर सहन हैं और शयनकक्ष बहुत साफ़सुथरे क़ालीन और स्वर्ण चित्रों से सुसज्जित हैं। लन्दन के सभी भवने पाँच तल की हैं परंतु ऊँची कम बनाते हैं। हमारे देश में ऊँचे भवन सर्दी और हवा के लिए बनाते हैं। इसके विपरीत लन्दन के लोग

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नमी की अधिकता, हिमपात और सर्दी की अधिकता के कारण कम मंज़िलें बनाते हैं और उनको नीचा रखते हैं। और हर मंज़िल का फ़र्श पक्का बनाते हैं। ऊपरी मंज़िल की दीवार में तख़्ते जड़ देते हैं और उनके ऊपर सुनहरे, लाल, पीले काले और विभिन्न रंगों के काग़ज़ चिपका देते हैं। ताक़, मेहराब और उनके किनारों को रंग-बिरंगे काग़ज़ों से अवसर के अनुरूप अत्यंत सुंदरता और कोमलता से सजाते हैं। भवन की छत हमारे देश की तरह बराबर नहीं रखते। प्रत्येक मंज़िल के ऊपर लकड़ी से सिंह के पीठ जैसा रूप बनाकर लगा देते हैं। और मिट्टी की खपरैल छत पर रखकर उसके ऊपर लकड़ी के तख़्ते लगा देते हैं। और खपरैल के एक ओर छिद्र करके लोहे की कील से जड़ देते हैं। और अमीरों की हवेली में पत्थर के टुकड़े हथेली के बराबर काटकर एक के ऊपर दूसरा रखते हैं और लोहे की कीलों से छप्पर की लकड़ी में जड़ देते हैं। इसपर प्लास्टर की ज़रूरत नहीं रहती। हवेली की दीवार सशक्त और पक्का की होती है। इसका कारण लन्दन का चूना है, जो एक तरह के उजले पत्थर से बनाया जाता है। इसमें मनुष्य के सिर के बाल और अन्य मसाले मिलाकर इस्तेमाल करते हैं। दीवार की चौड़ाई एक हाथ भर होने के बावजूद भयंकर आँधी के समय हवेली की सभी मंज़िलें गति करतीं और ख़ूब हिलती-डोलती हैं। आगंतुक डरता है कि उसके ऊपर न गिरें। मुझे भी शंका हुआ और मैं उस स्थिति में ख़तरा महसूस कर रहा था। लन्दन में साल और सागवान नहीं है। सभी भवनों और पोतों में सर्व और सनोबर की लकड़ी का इस्तेमाल किया जाता है, जो उजली होती है, जैसा कि सुना और देखा है। लकड़ी को खाने वाला कीड़ा जिसको भारत में दीमक कहते हैं, नहीं होता है। इसी कारण भवन की लकड़ी सशक्त और टिकाऊ होती हैं। परंतु महाकनी और आबनूस इत्यादि की लकड़ी जिससे संदूक़ बनाते हैं, वह चीन और अमेरिका इत्यादि देशों से लाए जाते हैं। शीशम की लकड़ी जिससे बंदूक़ के कुंदे और तख़्त और चौकी इत्यादि के पाए बनते हैं। यह लन्दन में बहुत होती है। जो वहाँ से बाहर दूसरे देशों में भेजी जाती है। लन्दन की वह लकड़ी जिसका उल्लेख पूर्व में हुआ है, वहाँ के पहाड़ों, जंगलों और मैदानों में बहुत होती है। इसके अतिरिक्त स्कॉटलैंड के बाग़ों में और भारत में बहुत नज़र आती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बादशाह बेगम की हवेली (विल्यम जेम्स पार्क)

बादशाह बेगम की हवेली विल्यम जेम्स पार्क की पश्चिमी दिशा में अवस्थित है, जो अत्यंत सुंदर और आकर्षक है। उसके दक्षिण में एक बड़ा-सा हाता है, जिसके अंदर हिरण पले हुए हैं। कहते हैं कि इसके अंदर विभिन्न सुंदर भवने हैं कि उन जैसे और कहीं नज़र नहीं आते। सर जेम्स पार्क का रास्ता बादशाह बेगम की हवेली के पास से पूरब की दिशा में एक मील लंबा है और उसकी चौड़ाई एक बीघा के बराबर होगी। उसकी दक्षिण दिशा में दरिया है जिसका पानी मीठा और निर्मल है, उसकी गहराई आधा बीघा होगी। रास्ते के दोनों ओर अखरोट के सायादार वृक्षों की पंक्ति है और सैर-सपाटा करने वाले अमीर और ग़रीब मर्दों और औरतों के लिए बैठने की जगहें बनी हैं। वास्तव में यह बड़ा और आकर्षक रास्ता है और अत्यंत सुंदर और स्वर्गरूपी पर्यटक स्थल है। जिसके अंदर पाँव रखते ही दुखी और उदास दिल भी खिल उठते हैं। परीशान हाल और चिंतित इस कश्मीर जैसे मनमोहक दृश्य को देखकर मुस्कुराने लगते हैं। इस पार्क के सभी भागों में सुंदर चंद्रमुखी महिलाएँ नाज़ और अंदाज़ के साथ घूमती-फिरती नज़र आती हैं। परीमुखी अप्सरा-सी युवतियाँ नाचती और गाती दिखाई देती हैं। सौंदर्य और रंग और सुगंध के आकर्षक दृश्य, सुंदरता, सुसज्जिता के हृदय उद्वोलक दृश्य देखकर अप्सराओं के सिर भी लज्जा से झुक जाते हैं। प्रेमी युगल एक दूसरे की गर्दन में हाथ डाले चुंबनादि में संलिप्त हैं। यहाँ कोई पूछताछ नहीं, सभी ओर नाच-गाने, मौज-मस्ती, युगल प्रेमी बिना रोक-टोक आलिंगनबद्ध हैं, न कोई रोक-टोक करने वाला है न कोई कोतवाल। संक्षिप्त यह कि उन आश्चर्यजनक दृश्यों को देखकर स्वर्गरूपी भूमि के संदर्भ में यह शेर बेअख़्तियार जुबान पर आया :

अगर फ़िदौस बररु-ए-ज़मीं अस्त
हमीं अस्त व हमीं अस्त व हमीं अस्त
(अर्थात् यदि स्वर्ग धरती पर है, तो यही है यही है यही है।)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बादशाह बाग़

यह प्राचीन बाग़ पूर्व के बादशाहों की यादगार है। नगर से डेढ़ मील के फ़ासले पर दरिया की ओर अवस्थित है। इस बाग़ का रक़बा दो मील के क़रीब होगा। बाग़ के अंदर हर ओर गोल, तिकोनी और चौकोर कियारियाँ और रविशें बड़े सलीक़े से बनी हुई हैं। जगह-जगह दूब के तख़्ते अत्यंत सुंदर नज़र आते हैं। नाना प्रकार के सुंदर फूल अपने रंग और सुगंध से दिल और दिमाग़ को मादकता और आनंद प्रदान करते हैं। कहीं सदबर्ग है, कहीं गुले शब्बू, गुल मेंहदी और ताज खुरूस खिले हुए हैं। इसी तरह फलों में भारतीय फल-फूल भी देखे और लन्दन के दूसरे फल जैसे ककड़ी, नारंगी, अनन्नास, सर्दा, ख़र्बूज़ा, तरबूज़ा इत्यादि भी होते हैं। और भारतीय फल और फूल भी देखने में आते। चूँकि लन्दन की ज़मीन में नमी और सर्दी के कारण फल और फूल नहीं उगते हैं। इसलिए एक हाता ईंटों का बनाते हैं। जिसके तीन ओर दीवारें होती हैं और दक्षिण की ओर खुला रखते हैं। और इसको शीशे के टुकड़ों से इस तरह बंद करते हैं कि हवा इसके अंदर न जा सके। पारदर्शी शीशों से सूर्य की किरणें अंदर जाती हैं। परंतु सर्दी के मौसम में गर्मी पैदा करने के लिए इसके अंदर अंगेठी रख देते हैं। और पीतल और तांबे के गुलदोनों में मिट्टी भरकर उनके अंदर ख़र्बूज़े, तरबूज़े, नारंगी और अनन्नास के बीज बो देते हैं और भारत के फल-फूल इस तरह लगाते हैं। इस तरह से उगाए हुए बाग़ात अक्सर स्थानों में देखने में आए। लन्दन के माली इस मेहनत और सलीक़े से भारतीय फल पैदा करते हैं और बेचते हैं। इसलिए एक अनन्नास एक अशर्फ़ी में बेचते हैं। ख़र्बूज़ा आधे अशर्फ़ी में मिलता है। बाग़ों के किनारे पर सुरक्षा के लिए मेंहदी की टट्टियाँ लगाते हैं और उनको अत्यंत सुंदर ढंग से सजाते हैं। उनको काट-छांटकर विभिन्न प्रकार का रूप देते हैं। आदमी की शक्ल इस तरह बनाते हैं कि रात और दिन में दूर से मालूम होता है आदमी खड़े हैं। इस कार्य में बहुत समय लगाते हैं। पुराने बाग़ में तरह-तरह की टट्टियाँ बहुत नज़र आती हैं। देहातों में पुराने बाग़ात और तालाब बहुत देखने में आए। विशेष रूप में ऑक्सफोर्ड में सौ वर्ष प्राचीन बाग़ात बहुत हैं जिनमें वृक्षों से आकृतियाँ बनाई हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रास्तों की सफ़ाई और बाज़ार की रौनक़

नगर के गीली, कूचे और बाज़ार अत्यंत साफ़ सुथरे और फैले हुए हैं और बहुत सलीक़े से सजाए गए हैं। उसका एक मामूली नमूना कलकत्ता नज़र आता है। रास्ते के दोनों ओर तीन और पाँच मंज़िले भवने हैं। सभी एक तरह के और एक क्रम से बने हुए हैं। कहीं कोई टेढ़ापन या ऊबड़-खाबड़ नज़र नहीं आता। प्रत्येक भवन के द्वार पर तांबे या पीतल का नाम-पट्ट लगा हुआ है। जिस पर उसमें रहने वाले का नाम अंकित होता है। प्रत्येक पेशे का व्यक्ति अपने पेशे का चित्र अपने द्वार पर लटका देता है। उदाहरण स्वरूप यदि मोची है तो जूते का चित्र, बरछी बनाने वाला है तो बरछी का चित्र, रोटी पकाने वाला रोटी का चित्र और फल विक्रेता फलों के चित्र बनाकर लटका देते हैं। उन लोगों का कहना है कि यह पेशा धारकों के लिए उत्तम विधि है। इसके संदर्भ में ईश्वर ने चाहा तो आगे विस्तार से लिखा जाएगा। भवन की निचली मंज़िल में दुकान होती है। दूसरी मंज़िल में गृहस्वमी का निवास होता है। तीसरी मंज़िल सेवकों के रहने और घर के सामान रखने के लिए सुरक्षित होती है। निचली मंज़िल में अपनी दुकान रखते हैं या किराया पर लगा देते हैं। दुकानें बंद रखते हैं और अंदर सभी सामग्रियों को अत्यंत सलीक़े से सुंदर ढंग से सजाते हैं। दुकान के अंदर सजावट बाहर के साज-सज्जा से अधिक सुंदर होती है। वहाँ का चलन है कि भवन और दुकानों के द्वार रात-दिन बंद रखते हैं। क्यों कि सर्दी अधिक होती है और चोरों का भी भय रहता है। जब ग्राहक कोई वस्तु ख़रीदने के लिए आता है तो द्वार को खटखटाता है और दुकानदार द्वार खोल देता है। सड़क इतनी चौड़ी है कि तीन गाड़ियाँ बराबर-बराबर चल सकती हैं। पैदल चलने वालों के लिए सड़क और भवनों से संलग्न दो हाथ चौड़ा रास्ता है। फुटपाथ सड़क से एक दो हाथ ऊँचा है और उस पर पत्थर का फ़र्श है। उसके आरंभ और अंत में लकड़ी की एक चर्ख़ी लगी रहती है जिको घुमाकर व्यक्ति अंदर आता है। यह इसलिए लगाते हैं कि पशु और घुड़सवार इसमें प्रवेश न कर सकें। महिलाएँ और पुरुष उस पर आराम से चल सकें। रास्ते के दोनों ओर तीस हाथ की दूरी पर आठ हाथ ऊँचे लकड़ी के पाए लगे हैं। उनके ऊपर लोहे के चौखट में शीशे के लैम्प लटके होते हैं, जो रात को जला दिए जाते हैं। इस कार्य के लिए प्रत्येक मुहल्ले में दो मुलाज़िम नियुक्त हैं। एक आदमी तीसरे पहर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बादशाह बाग़

यह प्राचीन बाग़ पूर्व के बादशाहों की यादगार है। नगर से डेढ़ मील के फ़ासले पर दरिया की ओर अवस्थित है। इस बाग़ का रक्बा दो मील के क़रीब होगा। बाग़ के अंदर हर ओर गोल, तिकोनी और चौकोर कियारियाँ और रविशें बड़े सलीक़े से बनी हुई हैं। जगह-जगह दूब के तख़्ते अत्यंत सुंदर नज़र आते हैं। नाना प्रकार के सुंदर फूल अपने रंग और सुगंध से दिल और दिमाग़ को मादकता और आनंद प्रदान करते हैं। कहीं सदबर्ग है, कहीं गुले शब्बू, गुल मेंहदी और ताज ख़ुरूस खिले हुए हैं। इसी तरह फलों में भारतीय फल-फूल भी देखे और लन्दन के दूसरे फल जैसे ककड़ी, नारंगी, अनन्नास, सर्दा, ख़र्बूज़ा, तरबूज़ा इत्यादि भी होते हैं। और भारतीय फल और फूल भी देखने में आते। चूँकि लन्दन की ज़मीन में नमी और सर्दी के कारण फल और फूल नहीं उगते हैं। इसलिए एक हाता ईंटों का बनाते हैं। जिसके तीन ओर दीवारें होती हैं और दक्षिण की ओर खुला रखते हैं। और इसको शीशे के टुकड़ों से इस तरह बंद करते हैं कि हवा इसके अंदर न जा सके। पारदर्शी शीशों से सूर्य की किरणें अंदर जाती हैं। परंतु सर्दी के मौसम में गर्मी पैदा करने के लिए इसके अंदर अंगेठी रख देते हैं। और पीतल और तांबे के गुलदोनों में मिट्टी भरकर उनके अंदर ख़र्बूज़े, तरबूज़े, नारंगी और अनन्नास के बीज बो देते हैं और भारत के फल-फूल इस तरह लगाते हैं। इस तरह से उगाए हुए बाग़ात अक्सर स्थानों में देखने में आए। लन्दन के माली इस मेहनत और सलीक़े से भारतीय फल पैदा करते हैं और बेचते हैं। इसलिए एक अनन्नास एक अशर्फ़ी में बेचते हैं। ख़र्बूज़ा आधे अशर्फ़ी में मिलता है। बाग़ों के किनारे पर सुरक्षा के लिए मेंहदी की टट्टियाँ लगाते हैं और उनको अत्यंत सुंदर ढंग से सजाते हैं। उनको काट-छांटकर विभिन्न प्रकार का रूप देते हैं। आदमी की शक्ल इस तरह बनाते हैं कि रात और दिन में दूर से मालूम होता है आदमी खड़े हैं। इस कार्य में बहुत समय लगाते हैं। पुराने बाग़ में तरह-तरह की टट्टियाँ बहुत नज़र आती हैं। देहातों में पुराने बाग़ात और तालाब बहुत देखने में आए। विशेष रूप में ऑक्सफोर्ड में सौ वर्ष प्राचीन बाग़ात बहुत हैं जिनमें वृक्षों से आकृतियाँ बनाई हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रास्तों की सफ़ाई और बाज़ार की रौनक़

नगर के गीली, कूचे और बाज़ार अत्यंत साफ़ सुथरे और फैले हुए हैं और बहुत सलीक़े से सजाए गए हैं। उसका एक मामूली नमूना कलकत्ता नज़र आता है। रास्ते के दोनों ओर तीन और पाँच मंज़िले भवने हैं। सभी एक तरह के और एक क्रम से बने हुए हैं। कहीं कोई टेढ़ापन या ऊबड़-खाबड़ नज़र नहीं आता। प्रत्येक भवन के द्वार पर तांबे या पीतल का नाम-पट्ट लगा हुआ है। जिस पर उसमें रहने वाले का नाम अंकित होता है। प्रत्येक पेशे का व्यक्ति अपने पेशे का चित्र अपने द्वार पर लटका देता है। उदाहरण स्वरूप यदि मोची है तो जूते का चित्र, बरछी बनाने वाला है तो बरछी का चित्र, रोटी पकाने वाला रोटी का चित्र और फल विक्रेता फलों के चित्र बनाकर लटका देते हैं। उन लोगों का कहना है कि यह पेशा धारकों के लिए उत्तम विधि है। इसके संदर्भ में ईश्वर ने चाहा तो आगे विस्तार से लिखा जाएगा। भवन की निचली मंज़िल में दुकान होती है। दूसरी मंज़िल में गृहस्वमी का निवास होता है। तीसरी मंज़िल सेवकों के रहने और घर के सामान रखने के लिए सुरक्षित होती है। निचली मंज़िल में अपनी दुकान रखते हैं या किराया पर लगा देते हैं। दुकानें बंद रखते हैं और अंदर सभी सामग्रियों को अत्यंत सलीक़े से सुंदर ढंग से सजाते हैं। दुकान के अंदर सजावट बाहर के साज-सज्जा से अधिक सुंदर होती है। वहाँ का चलन है कि भवन और दुकानों के द्वार रात-दिन बंद रखते हैं। क्यों कि सर्दी अधिक होती है और चोरों का भी भय रहता है। जब ग्राहक कोई वस्तु ख़रीदने के लिए आता है तो द्वार को खटखटाता है और दुकानदार द्वार खोल देता है। सड़क इतनी चौड़ी है कि तीन गाड़ियाँ बराबर-बराबर चल सकती हैं। पैदल चलने वालों के लिए सड़क और भवनों से संलग्न दो हाथ चौड़ा रास्ता है। फुटपाथ सड़क से एक दो हाथ ऊँचा है और उस पर पत्थर का फ़र्श है। उसके आरंभ और अंत में लकड़ी की एक चर्ख़ी लगी रहती है जिको घुमाकर व्यक्ति अंदर आता है। यह इसलिए लगाते हैं कि पशु और घुड़सवार इसमें प्रवेश न कर सकें। महिलाएँ और पुरुष उस पर आराम से चल सकें। रास्ते के दोनों ओर तीस हाथ की दूरी पर आठ हाथ ऊँचे लकड़ी के पाए लगे हैं। उनके ऊपर लोहे के चौखट में शीशे के लैम्प लटके होते हैं, जो रात को जला दिए जाते हैं। इस कार्य के लिए प्रत्येक मुहल्ले में दो मुलाज़िम नियुक्त हैं। एक आदमी तीसरे पहर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके शीशों को साफ़ करता है और तेल और बत्ती डाल देता है। दूसरा आदमी शाम होने पर चिराग़ों को जला देता है। इसलिए पलक झपकते ही गली और बाज़ार रौशन हो जाते हैं और उनको देखकर दिल ख़ुश हो जाता है। इस प्रकार सारे नगर में रोशनी हो जाती है। इस तरह देर रात तक रास्ते और बाज़ार में चलने वालों को अपने किसी दीप और मशाल की आवश्यकता नहीं रहती है। लन्दन की एक प्रिय बात यह है कि नगर के धनवान और शहज़ादे आधा मील प्रातः और संध्या काल पैदल सैर के लिए निकलते हैं। दिन में किसी साथी या सेवक की आवश्यकता नहीं होती। कहते हैं कि काला पत्थर रास्ते पर लटकाने के लिए स्कॉटलैंड से आया है और एक लाख रुपया इसका मुआवज़ा दिया गया है।

लन्दन में पानी की व्यवस्था

लन्दन में पानी पहाड़ी झरनों से लाया जाता है। नगर के दक्षिणी किनारे पर एक बहुत गहरा चौकोर तालाब बनाया गया है। पहाड़ी झरने का मीठा पानी उस तालाब में लाते हैं। शाही बाग़ के निकट एक नहर के द्वारा पानी तालाब में आता है। वहाँ से धातों से बने हुए नलों के द्वारा नगर के गली-मुहल्लों में आता है। प्रत्येक घर में संदूक़ के आकार का एक हौज होता है। उसमें एक सप्ताह के लिए पानी भर लेते हैं और हौज बंद कर देते हैं। इस प्रकार प्रत्येक सप्ताह पानी का भंडारन कर लेते हैं। यह पानी पीने और खाना बनाने में इस्तेमाल करते हैं। स्नान और धोने के लिए कुएँ का पानी इस्तेमाल करते हैं, जो हवेली में उपलब्ध होता है। यह मीठा होता है मगर नहर का पानी अधिक अच्छा और सुपाच्य होता है। सर्दी के मौसम में नहर का पावी जम जाता है। उस समय कुएँ का पानी इस्तेमाल करते हैं। लन्दन में शौचालय निर्माण और झाड़ू देने का चलन नहीं है। प्रत्येक हवेली में संडास बने हुए हैं, जिनकी नालियों के माध्यम से मल बहकर समुद्र में चला जाता है। रास्ते और गली में गंदगी कूड़ाकरकट डालने की कड़ी रोक है। इसपर अमल नहीं करने वालों पर जुर्माना किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए हवेली और उसके सामने का भाग साफ़ रखना आवश्यक है। प्रत्येक हवेली के अंदर एक चौकोर या गोल गड्डा होता है, जो लकड़ी के तख़्तों से बंद रहता है। घर का कूड़ाकरकट और गाय-बैल का गोबर उस गड्डे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में डाल देते हैं और उसे बंद रखते हैं। सफ़ाई का काम करने वाले प्रत्येक सप्ताह में एक बार आते हैं और उस खाद को गड्डे से निकाल लेते हैं। और एक रुपया इसका मुआवज़ा अदा करके गाड़ी से उसे नगर से बाहर ले जाते हैं और किसी जगह जमा करते है। वहाँ के किसान उसको ख़रीदकर अपने खेतों में डालते हैं। लन्दन के लोगों की संपन्नता का अंदाज़ा किया जा सकता है कि वे घास-फूस और कूड़ाकरकट भी बर्बाद नहीं करते हैं। और उनसे भी धन प्राप्त कर लेते हैं। फिर अन्य स्रोतों से क्या कुछ न करते होंगे। इसके अतिरिक्त हवेली की सजावट और बाग़ात की सफ़ाई और हरियाली जो इस देश में नज़र आती है, उसका अंदाज़ा करना चाहिए।

नृत्यगृह (नाच घर) का हाल

भारत में अमीर लोग नाचने-गाने वालों को अपने घर बुलाते हैं और अधिक धन व्यय करके नाच-गाने का आनंद लेते हैं। परंतु लन्दन में यह तरीक़ा नहीं है। वहाँ कुछ लोग मिलकर एक कम्पनी बना लेते हैं और उसके लिए अलग भवन में गाने के उपकरण और अन्य आवश्यक सामग्रियाँ एकत्र करते हैं। और कम्पनी सुकंठ गायकों और सुंदर नर्तकियों को मुलाज़िम के रूप में रख लेते है। वहाँ ढ़ोलक और तबला का चलन नहीं है। लन्दन में नाच घर बहुत प्रसिद्ध है। उनमें किंग गार्डन सबसे अच्छा है। बादशाह भी कभी-कभी उसमें जाते हैं। इसके अतिरिक्त मार्स, मुल और कॉकसाल इत्यादि अच्छे नाच घर हैं। रात के समय लोग तमाशा देखने के लिए नाच घर जाते हैं। आमतौर पर तीन-चार हज़ार व्यक्ति होते हैं। परंतु कभी-कभी दस हज़ार का मजमा जमा हो जाता है। ग़रीब लोग आठ आने का टिकट लेकर ज़मीन में बैठते हैं। मध्य वर्ग का टिकट एक रुपया है। उनको कुछ ऊँचा स्थान बैठने के लिए मिलता है और अमीरों और शाही ख़ानदोनों के लोगों के लिए बहुत ऊँचे स्थान पर नर्तकी और गायकों के निकट स्थान बनाया गया है। और इसके लिए पाँच रुपया का टिकट निर्धारित है। प्रत्येक व्यक्ति के बैठने के लिए अलग-अलग कुर्सी होती है। बादशाह और युवराजों के लिए विशेष रूप से अलग बैठने की व्यवस्था की जाती है। तमाशा देखने वाले अपना-अपना टिकट दिखाकर अंदर प्रवेश करते हैं। नाच घर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के मुलाज़िम उन्हें साथ ले जाकर निर्धारित कुर्सी पर बैठा देते हैं। तमाशा समाप्त होने के बाद दो घड़ी रात गुज़ारकर लोग अपने-अपने घर वापिस जाते हैं। इस बात से अंदाज़ा होता है कि ग़रीब आदमी को मात्र आट आना में और अमीरों को पाँच रुपया में ऐसा शाहाना तमाशा देखने को मिलता है। जो सपनों में भी उपलब्ध नहीं हो सकता। और नाच घर के व्यवस्थापकों को एक रात में सात-आठ हज़ार रुपये, बल्कि कभी-कभी बारह हज़ार तक मिल जाते हैं। इस प्रकार ख़र्च में मितव्यता और लोगों के कल्याण का सामान हो जाता है। अर्थात् कम ख़र्च में स्वोंत्तम का महावरा साकार होता है। उक्त बातों से लन्दन के लोगों की अक़्ल-समझ और आर्थिक स्थिति का अंदाज़ा किया जा सकता है। इसके विरूद्ध भारत में नौजवान एक रात में नाच-गाने वालों और भांडों, नक़्क़ालों का तमाशा देखने के लिए तीस-चालीस, बल्कि एक सौ पचास रुपया तक व्यय कर देते हैं। इस प्रकार बाप-दादा के अर्जित धन को थोड़े समय में ख़र्च करके दरबदर भीख माँगने पर विवश हो जाते हैं। अतएव इस नाच घर में नृत्य-गायन और अद्भुत नक़्लों के अतिरिक्त क़िस्से कहानियों के अलावा अन्य आकर्षक करतब और अद्भुत जादू, मंतर और व्यायाम संबंधी खेल देखने में आए जिनकी विशेषता अंकित करने में कलम और ज़ुबान, बल्कि सौ ज़ुबानें असमर्थ हैं। इसमें एक तमाशा सात रंग के पर्दों का है, जिसपर प्रत्येक क्षण रंगबिरंगी कलाकृति और अद्भुत आकृतियाँ नज़र आती हैं। दूसरा यह कि नाचने वाले और नक़्ल करने वाले देवदूतों और अप्सराओं का रूप धारण कर आँगन घर के तख़्तों के नीचे से एक दम ऊपर आते हैं। और कुछ देर नाच दिखाकर पलक झपकते ही अदृश्य हो जाते हैं।

इसी प्रकार एक नेग्रो दानव के रूप में अचानक प्रकट होता है, जिसको फ़िरंगी मामकिन कहते हैं। वह कभी सामने आता है, कभी अदृश्य हो जाता है और कभी दर्शकों में घुल-मिल जाता है। नर्तकी का हाथ पकड़कर नाचता है, कभी उसको साथ लेकर खिड़की से बाहर निकल जाता है और दोनों रस्सी की कमान के हल्क़ों (परिधियों) से बाहर कूद जाते हैं। इस प्रकार दर्शकों के मनोरंजन का कारण बनते हैं। यह अद्भुत तमाशा है। नाच घर का नियम यह है कि कोई व्यक्ति तमाशा के दौरान बातें नहीं करता है। इसीलिए लोगों की भीड़ के बावजूद हल्ला-गुल्ला बिल्कुल नहीं होता। परंतु जब कोई नक़्ल होती है या अधिक प्रिय नृत्य होता है तो प्रशंसा के रूप में तालियाँ बजाते हैं या सीट को थपथपाते हैं। जिससे अवाज़ उत्पन्न होती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण स्वरूप जो नक़लें वहाँ होती हैं, उनमें से कुछ नमूने के तौर पर यहाँ अंकित की जा रही हैं। 'पहली नक़ल' कहते हैं कि एक बादशाह की दो पुत्रियाँ थीं। बड़ी पुत्री बहुत दिखावा करती थी और बादशाह के आज्ञापालन और उनकी सेवा में लगी रहती थी। पिता उसके दिखावटी प्रेम एवं आज्ञापालन से बहुत प्रसन्न था। उसका विवाह एक राजकुमार से कर दिया और अपने महल में रखा और घर के सभी अधिकार उसे सौंप दिए। लेकिन छोटी पुत्री दिखावा मुक्त थी और पिता से सच्चा प्रेम करती थी परंतु सेवा नहीं करती थी। पिता भी उसकी ओर ध्यान नहीं देते थे। उसका विवाह फ्रांस के राजकुमार से कर दिया। जब बादशाह वृद्ध हो गया तो राजकाज बड़ी बेटी के हाथ आ गया। उसने अपने कुस्वभाव और बुरी नीयत के कारण नमकहराम अमीरों और मंत्रियों की सहायता से वृद्ध पिता को विवश करके सारे राज्याधिकार स्वयं प्राप्त कर लिए। बादशाह के वफ़ादार राज्य के सदस्यों को बर्ख़ास्त करके नए लोगों को नियुक्त किया गया। और वह राज करने लगी। बादशाह को विवश और लाचार करने के बाद उसे क़ैद कर दिया। जब छोटी पुत्री को यह हाल मालूम हुआ और पिता के क़ैद होने का हाल सुना तो उसको बहुत दुःख हुआ। और उसकी आँखों से आँसू जारी हो गए। उसने बाप की सहायता का निश्चय कर लिया और एक बड़ी सेना तैयार की, बर्ख़ास्त सदस्यगण उसके पक्षधर हो गए। उसकी नीयत में निश्छलता थी। उसने हमला करके बड़ी बहन पर विजय प्राप्त किया और पिता को क़ैद से मुक्त कराया। और बहन को बग़ावत की सज़ा के रूप में क़ैद कर दिया। इस घटना के बाद बादशाह अपनी अदूरदर्शिता को स्वीकारा। छोटी पुत्री से खेद व्यक्त किया और कुछ समय के बाद उसको अपना उत्तराअधिकारी बनाकर सत्ता उसके हवाले कर दिया।

दूसरी नक़्ल यह है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह रचाया और पहली पत्नी से छुपाकर उसको अलग रखा। कुछ समय बाद पहली पत्नी को पता चल गया तो उसने बड़ा हंगामा किया और क्रोध में उसकी अक़्ल-समझ गुम हो गई। उसने न्यायालय में पति के विरूद्ध मुक़दमा दायरकर दिया। ईसाइयों के धार्मिक ग्रंथ इंजील में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति एक पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह करे तो यह बड़ा अपराध होगा। वह व्यक्ति मृत्युदंड का भागी होगा। न्यायालय ने उस व्यक्ति के मृत्युदंड का आदेश दे दिया। पहली पत्नी जो लंबी अवधि तक पति के साथ रही थी वह अपने कृत पर पछताने लगी और ख़ूब रोने लगी। विलाप करती,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिर पीटती पति के साथ वधगृह की ओर चल पड़ी। दूसरी पत्नी भी परीशान होकर पति के साथ चलने लगी। पति मृत्य सूरत वधगृह की ओर जा रहा था। दोनों औरतों का विलाप लोगों के दिलों पर प्रभाव डाल रहा था। बादशाह ने यह हाल देखा तो न्यायालय से अनुशंसा करके फाँसी का आदेश रद्द करा दिया।

चाबुकसवार (घुड़सवार) चलसी का हाल

बादशाह के महल के दक्षिण एक मील की दूरी पर एक स्थान चलसी है। जहाँ एक चाबुकसवार (घुड़सवार) रहता है, जो घोड़े की सवारी में निपुणता रखता है और कलानिपुण समझा जाता है।

उसकी प्रशंसा में यह लिखा गया (मतलब)

प्रत्येक सप्ताह उसके करतब देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग उसके घर जाते हैं। आठ आना प्रति व्यक्ति को अंदर जाने के लिए देना पड़ता है। उसके भवन की चौहद्दी एक बीघा पर आधारित है। इसके मध्य में एक गोल घर बना हुआ है। पानी की निकासी के लिए रास्ता को ईंटों से पक्का कर दिया गया है। उसके चारों ओर पहले घोड़े को चाबुक मार-मारकर दौड़ाता है और जब वह तेज़ गति से दौड़ने लगता है तो उसी हालत में उचक्कर उसपर सवार हो जाता है। तेज़ गति से दौड़ते घोड़े पर एक टाँग से खड़ा हो जाता है। घोड़ा उसके आदेश के विरूद्ध नहीं करता और न निर्धारित मार्गों से बाल बराबर भी इधर-उधर होता है। वह सवार घोड़े की पीठपर पैर मारता, नाचता, गाता और सुर और ताल के अनुरूप आवाज़ें पैदा करता है। कभी घोड़े की ज़ीन की एक ओर लटक जाता है कभी दूसरी ओर। उसके बाद घोड़े की पीठ पर सो जाता है और उसपर लोट-पोट जाता है। फिर दोनों पाँव ज़ीन में फँसाकर दौड़ते घोड़े पर उल्टा सिर हो जाता है और बर्तानिया का अत्यंत छोटा सिक्का ज़मीन पर से उठा लेता है। इसमें क्षण भर भी विलंब नहीं होता। जिस तरह भारत के घुड़सवार हाथ से सिक्का उठाते हैं। उसके सामने कोई कीर्तिमान नहीं।

उसके बाद दूसरा घोड़ा लाता है और दोनों को कंधों से कंधा कान से कान मिलाकर दौड़ाता है और उसी तरह नाचता कूदता कभी इस घोड़े पर खड़ा हो जाता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है कभी उस घोड़े पर। उसके बाद तीसरा घोड़ा दौड़ाकर उसी तरह सवारी करता है। अद्भुत बात यह है कि एक घोड़े से दूसरे और तीसरे घोड़े पर कूदकर ज़ीन पर आ जाता है। लोगों को अत्यंत आश्चर्य होता है। अंत में पाँच हाथ लंबी दो लकड़ियाँ लेता है, जिनमें नीचे ऊपर क्रम से छिद्र होते हैं। और दो लकड़ी दोनों लंबी लकड़ियों के बीच चौड़ाई में रखकर उस लकड़ी के दोनों किनारे बंद होते हैं। पहली दूरी नीचे से क़मर तक, दूसरी कमर से सीना तक और तीसरी गले तक और चौथी सिर तक और पाँचवीं सिर से एक बित्ता ऊपर होता है। इस चाबुकसवार ने घोड़े को चौथी छिद्र से कुदाकर निकाला, जिस समय पाँचवीं तक पहुँचा अचानक घोड़े का पाँव पाँचवीं लकड़ी से उलझ गया और चाबुकसवार घोड़े से गिर पड़ा। उसको गहरी चोटें आईं परंतु इतनी तकलीफ़ को वह ख़ातिर में न लाया और जैसे ही गिरा तत्क्षण उठकर खड़ा हुआ और पलक झपकते ही पुनः घोड़े पर सवार हो गया। और यह ख़्याल करके कि दर्शक घुड़सवार की ग़लती न बताएँ वह गिरने की शर्मिंदगी जो घोड़े के पाँव उलझने से हुई थी उसपर क्रोधित हुआ। और घोड़े को कई कोड़े मारे और उसको दौड़ाकर पाँचवें ख़ाने के ऊपर से निकल गया। और लोगों ने ख़ूब प्रशंसाएँ कीं।

लन्दन के विद्यालय (ऑक्सफोर्ड)

लन्दन के विद्यालय जो नगर के आस-पास स्थित हैं, उनमें ऑक्सफोर्ड बहुत प्रसिद्ध है। यह लन्दन से दो मंज़िल की दूरी पर है। इसकी स्थापना का एक हज़ार वर्ष से अधिक का ज़माना बीत चुका है। इसके साथ एक गिरजा घर भी है। यहाँ प्राचीन बाग़ात (वाटिकाएँ) बहुत हैं और अत्यंत अच्छी स्थिति में हैं। विद्यालय के भवनों में कोई ख़राबी उत्पन्न नहीं हुई है। बिल्कुल नए भवनों जैसे हैं। इनकी छत सीसों के तख़्तों से बनाई गई हैं, जिनपर पानी का कोई प्रभाव नहीं होता। टूटने-फूटने का तो नाम नहीं है। आंतरिक छत समतल हैं और चित्रों से सुसज्जित। छत की बीम लकड़ी की जगह लोहे की हैं। सभी भवनों की छत पर बंगलानुमा चतुर्थ द्वार बना है जैसा बंगाल में प्रचलन है। उसमें बीम और पाए नहीं होते हैं, बल्कि उन्हें लोहे के छल्लों और कीलों से जकड़ दिया जाता है और छत सीसे (रांगे) के तख़्तों की होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिर पीटती पति के साथ वधगृह की ओर चल पड़ी। दूसरी पत्नी भी परीशान होकर पति के साथ चलने लगी। पति मृत्य सूरत वधगृह की ओर जा रहा था। दोनों औरतों का विलाप लोगों के दिलों पर प्रभाव डाल रहा था। बादशाह ने यह हाल देखा तो न्यायालय से अनुशंसा करके फाँसी का आदेश रद्द करा दिया।

चाबुकसवार (घुड़सवार) चलसी का हाल

बादशाह के महल के दक्षिण एक मील की दूरी पर एक स्थान चलसी है। जहाँ एक चाबुकसवार (घुड़सवार) रहता है, जो घोड़े की सवारी में निपुणता रखता है और कलानिपुण समझा जाता है।

उसकी प्रशंसा में यह लिखा गया (मतलब)

प्रत्येक सप्ताह उसके करतब देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग उसके घर जाते हैं। आठ आना प्रति व्यक्ति को अंदर जाने के लिए देना पड़ता है। उसके भवन की चौहद्दी एक बीघा पर आधारित है। इसके मध्य में एक गोल घर बना हुआ है। पानी की निकासी के लिए रास्ता को ईंटों से पक्का कर दिया गया है। उसके चारों ओर पहले घोड़े को चाबुक मार-मारकर दौड़ाता है और जब वह तेज़ गति से दौड़ने लगता है तो उसी हालत में उचक्कर उसपर सवार हो जाता है। तेज़ गति से दौड़ते घोड़े पर एक टाँग से खड़ा हो जाता है। घोड़ा उसके आदेश के विरूद्ध नहीं करता और न निर्धारित मार्गों से बाल बराबर भी इधर-उधर होता है। वह सवार घोड़े की पीठपर पैर मारता, नाचता, गाता और सुर और ताल के अनुरूप आवाज़ें पैदा करता है। कभी घोड़े की ज़ीन की एक ओर लटक जाता है कभी दूसरी ओर। उसके बाद घोड़े की पीठ पर सो जाता है और उसपर लोट-पोट जाता है। फिर दोनों पाँव ज़ीन में फँसाकर दौड़ते घोड़े पर उल्टा सिर हो जाता है और बर्तानिया का अत्यंत छोटा सिक्का ज़मीन पर से उठा लेता है। इसमें क्षण भर भी विलंब नहीं होता। जिस तरह भारत के घुड़सवार हाथ से सिक्का उठाते हैं। उसके सामने कोई कीर्तिमान नहीं।

उसके बाद दूसरा घोड़ा लाता है और दोनों को कंधों से कंधा कान से कान मिलाकर दौड़ाता है और उसी तरह नाचता कूदता कभी इस घोड़े पर खड़ा हो जाता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है कभी उस घोड़े पर। उसके बाद तीसरा घोड़ा दौड़ाकर उसी तरह सवारी करता है। अद्‌भुत बात यह है कि एक घोड़े से दूसरे और तीसरे घोड़े पर कूदकर ज़ीन पर आ जाता है। लोगों को अत्यंत आश्चर्य होता है। अंत में पाँच हाथ लंबी दो लकड़ियाँ लेता है, जिनमें नीचे ऊपर क्रम से छिद्र होते हैं। और दो लकड़ी दोनों लंबी लकड़ियों के बीच चौड़ाई में रखकर उस लकड़ी के दोनों किनारे बंद होते हैं। पहली दूरी नीचे से क़मर तक, दूसरी कमर से सीना तक और तीसरी गले तक और चौथी सिर तक और पाँचवीं सिर से एक बित्ता ऊपर होता है। इस चाबुकसवार ने घोड़े को चौथी छिद्र से कुदाकर निकाला, जिस समय पाँचवीं तक पहुँचा अचानक घोड़े का पाँव पाँचवीं लकड़ी से उलझ गया और चाबुकसवार घोड़े से गिर पड़ा। उसको गहरी चोटें आईं परंतु इतनी तकलीफ़ को वह ख़ातिर में न लाया और जैसे ही गिरा तत्क्षण उठकर खड़ा हुआ और पलक झपकते ही पुनः घोड़े पर सवार हो गया। और यह ख़्याल करके कि दर्शक घुड़सवार की ग़लती न बताएँ वह गिरने की शर्मिंदगी जो घोड़े के पाँव उलझने से हुई थी उसपर क्रोधित हुआ। और घोड़े को कई कोड़े मारे और उसको दौड़ाकर पाँचवें ख़ाने के ऊपर से निकल गया। और लोगों ने ख़ूब प्रशंसाएँ कीं।

लन्दन के विद्यालय (ऑक्सफोर्ड)

लन्दन के विद्यालय जो नगर के आस-पास स्थित हैं, उनमें ऑक्सफोर्ड बहुत प्रसिद्ध है। यह लन्दन से दो मंज़िल की दूरी पर है। इसकी स्थापना का एक हज़ार वर्ष से अधिक का ज़माना बीत चुका है। इसके साथ एक गिरजा घर भी है। यहाँ प्राचीन बाग़ात (वाटिकाएँ) बहुत हैं और अत्यंत अच्छी स्थिति में हैं। विद्यालय के भवनों में कोई ख़राबी उत्पन्न नहीं हुई है। बिल्कुल नए भवनों जैसे हैं। इनकी छत सीसों के तख़्तों से बनाई गई हैं, जिनपर पानी का कोई प्रभाव नहीं होता। टूटने-फूटने का तो नाम नहीं है। आंतरिक छत समतल हैं और चित्रों से सुसज्जित। छत की बीम लकड़ी की जगह लोहे की हैं। सभी भवनों की छत पर बंगलानुमा चतुर्थ द्वार बना है जैसा बंगाल में प्रचलन है। उसमें बीम और पाए नहीं होते हैं, बल्कि उन्हें लोहे के छल्लों और कीलों से जकड़ दिया जाता है और छत सीसे (रांगे) के तख़्तों की होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारिश और तूफ़ानी हवाओं का उनपर कोई प्रभाव नहीं होता है। पुराने बाग़ विचित्र रूप में नज़र आते हैं। सुंदर कियारियाँ और हाशिए बड़े सलीक़े से सजाए गए हैं। उन हाशियों (किनारों/पट्टियों) में लगे हुए पौधों और वृक्षों को काट कर मनुष्य और पशुओं की आकृतियाँ बनाई गई हैं। कुछ भवन और बरामदे के रूप में बनाए हैं। पूछने पर बताया गया कि यह काम एक लंबी अवधि में संपन्न होता है। और जब तक बाग़ पुराना न हो जाए इस प्रकार का रूप देना संभव नहीं होता। इस विद्यालय में एक शिक्षक डॉ. नलीट हंट डरीक़ थे। विद्यालय में फ़ारसी भाषा की प्रायः पुस्तकें मौजूद हैं 'कलीला व दमना' का अनुवाद भी नज़र आया। इसके अतिरिक्त शब्दकोश 'फ़रहंग जहाँगीरी' का अंत जो मैंने कप्तान सुईटन को नक़्ल करके दिया था वहाँ मौजूद था। उस जगह श्री जौंस ... से भेट हुई जो कलकत्ता के एक न्यायालय में काम करते हैं। वह और कप्तान सुईटन मुझको पुस्तकालय में ले गए जहाँ हम ने अरबी और फ़ारसी की पुस्तकें देखीं। उनमें एक फ़ारसी और तुर्की में लिखा पत्र था जो बादशाह मुलिकुलबह्र ने बादशाह बर्तानिया के नाम लिखा था। यह स्थान रोम देश के उपनगर में समुद्र के तट पर अवस्थित है। कहते हैं कि उस समय लन्दन के अंदर कोई अच्छा फ़ारसी का ज्ञाता मौजूद न था। फिर भी इस पत्र को पढ़ा गया। परंतु इसका पूरा विषय समझ में नहीं आया। जगह-जगह शक-शुब्हा बाक़ी रहा। वह पत्र मुझको दिखाया गया मैंने उसको पढ़कर उन लोगों को मतलब बताया। उसके बाद उन लोगों ने कई पुस्तकें निकालकर परीक्षा स्वरूप मेरे सामने रखीं और उनके कतिपय अंशों का मतलब पूछा जो मैंने विस्तार के साथ बताकर उनको समझा दिया।

लन्दन क़ी यात्रा के दौरान जब मैं पोत पर सवार था, कप्तान सुईटन ने मुझसे पूरी 'कलीला व दमना' पढ़ी और 'फ़हरंग जहाँगीरी' के बारह अध्याय जो कि फ़ारसी व्याकरण हैं उनका अनुवाद किया और लन्दन पहुँचने के बाद श्री जौंस ने उसी अनुवाद की सहायता से शकरिस्तान का अनुवाद कप्तान सुईटन के साथ मिलकर किया और उसे प्रकाशित करा दिया। और उसको बेचकर बहुत अधिक लाभ कमाया। आजकल यह पुस्तक भारत में रहने वाले अँग्रेज़ों में काफ़ी लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में अत्यंत सुंदर चित्र हैं, जो प्राचीन निपुण कलाकार और अद्वितीय उस्तादों ने बनाए हैं। यह अनुपम और अनुपलब्ध पुस्तकें और चित्र देश के अमीरों और रईसों ने विभिन्न देशों से ख़रीदी हैं। उनमें कतिपय एक हज़ार से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीस हज़ार रुपया देकर प्राप्त कीं और उनको पुस्तकालयों की शोभा बनाई हैं। इसके अतिरिक्त संगमरमर से तराशे मर्दों और औरतों की प्रतिमाएँ रखी हैं, जो यूनान और मिस्र के बने हुए हैं, देखने में आए। प्राचीन मर्दों की प्रतिमाओं का क़द पाँच से सात हाथ ऊँचा है। मुझको उन प्रतिमाओं की उन विशेषताओं का ज्ञान नहीं, जो उनमें छुपी हैं। अलबत्ता उनके आकार और प्रकार, नाज़ और अदा और गतियों का बख़ूबी अंदाज़ा होता है। जीवित व्यक्तित्वों के मुक़ाबले रत्ती भर अंतर नहीं नज़र आता है। इस कार्य में कलाकार मानी और बहज़ाद पर भी बढ़त ले गए। यद्यपि वर्तमान युग में लन्दन ज्ञान और कलाओं का केंद्र है। परंतु वहाँ ऐसे चित्र और प्रतिमाएँ नहीं बन सकते। फिर भी उन लोगों को प्राचीन चित्रों की तलाश रहती है।

कहते हैं कि मिस्र में निपुण कला का उस्ताद चित्रकार था, जिसकी जादूई क़लम से बनाए हुए चार चित्रों को सारे संसार में प्रसिद्धि प्राप्त है। जिस काल में फ़ारस के बादशाह गोदज़ाशकाफ़ी ने पैग़म्बर हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम से बदला लेने के लिए यहूदियों पर सैनिक हमला करके उस क़ौम को तबाह और बर्बाद कर दिया और मिस्र को रौंद डाला, उस समय यूनानी शिक्षाविदों की लिखी पुस्तकें और चित्रें भी तितर-बितर हो गईं और उनके उक्त चार चित्रों में से एक ग़ायब हो गया। लन्दन के लोगों ने उसकी तलाश के लिए दृढ़ संकल्प लिया और घोषणा कर दी कि जो व्यक्ति इस चित्र को तलाश करके लाएगा उसको एक लाख रुपया दिया जाएगा। कतिपय धनवानों ने दो और तीन लाख रुपया मुआवज़ा निर्धारित किया परंतु अब तक वह चित्र नहीं मिल सका। जिसका उन लोगों को बहुत पश्चाताप है। तीन चित्र जो मिले हैं वे लन्दन में सुरक्षित हैं।

बयान करते हैं कि प्राचीन काल में लन्दन के अंदर एक अद्वितीय कला निपुण चित्रकार था। वह एक ग़रीब व्यक्ति को अपने घर ले गया और उसको बेहोश कर दिया। उसके बाद उसके दोनों पाँव ज़मीन पर एक कील में मज़बूती से बाँध दिए और हाथ दोनों ओर फैलाकर भवन की एक दीवार के साथ बाँधे। जब वह व्यक्ति होश में आया तो उसके पेट पर ख़नज़र मार दिया। उस समय मौत की जो स्थिति थी उसकी चित्रकारी की और जो स्थिति उसपर गुज़र रही थी उसको चित्र में हूबहू उतार लिया। इससे पूर्व किसी चित्रकार ने उक्त स्थिति (कैफ़ीयत) की चित्रकारी नहीं की थी। निपुण कलाकारों ने उस चित्र की बहुत प्रशंसा की और आश्चर्य व्यक्त किया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारिश और तूफ़ानी हवाओं का उनपर कोई प्रभाव नहीं होता है। पुराने बाग़ विचित्र रूप में नज़र आते हैं। सुंदर कियारियाँ और हाशिए बड़े सलीक़े से सजाए गए हैं। उन हाशियों (किनारों/पट्टियों) में लगे हुए पौधों और वृक्षों को काट कर मनुष्य और पशुओं की आकृतियाँ बनाई गई हैं। कुछ भवन और बरामदे के रूप में बनाए हैं। पूछने पर बताया गया कि यह काम एक लंबी अवधि में संपन्न होता है। और जब तक बाग़ पुराना न हो जाए इस प्रकार का रूप देना संभव नहीं होता। इस विद्यालय में एक शिक्षक डॉ. नलीट हंट डरीक़ थे। विद्यालय में फ़ारसी भाषा की प्रायः पुस्तकें मौजूद हैं 'कलीला व दमना' का अनुवाद भी नज़र आया। इसके अतिरिक्त शब्दकोश 'फ़रहंग जहाँगीरी' का अंत जो मैंने कप्तान सुईटन को नक़्ल करके दिया था वहाँ मौजूद था। उस जगह श्री जौंस ... से भेट हुई जो कलकत्ता के एक न्यायालय में काम करते हैं। वह और कप्तान सुईटन मुझको पुस्तकालय में ले गए जहाँ हम ने अरबी और फ़ारसी की पुस्तकें देखीं। उनमें एक फ़ारसी और तुर्की में लिखा पत्र था जो बादशाह मुलिकुलबहूर ने बादशाह बर्तानिया के नाम लिखा था। यह स्थान रोम देश के उपनगर में समुद्र के तट पर अवस्थित है। कहते हैं कि उस समय लन्दन के अंदर कोई अच्छा फ़ारसी का ज्ञाता मौजूद न था। फिर भी इस पत्र को पढ़ा गया। परंतु इसका पूरा विषय समझ में नहीं आया। जगह-जगह शक-शुब्हा बाक़ी रहा। वह पत्र मुझको दिखाया गया मैंने उसको पढ़कर उन लोगों को मतलब बताया। उसके बाद उन लोगों ने कई पुस्तकें निकालकर परीक्षा स्वरूप मेरे सामने रखीं और उनके कतिपय अंशों का मतलब पूछा जो मैंने विस्तार के साथ बताकर उनको समझा दिया।

लन्दन क़ी यात्रा के दौरान जब मैं पोत पर सवार था, कप्तान सुईटन ने मुझसे पूरी 'कलीला व दमना' पढ़ी और 'फ़हरंग जहाँगीरी' के बारह अध्याय जो कि फ़ारसी व्याकरण हैं उनका अनुवाद किया और लन्दन पहुँचने के बाद श्री जौंस ने उसी अनुवाद की सहायता से शकरिस्तान का अनुवाद कप्तान सुईटन के साथ मिलकर किया और उसे प्रकाशित करा दिया। और उसको बेचकर वहुत अधिक लाभ कमाया। आजकल यह पुस्तक भारत में रहने वाले अँग्रेज़ों में काफ़ी लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में अत्यंत सुंदर चित्र हैं, जो प्राचीन निपुण कलाकार और अद्वितीय उस्तादों ने बनाए हैं। यह अनुपम और अनुपलब्ध पुस्तकें और चित्र देश के अमीरों और रईसों ने विभिन्न देशों से ख़रीदी हैं। उनमें कतिपय एक हज़ार से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीस हज़ार रुपया देकर प्राप्त कीं और उनको पुस्तकालयों की शोभा बनाई हैं। इसके अतिरिक्त संगमरमर से तराशे मर्दों और औरतों की प्रतिमाएँ रखी हैं, जो यूनान और मिस्र के बने हुए हैं, देखने में आए। प्राचीन मर्दों की प्रतिमाओं का क़द पाँच से सात हाथ ऊँचा है। मुझको उन प्रतिमाओं की उन विशेषताओं का ज्ञान नहीं, जो उनमें छुपी हैं। अलबत्ता उनके आकार और प्रकार, नाज़ और अदा और गतियों का बख़ूबी अंदाज़ा होता है। जीवित व्यक्तित्वों के मुक़ाबले रत्ती भर अंतर नहीं नज़र आता है। इस कार्य में कलाकार मानी और बहज़ाद पर भी बढ़त ले गए। यद्यपि वर्तमान युग में लन्दन ज्ञान और कलाओं का केंद्र है। परंतु वहाँ ऐसे चित्र और प्रतिमाएँ नहीं बन सकते। फिर भी उन लोगों को प्राचीन चित्रों की तलाश रहती है।

कहते हैं कि मिस्र में निपुण कला का उस्ताद चित्रकार था, जिसकी जादूई क़लम से बनाए हुए चार चित्रों को सारे संसार में प्रसिद्धि प्राप्त है। जिस काल में फ़ारस के बादशाह गोदज़ाशकाफ़ी ने पैग़म्बर हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम से बदला लेने के लिए यहूदियों पर सैनिक हमला करके उस क़ौम को तबाह और बर्बाद कर दिया और मिस्र को रौंद डाला, उस समय यूनानी शिक्षाविदों की लिखी पुस्तकें और चित्रें भी तितर-बितर हो गईं और उनके उक्त चार चित्रों में से एक ग़ायब हो गया। लन्दन के लोगों ने उसकी तलाश के लिए दृढ़ संकल्प लिया और घोषणा कर दी कि जो व्यक्ति इस चित्र को तलाश करके लाएगा उसको एक लाख रुपया दिया जाएगा। कतिपय धनवानों ने दो और तीन लाख रुपया मुआवज़ा निर्धारित किया परंतु अब तक वह चित्र नहीं मिल सका। जिसका उन लोगों को बहुत पश्चाताप है। तीन चित्र जो मिले हैं वे लन्दन में सुरक्षित हैं।

बयान करते हैं कि प्राचीन काल में लन्दन के अंदर एक अद्वितीय कला निपुण चित्रकार था। वह एक ग़रीब व्यक्ति को अपने घर ले गया और उसको बेहोश कर दिया। उसके बाद उसके दोनों पाँव ज़मीन पर एक कील में मज़बूती से बाँध दिए और हाथ दोनों ओर फैलाकर भवन की एक दीवार के साथ बाँधे। जब वह व्यक्ति होश में आया तो उसके पेट पर ख़नजर मार दिया। उस समय मौत की जो स्थिति थी उसकी चित्रकारी की और जो स्थिति उसपर गुज़र रही थी उसको चित्र में हूबहू उतार लिया। इससे पूर्व किसी चित्रकार ने उक्त स्थिति (कैफ़ीयत) की चित्रकारी नहीं की थी। निपुण कलाकारों ने उस चित्र की बहुत प्रशंसा की और आश्चर्य व्यक्त किया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंतु एक पीड़ित के साथ अत्याचारी चित्रकार के क्रूर व्यवहार के कारणं बादशाह ने उसको कठोर दण्ड का आदेश दिया। उस समय चित्रकार ने कहा यह चित्र अभी अपूर्ण है। इस पर रोग़न लगाना शेष है। चित्र उसको वापस की गई। उस निडर अत्याचारी ने उसपर सियाही छिड़क दी। पूरा चित्र काला हो गया। लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ और अफ़ूसोस करने लगे कि इतना उत्कृष्ट चित्र ख़राब हो गया। उसको पकड़कर बादशाह के पास ले गए। उसने पूछा कि तुमने ऐसी हरकत क्यों की। उसने जवाब दिया कि मैंने एक चित्र बड़ी मेहनत से बनाया था इसके कारण मेरी जान जा रही है मुझको इस चित्र से क्या लाभ है। बादशाह ने कहा अगर तुम्हारी जान बख़्श दी जाए तो दुबारा ऐसा चित्र बना दोगे? चित्रकार ने कहा कि हर ताले की एक कुंजी ज़रूर होती है। बादशाह ने उसकी सज़ा माफ़ कर दी। चित्रकार ने ख़ून से मिले हुए काग़ज़ पर जो सियाही डाली थी उसको कुछ मिलाए हुए पानी से साफ़ किया क्योंकि काग़ज़ उस समय तक सियाही सोख नहीं पाया था। उसके बाद चित्र पूर्वत साफ़ हो गया। दर्शक आश्चर्यचकित रह गए। इस कला के उस्तादों ने उस चित्रकार को अपना मार्गदर्शक बनाया। शिक्षाविद और प्रबुद्ध समझ सकते हैं कि जिस क़ौम के लोग एक काग़ज़ी चित्र के बदले दो लाख रुपया देते हैं और कला (हुनर) का आदर करते हैं। देश के विशिष्ट जन कला और कलाकार का सम्मान उनकी विशिष्टता एवं उनके पद के अनुरूप करते और उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। उस देश में शिक्षा और कला की प्रोन्नति न हो तो आश्चर्य की बात होगी। इसके विपरीत भारत में यदि कोई व्यक्ति अपनी पूरी आयु शिक्षा के विकास और कला में निपुणता की प्राप्ति में व्यतीत करके द्वितीय अफ़लातून और मर्मज्ञ अद्वितीय हो जाए तो भी उसका सम्मान नहीं करते हैं, बल्कि उसको अपमानित होना पड़ता है। यह एक आश्चर्यजनक बात है।

वेध शाला का भवन

यहाँ वेध शाला का भवन देखने में आया। यह एक हज़ार फ़िट ऊँचा है और उसके नीचे पाँच सौ फुट का गोल कुआँ है जो काले पत्थरों से निर्मित किया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया है। यह नौ वर्गों पर आधारित है उसके ऊपर प्रत्येक वर्ग में एक उंगुल का छिद्र है, ऊपर से कुँए की तह तक नौ गोल छिद्र बने हैं। जगह-जगह ज्योतिष विद्या और खगौलशास्त्र (फ़न हैयूयत) की पुस्तकें रखी हैं। कला मर्मज्ञ उसके ऊपर जाकर शीशों और दूरबीनों के द्वारा तारों और ग्रहों की चाल और गति का निरीक्षण करते हैं और बारह बुर्जों के प्रभाव मालूम करते हैं। उनका उतार-चढ़ाव देखते हैं। उसके निकट खगौलशास्त्र का विद्यालय है। जहाँ उसकी शिक्षा दी जाती है। उसमें पृथ्वी और आकाश के रूपों को भी देखा, जो लकड़ी से बनाई हैं। सातवाँ आकाश भी देखा जो दूसरे आकाशों को घेरे हुए है। और दूसरे आकाश गाड़ियों के पहियों की तरह नीचे ऊपर हैं और मध्य भाग शून्य है। साधारणतः लोगों का मत है कि पृथ्वी और आकाश नीचे-ऊपर तहदार हैं। यह विचार ग़लत है। बर्तानिया के ज्ञानी कहते हैं कि यदि सब आकाश ऊपर-नीचे होते तो तारे और ग्रह जो सातों आकाश पर हैं वह नज़र नहीं आते। मुझे इस मामला में शक था। उन आकृतियों को देखकर मेरा शक दूर हो गया। संसार का रूप आकाशों की छः दिशाओं में समतुल्य वृत्तों में अंडे की तरह लटकी बनाई गई है। जब इसको लकड़ी के दस्ते से चर्ख़े की तरह घुमाते हैं तो पृथ्वी गतिमान हो जाती है और आकाश स्थर रहते हैं। पृथ्वी गोलाई में घूमती है। एक क्षण में तीन सौ साठ बार घूमती है और एक घन्टे में नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का नीचे हो जाता है। उस स्थान पर संसार का मानचित्र भी देखा, जो संसार के गोले में दायें-बायें और ऊपर-नीचे बनाया है। चूँकि संसार आकाशों के मध्य में है इसलिए प्रत्येक देश के लोगों को उसी आकाश पर चाँद तारे और सूर्य नज़र आते हैं। सब कहते हैं कि हम संसार के ऊपर हैं और दूसरे लोग हमारे नीचे हैं। यद्यपि यह बातें विश्वास के निकट है। परंतु फ़ारस और बर्तानिया के खगोलशास्त्री पृथ्वी परिक्रमा के बारे में विभिन्न विचार व्यक्त करते हैं। इन बातों से उस समय तक विश्वास और संतोष नहीं होता जब तक शिक्षा और ज्ञान में निपुणता प्राप्त न हो। जब पृथ्वी परिक्रमा करती हुई राशियों के सामने आती है तो उस समय कहा जाएगा कि अब अमुक राशि का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ रहा है। और जिस समय सूर्य और चंद्रमा और तारों और ग्रहों की छाया पृथ्वी पर पड़ती है उस समय कहते हैं अमुक तारा अमुक राशि में आया है। और पूरे दिन में एक राशि से दूसरी में जाता है। चंद्रमा जो द्रूतगामि है एक क्षण में तीन सौ साठ बार परिक्रमा काता है। और प्रत्येक महीने एक बार एक समय में सूर्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के सामने आता है, जिसको लगन कहा जाता है। इनके अतिरिक्त वहाँ उस्तुरलाब पंचांग भी देखने में आया। जो गोल आकृति में बनाया गया है। इसमें ज्योजिष विद्या का हिसाब अंकों (हिंदसों) में लिखा हुआ है, जिससे शुभ अशुभ और समय का ज्ञान होता है।

चिकित्सा विद्यायल

इस विद्यालय में चिकित्सा विभाग भी है, जहाँ मानव शरीर के अंगों के अंग-अंग लोहे की ज़ंजीरों और कीलों से क्रमवार एक दूसरे से बँधे हुए हैं ताकि मानवीय अंगों से जिस अंग के रूप और स्थिति में शंका हो उनको देख ले।

फ़्रांसीसियों का जादूघर

एक दर्शनीय स्थान फ़्रांस के लोगों का प्रार्थना घर है। जहाँ जादूई करतब देखने में आते हैं। एक जादू यह है कि तांबे का एक छोटा-सा हौज है। उसमें लकड़ी की बनी हुई एक बत्तख़ डाल दी गई है। जो तैरती रहती है। जिस समय दर्शक जमा हो जाते हैं तो हौज का मालिक बत्तख़ को जिस व्यक्ति की ओर संकेत करता है वह लकड़ी की बत्तख़ दूसरी ओर से लौटकर उस व्यक्ति के ओर मुँह करके हौज के किनारे पहुँचकर खड़ी हो जाती है। अद्भुत बात यह है कि एक व्यक्ति के नाम के शब्द बिना क्रमवार लिखकर अलग-अलग हौज में डाल देते हैं। वह चौबी बत्तख़ क्रमवार प्रत्येक शब्द की ओर मुँह करती है यहाँ तक कि उस व्यक्ति का नाम पूरा हो जाता है। इस हाल को देखकर बुद्धि उसकी वास्तविकता तक नहीं पहुँचती लेकिन अनुमान से मालूम होता है कि शायद लोहे और अग्नि पत्थर की विशेषता होगी जो लकड़ी की बत्तख़ के जिस्म के अंदर होगा जो घूमता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाच घर ख़ाकसाँ

लन्दन नगर के पूर्वी दिशा में दरिया के पार आधे मील की दूरी पर एक बाग़ है। जिसके मध्य में एक ऊँचा चबूतरा घोंसले की तरह बनाया है। उसके ऊपर नाच-गाने की महफ़िल जमती है। दर्शक चबूतरे के नीचे खड़े होकर तमाशा देखते हैं। बी.बी.सन और बी.बी.बन सन जो नाच गाने में प्रसिद्ध हैं वहाँ गाती हैं और लोगों से प्रशंसा प्राप्त करती हैं। इस बाग़ के दूसरे भाग में एक चित्रालय है, इसमें मर्दों और औरतों के बहुत सारे चित्र हैं। इनमें कुछ चित्र अप्सरा पुत्रों के हैं, जिनकी दोनों भुजाएँ पंखदार हैं। उन अद्भुत वस्तुओं में एक विशेषता यह है कि बहुत सुंदर और आकर्षक हैं। एक और कमरा देखा जिसमें विभिन्न प्रकार के चित्र हैं। उनमें एक चित्र ऐसा है जिसमें सेराजुद्दौला के पराजय के बाद मीर जाफ़र को लार्ड कारतूस और दूसरे अँग्रेज़ अधिकारियों से हाथ मिलाते और गले मिलते दिखाया गया है। इसी कमरा के अन्य भाग में आतिशबाज़ी के करतब दिखाए जाते हैं। और चादर को गति देते हैं तो असंख्य दीप जल उठते हैं। यह भी अद्भुतों में से एक है। यहाँ से दो मील की दूरी पर मुहल्ला काऊंट स्ट्रीट है, जहाँ तरह-तरह के करतब दिखाए जाते हैं। नाच-गाना के अतिरिक्त महिलाएँ और लड़के रस्सियों पर लटककर और चल-फिरकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इसके अतिरिक्त एक भीमकाय और सुंदर महिला को देखा, जो काऊंट स्ट्रीट के बाज़ार के निकट रहती है। उसको देखने के लिए महिलाएँ और पुरुष बड़ी संख्या में जाते हैं। वह एक रुपया मुहँ दिखाई लेती है। लन्दन के अतिरिक्त सारे देश में इसकी प्रसिद्धि फैल चुकी है। उसका क़द पाँच हाथ से अधिक है। जब उसको मालूम हुआ कि एक काला आदमी उसको देखने आया है, तो हँसती हुई बहुत प्रसन्न होकर बाहर निकल आई। मैं उसके बराबर खड़ा हुआ तो उसकी बग़ल तक न पहुँच सका। मैंने उसके सामने अपने को ऐसा महसूस किया जैसे सूरज के सामने बेक़दर सितारा होता है। उसके डील-डौल पर नज़र डाली तो मालूम हुआ कि उसका पंजा और हाथ मेरी रान से अधिक मोटा था। उसका मोटापा और क़द, लंबाई के अनुपात में उचित था। उसका चेहरा और डील-डौल शक्तिशाली पहलवान जैसा था। पेट इतना बड़ा था कि मोटापे के कारण चलने-फिरने से लाचार थी। उसकी ज़ाहिरी बनावट और शक्ल और सूरत में इतना आकर्षण है कि क़लम से उसका चित्ररण संभव नहीं और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न उसके रूप-रंग की प्रशंसा की जा सकती है। मुझको उस परी चेहरा और हैरान कर देने वाली सूरत को देखकर बड़ा आश्चर्य और प्रसन्नता हुई। उस महिला ने भी किसी भारतीय को मेरे जैसे वस्त्र में नहीं देखा था इसलिए मुझे देखकर आश्चर्यचकित हुई। मैं उसको देखता रहा और वे मुझे देखती रही।

राजकीय संग्रहालय (ब्रिटिश म्यूज़ियम) का उल्लेख

राजकीय संग्रहालय बर्तानिया के बादशाह ने स्थापित किया है। यह नगर के उत्तरी ओर मार्केट में स्थित है। जिसमें हर देश की ख़ास-ख़ास वस्तुएँ, थल और जल के अनुपम धरोहर नमूने के रूप में रखे हुए हैं। यह इस बात के प्रमाण के लिए हैं कि यदि कोई विद्ववान, प्रबुद्ध विभिन्न वस्तुओं की पहचान में शंका करे तो संग्रहालय में जाकर अपनी आँखों से देख ले और पहचान ले। उसके अंदर नागरी, बंगला और दक्षिणी लिपि में लिखित पुस्तकें हैं और धार्मिक ग्रंथ अरबी, फ़ारसी, सिरयानी और चीनी भाषा की पांडुलिपियाँ भी हैं। उनके अतिरिक्त अग्निपूजकों के र्धामिक ग्रंथों उदाहरण स्वरूप ज़ंद और अवस्ता भी मौजूद हैं। विभिन्न प्रकार के रत्न (जवाहरात) जैसे पुलक, लाल, पन्ना, नीलम, अक़ीक़, हीरा, मूंगा, मोती, अस्ली और नक़्ली दोनों देखने में आए। उन सब के अतिरिक्त एक बड़ा हीरा है जो पाव भर वज़न का होगा। इसका एक नमूना संग बिल्लौर से तराशकर रखा है। कहते हैं कि चालीस वर्ष हुए एक व्यक्ति ने जो मद्रास का गवर्नर था किसी व्यावसायिक कोठी में पाया था। पहले ज़ंग लगा था। जब ज़ंग साफ़ किया गया तो वह पूर्ण हीरा था। बर्तानिया के लोगों ने कभी इतना बड़ा हीरा नहीं देखा था। उस गवर्नर ने यह हीरा लन्दन लाकर बादशाह को भेंट किया। जिसके बदले शाही भोंटों का हक़दार हुआ। इसके अतिरिक्त पत्थरों की विभिन्न किस्मों में संगमरमर, संगे ईसा, संगे मूसा, संगे यशब और अग्निपाशान और कहरूबा इत्यादि सब मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त समुद्री वस्तुओं में मोती, मूंगा जो समुद्र के अंदर वृक्ष की तरह होता है, जिसको ग़ोताख़ोर तोड़कर लाते हैं। इसके बाद अंदर से निकलने वाली विभिन्न वस्तुएँ रखी जाती हैं। उदाहरण स्वरूप वह वस्तुएँ जो समुद्र में गिर जाती हैं वे एक अवधि के बाद पत्थर बन जाती हैं। सौ वर्ष हुए लन्दन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के निकट समुद्र के किनारे एक पोत डूब गया था। अब तक ग़ोताख़ोर उस जगह ग़ोते (डुबकी) लगाकर विभिन्न वस्तुएँ निकालते रहते हैं, उनको भी देखा कि आधी पत्थर जैसी हो गई हैं। उदाहरण स्वरूप एक बोतल रखी थी जो पत्थर हो गई थी। वृक्षों की जो पत्तियाँ समुद्र में डाली गईं वे गोल पत्थर बन गईं। जब उनको तोड़ा गया तो पत्तियों के रूप उनके अंदर नज़र आए। इसके अतिरिक्त संग्रहालय में ढोलक, पखावज, बाँसुरी, तबला, सारंगी भी देखने को मिले। फलों में बेहिदाना देखा, जो उस देश का विशेष फल है, शीशा के मर्तबान में अम्ल (सिरका) के अंदर रखा है और बिल्कुल ताज़ा मालूम होता है। इसके अतिरिक्त कीड़े-मकोड़ों में बिच्छु, केकड़े, जुगनू, मक्खी विभिन्न प्रकार के साँप उदाहरण स्वरूप नाग, अजगर शीशा के अंदर रखे हैं। उनके साथ थल और जल के जितने जीव हैं सब मौजूद हैं। जानवरों एवं पक्षियों में हुमा, तोता, शारक, पूज़ी, बाज़, शक्रा उसी प्रकार मुश्की हिरण, जंगली गदहा इत्यादि बहुत हैं। इसके साथ भोज-पत्र का वृक्ष भी देखा जो आठ-नौ हाथ का काटकर लाया गया है जो मोटीई में ताड़ के पेड़ की तरह है और इसके पत्ते तहदार काग़ज़ की तरह एक दूसरे से चिपके हुए हैं। लन्दन की एक औरत की तस्वीर देखी जिसकी पेशानी पर दो अंगुल के सींघ निकले हुए थे। इसी तरह तीन पुरुषों की लाशें रखी हुई हैं, जो शाम और मिस्र देश से लाई गई हैं और अत्यंत अच्छी स्थिति में रखी हुई हैं। कहते हैं कि प्राचीन काल में चलन था कि यदि विशिष्ट लोगों में से किसी की मृत्यु हो जाती तो उसके वारिस हज़ारों रुपये ख़र्च करके दवाओं का एक तेल बनाते थे जो मृतक के शरीर पर लगा देते थे और उसको वृक्ष के पत्तों में लपेटकर सुरक्षित कर देते थे। यह इसलिए करते थे कि यदि कोई व्यक्ति प्राचीन काल के विशिष्ट व्यक्ति का नाक-नक़्शा और क़द-काठी के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करना चाहे तो उसको देख सके। जब किसी को कोई सबूत और दलील की आवश्यक्ता होती उसको खोलकर दिखा देते हैं। जब खोलते हैं तो बिल्कुल तरो ताज़ा पाते हैं। अलबत्ता खोलने और बंदर करने में सावधानी आवश्यक है। क्योंकि यदि संयोगवश लाश को हवा लग गई तो वह ख़राब हो जाती है। वरन् हज़ारों वर्ष इसी स्थिति में रहती है। इसी प्रकार छोटी-बड़ी समुद्री मछलियाँ हैं जिनके सींघ हैं। कहते हैं कि उनके सींघों से छुरी और ख़ंजर इत्यादि बनाते हैं। उन मछलियों में कतिपय के सींघ पाँच हाथ तक बड़े होते हैं और इस क़दर मोटे और भारी होते हैं कि दोनों हाथों से बड़ी कठिनाई से उठा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकते हैं। इसके अतिरिक्त एक बड़ी मछली के सिर की हड्डी भी है, जिस को देखकर और जिसके आकार का अंदाज़ा करके मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उसके मुँह की हड्डी बैल के मुँह की तरह है और आठ हाथ लंबी है। अंदाज़ा हुअ कि जब वह मुँह खोलती होगी तो निश्चित रूप से एक बैल उसके अंदर समा जाता होगा। कहते हैं कि इस बड़ी मछली के शिकार की विधि यह है कि लन्दन के दक्षिण की ओर तीन महीने की यात्रा की दूरी पर एक जगह है जहाँ नौ महीने तक रात होती है और तीन महीने दिन रहता है। परंतु रात-दिन में कोई भेद नहीं कर सकता। नौ महीने अँग्रेज़ उन मछिलयों के शिकार के लिए उस स्थान की यात्रा करते हैं, शिकार करने की विधि यह है कि वहाँ पूरे वर्ष वर्षा और हिमपात (बर्फ़बारी) का सिलसिला जारी रहता है। समुद्र का पानी भी जम जाता है। उन मछिलयों के काँटे बर्फ़ से बाहर निकले रहते हैं, जो दूर से नज़र आते हैं। पोत के कर्मी नीचे उतरकर बेलचों से बर्फ़ को काटते हैं। जिस समय मछली की पीठ का भाग नज़र आता है, उसमें लोहे के बरछीनुमा काँटे जो विषाक्त होते हैं अच्छी तरह उतार देते हैं और दौड़कर पोत पर सवार हो जाते हैं। लोहे के वे काँटे रस्सियों और ज़ंजीरों से बँधे होते हैं। जैसे ही विष का प्रभाव मछली के शरीर में फैलता है वह गतिमान होकर धीरे-धीरे चलने लगती है। उस समय पोत को चला देते हैं तो बर्फ़ शीशे की तरह टूटता जाता है। जब पोत के साथ मछली पाँच से दस-बारह मील तक चली आती है और उस समय तक मर जाती है तब पोत के ख़लासी नीचे उतरकर उसकी हड्डियाँ और मांस कुल्हाड़ियों से काटते हैं और उनको पोत पर लकड़ी के संदूकों में रखते हैं। और उसके मस्तिष्क से तेल निकाल लेते हैं और लन्दन ले जाकर बेचते हैं। वह तेल दीपों में जलाते हैं और हड्डियों से बंदूक़ के कुंदे और संदूक़ बनाते हैं। कहते हैं कि मछिलयों को मारने वाला विष, वह पीली लकड़ी है, जिसको भारत में हल्दी कहते हैं या उस पीली लकड़ी से विष निकलता है, जिसको भारत में हल्दवा कहा जाता है।

हिमपात (बर्फ़बारी) का हाल

सब जानते हैं कि जो बर्फ़ आकाश से गिरती है, उसका रंग अंबर की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरह उजला होता है और जब तेज़ हवा चलती है तो यह गुब्बारे की तरह उड़ जाती है और जो बर्फ़ पहाड़ों, भवनों, वृक्षों, तालाबों पर क़तरा-क़तरा टपकती और जम जाती है उसको हिम कहा जाता है, जो सफ़ेद पत्थर और स्वच्छ दर्पण की तरह पारदर्शी होता है, यह पूरी भूमि को उजले फ़र्श की तरह ढंक देती है। इस देश में बर्फ़ और सर्दी के मौसम में दरिया पार करने के लिए नाव की आवश्यकता नहीं होती है। बर्फ़ के ऊपर से आदमी, पशु, गाड़ियाँ और छकड़े आसानी से गुज़र जाते हैं। यहाँ इस क़दर हिमपात होता है कि रात में जांघ तक ऊँची बर्फ़ जम जाती है। यहाँ तक कि प्रातः के समय भवन में रहने वाले नोकदार लकड़ी या बेलचा से बर्फ़ हटाकर घर से बाहर निकलने का मार्ग बनाते हैं। इसके अतिरिक्त जंगल, मैदान, कूएँ, तालाब और गड्ढ़े बर्फ़ से भर जाते हैं और ऊबड़-खाबड़ को बर्फ़ समतल कर देती है। उस समय यह मालूम नहीं होता कि कहाँ कुआँ था और कहाँ प्रतिकूप और गड्ढ़ा। पैदल और गाड़ी पर चलने वालों को पता नहीं चलता कि कहाँ कुआँ है और कहाँ प्रतिकूप। परंतु अधिक आवा-गमन के कारण वाहन चालकों को ख़तरे वाले स्थानों की पहचान होती है। वह बर्फ़ पर गाड़ी चलाने का अनुभव रखते हैं। यदि कभी शराब के नशे में या भूलवश रास्ता भूल गए तो गाड़ी सवारी सहित प्रतिकूप या कुआँ में गिर जाती है और फिर वे जीवन का मुँह देखने से वंचित रह जाते हैं। इस वर्ष के अंतिम दिन सामग्रियों से लदा हुआ एक छकड़ा जिसपर तेरह व्यक्ति सवार थे, एक प्रतिकूप के अंदर चला गया और चालक कूदकर किनारे आ गया और वह बच गया। इसके अतिरिक्त लोगों का बर्फ़ पर चलना भी देखने की चीज़ है। लोग एक घंटे में पचास मील की दूरी तय कर लेते हैं। मैंने यह बात अँग्रेज़ों से सुनी थी। मगर विश्वास नहीं होता था जब आँखों से देख लिया तो विश्वास हुआ। ग़रीब लोग लकड़ी का एक टुकड़ा अर्द्ध जूते के आकार का, जिसको हिंदी में बहना कहते हैं। अपने पाँव में पहनते हैं और एक बित्ता लंबा एक अंगुल मोटा लेहे का साफ़ चमकदार टुकड़ा लकड़ी के नीचे रखकर चमड़े के फ़ीते से बज़बूती से बाँध लेते हैं और जब खड़े होते हैं तो लोहे का टुकड़ा बर्फ़ पर पड़ा रहता है और अगर पाँव में ज़रा-सी भी गति हो या थोड़ा तिरछा हो तो गिर पड़े। और बिना गति पाँव एक जगह स्थिर रहता है। यह कमाल बिना बहुत इस्तेमाल और अभ्यास के प्राप्त नहीं होता। और जब अच्छी तरह अभ्यास हो जाता है तो फिर बर्फ़ पर चलने और दौड़ने पर नियंत्रण हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसकी विधि यह है कि चलने के समय दोनों पैरों को निश्चय के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ाते हैं और बर्फ़ का जमा हुआ तख़्ता निर्मल दर्पण की तरह होता है। इसपर पाँव एक जगह स्थिर नहीं रहता है और एक ही स्थान पर ठहरना संभव नहीं होता है। यदि ठहर जाए तो तत्काल गिर पड़े। इसलिए चलने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि वहाँ के लोग हवा जैसी तेज़ गति से बर्फ़ पर दौड़ते हैं, बिल्क पक्षियों की तरह उड़ते प्रतीत होते हैं। जब लन्दन का उजला वस्त्र पहने लोग बर्फ़ पर द्रूत गति से चलते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि आकाश से फ़रिश्ते उतरकर ज़मीन पर चल रहे हैं या वीर पुरुष ज़मीन से निकलकर भूमि की सतह पर दौड़-धूप कर रहे हैं। वह एक तीर की दूरी से आँखों के सामने आते हैं और उसके बाद लुप्त हो जाते हैं। वह एक घन्टा में तीस-चालीस मील की दूरी तक जाते हैं। जो लोग इस काम में निपुणता रखते हैं वे अपनी चुस्ती और चालाकी से पचास-साठ मील की दूरी तय कर लेते हैं। कहते हैं कि मर्द और औरतें इस कला में बहुत निपुण हैं। क्योंकि इस आकर्षक देश में दरिया और नदी-नाले बहुत हैं। ग़रीब औरतें प्रातः के समय दूध और घी के डोल और फलों के टोकरे बेचने के लिए बर्फ़बारी के काल में कंधों पर रखकर क़रीब के गाँवों से बेचने के लिए लाते हैं। और दोपहर तक सामान बेचकर साठ-सत्तर मील की दूरी तय करके अपने घर वापस आ जाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि दूध से भरे हुए पात्र से एक क़तरा भी नहीं टपकता है और न बर्बाद होता है।

स्कॉटलैंड का हाल

स्कॉटलैंड लन्दन के उत्तर में स्थित है। दोनों देशों की सीमाएँ मिली हुई हैं। और हालैंड का देश भी स्कॉटलैंड के उप नगरों में उत्तर की ओर है। वहाँ के प्रचीन बादशाह तख़्त और ताज वाले थे और बर्तानिया से अलग थे। बर्तानिया के निवासियों को अँग्रेज़ कहते हैं और स्कॉटलैंड के निवासियों को स्कॉच कहा जाता है। और इंगलैंड का अर्थ है भूमि, अँग्रेज़ी और फ्रांस की भाषा में इंगल भी कहते हैं। और इंगलि ज़मीन को कहते हैं। इंगलैंड का अर्थ है अँग्रेज़ों का देश और फ्रांसिस

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देश को फ़्रायस कहते हैं। अँग्रेज़ी में फ्रंच मैन कहा जाता है और विलंदिज़ियों को हूकंड कहा जाता है। क्योंकि वालान देश विलेंदीज़ का नाम है और हवानीदा से अभिप्राय है वालान के रहने वाले और इस समय स्कॉटलैंड का देश अँग्रेज़ों के अधीन आ गया है। कहते हैं कि अब से सौ वर्ष पूर्व दोनों देशों के राजाओं में हमेशा लड़ाई-झगड़ा रहता था और दोनों देशों के निवासी अनेकता के कारण एक दूसरे को क्षति पहुँचाने में लगे रहते थे। परंतु जब स्कॉटलैंड का बादशाह मर गया तो देश के गणमान्य और राज्य के सदस्यों ने बर्तानिया का आदेश पालन स्वीकार कर लिया और उस तिथि से स्कॉटलैंड देश बर्तानिया में शामिल हो गया। चूँकि दोनों समुदायों का धर्म और क़ानून एक था इसलिए पूरे तौर पर मेल-जोल हो गया। स्कॉटलैंड में पूर्व में मैदान और पहाड़ी क्षेत्र बहुत थे और आबादी कम। वहाँ के रहने वालों में ग़रीब अधिक और अमीर कम थे। परंतु अँग्रेज़ों की सहायता से हुनर और व्यवसाय अपनाने का अवसर मिला और कम्पनी की मुलाज़मत और व्यवसाय के कारण सब धनी हो गए। और स्कॉटलैंड की आबादी बढ़ी और सामग्री और धन में वृद्धि हुई। वास्तविकता यह है कि मेल-मिलाप से धन बढ़ता है और अनेकता से धन घटता है। स्कॉटलैंड का मुख्यालय ओमेरा है। इस नगर में पहाड़ के ऊपर क़िला बनाया है, जिसके नीचे तोप और गोले बहुत कम पहुँच सकते हैं। शाही हवेली में एक दालान (बैठका) देखा गया जो पत्थरों से बना है और उसकी छत में लकड़ी नहीं लगी है। बिल्कुल समतल और बराबर बनाया गया है। इस नगर में यही साधारण दालान प्रसिद्ध है। कहते हैं कि स्कॉटलैंड के लोग अल्पभोगी होते हैं और साहस और वीरता में प्रसिद्ध हैं। वे अपने को अँग्रेज़ों से श्रेष्ठ समझते हैं और अपने अल्पभोगी होने और वीरता पर गर्व करते हैं। परंतु अँग्रेज़ भी अपने से तुच्छ को बुद्धि, धन और संपन्नता में विशिष्ट ख़्याल करते हैं। स्कॉटलैंड के लोगों को निर्धन और मंदबुद्धि कहते हैं। यद्यपि दोनों की भाषा अँग्रेज़ी है परंतु कतिपय शब्दों में विवाद है। जैसे अपने घोड़े को अँग्रेज़ लिटिल हार्स कहते हैं परंतु स्कॉटलैंड के लोग बोनी-बोनी कहते हैं। इसी तरह दूसरे शब्द में भी अंतर है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसकी विधि यह है कि चलने के समय दोनों पैरों को निश्चय के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ाते हैं और बर्फ़ का जमा हुआ तख़्ता निर्मल दर्पण की तरह होता है। इसपर पाँव एक जगह स्थिर नहीं रहता है और एक ही स्थान पर ठहरना संभव नहीं होता है। यदि ठहर जाए तो तत्काल गिर पड़े। इसलिए चलने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि वहाँ के लोग हवा जैसी तेज़ गति से बर्फ़ पर दौड़ते हैं, बिल्क पक्षियों की तरह उड़ते प्रतीत होते हैं। जब लन्दन का उजला वस्त्र पहने लोग बर्फ़ पर द्रूत गति से चलते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि आकाश से फ़रिश्ते उतरकर ज़मीन पर चल रहे हैं या वीर पुरुष ज़मीन से निकलकर भूमि की सतह पर दौड़-धूप कर रहे हैं। वह एक तीर की दूरी से आँखों के सामने आते हैं और उसके बाद लुप्त हो जाते हैं। वह एक घन्टा में तीस-चालीस मील की दूरी तक जाते हैं। जो लोग इस काम में निपुणता रखते हैं वे अपनी चुस्ती और चालाकी से पचास-साठ मील की दूरी तय कर लेते हैं। कहते हैं कि मर्द और औरतें इस कला में बहुत निपुण हैं। क्योंकि इस आकर्षक देश में दरिया और नदी-नाले बहुत हैं। ग़रीब औरतें प्रातः के समय दूध और घी के डोल और फलों के टोकरे बेचने के लिए बर्फ़बारी के काल में कंधों पर रखकर क़रीब के गाँवों से बेचने के लिए लाते हैं। और दोपहर तक सामान बेचकर साठ-सत्तर मील की दूरी तय करके अपने घर वापस आ जाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि दूध से भरे हुए पात्र से एक क़तरा भी नहीं टपकता है और न बर्बाद होता है।

स्कॉटलैंड का हाल

स्कॉटलैंड लन्दन के उत्तर में स्थित है। दोनों देशों की सीमाएँ मिली हुई हैं। और हालैंड का देश भी स्कॉटलैंड के उप नगरों में उत्तर की ओर है। वहाँ कें प्रचीन बादशाह तख़्त और ताज वाले थे और बर्तानिया से अलग थे। बर्तानिया के निवासियों को अँग्रेज़ कहते हैं और स्कॉटलैंड के निवासियों को स्कॉच कहा जाता है। और इंगलैंड का अर्थ है भूमि, अँग्रेज़ी और फ्रांस की भाषा में इंगल भी कहते हैं। और इंगलि ज़मीन को कहते हैं। इंगलैंड का अर्थ है अँग्रेज़ों का देश और फ्रांसिस

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देश को फ़्रायस कहते हैं। अँग्रेज़ी में फ्रंच मैन कहा जाता है और विलंदिज़ियों को हूकंड कहा जाता है। क्योंकि वालान देश विलेंदीज़ का नाम है और हवानीदा से अभिप्राय है वालान के रहने वाले और इस समय स्कॉटलैंड का देश अँग्रेज़ों के अधीन आ गया है। कहते हैं कि अब से सौ वर्ष पूर्व दोनों देशों के राजाओं में हमेशा लड़ाई-झगड़ा रहता था और दोनों देशों के निवासी अनेकता के कारण एक दूसरे को क्षति पहुँचाने में लगे रहते थे। परंतु जब स्कॉटलैंड का बादशाह मर गया तो देश के गणमान्य और राज्य के सदस्यों ने बर्तानिया का आदेश पालन स्वीकार कर लिया और उस तिथि से स्कॉटलैंड देश बर्तानिया में शामिल हो गया। चूँकि दोनों समुदायों का धर्म और क़ानून एक था इसलिए पूरे तौर पर मेल-जोल हो गया। स्कॉटलैंड में पूर्व में मैदान और पहाड़ी क्षेत्र बहुत थे और आबादी कम। वहाँ के रहने वालों में ग़रीब अधिक और अमीर कम थे। परंतु अँग्रेज़ों की सहायता से हुनर और व्यवसाय अपनाने का अवसर मिला और कम्पनी की मुलाज़मत और व्यवसाय के कारण सब धनी हो गए। और स्कॉटलैंड की आबादी बढ़ी और सामग्री और धन में वृद्धि हुई। वास्तविकता यह है कि मेल-मिलाप से धन बढ़ता है और अनेकता से धन घटता है। स्कॉटलैंड का मुख्यालय ओमेरा है। इस नगर में पहाड़ के ऊपर क़िला बनाया है, जिसके नीचे तोप और गोले बहुत कम पहुँच सकते हैं। शाही हवेली में एक दालान (बैठका) देखा गया जो पत्थरों से बना है और उसकी छत में लकड़ी नहीं लगी है। बिल्कुल समतल और बराबर बनाया गया है। इस नगर में यही साधारण दालान प्रसिद्ध है। कहते हैं कि स्कॉटलैंड के लोग अल्पभोगी होते हैं और साहस और वीरता में प्रसिद्ध हैं। वे अपने को अँग्रेज़ों से श्रेष्ठ समझते हैं और अपने अल्पभोगी होने और वीरता पर गर्व करते हैं। परंतु अँग्रेज़ भी अपने से तुच्छ को बुद्धि, धन और संपन्नता में विशिष्ट ख़्याल करते हैं। स्कॉटलैंड के लोगों को निर्धन और मंदबुद्धि कहते हैं। यद्यपि दोनों की भाषा अँग्रेज़ी है परंतु कतिपय शब्दों में विवाद है। जैसे अपने घोड़े को अँग्रेज़ लिटिल हार्स कहते हैं परंतु स्कॉटलैंड के लोग बोनी-बोनी कहते हैं। इसी तरह दूसरे शब्द में भी अंतर है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कप्तान सुईटन के हालात और कुछ अपना हाल

कप्तान अर्जियालड सुईटन का प्रवास और उनके माता-पिता का प्रवास इसी स्थान पर था। इसलिए वह मुझको भी अपने साथ अपने नगर ओमीरा ले गए और माता-पिता से भेंट कराई। उसके पिता वयोवृद्ध थे और माँ साठ वर्ष की हो चुकी थीं। जान सुईटन के तीन भाई और एक जवान बहन थी। उसकी उम्र अधिक हो चुकी थी। परंतु अभी विवाह नहीं हुआ था क्योंकि उस देश की यह प्रसिद्ध परंपरा है कि लड़के और लड़की की मर्ज़ी से विवाह होता है। और चयन के लिए यह शर्त है कि मर्द सूरत और चाल-चलन में अच्छा और धन और हुनर में विशिष्ट हो। और लड़की भी सुंदर हो और बाहरी और अंदरूनी विशेषता रखती हो। अर्थात् या तो उसको बाप के धन में हिस्सा मिला हो या पहले पति का तर्का मिला हो और व्यक्तिगत शिक्षा और हुनर भी रखती हो। यद्यपि यह विशेषता एक व्यक्ति में एकत्र होना कठिन है परंतु यदि किसी को उपलब्ध हो तो क्या कहना वरन् धन तो सभी विशेषताओं पर प्राथमिकता रखता है। यदि धन हो तो मिलाप हो जाता है। और जिसके पास नहीं है उससे विवाह नहीं करते। अतएव लन्दन में, जो सौंदर्य की जन्मास्थली है और उन औरतों की बाहुल्यता है जो धनी और अन्य विशेषताओं में प्रसिद्ध हैं। उनके सब ख़रीदार हैं और जो औरतें निर्धन हैं उनको कोई नहीं पूछता है। फलस्वरूप ऐसी हज़ारों औरतें हैं जो बूढ़ी हो गई हैं और उनको पति का मुँह देखना नसीब नहीं हुआ। जिस नगर में अच्छा माल अधिक होता है वहाँ उसकी क़द्र बहुत कम होती है। और जो वस्तु कम होती है और दूसरे देशों से आती है उसको बहुत पसंद किया जाता है। अतएव लन्दन के लोग इम्ली के बहुत इच्छुक होते हैं। भारत में एक पैसा या दो पैसे में एक सेर मिलती है और लन्दन में एक अशर्फ़ी या उससे अधिक में बिकती है।

सुईटन नाम रखने का कारण यह बताया गया कि पुराने ज़माने में उनके पूर्वज में से किसी बहादुर व्यक्ति ने उजले जंगली सूअर को मार डाला था। और अँग्रेज़ी भाषा में उजले सूअर को सुईटन कहते हैं। इसलिए यह परिवार इसी उपाधि से प्रसिद्ध हो गया। और उसकी संतान में सभी ने इसको नाम का अंश बना लिया। लन्दन में यह परंपरा है कि अमीर और मंत्री और आम भद्र अपने पूर्वज में से किसी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशिष्ट व्यक्ति के नाम को अपने नाम का अंश बनाते हैं और उसका चित्र मुहर में खुदवाकर पुस्तकों एवं अन्य वस्तुओं पर पहचान के लिए लगाते हैं ताकि पता चले कि यह व्यक्ति अमुक परिवार से संबंध रखता है। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि उजले सूअर के चित्र की मुहर बनाए हैं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि यह सुईटन प्रथम की संतान हैं परंतु जब उस परिवार के सदस्यों में वृद्धि हुई तो उनमें फूट पैदा हुआ तो उन्होंने कतिपय अन्य चिह्न गढ़ लिए और हर चिह्न को अपने दादा के नाम से संबद्ध कर दिया। परंतु दूसरा नाम भी अपने पूर्वजों से मिलाकर रखा। जैसे जान सुईटन और ... सुईटन। इसी तरह अन्य नाम हैं। इस परिवार के लोगों के पास इतिहास की पुस्तकें भी हैं, जिसमें प्रत्येक का हाल विस्तार से लिखा गया है ताकि जो व्यक्ति विशिष्ट परिवार से है उसका सम्मान और श्रेष्ठता अधिक हो। वह नीच और क्षुद्र लोग जो संयोग से धनी हो गए उनको शरीफ़ों में शुमार नहीं किया जाता है और उस पर व्यंग्य करते हैं और उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं जिसके पूर्वज नीच और क्षुद्र होते हैं उनको उसी नाम से संबोधित करते हैं। किसी को मोची किसी को धुनिया और किसी को सुनार कहते हैं। कप्तान सुईटन के पिता बुढ़ापे में तुनुकमिज़ाज और विक्षिप्त हो गए हैं और व्यय में अधिक वृद्धि कर दी। उसके कारण उनके बड़े बेटे जान सुईटन ने बर्तानिया के नियम के अनुरूप न्यायालय में दावा दायर कर दिया कि बुढ़ापे के कारण उसके पिता पागल हो गए हैं और अपव्यय करने लगे हैं। चूँकि विरासत बड़े बेटे का अधिकार है इसलिए न्यायालय ने बर्तानिया के नियम के अनुरूप उनको अनुचित व्यय से रोक दिया और बड़े बेटे को संपति का वारिस और मुख़्तार बनाकर आदेश दिया कि पिता को खाना और कपड़ा पाबंदी से दिया जाए। मैंने उस आदेश-पत्र को स्वयं देखा है। बर्तानिया की इस परंपरा का कारण आगे लिखा जाएगा। ओसतर सुईटन को मैंने देखा। उनकी उम्र अस्सी वर्ष से अधिक हो चुकी है। वे चित्रकला और नक़्क़ाशी का शौक़ रखते हैं और इसी काम में व्यस्त रहते हैं। अपने समय को बर्बाद नहीं करते। यह भी मालूम हुआ कि कप्तान सुईटन चिकित्सा विज्ञान से भी अवगत हैं। उन्होंने मावनीय शरीर के अंगों और उनके तंतुओं और जोड़ों से अवगत होने के लिए एक व्यक्ति की हत्या कर दी थी। जब एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या का समाचार फैला तो वे भाग गए और मिलानी द्वीप में शरण ली। वहाँ लंबे समय तक चिकित्सा सेवा में व्यस्त रहे। वहाँ से मद्रास चले गए जहाँ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कप्तान सुईटन के हालात और कुछ अपना हाल

कप्तान अर्जियालड सुईटन का प्रवास और उनके माता-पिता का प्रवास इसी स्थान पर था। इसलिए वह मुझको भी अपने साथ अपने नगर ओमीरा ले गए और माता-पिता से भेंट कराई। उसके पिता वयोवृद्ध थे और माँ साठ वर्ष की हो चुकी थीं। जान सुईटन के तीन भाई और एक जवान बहन थी। उसकी उम्र अधिक हो चुकी थी। परंतु अभी विवाह नहीं हुआ था क्योंकि उस देश की यह प्रसिद्ध परंपरा है कि लड़के और लड़की की मर्ज़ी से विवाह होता है। और चयन के लिए यह शर्त है कि मर्द सूरत और चाल-चलन में अच्छा और धन और हुनर में विशिष्ट हो। और लड़की भी सुंदर हो और बाहरी और अंदरूनी विशेषता रखती हो। अर्थात् या तो उसको बाप के धन में हिस्सा मिला हो या पहले पति का तर्का मिला हो और व्यक्तिगत शिक्षा और हुनर भी रखती हो। यद्यपि यह विशेषता एक व्यक्ति में एकत्र होना क़ठिन है परंतु यदि किसी को उपलब्ध हो तो क्या कहना वरन् धन तो सभी विशेषताओं पर प्राथमिकता रखता है। यदि धन हो तो मिलाप हो जाता है। और जिसके पास नहीं है उससे विवाह नहीं करते। अतएव लन्दन में, जो सौंदर्य की जन्मास्थली है और उन औरतों की बाहुल्यता है जो धनी और अन्य विशेषताओं में प्रसिद्ध हैं। उनके सब ख़रीदार हैं और जो औरतें निर्धन हैं उनको कोई नहीं पूछता है। फलस्वरूप ऐसी हज़ारों औरतें हैं जो बूढ़ी हो गई हैं और उनको पति का मुँह देखना नसीब नहीं हुआ। जिस नगर में अच्छा माल अधिक होता है वहाँ उसकी क़द्र बहुत कम होती है। और जो वस्तु कम होती है और दूसरे देशों से आती है उसको बहुत पसंद किया जाता है। अतएव लन्दन के लोग इम्ली के बहुत इच्छुक होते हैं। भारत में एक पैसा या दो पैसे में एक सेर मिलती है और लन्दन में एक अशर्फ़ी या उससे अधिक में बिकती है।

सुईटन नाम रखने का कारण यह बताया गया कि पुराने ज़माने में उनके पूर्वज में से किसी बहादुर व्यक्ति ने उजले जंगली सूअर को मार डाला था। और अँग्रेज़ी भाषा में उजले सूअर को सुईटन कहते हैं। इसलिए यह परिवार इसी उपाधि से प्रसिद्ध हो गया। और उसकी संतान में सभी ने इसको नाम का अंश बना लिया। लन्दन में यह परंपरा है कि अमीर और मंत्री और आम भद्र अपने पूर्वज में से किसी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशिष्ट व्यक्ति के नाम को अपने नाम का अंश बनाते हैं और उसका चित्र मुहर में खुदवाकर पुस्तकों एवं अन्य वस्तुओं पर पहचान के लिए लगाते हैं ताकि पता चले कि यह व्यक्ति अमुक परिवार से संबंध रखता है। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि उजले सूअर के चित्र की मुहर बनाए हैं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि यह सुईटन प्रथम की संतान हैं परंतु जब उस परिवार के सदस्यों में वृद्धि हुई तो उनमें फूट पैदा हुआ तो उन्होंने कतिपय अन्य चिह्न गढ़ लिए और हर चिह्न को अपने दादा के नाम से संबद्ध कर दिया। परंतु दूसरा नाम भी अपने पूर्वजों से मिलाकर रखा। जैसे जान सुईटन और ... सुईटन। इसी तरह अन्य नाम हैं। इस परिवार के लोगों के पास इतिहास की पुस्तकें भी हैं, जिसमें प्रत्येक का हाल विस्तार से लिखा गया है ताकि जो व्यक्ति विशिष्ट परिवार से है उसका सम्मान और श्रेष्ठता अधिक हो। वह नीच और क्षुद्र लोग जो संयोग से धनी हो गए उनको शरीफ़ों में शुमार नहीं किया जाता है और उस पर व्यंग्य करते हैं और उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं जिसके पूर्वज नीच और क्षुद्र होते हैं उनको उसी नाम से संबोधित करते हैं। किसी को मोची किसी को धुनिया और किसी को सुनार कहते हैं। कप्तान सुईटन के पिता बुढ़ापे में तुनुकमिज़ाज और विक्षिप्त हो गए हैं और व्यय में अधिक वृद्धि कर दी। उसके कारण उनके बड़े बेटे जान सुईटन ने बर्तानिया के नियम के अनुरूप न्यायालय में दावा दायर कर दिया कि बुढ़ापे के कारण उसके पिता पागल हो गए हैं और अपव्यय करने लगे हैं। चूँकि विरासत बड़े बेटे का अधिकार है इसलिए न्यायालय ने बर्तानिया के नियम के अनुरूप उनको अनुचित व्यय से रोक दिया और बड़े बेटे को संपति का वारिस और मुख़्तार बनाकर आदेश दिया कि पिता को खाना और कपड़ा पाबंदी से दिया जाए। मैंने उस आदेश-पत्र को स्वयं देखा है। बर्तानिया की इस परंपरा का कारण आगे लिखा जाएगा। ओसतर सुईटन को मैंने देखा। उनकी उम्र अस्सी वर्ष से अधिक हो चुकी है। वे चित्रकला और नक़्क़ाशी का शौक़ रखते हैं और इसी काम में व्यस्त रहते हैं। अपने समय को बर्बाद नहीं करते। यह भी मालूम हुआ कि कप्तान सुईटन चिकित्सा विज्ञान से भी अवगत हैं। उन्होंने मावनीय शरीर के अंगों और उनके तंतुओं और जोड़ों से अवगत होने के लिए एक व्यक्ति की हत्या कर दी थी। जब एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या का समाचार फैला तो वे भाग गए और मिलानी द्वीप में शरण ली। वहाँ लंबे समय तक चिकित्सा सेवा में व्यस्त रहे। वहाँ से मद्रास चले गए जहाँ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से लॉर्ड क्लाइव के साथ कलकत्ता आए जो नव्वाब सिराजुद्दौला से युद्ध करते आए थे। इसके बाद अज़ीमाबाद में सेना के कप्तान नियुक्त हुए और जर्नल कारनाक के साथ कई बड़े युद्ध में शामिल हुए और सरकार की व्यवस्था में शरीक रहे। और वीरता की उपाधियों से सम्मानित हुए।

उसके बाद मेजर ओम की अधीनस्थता में क़ासिम अली ख़ाँ के अज़ीमाबाद युद्ध में विशिष्ट सेवाएँ प्रदान कीं। उसके बाद जर्नल कारनाक की अधीनस्थता में बर्तानवी सेना के साथ शाह आलम बादशाह के साथ कोड़ा जहानाबाद और काल्पी के युद्ध में भाग लिया और सफलता और सुनाम प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त शुजाउद्दौला और अँग्रेज़ों के बीच सुलह और जंग की बात-चीत में जर्नल कारनाक के परामर्शी रहे। और अंततः शाह आलम का पत्र लेकर लन्दन गए।

हालैंड देश का उल्लेख

हालैंड की सीमा स्कॉटलैंड से लगा है। इसका क्षेत्रफल उत्तर दिशा में समुद्र तक है। आबादी कम और जंगल और मैदान अधिक हैं। पूरे देश में बारह माह वर्षा और हिमपात का सिलसिला जारी रहता है। वहाँ के निवासी ग़रीब हैं और हिमपात और ठंडक सहन करने के अभ्यस्त हैं। ग़रीब लोग एक कंबल आधा बिछाते और आधा ओढ़ते हैं। वे मैदान और जंगल में भी सो जाते हैं। जब उनपर अधिक बर्फ़ जम जाती है और सांस लेने में कठिनाई होती है तो उठकर कंबल से बर्फ़ झाड़ देते हैं और फिर सो जाते हैं। भेड़ों और बकरियों पर बर्फ़ और ठंडक का प्रभाव नहीं होता। क्योंकि उनके बाल नर्म और गर्म होते हैं जो उनके लिए रज़ाई का काम देते हैं। यह पूरे वर्ष उसी मैदान और चारागाह में रहते हैं। बर्फ़ और बारिश के ज़माने में घास और हरियाली पूरे लन्दन में नज़र नहीं आती। इसलिए बर्तानिया, स्कॉटलैंड और हालैंड में पशुओं और घोड़ों को सूखी घास खिलाते हैं। जिन भेड़ों के शरीर पर अधिक बाल नहीं होते वे कड़ाके की सर्दी से दुर्बल हो जाती हैं और बहुत कम नज़र आती हैं। लन्दन के घास की महक खुशगवार होती है और चौपायों के लिए लाभकारी होती है। वहाँ चना और उरद नहीं होते हैं। यद्यपि धान पैदा होता है जिसके चावल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काले होते हैं। उनको कारन कहते हैं और चौपायों को खिलाए जाते हैं। उनका वस्त्र टोपी और कुर्ता है। मोज़ा और जूता पावँ में नहीं होता। अंग ढंकने के लिए लंबा कुर्ता प्रयाप्त होता है। जूते के बदले चारक़ अर्थात् लकड़ी का टुकड़ा पावँ में फ़ीते से बाँध लेते हैं और हाथ में तलवार रखते हैं। अत्यंत मूर्ख और मंदबुद्धि प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि हालैंड का एक व्यक्ति लन्दन आया। खाने की महंगाई और ख़र्च की तंगी से परीशान हो गया। एक दिन राह चलते उसको एक परिचित व्यक्ति मिल गया। उस हालैंडी ने उससे अपनी कठिनाइयों की शिकायत की। उसने जवाब में कहा तुम 'तिल्ली कट' की सराय में क्यों नहीं जाते हो। जहाँ तुमको ग़रीबाना (ग़रीब लोगों का) खाना मिलेगा। वास्तव में तिल्ली एक पैसा को और कट काटने को कहा जाता है। लन्दन में साधारण और उच्च कोटि की सराएँ हैं। ग़रीबाना (जनता) सराय में दो पैसा में एक टुकड़ा रोटी और थोड़ा-सा मांस और आधा सेर का अच्छे पानी का एक प्याला मिलता है। इस सराय को अँग्रेज़ 'तिल्ली कट' कहते हैं। और हालैंड की भाषा में शेप कहा जाता है। कट और शेप दोनों शब्द काटने और बाल बनाने के अर्थ में प्रयोग होते हैं। इसलिए हजाम की दुकान को शेप कहा जाता है। जहाँ दो पैसे में ग़रीब आदमी हजामत बनाते हैं। ग़रज़ यह कि हालैंड के उस आदमी को सराय 'तिल्ली कट' का पता मालूम हुआ तो उसकी तलाश में निकला। संयोग से 'तिल्ली कट' नाम भूल गया और शेप याद रहा। जो हालैंड में हजामत के अर्थ में प्रयोग होता है। उसने एक अँग्रेज़ से शेप की जगह के संदर्भ में पूछा। अँग्रेज़ ने उसको हजाम की दुकान बता दी। उसने हजाम की दुकान पर जाकर दरवाज़ा खटखटाया। हजाम ने दरवाज़ा खोल दिया और उसको अंदर ले गया। और कुर्सी पर बैठाया और उसके सामने मेज़ पर एक प्याला और एक तश्त गर्म पानी से भरा उसके सामने रखा। उसमें साबुन के टुकड़े डाले और खुद ऊपरी मंज़िल पर हजामत का सामान लाने चला गया। वह व्यक्ति उस साबुन घुले पानी को रस्सा (शोरबा) समझा और भूख की शिद्दत के कारण उसको पी गया। जब हजाम वापस आया तो उसकी अजीब हालत देखकर आश्चर्यचकित रह गया। और होंठों तले उंगली दबा ली। हालैंडी ने दो पैसा जेब से निकालकर रख दिए और अपनी भाषा में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह स्वादिष्ट वस्तु खाने को मिली। परंतु ठीक तरह से गली नहीं थी।

दूसरी घटना यहाँ लोग बयान करते हैं कि हालैंड के लोग इतने बहादुर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते हैं कि एक बार एक हालैंडी लन्दन के बाज़ार में घूम रहा था। अँग्रेज़ मर्द और लड़के उसके निकट जमा हो गए। एक व्यक्ति ने मज़ाक में पीछे से उसके कुर्ते का दामन उठाया और वह नंगा हो गया। हालैंडी शर्म के मारे गुस्से में बेक़ाबू हो गया और अपनी तलवार से उस व्यक्ति का सिर काट दिया। नगर के लोगों ने विरोध किया और उसको चारों ओर से घेरकर पकड़ लिया। मगर वह अपने साहस और वीरता से लड़ने और मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो गया और कई लोगों को घायल कर दिया। किसी में साहस नहीं था कि उसका मुक़ाबला करे और निकट जाए। जब यह ख़बर बादशाह को पहुँची तो उसने अपने मुलाज़िम को उस व्यक्ति को बुलाने के लिए भेजा। जब उसने बादशाह का आदेश सुना तो मुलाज़िमों के संग चला गया। बादशाह ने पूछा कि तुमने अनावश्यक हत्या क्यों की। हालैंडी ने बादशाह का सम्मान किया और उसके सामने सिर झुका लिया और कहा, उस मृत व्यक्ति ने मुझे नंगा कर दिया। मैं लज्जित हो गया और मेरी लज्जा की माँग थी कि मैं उसका वध कर दूँ। इसलिए मुझसे यह ग़लती हुई। जब हुजूर के आदमी ने मुझे आपका आदेश सुनाया तो अविलंब उपस्थित हो गया। यदि मैं स्वयं नहीं आता तो किसी में साहस न था कि मुझको जीवित ले आता। बादशाह को उसकी सच्चाई पसंद आई और उसकी ग़लती माफ़ कर दी। और उसको शाही पुरस्कार से नवाज़ा।

तीसरी घटना : कहते हैं कि हालैंड का एक किसान नगर गया और बकरे की कलेजी का कबाब खाया। उसको बहुत स्वादिष्ट लगा। पहले कभी ऐसे कबाब उसने नहीं खाए थे। उसने कबाब वाले से कबाब के सामान और पकाने की विधि पूछकर लिख लिया और उसे जेब में रख लिया। दूसरे दिन क़साब की दुकान पर गया और भेड़ की कलेजी ख़रीदकर उसे एक रूमाल में लपेट लिया। वह हाथ में उसे लटकाकर गाँव की ओर प्रस्थान कर गया। संयोगवश एक गली के कुत्ते ने उसकी सुगंध सूंघ ली और अत्यंत तेज़ी से कलेजी को रूमाल सहित मुँह में पकड़कर भागा। किसान घबड़ा गया और उसने कुत्ते को संबसेधित करके कहा। ऐ कुत्ते! तूने मेरे हाथ से भेड़ की कलेजी तो ले ली है मगर पकाने की विधि यह देखो मेरी जेब में है। इस कहानी से यह परिणाम निकलता है कि ईश्वर ने सब इंसानों को एक समान अक़्ल-समझ के साथ पैदा नहीं किया है। कोई देश मूर्खों और मंदबुद्धियों से ख़ाली नहीं है। विशेषकर गाँव के अधिकांश लोग बहुत सरल और नादान होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौथी घटना : एक बूढ़े किसान को अपने ज़मीनदार से मिलने का बहुत शौक़ था। उसने अपनी पत्नी से कहा कि कोई उपहार ज़मीनदार को देना ज़रूरी है। पत्नी ने सूअर का एक बच्चा जिसको उस देश में पिग कहते हैं, एक थैले में पति को दिया। किसान उसको लेकर ज़मीनदार से मिलने गया। आधा रास्ता तय करने के बाद उसने रास्ते में एक सराय देखी और वहाँ आराम करने के लिए ठहर गया और थकान के कारण सो गया। सराय के भटियारे ने उसके थैले के अंदर किसी जीवित वस्तु को गतिमान देखा तो उसने थैला खोला। उसमें सूअर का बच्चा था। वह थैले को लेकर अपने कमरे में चला गया और थैले से सूअर के बच्चे को निकालकर उसकी जगह कुत्ते का बच्चा रख दिया। और उसको किसान के कमरे में लाकर रख दिया। जब किसान जागा और ज़मीनदार के घर पहुँचा। ज़मीनदार ने अपने रैयत के आने की ख़बर सुनी तो बड़े स्नेह से दरवाज़े पर आकर उसकी ख़ैरियत पूछी और उसके हाथ में थैला देखकर पूछा कि इसमें क्या है? संभवतः मेरे लिए लाए हो। किसान ने कहा मैं ग़रीब आदमी आपकी भेंट के लिए क्या लाता। सूअर का एक बच्चा अपनी हैसियत के मुताबिक़ लाया हूँ। ज़मीनदार ग़रीब किसान की हालत देखकर उसके भेंट से बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि मेरे लिए तुम्हारा यह भेंट बहुत है। लाओ देखूँ। जब थैला खोला तो कुत्ते का बच्चा निकला। ज़मीनदार क्रोधित हुआ और गुस्से में किसान को डांटा और कहा कि तुम मेरे साथ मज़ाक़ करते हो। मेरे सामने से दूर हो जाओ। किसान लज्जित होकर लौटा और वापसी में उसी सराय में ठहरा। भटियारे ने मज़ाक़ के तौर पर बहुत फुर्ती से सूअर का बच्चा थैले में रख दिया और कुत्ते का बच्चा निकाल लिया। किसान जब घर पहुँचा तो पत्नी पर ख़ूब क्रोधित हुआ। पत्नी ने क्रोध का कारण पूछा तो उसने बताया कि तुमने थैले में कुत्ते का बच्चा रख दिया और मुझे ज़मीनदार के सामने लज्जित किया। पत्नी ने कहा कि यदि मुझसे ग़लती हुई हो तो माफ़ करो। जब थैला खोला तो उसमें वही पिग था। किसान हैरान हुआ और पत्नी से क्षमा माँगते हुए उस सूअर के बच्चे को यह कहकर पटककर मार डाला कि तू ने रूप बदलकर मुझे धोखा दिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ़िरंगिस्तान की आबादी का आरंभ और फिरंगी क़ौम का इतिहास

मानव के अस्तित्व के इतिहास से स्पष्ट होता है कि हज़रत आदम की संतान नूह काल के तूफ़ान के बाद पुनः दुनिया में फैली और बढ़ी, इसीलिए हज़रत नूह को द्वितीय आदम का जाता है। उनके तीन बेटे थे। एक का नाम याफ़स, दूसरे का साम और तीसरे का हाम है। ईरान, तुर्किस्तान, बरबर, तातार, याफ़स की संतान से आबाद हुए। भारत, सिंध, हबश और चीन साम की संतान ने आबाद किया। रोम और शाम देश में हाम की संतान फली-फूलीं। इसके बाद मानव वंश धीरे-धीरे बढ़ा और संसार के सारे देशों में फैल गया। हर देश का कोई नाम रख लिया। हर क़ौम के लोग जगह-जगह आबाद हो गए। इस प्रकार हर भू-भाग में भाषाएँ और स्वभाव की विभिन्नता अस्तित्व में आईं। मावन के स्वभाव और आचार में भिन्नता उत्पन्न हुआ। परस्पर मतभेदों और विवादों का आरंभ हुआ। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्र थे। हज़रत हाजरा की कोख से हज़रत इस्माईल, जिनकी संतान में मक्का वाले और कुरैश कबीला हैं और हज़रत सायरा से हज़रत इस्हाक़ पैदा हुए, जिनकी संतान रोम और शाम के निवासी हैं। बनी इसराईल भी उनकी संतानों में हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल के देवदूत थे। नसारा क़ौम स्वयं को हज़रत इसहाक़ की संतान कहते हैं। चूँकि हज़रत सायरा राजकुमारी थीं इसलिए नसारा अपने को माता-पिता दोनों ओर से उच्च वंश का होने पर गर्व करते थे। और मक्का वाले और कुरैश हज़रत हाजरा की संतान हैं। इसलिए उनको कनीज़ज़ादा कहते हैं।

रोम देश

रोम संसार का प्रचीन देश है। फ़िरंगिस्तान के अन्य देश उसके आस-पास में अवस्थित है। इस्लाम के उदय के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ के ख़िलाफ़त काल में कुस्तुंतुनिया नगर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया। यह नगर अब इस्तंबोल के नाम से प्रसिद्ध है और अत्यंत भव्य है। इसकी दूसरी ओर फ़िरंगिस्तान की सीमा है,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्य में दरिया है। अँग्रेज़ कहते हैं कि रोम देश बहुत बड़ा है और कुस्तुंतुनिया इसके किनारे परिशिष्ट (संलग्न) स्वरूप है। जिसपर मुसलमानों ने क़ब्ज़ा किया था। शेष देश रोम नदी के दूसरी ओर अवस्थित है। फ़िरंगिस्तान में रोम के शासक को पापा और पोप कहा जाता है। उसको देवदूत का उप समझते हैं और सभी बादशाह उसके आज्ञा का पालन करते हैं। बादशाही की उपाधि उसी से प्राप्त करते हैं। और वह उनके सहयोगी और सहायक हैं। और उन्हें अपना बुजुर्ग मानते हैं परंतु अँग्रेज़ और बर्तानिया के निवासी को उनसे श्रद्धा कम और विवाद अधिक है। फ़िरंगिस्तान के जिस देशों में राजशाही है वे निम्नांकित हैं :

रोम, इटली, जर्मनी, रूस, डेनमार्क, पुर्तगाल, जर्मन, स्पेन, फ़्रांस, बर्तानिया, जार्जिया इनके अतिरिक्त तीन देशों के नाम याद नहीं आ रहे हैं। हालैंड छोटा देश है। वहाँ कोई बादशाह नहीं। प्रभावकारी सरदारों की निगरानी में प्रशासनिक कार्य संपन्न होते हैं। इस देश के लोग व्यवसाय पेशा हैं और बहुत धनी हैं। मछलियाँ बहुत मिलती हैं, जिसका शिकार करके बेचते हैं। अँग्रेज़ उन्हें मछली विक्रेता कहकर निंदित करते हैं। चूँकि इस देश का कोई बादशाह नहीं है इसलिए उनको क्षुद्र, तुच्छ और अपमानित समझते हैं।

हालैंड, जर्मनी और फ़्रांस की भाषा कोमलता और मिठास में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में ज्ञान और विज्ञान की पुस्तकें उन भाषाओं में लिखी गई थीं। अब यह भाषाएँ अँग्रेज़ी भाषा में मिल-जुल गई हैं। इसलिए इन भाषाओं को सीखे बिना ज्ञान के अध्ययन पर एकाधिकार प्राप्त नहीं हो सकता है। जब तक इनमें निपुणता न हो ज्ञानी (प्रज्ञा पुरुष) नहीं हो सकता। हालैंड, जर्मनी और फ़्रांस का कुल क्षेत्रफल भारत के बराबर होगा। रूस का देश व्यापकता और क्षेत्रफल में अन्य देशों से बड़ा है, बल्कि भारत से तीन गुना बड़ा है। उन देशों के बादशाह बड़े सशक्त एवं शान और शौकत वाले हैं। स्पेन के लोग दूसरे देशों के मुक़ाबले अधिक धनी हैं। इसका कारण यह है कि अमेरिका में सोने की खानें हैं। और वे सब स्पेन के क़ब्ज़े में हैं। इसके अतिरिक्त वे मेहनत और मुशक़्क़त से रोज़ी कमाने में बहुत प्रसिद्ध हैं। अतएव अँग्रेज़ों को उनकी चुस्ती और चालाकी के बावजूद आलसी और निकम्मा कहते हैं।

रूस देश यद्यपि बहुत व्यापक है मगर जैसा कि निज़ामी गंजवी ने 'सिकन्दर नामे' में लिखा है कि वहाँ के लोग पूर्वकाल में मानवीय दृष्टिकोण से देश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ़िरंगिस्तान की आबादी का आरंभ और फिरंगी क़ौम का इतिहास

मानव के अस्तित्व के इतिहास से स्पष्ट होता है कि हज़रत आदम की संतान नूह काल के तूफ़ान के बाद पुनः दुनिया में फैली और बढ़ी, इसीलिए हज़रत नूह को द्वितीय आदम का जाता है। उनके तीन बेटे थे। एक का नाम याफ़स, दूसरे का साम और तीसरे का हाम है। ईरान, तुर्किस्तान, बरबर, तातार, याफ़स की संतान से आबाद हुए। भारत, सिंध, हबश और चीन साम की संतान ने आबाद किया। रोम और शाम देश में हाम की संतान फली-फूलीं। इसके बाद मानव वंश धीरे-धीरे बढ़ा और संसार के सारे देशों में फैल गया। हर देश का कोई नाम रख लिया। हर क़ौम के लोग जगह-जगह आबाद हो गए। इस प्रकार हर भू-भाग में भाषाएँ और स्वभाव की विभिन्नता अस्तित्व में आई। मावन के स्वभाव और आचार में भिन्नता उत्पन्न हुआ। परस्पर मतभेदों और विवादों का आरंभ हुआ। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्र थे। हज़रत हाजरा की कोख से हज़रत इस्माईल, जिनकी संतान में मक्का वाले और कुरैश क़बीला हैं और हज़रत सायरा से हज़रत इस्हाक़ पैदा हुए, जिनकी संतान रोम और शाम के निवासी हैं। बनी इसराईल भी उनकी संतानों में हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल के देवदूत थे। नसारा क़ौम स्वयं को हज़रत इसहाक़ की संतान कहते हैं। चूँकि हज़रत सायरा राजकुमारी थीं इसलिए नसारा अपने को माता-पिता दोनों ओर से उच्च वंश का होने पर गर्व करते थे। और मक्का वाले और कुरैश हज़रत हाजरा की संतान हैं। इसलिए उनको कनीज़ज़ादा कहते हैं।

रोम देश

रोम संसार का प्रचीन देश है। फ़िरंगिस्तान के अन्य देश उसके आस-पास में अवस्थित है। इस्लाम के उदय के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ के ख़िलाफ़त काल में कुस्तुंतुनिया नगर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया। यह नगर अब इस्तंबोल के नाम से प्रसिद्ध है और अत्यंत भव्य है। इसकी दूसरी ओर फ़िरंगिस्तान की सीमा है,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्य में दरिया है। अँग्रेज़ कहते हैं कि रोम देश बहुत बड़ा है और कुस्तुंतुनिया इसके किनारे परिशिष्ट (संलग्न) स्वरूप है। जिसपर मुसलमानों ने क़ब्ज़ा किया था। शेष देश रोम नदी के दूसरी ओर अवस्थित है। फ़िरंगिस्तान में रोम के शासक को पापा और पोप कहा जाता है। उसको देवदूत का उप समझते हैं और सभी बादशाह उसके आज्ञा का पालन करते हैं। बादशाही की उपाधि उसी से प्राप्त करते हैं। और वह उनके सहयोगी और सहायक हैं। और उन्हें अपना बुज़ुर्ग मानते हैं परंतु अँग्रेज़ और बर्तानिया के निवासी को उनसे श्रद्धा कम और विवाद अधिक है। फ़िरंगिस्तान के जिस देशों में राजशाही है वे निम्नांकित हैं :

रोम, इटली, जर्मनी, रूस, डेनमार्क, पुर्तगाल, जर्मन, स्पेन, फ़्रांस, बर्तानिया, जार्जिया इनके अतिरिक्त तीन देशों के नाम याद नहीं आ रहे हैं। हालैंड छोटा देश है। वहाँ कोई बादशाह नहीं। प्रभावक़ारी सरदारों की निगरानी में प्रशासनिक कार्य संपन्न होते हैं। इस देश के लोग व्यवसाय पेशा हैं और बहुत धनी हैं। मछलियाँ बहुत मिलती हैं, जिसका शिकार करके बेचते हैं। अँग्रेज़ उन्हें मछली विक्रेता कहकर निंदित करते हैं। चूँकि इस देश का कोई बादशाह नहीं है इसलिए उनको क्षुद्र, तुच्छ और अपमानित समझते हैं।

हालैंड, जर्मनी और फ़्रांस की भाषा कोमलता और मिठास में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में ज्ञान और विज्ञान की पुस्तकें उन भाषाओं में लिखी गई थीं। अब यह भाषाएँ अँग्रेज़ी भाषा में मिल-जुल गई हैं। इसलिए इन भाषाओं को सीखे बिना ज्ञान के अध्ययन पर एकाधिकार प्राप्त नहीं हो सकता है। जब तक इनमें निपुणता न हो ज्ञानी (प्रज्ञा पुरुष) नहीं हो सकता। हालैंड, जर्मनी और फ़्रांस का कुल क्षेत्रफल भारत के बराबर होगा। रूस का देश व्यापकता और क्षेत्रफल में अन्य देशों से बड़ा है, बल्कि भारत से तीन गुना बड़ा है। उन देशों के बादशाह बड़े सशक्त एवं शान और शौकत वाले हैं। स्पेन के लोग दूसरे देशों के मुक़ाबले अधिक धनी हैं। इसका कारण यह है कि अमेरिका में सोने की खानें हैं। और वे सब स्पेन के क़ब्ज़े में हैं। इसके अतिरिक्त वे मेहनत और मुशक़्क़त से रोज़ी कमाने में बहुत प्रसिद्ध हैं। अतएव अँग्रेज़ों को उनकी चुस्ती और चालाकी के बावजूद आलसी और निकम्मा कहते हैं।

रूस देश यद्यपि बहुत व्यापक है मगर जैसा कि निज़ामी गंजवी ने 'सिकन्दर नामे' में लिखा है कि वहाँ के लोग पूर्वकाल में मानवीय दृष्टिकोण से देश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलाने के नियमों से अवगत नहीं थे। अब से सौ वर्ष पूर्व इस देश के एक बादशाह को इस बात का सामर्थ्य हुआ कि उसने ज्ञान और विज्ञान की प्राप्ति के लए अपने देश के लोगों को लन्दन भेजा। जब वे लोग शिक्षा और हुनर प्राप्त करके अपने देश वापस हुए तो उन्होंने अपने देश में शिक्षा फैलाई, लोगों को हुनर सिखाए। मैंने दो रूसियों को देखा जो एक स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उनका रंग लाली युक्त था, बिल्कुल ईंट की तरह। वे बर्तानिया के बादशाह से मित्रता रखते हैं। उन संबंधों के कारण प्रायः जनरल, कर्नल और कप्तान रूस के बादशाह की सेवा में हैं और यह रूस के निवासियों को, सेना की व्यवस्था, युद्ध के क़वायद और तोप और बंदूक़ बनाना सिखाते हैं। बहुत सारे अँग्रेज़ों ने वहाँ निवास ग्रहण कर लिया है। रूस के लोग अन्य देशों के मुक़ाबले में अँग्रेज़ों को वीरता, सिपाहीगीरी और धर्म और संविधान में बेहतर समझते हैं और उनका अनुकरण करते हैं। अतएव इस समय रूस के बादशाह को, युद्ध संयंत्र और सेनाओं की अधिकता एवं शान और शौकत में फ़िरंगिस्तान के सभी देशों पर बढ़त प्राप्त है। दो वर्ष पूर्व रूस की सेना ने रोम देश पर आक्रमण किया था और रोम के सुलतान के मंत्रियों की नमकहरामी के कारण एक राज्य रूस के क़ब्ज़े से चला गया था। परंतु ईश्वर के समर्थन से पवित्र कुरान के श्लोक (अनुवाद : रोम वाले एक निकटवर्ती अवसर में पराजित हो गए और वह अपने पराजय के बाद निकटतम तीन वर्ष से लेकर नौ वर्ष के अंदर विजयी हो जाएँगे। सूरह रोम आयत १ : पारा २१) से भयभीत होकर रूसी सेना वापस चली गई।

हज़रत ईसा के निधन के बाद ईसवी धर्म का प्रचार

हज़रत ईसा के निधन के बाद लंबी अवधि तक उनके बारह हवारियों (मित्रों/शिष्यों) में ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) और इमामत (नेतृत्व) का सिलसिला जारी रहा। इंजील पुस्तक जो नसरानियों में प्रचलित है वह हवारियों द्वारा संकलित है। बारह हवारी जो अन्य देशों में फैल गए और प्रत्येक किसी क़बीले या क़ौम की अमानत पर आसीन हो गए और हज़रत ईसा के धर्म को फैलाया और उसका प्रचार किया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंतु उन हवारियों के निधन के बाद काफ़ी ज़माना गुज़र गया तो नसारा धर्म के धर्मगुरु, जिनको पादरी कहते हैं, उनके अंदर धार्मिक परंपराओं और कथनों में मतभेद उत्पन्न हुआ और समस्याओं और मामलों की कष्ट कल्पना होने लगीं। बारह पादरी और एक अन्य कथन के अनुसार सोलह पादरी क़ौम के इमाम और धर्मगुरु हो गए। और उन्होंने धार्मिक आस्थाओं पर अपने दृष्टिकोण से पुस्तकें लिखीं। उस काल में उनके धार्मिक विवाद का प्रवेश हुआ। अतएव मौलाना रूम ने अपनी प्रसिद्ध मसनवी में इस के संबंध में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है। मुझको उनकी आस्थाओं और धार्मिक नियमों का अधिक ज्ञान नहीं है परंतु जो कुछ अँग्रेज़ों की ज़ुबानी सुना और इंजील के अनुवाद में देखा उसी को संक्षेप रूप में लिख दिया है।

नसारा के ईमान और आस्था का उल्लेख

असल ईमान उस क़ौम का इस बात पर है कि हज़रत ईसा ईश्वर के पुत्र हैं। उनकी दलील यह है कि हज़रत मरियम जो हज़रत ईसा की माँ हैं उनके पति न थे। बिना पति से संबंध स्थापित किए उनके गर्भ से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए। परंतु अँग्रेज़ इस बात पर ईमान नहीं रखते हैं। इसलिए कि ईश्वर की ज़ात पाक और एकल है कि उसको किसी ने पैदा किया न उससे कोई पैदा हुआ है। वह शरीर और अंग से मुक्त है। वह मानव की तरह पति-पत्नी से कैसे विशिष्ट किया जा सकता है। उस ईश्वर ने अपने स्नेह और अनुकंपा से हज़रत ईसा को अपना पुत्र कहकर दूसरे देवदूतों से विशिष्ट किया है। इसके अतिरिक्त पूरी क़ौम इंजील पर ईमान रखती है। अतएव कहते हैं कि इसके बाद यहूदियों ने हज़रत ईसा को सूली पर लटका दिया। और उनका पवित्र शरीर क़ब्र से चौथे आकाश पर चला गया। और तीन दिनों के बाद वादे के अनुरूप जो उन्होंने हवारियों से किया था दुनिया में अवतरित हुए और उसी क़ब्र पर बैठे और अपने हवारियों में से शमओन और दोज़न एवं अन्य जो उनके प्रति श्रद्धामय थे, उनसे भेंट की और वसीयत की कि मेरी पैदाईश माँ के पेट से और संसार में आना और यहूदियों के हाथों कष्ट उठाना इसलिए था कि प्रलय के दिन दोषी लोगों की मुक्ति के लिए ईश्वर से अपनी निर्दोषता के बदले न्याय तलब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलाने के नियमों से अवगत नहीं थे। अब से सौ वर्ष पूर्व इस देश के एक बादशाह को इस बात का सामर्थ्य हुआ कि उसने ज्ञान और विज्ञान की प्राप्ति के लए अपने देश के लोगों को लन्दन भेजा। जब वे लोग शिक्षा और हुनर प्राप्त करके अपने देश वापस हुए तो उन्होंने अपने देश में शिक्षा फैलाई, लोगों को हुनर सिखाए। मैंने दो रूसियों को देखा जो एक स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उनका रंग लाली युक्त था, बिल्कुल ईंट की तरह। वे बर्तानिया के बादशाह से मित्रता रखते हैं। उन संबंधों के कारण प्रायः जनरल, कर्नल और कप्तान रूस के बादशाह की सेवा में हैं और यह रूस के निवासियों को, सेना की व्यवस्था, युद्ध के क़वायद और तोप और बंदूक़ बनाना सिखाते हैं। बहुत सारे अँग्रेज़ों ने वहाँ निवास ग्रहण कर लिया है। रूस के लोग अन्य देशों के मुक़ाबले में अँग्रेज़ों को वीरता, सिपाहीगीरी और धर्म और संविधान में बेहतर समझते हैं और उनका अनुकरण करते हैं। अतएव इस समय रूस के बादशाह को, युद्ध संयंत्र और सेनाओं की अधिकता एवं शान और शौकत में फ़िरंगिस्तान के सभी देशों पर बढ़त प्राप्त है। दो वर्ष पूर्व रूस की सेना ने रोम देश पर आक्रमण किया था और रोम के सुलतान के मंत्रियों की नमकहरामी के कारण एक राज्य रूस के क़ब्ज़े से चला गया था। परंतु ईश्वर के समर्थन से पवित्र कुरान के श्लोक (अनुवाद : रोम वाले एक निकटवर्ती अवसर में पराजित हो गए और वह अपने पराजय के बाद निकटतम तीन वर्ष से लेकर नौ वर्ष के अंदर विजयी हो जाएँगे। सूरह रोम आयत १ : पारा २१) से भयभीत होकर रूसी सेना वापस चली गई।

हज़रत ईसा के निधन के बाद ईसवी धर्म का प्रचार

हज़रत ईसा के निधन के बाद लंबी अवधि तक उनके बारह हवारियों (मित्रों/शिष्यों) में ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) और इमामत (नेतृत्व) का सिलसिला जारी रहा। इंजील पुस्तक जो नसरानियों में प्रचलित है वह हवारियों द्वारा संकलित है। बारह हवारी जो अन्य देशों में फैल गए और प्रत्येक किसी क़बीले या क़ौम की अमानत पर आसीन हो गए और हज़रत ईसा के धर्म को फैलाया और उसका प्रचार किया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंतु उन हवारियों के निधन के बाद काफ़ी ज़माना गुज़र गया तो नसारा धर्म के धर्मगुरु, जिनको पादरी कहते हैं, उनके अंदर धार्मिक परंपराओं और कथनों में मतभेद उत्पन्न हुआ और समस्याओं और मामलों की कष्ट कल्पना होने लगीं। बारह पादरी और एक अन्य कथन के अनुसार सोलह पादरी क़ौम के इमाम और धर्मगुरु हो गए। और उन्होंने धार्मिक आस्थाओं पर अपने दृष्टिकोण से पुस्तकें लिखीं। उस काल में उनके धार्मिक विवाद का प्रवेश हुआ। अतएव मौलाना रूम ने अपनी प्रसिद्ध मसनवी में इस के संबंध में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है। मुझको उनकी आस्थाओं और धार्मिक नियमों का अधिक ज्ञान नहीं है परंतु जो कुछ अँग्रेज़ों की ज़ुबानी सुना और इंजील के अनुवाद में देखा उसी को संक्षेप रूप में लिख दिया है।

नसारा के ईमान और आस्था का उल्लेख

असल ईमान उस क़ौम का इस बात पर है कि हज़रत ईसा ईश्वर के पुत्र हैं। उनकी दलील यह है कि हज़रत मरियम जो हज़रत ईसा की माँ हैं उनके पति न थे। बिना पति से संबंध स्थापित किए उनके गर्भ से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए। परंतु अँग्रेज़ इस बात पर ईमान नहीं रखते हैं। इसलिए कि ईश्वर की ज़ात पाक और एकल है कि उसको किसी ने पैदा किया न उससे कोई पैदा हुआ है। वह शरीर और अंग से मुक्त है। वह मानव की तरह पति-पत्नी से कैसे विशिष्ट किया जा सकता है। उस ईश्वर ने अपने स्नेह और अनुकंपा से हज़रत ईसा को अपना पुत्र कहकर दूसरे देवदूतों से विशिष्ट किया है। इसके अतिरिक्त पूरी क़ौम इंजील पर ईमान रखती है। अतएव कहते हैं कि इसके बाद यहूदियों ने हज़रत ईसा को सूली पर लटका दिया। और उनका पवित्र शरीर क़ब्र से चौथे आकाश पर चला गया। और तीन दिनों के बाद वादे के अनुरूप जो उन्होंने हवारियों से किया था दुनिया में अवतरित हुए और उसी क़ब्र पर बैठे और अपने हवारियों में से शमओन और दोज़न एवं अन्य जो उनके प्रति श्रद्धामय थे, उनसे भेंट की और वसीयत की कि मेरी पैदाईश माँ के पेट से और संसार में आना और यहूदियों के हाथों कष्ट उठाना इसलिए था कि प्रलय के दिन दोषी लोगों की मुक्ति के लिए ईश्वर से अपनी निर्दोषता के बदले न्याय तलब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर सकूँ। मेरे बाद कोई देवदूत नहीं होगा। यदि किसी ने छल प्रपंच से देवदूत होने का दावा किया तो वह झूठा है उसपर ईमान न लाना और मैं दूसरी बार प्रलय के निकट संसार में आऊँगा। उस समय सूर्योदय पूरब के बजाए पश्चिम से होगा। उस काल में संसार के सारे प्राणी मेरे धर्म पर ईमान लाएँगे। और धार्मिक विवाद बाक़ी नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त और उपदेश वसीयतें करके अदृश्य हो गए। नसारा क़ौम में से किसी ने सिवाय हवारियों के उन नसीहतों पर अमल नहीं किया। हज़रत ईसा के बाद यह हवारी शाम, रोम और अन्य देशों में जाकर मसीह (ईसाई) धर्म के प्रचार में लग गए। फ़िरंगिस्तान के लोग हज़रत ईसा के धर्म के अनुयायी हैं। और नसारा रोम एवं शाम में रहते हैं जो इस्लामी देश हैं और जज़िया का भुगतान करते हैं।

नसारा नाम का सबब यह है कि हज़रत ईसा नासरा नगर में पैदा हुए थे जो बैतुल मुक़द्दस के निकट है। इसीलिए इसको नासरी भी कहते हैं। अधिकांश ने दूसरे देशों में निवास ग्रहण कर लिया जो अरमनी के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह क़ौम भी नसारा धर्म की अनुयायी है। परंतु आस्था में कुछ अंतर है। उनके यहाँ कोई बादशाह नहीं। फ़िरंगिस्तान के लोग उनको तुच्छ समझते हैं और कहते हैं कि यह लोग ग़ुलामज़ादे हैं। जो अरमनी रोम और शाम में रहते हैं वह मुसलमानों की रैयत हैं और करदाता हैं। आरमन फ़ारस का एक नगर है वहाँ के निवासी अरमनी कहलाते हैं।

यहूदी क़ौम जो हज़रत मूसा की उम्मत (अनुयायी) हैं वे उनके धर्म और धार्मिक नियम (शरीयत) पर क़ायम हैं। और अरब और शाम के देशों में नाना प्रकार के कष्टों में घिरी हैं। क्योंकि उन्होंने हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाया था। इसकी सज़ा में मुसीबतों में गिरफ़्तार हैं। उनका कोई मान-सम्मान नहीं है। नसारा क़ौम यदि उनको अपने देश में पाएँ तो आग में जला दें। अँग्रेज़ों का देश धर्मनिर्पेक्ष है। इसलिए वे किसी दूसरे धर्म के मामले में हस्तक्षेप नहीं करते। मैंने कुछ यहूदियों को देखा दस्त फ़रोशी (फेरी लगाकर सामान बेचने का काम) करते हैं।

मुबारक है अंतिम देवदूत हज़रत मोहम्मद स. की सुंदर वाणी, जिन्होंने हज़रत ईसा से छः सौ चालीस वर्ष बाद देवदूत का ध्वज फहराया और संसार के अँधरे को अपने पवित्र नूर से जगमग कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नसारा का धर्म, इंजील के अनुरूप

नसारा खाने और पीने की वस्तुओं में हलाल और हराम की क़ैद नहीं रखते। परंतु रुचि के अनुरूप लाभकारी और हानिकारक वस्तुओं का ख़्याल रखते हैं। स्वास्थ्य विज्ञान की पुस्तकों में जिन वस्तुओं के खाने को लाभकारी बताया गया है उनको अच्छा और जिनको हानिकारक लिखा गया है, उनसे परहेज़ करते हैं। उनके द्विवानों ने जिन धार्मिक नियमों और आस्थाओं को बयान किया है और जिनके संबंध में हज़रत ईसा की उक्ति का संदर्भ दिया है वे सब इंजील में उपलब्ध हैं। हज़रत ईसा ने अपने दूतत्व और ईश्वर के आदेशों के प्रचार और शिक्षा के संबंध में जिन आदेशों और वर्जितों का उल्लेख किया है, वे सब इंजील में उपलब्ध हैं। आपने बार-बार कहा कि आकाश और पृथ्वी अपनी जगह से टल जाएँ तब भी तौरैत का एक शब्द भी बदल नहीं सकता। इसमें जो लिखा है, सब सत्य है। इसपर अमल करना चाहिए। इंजील में कुछ लोगों ने आदेशों में वृद्धि की है परंतु तौरैत में कमी-बेशी नहीं की गई। एक दिन हज़रत ईसा नासिरा नगर से एक गाँव की ओर जा रहे थे। हवारी साथ थे। उन्होंने हाथ-पाँव धोए बिना भुने हुए गेंहू को खाया। यहूदी प्रबुद्धजन जो सदैव हज़रत ईसा पर आरोप लगाने की टोह में रहते थे, उन्होंने आपत्ति की कि आप तो तौरैत के आदेशों और वर्जितों के संबंध में दूसरों को निर्देश दिया करते हैं और इस समय बिना हाथ धोए खा रहे हैं। यह बात तौरैत के आदेश के विपरीत है। ऐसा क्यों किया। आप अपने कथन के अनुरूप कार्य नहीं करते। चूँकि हज़रत ईसा यहूदियों की अपत्तियों और वाद-विवाद से क्षुब्ध रहते थे। आपने क्रोध में उत्तर दिया कि जो यह बात नहीं जानते कि वर्जितों में इस तरह की बातें, जिनका करना और न करना बराबर है उनके करने में दंड और पुण्य का कोई प्रश्न नहीं है। इसलिए कि ईश्वर ने लोक-परलोक को व्यक्ति की सुविधा और रोज़ी कमाने के लिए उत्पन्न किया है। इसलिए हर वस्तु को जिस तरीके पर चाहे, खाए। जो वस्तु कंठ के नीचे उतर जाती है वह हलाल है और जो मुँह से निकल जाती है वह हराम है, जैसे झूठी बातें और झूठी गवाही जिनके कारण व्यक्ति कष्ट में पड़ जाता है। तुमने असल हराम को सरल समझा है और व्यवहार से संबंधित बातों को कठिन ख़्याल करते हो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर सकूँ। मेरे बाद कोई देवदूत नहीं होगा। यदि किसी ने छल प्रपंच से देवदूत होने का दावा किया तो वह झूठा है उसपर ईमान न लाना और मैं दूसरी बार प्रलय के निकट संसार में आऊँगा। उस समय सूर्योदय पूरब के बजाए पश्चिम से होगा। उस काल में संसार के सारे प्राणी मेरे धर्म पर ईमान लाएँगे। और धार्मिक विवाद बाक़ी नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त और उपदेश वसीयतें करके अदृश्य हो गए। नसारा क़ौम में से किसी ने सिवाय हवारियों के उन नसीहतों पर अमल नहीं किया। हज़रत ईसा के बाद यह हवारी शाम, रोम और अन्य देशों में जाकर मसीह (ईसाई) धर्म के प्रचार में लग गए। फ़िरंगिस्तान के लोग हज़रत ईसा के धर्म के अनुयायी हैं। और नसारा रोम एवं शाम में रहते हैं जो इस्लामी देश हैं और जज़िया का भुगतान करते हैं।

नसारा नाम का सबब यह है कि हज़रत ईसा नासरा नगर में पैदा हुए थे जो बैतुल मुक़द्दस के निकट है। इसीलिए इसको नासरी भी कहते हैं। अधिकांश ने दूसरे देशों में निवास ग्रहण कर लिया जो अरमनी के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह क़ौम भी नसारा धर्म की अनुयायी है। परंतु आस्था में कुछ अंतर है। उनके यहाँ कोई बादशाह नहीं। फ़िरंगिस्तान के लोग उनको तुच्छ समझते हैं और कहते हैं कि यह लोग ग़ुलामज़ादे हैं। जो अरमनी रोम और शाम में रहते हैं वह मुसलमानों की रैयत हैं और करदाता हैं। आरमन फ़ारस का एक नगर है वहाँ के निवासी अरमनी कहलाते हैं।

यहूदी क़ौम जो हज़रत मूसा की उम्मत (अनुयायी) हैं वे उनके धर्म और धार्मिक नियम (शरीयत) पर क़ायम हैं। और अरब और शाम के देशों में नाना प्रकार के कष्टों में घिरी हैं। क्योंकि उन्होंने हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाया था। इसकी सज़ा में मुसीबतों में गिरफ़्तार हैं। उनका कोई मान-सम्मान नहीं है। नसारा क़ौम यदि उनको अपने देश में पाएँ तो आग में जला दें। अँग्रेज़ों का देश धर्मनिर्पेक्ष है। इसलिए वे किसी दूसरे धर्म के मामले में हस्तक्षेप नहीं करते। मैंने कुछ यहूदियों को देखा दस्त फ़रोशी (फेरी लगाकर सामान बेचने का काम) करते हैं।

मुबारक है अंतिम देवदूत हज़रत मोहम्मद स. की सुंदर वाणी, जिन्होंने हज़रत ईसा से छः सौ चालीस वर्ष बाद देवदूत का ध्वज फहराया और संसार के अँधरे को अपने पवित्र नूर से जगमग कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नसारा का धर्म, इंजील के अनुरूप

नसारा खाने और पीने की वस्तुओं में हलाल और हराम की क़ैद नहीं रखते। परंतु रुचि के अनुरूप लाभकारी और हानिकारक वस्तुओं का ख़्याल रखते हैं। स्वास्थ्य विज्ञान की पुस्तकों में जिन वस्तुओं के खाने को लाभकारी बताया गया है उनको अच्छा और जिनको हानिकारक लिखा गया है, उनसे परहेज़ करते हैं। उनके द्विवानों ने जिन धार्मिक नियमों और आस्थाओं को बयान किया है और जिनके संबंध में हज़रत ईसा की उक्ति का संदर्भ दिया है वे सब इंजील में उपलब्ध हैं। हज़रत ईसा ने अपने दूतत्व और ईश्वर के आदेशों के प्रचार और शिक्षा के संबंध में जिन आदेशों और वर्जितों का उल्लेख किया है, वे सब इंजील में उपलब्ध हैं। आपने बार-बार कहा कि आकाश और पृथ्वी अपनी जगह से टल जाएँ तब भी तौरैत का एक शब्द भी बदल नहीं सकता। इसमें जो लिखा है, सब सत्य है। इसपर अमल करना चाहिए। इंजील में कुछ लोगों ने आदेशों में वृद्धि की है परंतु तौरैत में कमी-बेशी नहीं की गई। एक दिन हज़रत ईसा नासिरा नगर से एक गाँव की ओर जा रहे थे। हवारी साथ थे। उन्होंने हाथ-पाँव धोए बिना भुने हुए गेंहू को खाया। यहूदी प्रबुद्धजन जो सदैव हज़रत ईसा पर आरोप लगाने की टोह में रहते थे, उन्होंने आपत्ति की कि आप तो तौरैत के आदेशों और वर्जितों के संबंध में दूसरों को निर्देश दिया करते हैं और इस समय बिना हाथ धोए खा रहे हैं। यह बात तौरैत के आदेश के विपरीत है। ऐसा क्यों किया। आप अपने कथन के अनुरूप कार्य नहीं करते। चूँकि हज़रत ईसा यहूदियों की अपत्तियों और वाद-विवाद से क्षुब्ध रहते थे। आपने क्रोध में उत्तर दिया कि जो यह बात नहीं जानते कि वर्जितों में इस तरह की बातें, जिनका करना और न करना बराबर है उनके करने में दंड और पुण्य का कोई प्रश्न नहीं है। इसलिए कि ईश्वर ने लोक-परलोक को व्यक्ति की सुविधा और रोज़ी कमाने के लिए उत्पन्न किया है। इसलिए हर वस्तु को जिस तरीक़े पर चाहे, खाए। जो वस्तु कंठ के नीचे उतर जाती है वह हलाल है और जो मुँह से निकल जाती है वह हराम है, जैसे झूठी बातें और झूठी गवाही जिनके कारण व्यक्ति कष्ट में पड़ जाता है। तुमने असल हराम को सरल समझा है और व्यवहार से संबंधित बातों को कठिन ख़्याल करते हो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक बार हज़रत ईसा एक गाँव में ठहरे। लोगों ने उनके चमत्कार की परीक्षा लेने के लिए एक प्याला शराब पेश की। वह शराब हज़रत ईसा के चमत्कार से दूध की तरह उजली हो गई। आपने थोड़ी-सी पी ली और शेष अन्य लोगों में वितरित कर दी। उन लोगें ने कहा कि जो व्यक्ति ऐसी क्षमता रखता हो कि शराब को दूध बना दे उसके लिए शराब पीना हलाल होगा। इस परंपरा पर नसारा क़ौम ने शराब पीने और सूअर का मांस खाने को उचित समझा है और शब्द हराम हलाल और पवित्र अपवित्र को बिल्कुल मद्देनज़र नहीं रखा। कभी कहते हैं कि मल-मूत्र खाना और पानी का अवशेष है जो पेट के बाहर आता है वह उस मैल की तरह है जो मिट्टी और राख की तरह लोगों के शरीर और वस्त्रों को मैला करते हैं। इसलिए दोनों को बराबर बाहरी शरीर की सफ़ाई करना आवश्यक है चाहे पानी से करें या अन्य वस्तु से। मनुष्य के लिए सफ़ाई अनिवार्य वस्तु है। पवित्रता का मतलब सफ़ाई और सुथराई (पवित्रता) है। और अपवित्रता का तात्पर्य गंदगी और मैल है। और हलाल का तात्पर्य है वे वस्तुएँ जिनका खाना और पीना रुचि को ग्राह्य हो। वे वस्तुएँ हराम हैं जो खाने के योग्य न हों। इसलिए खाने-पीने को स्नान और पवित्रता के लिए रोक रखना क्या आवश्यक है। परंतु कतिपय लोग हैं कि जिन्होंने होश संभालने से लेकर बुढ़ापे तक न शराब पी और न सूअर का मांस खाया, वे तौरैत के आदेशों पर अमल करते हैं और कहते हैं कि हज़रत ईसा ने तौरैत के आदेशों को बहाल रखा है इसलिए उनपर अमल करना चाहिए। फिर पूर्णतः हराम वस्तुएँ क्यों खाएँ। और इसका क्या कारण है कि हज़रत ईसा ने गुस्से की स्थिति में यहूदियों से वाद-विवाद में हलाल और हराम के बारे में गोल-मोल बातों से काम लिया और कोई तर्कसंगत उत्तर नहीं दिया और न कोई अंतिम आदेश लागू किया। वास्तविक शिक्षा और आदेश जो इंजील में दिए गए हैं वे यह हैं कि "ईश्वर को एक मानो" उसके दूत पर ईमान लाओ, झूठी गवाही न दो, झूठ बोलना, बलात्कार करना और अनावश्यक हत्या करना वर्जित है। यह बात प्रसिद्ध है कि नसारा हज़रत ईसा और हज़रत मरियम को ईश्वर की ज़ात के साथ शरीक करते हैं और अपने प्रार्थना स्थलों में उनका चित्र लगाते हैं और मूर्ति पूजा के तरीक़े पर उन चित्रों के समक्ष सिर झुकाते हैं। परंतु अँग्रेज़ इस तरह मूर्ति पूजा नहीं करते, बल्कि इसको बुरा समझते हैं। नसारा के विरूद्ध अपने गिरजा घरों को चित्रों से पाक रखते हैं और ईश्वर की ज़ात को एकल मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ्रांस में प्रत्येक दिसंबर के महीने में हज़रत ईसा के जन्म दिवस पर एक ऐसी महिला को जो गर्भवती हो, हज़रत बीबी मरियम क़रार देते हैं। और वह महिला जैसा कि प्रसिद्ध है कृत्रिम प्रसव-पीड़ा में ग्रस्त होती और रक्तरंजित बच्चा निकालती है। और इसके बाद खुशी मनाते हैं और नृत्य और संगीत की मह्फ़िल जमती है। मधुर आवाज़ से गाना गाते हैं और उस लकड़ी की गुड़िया को तख़्त पर रखकर सब उसके समक्ष शीष झुकाते हैं। मैंने यह तमाशा सोरस द्वीप में देखा था। कप्तान सुईटन और श्री नाक फ्रांस की क़ौम पर हँसते थे और मुझसे कहते थे यह नई बात बिल्कुल हिमाक़त है। यह फ्रांस, विलंदीज़ और पुर्तगाल में लागू है। परंतु अँग्रेज़ों में नहीं। दूसरे यह कि नसारा क़ौम में पक्षपात बहुत है। यदि कोई मुसलमान उनके देश में जाए और बुलंद आवाज़ से आज़ान दे तो उसको आग में जला देते हैं। परंतु अँग्रेज़ों का तरीक़ा सौहार्द वाला है। यदि कोई मुसलमान उनके देश में सस्जिद बनाए और नमाज़ और रोज़ा की पाबंदी करे तो उसपर कोई आपत्ति नहीं करते और न रोकते हैं। कहते हैं हमें किसी के धर्म पर आपत्ति से क्या काम, ईसा का धर्म ईसाइयों को मूसा का धर्म मूसवियों को मुबारक।

बलात्कारियों का धर्म

फ्रांस में बलात्कारी, धनी पादरी लाखों की संख्या में मौजूद हैं। इस देश के लोगों में यह परंपरा प्रचलित है कि वर्ष में एक बार अपने पादरी के पास जाते हैं उनमें औरत और मर्द सब शामिल हैं। और वर्ष भर में जितने पाप और अनुचित कार्य किए हैं, उन सब का हाल पादरी के समक्ष बयान करते हैं। प्रत्येक अपनी हैसियत के अनुरूप, बल्कि उससे भी अधिक राशि भेंट स्वरूप पादरी को देता है। उनकी आस्था यह है कि अपने इन्द्रिय निग्रह, धार्मिकता, प्रार्थना के कारण ईश्वर से अनुशंसा करके उनके पापों को माफ़ करा देगा। परंतु अँग्रेज़ फ्रांसीसियों के इस विश्वास का उपहास उड़ाते हैं और इसको जड़ता और मूर्खता समझते हैं। उनका विश्वास है कि ईश्वर स्रष्टा है और जीव-जंतु का निर्णय करने का अधिकार उसी को है। उन कुकृत्य पादरियों की अनुशंसा पर पाप कैसे माफ़ हो सकता है। उनका यह विश्वास हिंदुओं के विश्वास

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक बार हज़रत ईसा एक गाँव में ठहरे। लोगों ने उनके चमत्कार की परीक्षा लेने के लिए एक प्याला शराब पेश की। वह शराब हज़रत ईसा के चमत्कार से दूध की तरह उजली हो गई। आपने थोड़ी-सी पी ली और शेष अन्य लोगों में वितरित कर दी। उन लोगें ने कहा कि जो व्यक्ति ऐसी क्षमता रखता हो कि शराब को दूध बना दे उसके लिए शराब पीना हलाल होगा। इस परंपरा पर नसारा क़ौम ने शराब पीने और सूअर का मांस खाने को उचित समझा है और शब्द हराम हलाल और पवित्र अपवित्र को बिल्कुल मद्देनज़र नहीं रखा। कभी कहते हैं कि मल-मूत्र खाना और पानी का अवशेष है जो पेट के बाहर आता है वह उस मैल की तरह है जो मिट्टी और राख की तरह लोगों के शरीर और वस्त्रों को मैला करते हैं। इसलिए दोनों को बराबर बाहरी शरीर की सफ़ाई करना आवश्यक है चाहे पानी से करें या अन्य वस्तु से। मनुष्य के लिए सफ़ाई अनिवार्य वस्तु है। पवित्रता का मतलब सफ़ाई और सुथराई (पवित्रता) है। और अपवित्रता का तात्पर्य गंदगी और मैल है। और हलाल का तात्पर्य है वे वस्तुएँ जिनका खाना और पीना रुचि को ग्राह्य हो। वे वस्तुएँ हराम हैं जो खाने के योग्य न हों। इसलिए खाने-पीने को स्नान और पवित्रता के लिए रोक रखना क्या आवश्यक है। परंतु कतिपय लोग हैं कि जिन्होंने होश संभालने से लेकर बुढ़ापे तक न शराब पी और न सूअर का मांस खाया, वे तौरैत के आदेशों पर अमल करते हैं और कहते हैं कि हज़रत ईसा ने तौरैत के आदेशों को बहाल रखा है इसलिए उनपर अमल करना चाहिए। फिर पूर्णतः हराम वस्तुएँ क्यों खाएँ। और इसका क्या कारण है कि हज़रत ईसा ने गुस्से की स्थिति में यहूदियों से वाद-विवाद में हलाल और हराम के बारे में गोल-मोल बातों से काम लिया और कोई तर्कसंगत उत्तर नहीं दिया और न कोई अंतिम आदेश लागू किया। वास्तविक शिक्षा और आदेश जो इंजील में दिए गए हैं वे यह हैं कि "ईश्वर को एक मानो" उसके दूत पर ईमान लाओ, झूठी गवाही न दो, झूठ बोलना, बलात्कार करना और अनावश्यक हत्या करना वर्जित है। यह बात प्रसिद्ध है कि नसारा हज़रत ईसा और हज़रत मरियम को ईश्वर की ज़ात के साथ शरीक करते हैं और अपने प्रार्थना स्थलों में उनका चित्र लगाते हैं और मूर्ति पूजा के तरीक़ों पर उन चित्रों के समक्ष सिर झुकाते हैं। परंतु अँग्रेज़ इस तरह मूर्ति पूजा नहीं करते, बल्कि इसको बुरा समझते हैं। नसारा के विरूद्ध अपने गिरजा घरों को चित्रों से पाक रखते हैं और ईश्वर की ज़ात को एकल मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ्रांस में प्रत्येक दिसंबर के महीने में हज़रत ईसा के जन्म दिवस पर एक ऐसी महिला को जो गर्भवती हो, हज़रत बीबी मरियम क़रार देते हैं। और वह महिला जैसा कि प्रसिद्ध है कृत्रिम प्रसव-पीड़ा में ग्रस्त होती और रक्तरंजित बच्चा निकालती है। और इसके बाद खुशी मनाते हैं और नृत्य और संगीत की महफ़िल जमती है। मधुर आवाज़ से गाना गाते हैं और उस लकड़ी की गुड़िया को तख़्त पर रखकर सब उसके समक्ष शीष झुकाते हैं। मैंने यह तमाशा सोरस द्वीप में देखा था। कप्तान सुईटन और श्री नाक फ्रांस की क़ौम पर हँसते थे और मुझसे कहते थे यह नई बात बिल्कुल हिमाक़त है। यह फ्रांस, विलंदीज़ और पुर्तगाल में लागू है। परंतु अँग्रेज़ों में नहीं। दूसरे यह कि नसारा क़ौम में पक्षपात बहुत है। यदि कोई मुसलमान उनके देश में जाए और बुलंद आवाज़ से आज़ान दे तो उसको आग में जला देते हैं। परंतु अँग्रेज़ों का तरीक़ा सौहार्द वाला है। यदि कोई मुसलमान उनके देश में सस्जिद बनाए और नमाज़ और रोज़ा की पाबंदी करे तो उसपर कोई आपत्ति नहीं करते और न रोकते हैं। कहते हैं हमें किसी के धर्म पर आपत्ति से क्या काम, ईसा का धर्म ईसाइयों को मूसा का धर्म मूसवियों को मुबारक।

बलात्कारियों का धर्म

फ्रांस में बलात्कारी, धनी पादरी लाखों की संख्या में मौजूद हैं। इस देश के लोगों में यह परंपरा प्रचलित है कि वर्ष में एक बार अपने पादरी के पास जाते हैं उनमें औरत और मर्द सब शामिल हैं। और वर्ष भर में जितने पाप और अनुचित कार्य किए हैं, उन सब का हाल पादरी के समक्ष बयान करते हैं। प्रत्येक अपनी हैसियत के अनुरूप, बल्कि उससे भी अधिक राशि भेंट स्वरूप पादरी को देता है। उनकी आस्था यह है कि अपने इन्द्रिय निग्रह, धार्मिकता, प्रार्थना के कारण ईश्वर से अनुशंसा करके उनके पापों को माफ़ करा देगा। परंतु अँग्रेज़ फ्रांसीसियों के इस विश्वास का उपहास उड़ाते हैं और इसको जड़ता और मूर्खता समझते हैं। उनका विश्वास है कि ईश्वर म्रष्टा है और जीव-जंतु का निर्णय करने का अधिकार उसी को है। उन कुकृत्य पादरियों की अनुशंसा पर पाप कैसे माफ़ हो सकता है। उनका यह विश्वास हिंदुओं के विश्वास

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से मिलता-जुलता है। उनको भी पादरियों की तरह बलात्कारी ब्राह्मण दिग्भ्रमित करते हैं और अजीब (विचित्र) बात यह है कि हिंदुओं की धार्मिक पुस्तकों में लिखा है कि दान ब्राह्मणों को दी जाए। यदि ब्राह्मण के पास एक लाख रुपया मौजूद हो तब भी एक रुपया के दान के लिए मारा-मारा फिरता है। बुद्धि से यह बात मालूम होती है कि वेद पढ़ने वाले प्रबुद्ध जो आस्थाओं से अवगत होते थे उनको यह ख़्याल रहता था कि उनकी संतान अधिक हो जाएगी तो वह निर्धन हो जाएँगे इसलिए ब्राह्मण के सम्मान में उनको दान ग्रहण का अवसर मिलेगा और बिना परिश्रम सुख से जीवन व्यतीत होंगे। उनकी इस विधि (तरीक़े) और विश्वास पर बुद्धि आश्र्चर्यचकित है कि इसको क्या कहा जाए। हिंदु समुदाय में बहुत संप्रदाय हैं उनमें ब्राह्मणों को सब के ऊपर प्राथमिकता प्राप्त है। उनकी धार्मिक पुस्तकों में लिखा है कि ब्राह्मण के अतिरिक्त कोई वेद नहीं पढ़ सकता है। यदि पढ़ेगा तो नरकवासी हो जाएगा। उनकी यह आस्था भी है कि गंगा स्नान करना मुक्ति का कारण है। दान देना स्वर्ग में प्रवेश का माध्यम है। यद्यपि बहत्तर संप्रदायों वाले धर्म में स्पष्ट आदेश है कि लोग अपने धर्म और आस्था की पुस्तकें पढ़ें ताकि ईश्वर को पहचानें और शिक्षा से वंचित न रहें। ऐसी स्थिति में उन बुरे तरीक़ों को मूर्खता के सिवाय क्या समझा जाए। इसी तरह फ़्रांस वालों के धर्म का जो तरीक़ा है उस पर बुद्धि आश्चर्यचकित है। इस संप्रदाय के पादरी बलात्कार को प्रोत्साहित करके लोगों को दिग्भ्रमित करते हैं और उसके माध्यम से धन कमाते हैं।

कप्तान सुईटन ने कहा कि पुर्तगालियों के पादरी, जो शहनशाह अकबर का दरबारी बन गया था, उसने यह परंपरा अपनी ओर से गढी है। 'एख़्लाक़े मोहम्मदी' नामक पुस्तक जिसमें हज़रत मोहम्मद स. का हाल लिखा हुआ है कि एक दिन हज़रत मोहम्मद स. अपने मित्रमंडली के साथ एक सभा में बैठे हुए थे। एक बलात्कारी महिला आई और बोली कि मुझसे एक बड़ा पाप घटित हो गया है। मैं चाहती हूँ कि मुझे इसके लिए धार्मिक सज़ा दी जाए ताकि कल प्रलय के दिन मुझपर कष्ट न हो। हज़रत मोहम्मद स. ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया। उस महिला ने पुनः आपकी ओर मुँह करके वही बात दुहराई। उसकी बात सुनकर धार्मिक आदेश पर कार्यान्वयन कराने वाले उसको पकड़कर सज़ा के लिए ले जाने के लिए तैयार हो गए। उस समय उस महिला ने कहा वह गर्भवती है। हज़रत मोहम्मद स. ने हुक्म दिया कि बच्चे के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म तक सज़ा को स्थगित कर दो। महिला यह सुनकर लची गई। बच्चा के जन्म के बाद पुनः आई। आपने फ़र्माया बच्चे का लालन-पालन करो। जब बच्चा दूध पीना छोड़ चुका तो वह महिला पुनः आपके पास आई। हज़रत मोहम्मद स. ने फ़र्माया अभी बच्चा छोटा है जब बड़ा हो जाए उस समय तुम्हारी सज़ा पर अमल किया जाएगा। क्योंकि माँ-बाप के सिवाय कोई बच्चा का स्नेही नहीं होता, जो उसका लालन-पालन करे। एक सहाबी (मित्र) ने कहा, ऐ ईश्वर के रसूल! यह महिला बार-बार आती है और धार्मिक समय में बाधा देती है। मैं इस लड़के की शिक्षा-दीक्षा की ज़िम्मेदारी लेता हूँ। आप इस महिला को उसके उद्देश्य तक पहुँचा दें। आपने उसी समय धार्मिक क़ानून जारी कर दिया। अत्यंत क्रोध में आपकी आँखें लाल हो गईं और सहाबी पर क्रोधित दृष्टि डालकर कर फ़र्माया तुम नहीं जानते कि इस महिला के वध में कितना विलंब कर रहा था। उक्त सहाबी ने अपनी ग़लती को स्वीकारा और डर गए।

लगभग चालीस वर्ष हुए कि फ़्रांस के बादशाह ने जो बुद्धि और समझ में विशिष्ट था। उसने ढोंगी पादरियों के वध का आदेश दिया। अतएव एक लाख और कई हज़ार पादरी का वध कर दिया गया और उनके धन और संपत्ति को ज़ब्त कर लिया गया। कुछ पादरी जो अच्छे स्वभाव और अच्छे चरित्र के थे वे बच गए। इस तरीक़ा पर जो लिखा जा चुका है। यद्यपि दूसरे समुदाय से बेहतर हैं। उनका तरीक़ा इस्लाम के तरीक़ों से अधिक भिन्नता नहीं रखता। काश! यदि वे लोग ईश्वर की वाणी (क़ुरआन) और हज़रत मोहम्मद स. के धर्म को सत्य जानते तो फिर उनके और इस्लाम के तरीक़ों में अधिक अंतर नहीं था। दूसरे यह कि ज़कात (दान) का तरीक़ा उनके धर्म में नहीं है। इस हालत में हिंदुओं और मुसलमानों में लोगों को धोखा देने वाले ढोंगी फ़क़ीर और सूफ़ी बहुत हैं, जो संसार की लिप्सा में अपनी सभा सजाते हैं। इसको बुरा कहते और ऐसे धोखेबाज़ इबादतगुज़ारों (प्रार्थना करने वालों) की अधिकता के कारण सच्चे इबादतगुज़ार फ़क़ीरों पर आस्था कम रखते हैं। यहाँ तक कि चमत्कार को बिल्कुल नहीं मानते हैं कि चमत्कार देवदूतों की आदत थी और वली का यह मर्तबा (पद) नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अँग्रेज़ों की ईश्वर पूजा का तरीक़ा

हमारे देश के मुक़ाबले में बर्तानिया के अंदर ईश्वर पूजा और तपस्या का सिलसिला बहुत कम है। यद्यपि रविवार के दिन गाँवों और उप नगरों के लोग गिरजा घरों में ईश्वर पूजा के लिए जाते हैं और प्रायः नगर के लोग भी जाते हैं यदि कोई आवश्यक कार्य भी हो तो ईश्वर पूजा को आवश्यक जानकर इसे प्राथमिकता देते हैं। और कहते हैं कि ईश्वर ने संसार को छः दिनों में पैदा किया और रविवार जो छुट्टी का दिन है, इसलिए कोई काम उस दिन न होगा। यह दिन प्रार्थना के लिए विशेष है। जिसको वे आराधना (इबादत) कहते हैं और सांसारिक कार्यों को त्याग देते हैं। और कहते हैं कि ईश्वर ने फ़रमाया है कि छः दिन संसार के कार्य करो और एक दिन मेरी आराधना के लिए छुट्टी करो। उनकी प्रार्थना का तरीक़ा यह है कि महिलाएँ और पुरुष सब गिरजा घर में एकत्र होते हैं। सब सिर झुकाकर एक ज़ानू होकर ज़मीन पर रख देते हैं, पादरी जो उनका इमाम (धर्म गुरु) होता है, इंजील पढ़ता है और दूसरे लोग साज़ बजाते हैं और उसके सामने सिर झुकाए एक ज़ानू ज़मीन पर रखे हुए सुस्वर गाते हैं और आमीन कहते हैं। प्रार्थना के अंत में फ्रांसीसी पादरी ईश्वर के गुणगाथा को पढ़ता है और कहता है कि ऐ ईश्वर! तूने मध्याह्न भोजन दिया। संध्या भोजन भी दे। सब मिलकर बुलंद आवाज़ में "आमीन" कहते हैं। अँग्रेज़ इस ईश्वरीय गुणगाथा को पसंद नहीं करते हैं। वे कहते हैं कि ईश्वर ने सब की जीविका प्रत्येक के भाग्य में लिख दिया है वह उसको मिलती है। इसलिए इसके लिए अनुरोध करने की क्या आवश्यकता है यद्यपि खाने के बाद कृतज्ञता ज्ञापित करना आवश्यक है। यदि आराधना मात्र भोजन माँगने के लिए की जाए तो ऐसी प्रार्थना से क्या लाभ होगा। फ्रांसीसी संप्रदाय के लोग बुधवार और रविवार को उपवास रखते हैं और खीर, शराब और मांस नहीं खाते हैं। परंतु अँग्रेज़ उपवास और उपासना से खिन्न हैं। वे कहते हैं कि ईश्वर ने मनुष्यों को संसार के साज-सज्जा के लिए पैदा किया है। इसका काम भवन निर्माण, कृषि, उद्योग-धंधा को विकसित करना है। इसके अतिरिक्त शिक्षा और हुनर सीखना, आय के स्रोत बढ़ाना और अपने देश की सुरक्षा करना उनकी ज़िम्मेदारी है। स्वादिष्ट भोजन का सेवन करना और अच्छा वस्त्र पहनना चाहिए और प्रतिदिन आत्म-समीक्षा करनी चाहिए कि आज मैंने क्या काम किया और कल क्या

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करूँगा। क्यों कि ईश्वर प्रलय के दिन जब हिसाब करेगा तो पूछेगा कि संसार में इतने दिनों तक रहे तो क्या काम किया। अतएव जिन्होंने संसार में पेट भरने के अतिरिक्त कुछ अन्य कार्य नहीं किया है। उदासीनता और आलस्य अपनाया, वे बड़े कष्ट में गिरफ्तार होंगे। इस स्थिति में यदि सभी लोग पूजा और आराधना में लिप्त रहेंगे और उपवास रखकर भुखमरी करेंगे तो कमज़ोर और शक्तिहीन हो जाएँगे और कठिन कार्य न कर सकेंगे। भारी बोझ न उठा सकेंगे और बड़े-बड़े कार्यों को संपन्न करने में असमर्थ रहेंगे। जब मानवीय अंगों में निर्बलता और आलस्य पैदा होता है तो सारे कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होता है और मानव सेवा के कार्यों में ख़राबी पैदा होती है। अँग्रेज़ों के धर्म और ईमान के बारे में जैसा लिखा गया है। उनको ईश्वरीय अस्तित्व और उसके एकल होने पर विश्वास है परंतु कतिपय लोग नसारा की तरह गुप्त रूप में हज़रत ईसा को ईश्वर का पुत्र समझते हैं और कुछ महापुरुषों और देवदूतों के कथन और कृत पर बुद्धि को ऊपर और विश्वसनीय मानते हैं। इसी प्रकार कुछ का संबंध नास्तिक संप्रदाय से है, जो प्रलय और जन्म, पाप और पुण्य और स्वर्ग और नरक पर विश्वास नहीं रखते हैं और हज़रत ईसा को ईश्वर का पुत्र नहीं मानते, न इंजील को ईश्वरीय पुस्तक समझते हैं। और कहते हैं कि वे भी मनुष्य थे और हम भी मनुष्य हैं और इंजील उनकी लिखी पुस्तक है। और कुछ लोग इससे आगे बढ़कर पृथ्वी और आकाश के स्रष्टा (ईश्वर) को नहीं मानते। वे कहते हैं कि संसार और पृथ्वी और आकाश और सभी वस्तुएँ स्वतः उत्पन्न हुई हैं। जीवन-मृत्यु मनुष्य और पशुओं का इस तरह है जैसे कि वृक्ष, एक उगता है और बढ़ता है और फिर सूख जाता है और उसके स्थान पर दूसरा उग जाता है। (हम ईश्वर से पनाह माँगते हैं इन भ्रामक बातों के लिए)

हज़रत मोहम्मद स. के देवदूत होने से अँग्रेज़ों का इन्कार

अँग्रेज़ों के प्रायः प्रबुद्धजन कहा करते हैं कि यदि इंजील में हमको हज़रत मोहम्मद स. के देवदूत होने की सूचना मिलती तो हम इस्लाम धर्म अपना लेते।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुसलमानों की ओर से इसका उत्तर यह दिया जाता है कि वास्तविक इंजील इस संसार से लुप्त हो गया है। हज़रत ईसा के बाद उनके हवारियों में से चार ने अपनी स्मृति के अनुरूप इंजील के नाम से चार पुस्तकें संकलित कीं और उनको एक जिल्द में एकत्र करके उसका नाम इंजील रखा। उन हवारियों में एक शमऊन दूसरे जान तीसरे मत्ती और चौथे लूक़ा हैं। यह पुस्तक अब तक नसारा में प्रचलित है। परंतु हज़रत मोहम्मद स. के प्रकट होने का वर्णन इंजील में विस्तार के साथ नहीं है। इसका कारण यह है कि हज़रत ईसा ने साफ़ तौर पर बयान किया था कि हवारियों में से प्रत्येक ने मात्र संकेत किया है और इसमें शंका उत्पन्न करके संप्रदाय को भ्रम में डाल दिया है। इंजील के वर्णनों में एक वर्णन यह है कि एक दिन हज़रत ईसा ने उपदेश के रूप में कहा कि एक धनी आदमी दोपहर से पूर्व बाज़ार गया और कुछ महिलाओं और पुरुषों को एक रुपया मज़दूरी पर अपने बाग़ में काम करने के लिए तय किया। दो घड़ी दिन गुज़रने पर मज़दूरों के एक दल को बाज़ार में खड़ा देखा। उनसे कहा कि तुम अनावश्यक क्यों खड़े हो, बाग़ में जाओ और संध्या तक काम करो तो प्रत्येक को एक-एक रुपया मिलेगा। इसके बाद वह धनी एक घड़ी दिन रहे बाज़ार गया तो देखा कि मज़दूर बाज़ार में अनावश्यक खड़े हैं। उनसे पूछा तो मज़दूरों ने कहा कि हम लोग समय के बाद आए थे। इसलिए हमको काम नहीं मिला। धनी ने कहा कि तुम सब मेरे बाग़ में जाओ और काम करो। संध्या को प्रत्येक को एक-एक रुपया मिलेगा। जब संध्या हुई तो तीनों दल मज़दूरी लेने के लिए धनी के पास आए। उसने आश्वासन के अनुरूप प्रत्येक को एक-एक रुपया दिया। पहले दल ने कहा हमने पूरा दिन काम किया है और धूप गर्मी सहन की है और दूसरे ने हमसे आधे और चौथाई काम किया है और तुम सबको बराबर मज़दूरी दे रहे हो। धनी ने उत्तर दिया कि मैंने तुमसे जो बात तय की थी, उसके विरूद्ध नहीं करूँगा। मैं अपने माल के लाभ और हानि का ज़िम्मेदार हूँ। जो चाहूँ करूँ। यही उदाहरण ईश्वर की मर्ज़ी और ईश्वर की इच्छा के लिए है कि उसने बहुत से बाद में आने वालों को पूर्व के लोगों पर प्राथमिकता दी है। मुसलमान स्वयं को बाद में आने वालों में गिनते हैं क्योंकि हज़रत मोहम्मद स. पूर्व के सभी देवदूतों के बाद पधारे और उनको नबी का मर्तबा (मान) मिला। इससे आप के अनुयायी सबसे पहले स्वर्ग में जाएँगे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अँग्रेज़ों की आस्थायें, देव पुस्तक से इन्कार

अँग्रेज़ों का विश्वास है कि चारों प्रसिद्ध पुस्तकें अर्थात् तौरैत, इंजील, ज़बूर और कुरान शरीफ़ और उनके अतिरिक्त अन्य धर्मग्रंथ देवदूतों के लिखे हुए हैं। उनको ईश्वरीय वाणी या आसमानी पुस्तक नहीं कहा जा सकता है। ईश्वर ने कोई पुस्तक लिखकर आसमान से नहीं भेजी है। वे कहते हैं कि हज़रत जिबरईल जो वही (देववाणी) लाए थे। उनको किसी ने नहीं देखा और न किसी ने उनकी आवाज़ सुनी। मात्र धार्मिक नियम में जो ज़ाहरी नियम हैं उनको अनुमान से और उनके कथन से उनपर कैसे विश्वास कर सकते हैं और उनपर किस तरह ईमान लाएँ। यद्यपि देवदूतों ने आम मानव के मार्ग-दर्शन और निर्देश के लिए जो उचित तरीक़े और मुनासिब नियम अपनी अक़्ल-समझ के अनुरूप बेहतर समझे, उनके लिए पुस्तकें लिखीं। ज़बूर हज़रत दाऊद, तौरैत हज़रत मूसा, इंजील हज़रत ईसा और पवित्र कुरान हज़रत मोहम्मद स. ने लिखा है। यद्यपि अँग्रेज़ पवित्र कुरान और हज़रत मोहम्मद स. के दूतत्व को नहीं मानते हैं। परंतु उनके पवित्र धार्मिक नियमों (शरीयत) की सराहना करते हैं और कहते हैं कि हज़रत मोहम्मद स. ज्ञान और बुद्धि में अद्वितीय थे। उन्होंने बहुत अच्छे तरीक़ा पर अच्छे नियम और सिद्धांतों से अपने धर्म को सजाया है। परंतु एक त्रूटि इसमें यह है कि हत्या और ख़ून-ख़राबा भी शामिल है। जो पूर्व के देवदूतों और अवतारों के विरूद्ध है और दूतत्व के पद से बहुत दूर है क्योंकि पूर्ववर्ती देवदूतों ने संदेश और उपदेश के द्वारा दिग्भ्रमित लोगों को सच्चा और सीधा मार्ग दिखाया तो लोगों ने अपनी ख़ुशी से उनका धर्म स्वीकार कर लिया। और अगर किसी ने उनकी बात नहीं मानी और उनको यातना देते तो ईश्वरीय कोप में ग्रस्त हो जाते थे। परंतु देवदूत ख़ून-ख़रावा नहीं करते थे।

एक दिन इसी बात पर कप्तान सुईटन ने मुझसे बहस की तो मैंने उनको जवाब दिया कि पूर्ववर्ती देवदूतों को जिस संप्रदाय में अवतीर्ण किया गया उनपर संदेश और उपदेश का कोई प्रभाव नहीं हुआ और उन्होंने तरह-तरह के कष्टों को हसन किया। उनके बाद हमारे देवदूत हज़रत मोहम्मद स. जो अंतिम अवतार हैं पवित्र मक्का में अवतरित हुए तो आरंभ से ही दूतत्व का प्रचार और इस्लाम धर्म के लिए अत्यंत सदाचारिता और कोमलता और प्रेम से लोगों को उपदेश देते थे। सभी ख़ास और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आम लोगों को मृदुभाषा में और सदाचारिता से धर्म की बातें सिखाते थे। परंतु उनपर प्रभाव नहीं पड़ता था और उसके बदले में कुरैश के लोगों ने उनपर अत्याचार किए। और जब उनका अत्याचार, दुराचार और अपमानित करना चरमसीमा पार कर गया तब आप उनके ईमान लाने से निराश हो गए तो ईश्वर से प्रार्थना और विनती की। ईश्वर ने आपको धर्मयुद्ध का आदेश दिया और जहाद मुसलमानों पर अनिवार्य हो गया। ईश्वर बड़ा जब्र करने वाला और क़हर ढाने वाला है। उसने अपने अवतार को शत्रुओं पर हावी किया। अतएव ईश्वर के अवतार ने जितने जहाद किए ईश्वरीय आदेश से, अपने अहं (नफ़्स) की इच्छापूर्ति के लिए नहीं।

एक घटना

जब मैं बर्तानिया से वापसी के बाद बर्दवान में था तो श्री जौन ग्राहिम को इस प्रकार का उत्तर दिया था। घटना यह है कि जौन ग्राहिम ने मुंशी सदरूद्दीन और मीर सिराजुद्दीन से धार्मिक बहस की और दूतत्व और चमत्कारों का ज़िक्र आया। परंतु किसी ने इसका उचित उत्तर नहीं दिया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो इस मामले पर बहस छिड़ी हुई थी। जौन ग्राहिम उपहास के अंदाज़ में बात-चीत के क्रम में दूतत्व से इन्कार कर रहा था। उसी समय मैं वहाँ पहुँच गया। उस समय यह बात हो रही थी कि मुसलमानों का यह विश्वास है और आशा है कि हम सब हज़रत मोहम्मद स. की अनुशंसा पर स्वर्ग में जाएँगे और शेष सब समुदाय (उम्मतें) नरक में जाएँगे। यह बात बुद्धि के विपरीत है। इसके अतिरिक्त हज़ारों लोग हज़रत मोहम्मद स. को देवदूत नहीं मानते हैं क्योंकि उन्होंने पूर्ववर्ती देवदूतों की तरह कोई चमत्कार प्रस्तुत नहीं किया। हाँ, यह अवश्य किया कि कबूतरों को प्रशिक्षित किया और उन्हें जंगल और पहाड़ों पर छोड़ दिया। जब किसी संप्रदाय ने चमत्कार दिखाने की फ़र्माइश की तो पहाड़ पर जाकर पुश्त (बाजू/डैने) बँधे कबूतरों को आवाज़ दी। कबूतर दाना के लोभ में सभी ओर से उड़कर आए और उनके सिर कंधों पर बैठ गए। उस समय उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम के लोगों देखो मैं ईश्वर का देवदूत हूँ कि जंगली पक्षी मेरे आदेश पर उपस्थित हो जाते हैं। दोनों मुंशी उनकी बातों और अपने देवदूत के अपमान से परीशान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो गए और उन्होंने बड़े दुःख के साथ इसको मुसलमान की आस्था के अनुरूप ईश्वर और उसकी उक्ति के संदर्भों से उत्तर दिया कि ईश्वर ने कुरान शरीफ़ में यह कहा है कि हज़रत मोहम्मद स. बेशक देवतूद हैं। अतएव उनसे चाँद के दो टुकड़े होने का चमत्कार और वृक्ष के जलने का चमत्कार और सूर्य के लौटने की घटनाएँ घटित हुई हैं। और बहुत सारे भेद खोले हैं। परंतु जो व्यक्ति कुरान शरीफ़ और ईश्वर की पुस्तक पर ईमान नहीं रखता उसके सामने ईश्वर और उसके अवतार का कहना मात्र एक कथा है। ऐसे व्यक्ति का जवाब यह है कि उसको जवाब न दे। जौन ग्राहिम यह बात सुनकर मुस्कुराया और सिर हिलाकर कहा कि चूँकि मुझको कुरान शरीफ़ पर विश्वास नहीं है इसलिए इन बातों पर किस तरह विश्वास किया जा सकता है। यह बात सुनते ही मैंने आगे बढ़कर कहा यदि अनुमति हो तो मैं इस मसले पर कुछ प्रकाश डालूँ। इस बात के कहते ही सब मेरी ओर ध्यान देने लगे। उस समय मैंने कहा इंजील का अनुवाद मेरे पास है। इससे पड़ताल की है और पूर्ववर्ती प्रबुद्धों की लिखित इतिहासों को भी पढ़ा है। उनसे ज्ञात हुआ है कि पूर्ववर्ती अवतारों ने अपने अनुयाइयों को चमत्कार दिखाए। परंतु किसी ने उनकी आज्ञा का पालन नहीं किया। और अपने अनुयाइयों के हाथों बड़ी पीड़ाएँ उठाईं। विशेषकर हज़रत ईसा ने जिनके चमत्कार बहुत हैं। वह मृत को जीवित कर देते थे। सूर को दृष्टि प्रदान कर देते थे और कोढ़ के मरीज़ों को अच्छा कर देते थे। उनके अतिरिक्त ईसवी चमत्कार प्रसिद्ध है। जिसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। जितने चमत्कार हज़रत ईसा के हैं किसी और अवतार के नहीं हैं। परंतु इस गौरव के बावजूद बारह हवारियों के अतिरिक्त कोई उनपर ईमान नहीं लाया। इंजील में लिखा हुआ है कि यहूदियों की क़ौम ने काफ़िरों (नकारने वालों) के हाथों बहुत यातनाएँ बर्दाश्त कीं। और अंततः आदेशों और निषेधों के संबंध में हत्या और लूट-पाट की नौबत आ गई। इसके बावजूद अधिकांश ने अवज्ञा की, कुछ लोग ईमान लाए। बस इस बात-चीत का उद्देश्य यह है कि दुनिया बुरे लोगों से ख़ाली नहीं। अतएव हज़रत ईसा के काल में भी बुरे लोग थे और हज़रत मोहम्मद स. के काल में भी वे समाप्त नहीं हुए थे और वर्तमान काल में भी उपस्थित हैं। इसलिए यदि हरामज़ादों में से कोई हमारे पैग़म्बर को न जाने और जान-बूझकर आँखें चुराए तो हम क्या करें और किससे न्याय चाहें। यद्यपि ईश्वर जो मालिक है हिसाब के दिन का, वह प्रलय के दिन उन भेद करने वालों को बीच से उठाएगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जौन ग्राहिम ने जैसे ही मेरी बातें सुनीं तत्काल वहाँ से विदा हो गया। वे लोग मेरा हाथ पकड़के अपने घर ले गए और ख़ूब प्रशंसा की और कहा कि इस तरह का जवाब हम न दे सके। बहुत चाहत से उन्होंने इंजील की नक़्ल मुझसे ली। परंतु श्री जौन ग्राहिम उस तिथि से महीनों कभी धार्मिक मामलों में बहस नहीं की।

इस्लामी आस्थाओं के संदर्भ में श्री सुईटन से वाद-विवाद

एक दिन कप्तान सुईटन ने मुझसे कहा कि मुसलमान भाग्य को कर्तव्य पर प्राथमिकता देते हैं। यह विश्वास बुरा नहीं है। परंतु हमारा समुदाय शिक्षा और बुद्धि के अधीन है और कर्तव्य को भाग्य पर प्राथमिकता देता है, बल्कि अधिकांश लोगों का यह विश्वास है कि वास्तविक विश्वास उचित बुद्धि और उत्तम कर्तव्य है। यदि बुद्धि और कर्तव्य में कोई फ़तूर हो जाए और सावधानी का दामन छूट जाए तो वह कार्य ख़राब हो जाता है। अर्थात् जिस कार्य में बुद्धि और विधि से काम न लिया जाए वह कार्य नहीं होता। परंतु तुम्हारा समुदाय सभी कार्यों में चाहे वह कठिन हो या सरल भाग्य के हवाले कर देता है। उदाहरण स्वरूप यदि चीनी या शीशे का बर्तन हाथ से गिरकर टूट जाए तो कहते हैं यह भाग्य में लिखा था इसलिए ऐसा हुआ। मैंने उत्तर दिया इस समय एक ड्यूक जो बादशाह की फ़ौज का सेनापति है और बहादुर और युद्ध कौशल में निपुण है तो लोग कहते हैं कि यदि सेना उत्तम हो और युद्ध नियम से पूर्ण अवगत कर दें और युद्ध करने के लिए जो संभव विधियाँ हैं प्रयास करें और युद्ध का उत्तम अस्त्र-शस्त्र उपलब्ध कर लें और शत्रु की सेना पर विजय प्राप्त कर लें तो लोग उस समय कहेंगे कि विजय ईश्वर प्रदत्त है तो यह बात व्यर्थ और मिथ्या होगी। मैंने इसका उत्तर दिया कि वास्तविक तो भाग्य है परंतु ईश्वर ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनाया है और बुद्धि के गहने से सुसज्जित किया है और धार्मिक और सांसारिक कार्यों में विधि और सावधानी का आदेश दिया है। यदि कोई कार्य आदिकाल से भाग्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में अंकित है तो मनुष्य की विधि भी इसमें सफल होती है। वरन् कोई लाभ विधि से नहीं होता। उदाहरण स्वरूप यदि मज़रूआ भूमि की जुताई करके इसमें खेती की जाए तो इसकी निर्भरता भी भाग्य पर होती है। यदि भाग्य से ईश्वर ने वर्षा की व्यवस्था न की तो खेत हराभरा नहीं होगा। फिर मनुष्य की विधि क्या करेगी। दूसरे मामलों में भी भाग्य प्रथम है। परंतु जो लोग यह कहते हैं कि प्रत्येक कार्य में भाग्य पर निर्भर करके बैठ रहना चाहिए यह उचित नहीं है। विधि से कदापि अलग नहीं होना चाहिए, बल्कि विधि प्रथम शर्त है।

बर्तानिया के लोगों से धार्मिक बहस

बर्तानिया के कतिपय प्रतिष्ठित लोग प्रायः कप्तान सुईटन के घर आते थे। मुझको भी भेंट के लिए बुलाते और परीक्षा लेने एवं आज़माने के लिए धार्मिक विश्वासों और कर्तव्यों के संदर्भ में आपत्तियाँ व्यक्त करते। परंतु मेरी ओर से उचित उत्तर मिलते और वह प्रसन्न होते थे। एक दिन जनरल तीडू और कप्तान ओदरयान आदि एकत्र थे। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम इस देश में अकेला हो, भला विवाह क्यों नहीं कर लेते। मैंने कहा दो स्थितियाँ हैं और दोनों मेरे लिए कठिन हैं और बहुत ख़राब भी। इसलिए विवाह करना असंभव है। एक स्थिति यह है कि जिन औरतों से मैं विवाह करना चाहता हूँ वह मुझको पसंद नहीं करती हैं और जो मुझको पसंद करती हैं मैं उनको नहीं चाहता हूँ। इसका स्पष्टी करण यह है कि जो औरतें भद्र और प्रतिष्ठित परिवारों से संबंध रखती हैं वह किसी पराए परिवार और परदेशी से विवाह पर कैसे सहमत होंगी और मैं अपने देश के एक भद्र और प्रतिष्ठित परिवार से संबंध रखता हूँ। इस देश की साधारण और नीच परिवार की महिलाएँ मुझे पसंद करेंगी मगर मैं उनको कैसे पसंद कर सकता हूँ। मेरे इस उत्तर से वे लोग खुश हुए। इसके बाद उन्होंने प्रश्न किया कि ईश्वर ने पहले हज़रत आदम को पैदा किया और उसके बाद हज़रत हव्वा (ईभं) को पैदा किया और उनको पत्नी बनाया। तुम मुसलमान उनके विरूद्ध चार शादियाँ क्यों करते हो। तुम्हारे अवतार हज़रत मोहम्मद स. ने स्वयं नौ शादियाँ कीं और अपने कृत के विरूद्ध अपने अनुयायी को चार औरतों का आदेश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिया। मैंने इसका उत्तर यह दिया कि औरत को ईश्वर ने मर्द के सुख-सुविधा के लिए पैदा किया है। अतएव हज़रत आदम के बाद उनके सुख-सुविधा के लिए हज़रत हव्वा को पैदा किया और उनकी पत्नी बनाया। इसके बाद जब हज़रत आदम की संतान अत्यधिक हो गईं तो आदेश हुआ कि यदि एक औरत से मर्द को सुख-सुविधा न मिले तो दूसरे से विवाह करले। इसके अतिरिक्त हर माह सप्ताह-दस दिन औरतें मासिक धर्म में ग्रस्त हो जाती हैं। इसलिए हमारे अवतार ने एक के बाद दूसरा विवाह किया। और अनुयायी को आदेश दिया कि यदि मासिक धर्म और प्रसव रक्त के काल में अपनी काम इच्छा पर क़ाबू न रख सको तो दूसरी शादी कर लो। इस प्रकार चार तक कर सकते हैं ताकि शैतान के बहकावे में बलात्कार में ग्रस्त न हों। हमारे अवतार के अवतरण से पूर्व हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने दो शादियाँ की थीं। बीबी हाजरा और बीबी सायरा से। हज़रत सुलेमान की एक सौ साठ बीबियाँ थीं। अब न्याय कीजिए कई औरतों से विवाह करना हमारे अवतार के काल में आरंभ नहीं हुआ, बल्कि पूर्ववर्ती अवतारों के काल से प्रचलित है। अपने दिल से खुद पूछिए कि जो मर्द मात्र एक पत्नी रखता है, प्रसन्न है और यह कि उसने पूरे जीवन काल में बलात्कार न किया होगा। उन्होंने दूसरा प्रश्न किया कि शराब ईश्वर के स्वादिष्ट पदार्थों में से एक है जो उसने अपने बंदों को प्रदान की है। तुम्हारे अवतार ने बड़ा अत्याचार किया कि इस स्वादिष्ट पदार्थ से वंचित रखा। मैंने इसका उत्तर दिया कि धार्मिक आदेशों और वर्जितों के मामले हैं। अवतारों ने व्याख्या नहीं की है। ज्ञान और बुद्धि और प्रबुद्धों को इसमें कोई दख़ल नहीं है। अलबत्ता ईश्वर के अवतार अपने ईश्वरीय ज्ञान के कारण सभी प्रबुद्धों, प्रज्ञों से सर्वश्रेष्ठ थे। इसलिए उन्होंने ईश्वर के आदेश और अपनी पूर्ण बुद्धि से धार्मिक कार्यों के संदर्भ में जो कुछ उत्तम और उचित समझा अपने अनुयाइयों को बताया। मित्रों पर इसका अनुसरण करना अनिवार्य है। मनुष्य मूर्ख मात्र है, इसको क्या समझ है कि उन आदेशों की वास्तविकता पर प्रकाश डाल सके। परंतु यह बात प्रसिद्ध है कि शराब यद्यपि बेहतरीन वस्तु है परंतु इसका नशा बहुत ख़राब है, जो व्यक्ति को बेहोश कर देता है और ईश्वर की आराधना से निश्चेत बना देता है। ईश्वर का आदेश है कि खाओ और पिओ परंतु मुझे न भूलो। अँग्रेज़ कहते हैं कि पीने वाला यदि अंदाज़ा करके पीये तो निश्चेत क्यों हो। मैं कहता हूँ कि जो कुछ लोग इस समय यहाँ सभा में बैठे हैं उनमें से कोई कह दे कि वह उम्र भर शराब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीकर निश्चेत नहीं हुआ? यह बात सुनकर सब बहुत प्रसन्न हुए। इसके बाद उन्होंने प्रश्न किया कि तुम्हारा यह विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति उम्र भर में सच्चे दिल से हज़रत मोहम्मद स. का कलमा पढ़ ले तो निःसंदेह वह स्वर्गवासी होगा और शेष सभी नरक में जाएँगे। मुसलमान की संख्या संसार में कम है। वह रोम, शाम, फ़ारस और थोड़े भारत में हैं। इस स्थिति में सात द्वीपों के सभी लोग नरकवासी होंगे। इसका क्या मतलब है कि ईश्वर ने लोगों की इतनी बड़ी संख्या मात्र जलाने के लिए पैदा किया है। मैंने उत्तर दिया कि मुसलमानों का विश्वास यही है कि मुसलमान कम हैं और स्वर्ग उनकी क्षमता के अनुरूप है। दूसरे लोगें की संख्या अधिक है इसलिए नरक स्वर्ग से चार गुना बड़ा है। यद्यपि सब ईश्वर के बंदे हैं। परंतु आज्ञाकारी, प्रबुद्ध और धार्मिक बंदे और बेईमान, मंदबुद्धि और दूसरों का माल हड़पने वालों में बहुत अंतर है। जैसा कि हज़रत ईसा ने इंजील में इशारा स्वरूप एक घटना बयान किया है। वह यह है कि एक व्यक्ति के तीन बेटे थे। संयोगवश वह एक यात्रा पर गया और परीक्षा स्वरूप एक-एक हज़ार रुपया तीनों को दे गया ताकि उनकी बुद्धि और समझ और ईमानदारी की परीक्षा ले सके। पिता के चले जाने के बाद पहले बेटे ने रुपया को ज़मीन में दफ़न (गाड़) कर दिया था, जिसे चोर निकाल ले गए। दूसरे बेटे ने अपना रुपया महाजनी व्यवसाय के रूप में सूद पर दे दिया और उससे लाभ प्राप्त कर व्यय किया। तीसरे बेटे ने व्यवसाय आरंभ किया और एक हज़ार रुपया लाभ स्वरूप अर्जित किया। जिस समय उनका पिता वापस आया उसने अपना दिया हुआ रुपया वापस माँगा। प्रथम पुत्र ने रुपया अदा नहीं किया और जो घटित हुआ उसे बताया। पिता ने उसको कुछ नहीं दिया क्योंकि उसको मूर्ख समझा। दूसरे पुत्र ने एक हज़ार मूल राशि वापस की। पिता ने कहा बेटा अर्द्ध बुद्धिमान् है। परंतु अमानत (धरोहर) में ख़्यानत (अपभोग) करने वाला है। उसको कम राशि दी। तीसरे पुत्र ने एक हज़ार मूल और एक हज़ार लाभ कुल दो हज़ार रुपया दिए। पिता प्रसन्न हुआ और कहा कि यह लड़का पूरे तौर पर ईमानदार और अमानतदार है। फिर उसको अपनी पूर्ण संपत्ति का मालिक बना दिया। अतएव हज़रत ईसा ने इंजील में इस घटना की व्याख्या करते हुए कहा है कि ईश्वर के निकट बंदों का भी यही मामला है। जिसने सब कुछ रखा उसको सब दे दिया। जिसने कम रखा उसको कम दिया। और जिसने कुछ नहीं रखा उसको कुछ नहीं दिया जाएगा। परंतु मुसलमान इस कथा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का उद्देश्य इस तरह बयान करते हैं कि पिता ईश्वर के समान है और संतान से अभिप्राय प्राणि वर्ग है और सब फ़रीक़ और माल का तात्पय ईमान है और चोर से अभिप्राय शैतान है जो अनपढ़ों और मूर्खों का ईमान बर्बाद कर देता है। इसलिए तो ईश्वर पर ईमान नहीं लाते हैं वे ईश्वरीय अनुकंपा से वंचित हो गए हैं। उनकी मिसाल उस लड़के की तरह है अर्थात् उस व्यक्ति की तरह है जिसका ईमान शैतान ने ले लिया। उसका स्थान नरक में होगा। दूसरा लड़का जो सूद की राशि पर क़ाबिज़ हुआ। उससे अभिप्राय दोहरे चरित्र वाला और हानिकारक लोग हैं। जो ईश्वर पर बहुत कम ईमान लाते हैं और ईश्वर के अवतारों के आदेशों पर अमल नहीं करते तो वह निश्चित रूप से स्वर्ग और नरक के बीच अर्थात् आराफ़ में रहेंगे। जो नरक की तरह है। और जिसने पिता को मूल राशि और उसका लाभ भी दे दिया वह इशारा मुसलमानों की ओर है। जो ईश्वर के एक होने का दिल और ज़ुबान से एक़रार करते हैं। और ईश्वर और अवतार पर ईमान लाते हैं। और धार्मिक आदेशों से बाल बराबर आगे नहीं बढ़ते हैं। संसार को नश्वर समझकर तरह-तरह का आज्ञापालन और आराधना स्वर्ग मिलने की आकांक्षा में करते हैं, जो सदैव रहने वाला है। और हज़ार दुःख और कष्ट झेलते हैं। संसार के धन पर भरोसा करके सांसारिक सुखों को कदापि अपने समक्ष नहीं रखते। इसलिए वह उच्च कोटि के स्वर्ग में प्रवेश करेंगे क्योंकि संसार वास्तव में परलोक की खेती है। जो लोग सांसारिक धन प्राप्त करने के लिए अधिक श्रम करते हैं उनका जीवन धन के सहारे ऐश और आराम से गुज़रता है। वास्तव में यही संसार उनके लिए स्वर्ग है परंतु परलोक की वस्तुओं से वंचित हैं। और स्वर्ग से वंचित रहेंगे जो सदैव रहने वाला है। मनुष्य की ज़ात में दुःख-सुख दोनों का मिश्रण है। प्रसन्नता के बाद दुःख है और दुःख के बाद प्रसन्नता है। और यह दोनों बाक़ी नहीं रहते। न दुःख स्थाई होता है न प्रसन्नता वफ़ादार। इस स्थिति में प्रायः मुसलमान सांसारिक धन से वंचित हैं और सदैव धर्म के दुःख में ग्रस्त रहते हैं। इसलिए विश्वास है कि इनको परलोक का धन नसीब होगा और वह लोग जो वैभव का जीवन व्यतीत करते हैं वह परलोक में दुःख और निराशा से दो चार हेंगे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बर्तानिया देश और उसके बादशाहों का हाल

बर्तानिया के जो हालात इतिहास की पुस्तकों से मालूम हुए हैं वह यहाँ संक्षिप्त रूप में लिखे जा रहे हैं। बर्तानिया वास्तव में एक लघु देश था। इस पर सात आठ बादशाहों ने इस प्रकार शासन किया कि सदैव कुव्यवस्था का आधिपत्य रहा। इस समय हालैंड और स्कॉटलैंड देश इसमें शामिल हो गए। इसका क्षेत्रफल बंगाल से लगभग दो गुना होगा। अँग्रेज़ों की धार्मिक आस्थाएँ फ़िरंगिस्तान के दूसरे निवासियों से बहुत भिन्न हैं। इसलिए फ़िरंगिस्तानी उनको अपना विरोधी और नीच समझते हैं। अतएव डेनमार्क की क़ौम ने लंबी अवधि तक उनपर शासन किया और भव्य भवनों और सशक्त धार्मिक भवनों का निर्माण किया। उनके द्वारा निर्मित भवन अब तक मौजूद हैं। इसके बाद कई क्रांतियाँ हुईं। एक बार डेनमार्क ने बर्तानिया पर आक्रमण कर दिया और विजयी हुआ। अँग्रेज़ों को घोर पराजय हुई। प्रायः भागकर पहाड़ों में छुप गए और बहुत सारे फ़्रांस जाकर शरण लिया। कुछ घरों और खोह में छुप गए। और बड़ी संख्या में वध कर दिए गए। डेनमार्क के बादशाह ने नगर के बाहर अपना शिविर लगवाया और विजयी सिपाहियों को आदेश दिया कि वह नगर के अंदर न जाएँ। परंतु सिपाहियों ने इस आदेश का पालन नहीं किया और प्रायः नगर में घर-घर जाने लगे और नगर की महिलाओं से संबंध स्थापित करने लगे। उनके साथ शराब और कबाब और मस्ती में लिप्त हो गए लापरवाही के नशे में मदहोश रहने लगे। उस काल में नगर की महिलाएँ प्रतिशोध की भावनाओं से भरी थीं। एक मोची की पत्नी जो बहुत बुद्धिमान और बहादुर थी और नगर की महिलाओं में अपनी वीरता और साहस के लिए विशिष्ट थी, उसे सभी महिलाओं ने अपना सरदार बनाया। दूसरे दिन परामर्श में भाग लेने वाली महिलाओं ने घर-घर जाकर महिलाओं को अपने षड्यंत्र से अवगत किया कि शत्रुओं को समाप्त करना है। निर्धारित हुए कार्यक्रम के अनुरूप एक रात को शत्रु सैनिक के लोग जब महिलाओं के घर मौज-मस्ती के लिए गए तो उनको ख़ूब शराब पिलाई गई और उनसे बहुत गर्मजोशी से मिलीं। जब वे नशे में चूर हो गए तो उन वीरांगनाओं ने ख़ंजरों और छुरियों से उनको भेड़ बकरियों की तरह काट कर रख दिया। और उसी रात को नगर के उन मर्दों को ख़बर कर दी जो भय के मारे खोह और निकट और दूर के स्थानों में शरण लिए हुए थे। वे सब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकर उस मोची महिला के नेतृत्व में एकत्र होकर डेनमार्क के बादशाह पर आक्रमण किया। उसके पास गिने-चुने सिपाही थे। उसको पराजित किया। बादशाह के लिए भागने के अतिरिक्त कोई चारा न था। वह जान बचाकर भाग निकला। इस आश्चर्यजनक विजय से जो महिलाओं के साहस और वीरता से प्राप्त हुआ था सब ने महिलाओं के सामने सिर झुकाया और उनके सिरों के चुंबन लिए विजय की खुशी और स्वतंत्रता उत्सव मनाया। और उस मोची की औरत को राजसिंहासन पर बैठाया। भद्र और प्रतिष्ठित ख़ानदानी रईस अधिकतर वध कर दिए गए थे और कुछ संसार के अन्य देशों में चले गए थे। मोची की पत्नी के शासक होने के कारण नीच और क्षुद्र लोग मंत्री एवं अन्य उच्च पदों पर आसीन हो गए और भद्रों की संख्या कम हो गई। कुछ वर्षों तक बर्तानिया की सत्ता उस मोची की पत्नी के हाथों में रही। राजकाज और व्यवस्था में अराजकता उत्पन्न हुआ। वह औरत एक नीच व्यक्ति के साथ फ़रार हो गई। इसके बाद बादशाही के लिए भद्रों और अभद्रों में विवाद उत्पन्न हुआ। दोनों ही बादशाही के दावेदार थे। अभद्र कहते कि हमारी और तुम्हारी दोनों की पैदाईश आदम की औलाद से हुई है बुद्धिमत्ता के अनुसार देश और धन पर हमारा भी अधिकार है, यह किस नियम में लिखा है कि तुम बादशाही और अमीरी पर आसीन होकर सांसारिक धन-दौलत से सुख-सुविधा का जीवन व्यतीत करो और हमारी क़ौम जो ग़रीब और निर्धन है दिन-रात मेहनत और मुशक़्क़त करे और तरह-तरह का अपमान सहे। प्रति दिन तुम्हारे यहाँ मज़दूरी करे और नौकरी के लिए हाज़री दे। अब जब कि बादशाह का तख़्ता पल्ट गया है और क़ौम के प्रयास से पुनः सत्ता स्थापित हुई है तो हमारा अधिकार है कि सत्ता हमारे हाथ रहे, बल्कि आवश्यक है कि इसके बाद हमारी क़ौम ही शासन करे और शाही तख़्त पर हमारी क़ौम का आदमी ही आसीन हो। चूँकि पुराने रईस और भद्र लोगों में प्रायः डेनमार्क से युद्ध में मारे जा चुके थे और जो बचे थे वह अपमानित हो चुके हैं और बहुसंख्यक क्षुद्र लोगों के कारण सम्मान का जीवन व्यतीत नहीं कर सकते थे। इसलिए कुछ लोगों ने एकांतवास अपनाया और कतिपय देश छोड़कर दूसरे देशों में चले गए और शासन की बागडोर क्षुद्र क़ौम के हाथ में रही। जो अपने क्षुद्र व्यवहार और मूर्खता के कारण धन-दौलत के नशे में मदहोश हो गए और जिन्होंने मानवता को तबाह कर दिया, भद्रों को यातनाएँ दीं और अधिकांश को वध कर दिया, ज्ञान की पुस्तकों को नष्ट कर दिया और कहने लगे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि यही पुस्तकें उपद्रव का कारण हैं। इसी की बदौलत विशिष्टों में गर्व और बड़प्पन का भाव उत्पन्न हुआ है और इसी को पढ़कर यह लोग बुद्धि और समझ में विशिष्ट होते हैं और शासन करते हैं और ग़रीबों का अधिकार नहीं देते हैं। यह पुस्तकें जो उपद्रव की पूँजी हैं उनको संसार में नहीं रहनी चाहिए। इसी बात से अंदाज़ा करना चाहिए कि वह शासन की व्यवस्था किस प्रकार करते होंगे। यद्यपि कालचक्र से नीच और क्षुद्रों का भाग्य ने साथ दिया और उनको धन-सत्ता नसीब हुआ। परंतु शासन करने के लिए बुद्धि-समझ, ज्ञान और मालूमात की आवश्यकता होती है। शासक के लिए दूरदर्शिता और उचित विचार ज़रूरी है। यह विशेषता उन नीच स्वभाव लोगों में न थी। इसलिए देश में स्थिरता स्थापित पैदा न हो सकी। और अराजकता की स्थिति बनी रही। उस समय भद्र एवं विशिष्ट लोगों ने सरकार को समाप्त करने के लिए क़दम उठाया और कुछ उपाय स्वयं कीं और कुछ अन्य देशों में आबाद हो जाने वाले अपने देश के लोगों से सहायता लेकर उस सरकार को समाप्त करके सत्ता का बाग-डोर अपने हाथ में ले लिया। इस घटना के बाद से क्षुद्र संप्रदाय के लोगों को कोई बड़ा पद नहीं देते हैं और न किसी महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी वाला कार्य उनके सुपुर्द करते हैं और न किसी परामर्श में उनको शामिल करते हैं क्योंकि सादी शीराज़ के कथनानुसार :

धूर्त बिल्ली यदि पंख रखती तो
विश्व से गौरैया का अण्डा समाप्त हो जाता।

अतएव बर्तानिया के गोरे जो क्षुद्र परिवार से संबंध रखते हैं चाहे जितना भी आज्ञापालन करें और विशिष्ट सेवा प्रदान करें उनको सार्जन और मेजर की उपाधि देने और १५० रुपया तक वेतन देने के सिवाय और कुछ नहीं देते और न उनको उनके अनुरूप प्रोन्नति दी जाती है।

एक घटना

एक घटना प्रसिद्ध है कि जब क्षुद्र लोगों का शासन समाप्त हुआ और भद्रों के शासन का आरंभ हुआ तो उस समय एक ख़ानदानी शरीफ़ औरत को बादशाह बनाया गया जो अपनी बुद्धि और समझ की दृष्टि से पूरे बर्तानिया में प्रसिद्ध थी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्येक ख़ास और आम की ज़ुबान पर उसकी प्रशंसा थी। कहते हैं कि जब डेनमार्क के बादशाह से युद्ध हुआ और प्रायः पुरुष मारे गए और इस देश के बादशाह की सेना लापता हो गई तो इस विदुषी महिला ने आदेश दिया कि जिन महिलाओं के पति नहीं हैं वे दूसरे पुरुषों से आपसी सहमति से विवाह करें और पूरे देश में कोई महिला बिना पति और कोई पति बिना पत्नी न रहे ताकि अधिक बच्चे पैदा हों और वंश बढ़ाने का सिलसिला जारी रहे, प्राणी की संख्या में वृद्धि हो, बादशाह की सेना को अधिक सिपाही मिल सकें। उसने यह आदेश भी जारी किया कि जो पुरुष स्वस्थ और शक्तिमान है वह शक्तिशाली और स्वस्थ महिला से विवाह करे, ताकि उसकी संतान भी माँ-बाप की तरह गठीले शरीर वाले हों और सेना के योग्य हो सकें। यदि मर्द बलवान और औरत कमज़ोर होगी तो बच्चा भी कमज़ोर होगा।

वह महिला अत्यंत न्यायी थी। प्रसिद्ध है कि उसके शासन काल में एक महिला ने किसी पुरुष पर बलात्कार का आरोप लगाया। मुक़दमा न्यायालय में पेश किया और पुरुष पर आरोप साबित करने की कोशिश की। उस पुरुष ने बयान दिया कि मैंने महिला की सहमति से इस कार्य को किया। परंतु वह अपनी बात साबित न कर सका। न्यायालय ने पुरुष के वध का आदेश दे दिया। जब यह सूचना उस रानी को मिली तो उसने दोनों को बुलाया। और दोनों का बयान सुना। इसके बाद अपनी कमर से तलवार खींची और उसका दस्ता महिला के हाथ में दे दिया। खुद तलवार का मयान बीच से पकड़ लिया और महिला से संबोधित होकर कहा कि तलवार को मयान में रखो। उस बलात्कारी महिला ने बहुत प्रयास किया कि तलवार मयान के अंदर रखे परंतु सफल नहीं हुई क्योंकि रानी उस महिला के द्वारा तलवार को मयान में रखते समय अपना हाथ हिला देती थी। जब वह महिला प्रयास करके थक गई तो रानी ने कहा कि यदि तू सहमत नहीं होती तो यह पुरुष तुझपर किस तरह क़ाबू पाता, तू शोर मचाती तो मोहल्ले के लोग तेरी सहायता के लिए आ जाते। यह कहने के बाद उसका दावा ख़ारिज कर दिया। और पुरुष को वध से निजात मिल गई। ग़रज़ यह कि उस महिला की बुद्धि और समझ की बहुत प्रशंसा की गई और अँग्रेज़ उसकी उक्ति और कार्यों को तर्क के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बादशाह विलियम प्रथम का हाल

कहते हैं कि समुद्र के किनारे फ़्रांस से मिला हुआ एक छोटा-सा देश है जिसे फ़्रांस का परिशिष्ट कहा जाता है। वहाँ के निवासियों और फ़्रांस वालों में धर्म और नियमों के संदर्भ में मतभेद है। उस देश का बादशाह बहुत संकल्पी और वीर था। उसने एक शक्तिशाली दल के साथ बर्तानिया और हालैंड पर कब्ज़ा कर लिया। वहाँ के विशिष्टों और सरकारी सदस्यों को अपने अच्छे व्यवहार और कृपा से अपना चाहने वाला बना लिया और अँग्रेज़ों का ही धर्म और मार्ग धारण कर लिया। अँग्रेज़ों ने इस न्यायी कोमल हृदय बादशाह के कृपालु साया को सराहनीय जानकर खुशी-खुशी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। भाग्य ने साथ दिया और ज़माना अनुकूल नज़र आया तो उस बादशाह ने युद्ध सामग्री एकत्र करके फ़्रांस पर आक्रण कर दिया और विजयी हुआ। और राज-सिंहासन पर आसीन हो गया। पूरे फ़िरंगिस्तान में उसकी प्रसिद्धि फैल गई। फ़्रांस के लोगों ने उसकी खुशामद की और आग्रह करके सुलह कर ली। वह बादशाह जो विलियम के नाम से प्रसिद्ध था, उसने सुलह के बाद फ़्रांस की सत्ता फ़्रांस वालों के सुपुर्द कर दी और स्वयं बर्तानिया चला गया। परंतु अपनी प्रसिद्धि के लिए अपने नाम का सिक्का जारी कर दिया। उस तिथि से जो व्यक्ति बर्तानिया का बादशाह होता है वह अपने नाम के साथ बादशाह बर्तानिया और फ़्रांस और हालैंड लिखता है। अतएव नौ पुश्तों से विलियम पुत्र विलियम, बर्तानिया पर शासन कर रहे हैं। इसके बाद जार्ज नाम का एक शासक हुआ। आजकल बर्तानिया का बादशाह जार्ज तृतीय है। उसकी आयु बासठ वर्ष के करीब है। अँग्रेज़ों और फ़्रांसीसियों के बीच जो मतभेद और लड़ाइयाँ हैं उनका कारण यह है कि फ़्रांस के लोग चाहते हैं कि बादशाह के नाम के साथ फ़्रांस का नाम भी शामिल है वह समाप्त हो जाए और उनसे सुलह सफ़ाई हो जाए। परंतु इस समय सन् १७८१ ई. है, उनका उद्देश्य पूरा न हो सका। देखें आगे ईश्वर की ओर से क्या प्रकट होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बादशाह बर्तानिया की विशेषताएँ

आज कल बर्तानिया का बादशाह जार्ज तृतीय है। वह अपने व्यक्तिगत शूरता, अद्भुत साहस एवं अन्य उत्तम विशेषाताओं के लिए प्रसिद्ध है। 'शिगर्फ़ नामा' के लेखक ने जब उसको देखा था उस समय उसकी उम्र चालीस-पचास के बीच मालूम होती थी। अत्यंत गठीला, स्वस्थ और सुंदर है। उसकी रानी छोटे क़द की और अत्यंत सुंदर है। वह डेनमार्क के बादशाह की बेटी है। बर्तानिया के बादशाहों का यह तरीक़ा है कि वे दूसरे देश के किसी भद्र वंश बादशाह की बेटी से शादी करते हैं। इसलिए डेनमार्क के बादशाह से सदैव सुलह सफ़ाई रहती है। उस ज़माने में बादशाह के बारह बेटे हैं। अब सुना है कि उन्नीस राजकुमार जीवित हैं।

अँग्रेज़ों का सदाचार, आदतें और देशी नियम

जिस तरह अँग्रेज़ों में मेल-जोल और नियम-क़ायदा है वह किसी दूसरे संप्रदाय में नहीं है। उनके देशी नियम भी सबसे अच्छे हैं। संसार में उससे बेहतर कोई संप्रदाय नहीं मिलेगा। बादशाह राज के आदेशों में स्वतंत्र है, जो चाहे वह करे और विशेषता यह कि बादशाह अत्यंत न्यायी है और सभी विशेषताओं से युक्त है। उसके राज के सदस्यों और विशिष्टों में फूट पड़ता तो यह घृणित स्थिति अधिक दिनों तक नहीं रहती और शासन में ख़राबी पैदा हो जाती। हर ओर उपद्रव और दंगा फैल जाता। भारत का उदाहरण तर्क के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। बर्तानिया एक छोटा-सा देश था इसके मुक़ाबले में दूसरे कई देश बहुत बड़े थे। इस देश पर सात या आठ फ़िरंगी बादशाहों का आधिपत्य था जो भारत के राजाओं की तरह छोटे-छोटे क्षेत्रों के शासक थे और उनमें मेल-जोल न था। इसलिए डेनमार्क और दूसरे देशों ने बर्तानिया पर अपना शासन स्थापित किया। डेनमार्क के बादशाह ने अपने दीर्घ शासन काल में बर्तानिया में बहुत सारे अच्छे भवन बनवाए। इसके १५० वर्षों बाद अँग्रेज़ों का अपने देश पर शासन स्थापित हुआ। उस समय उन्होंने अपने देश में सबल सरकार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थापित करने के लिए चार विभाग स्थापित किए। पहला न्यायाल, दूसरा सामान्य व्यवस्था का विभाग, तीसरा मंत्रियों और विशिष्टों और परामर्शियों पर आधारित शासन की निगरानी के वास्ते और चौथा सैनिक सरदारों पर आधारित, जो देश की सीमाओं की सुरक्षा, थल और जल सेना युद्धक पोतों की व्यवस्था करता है। यह चार विभाग सभी देशी और आर्थिक मामलों के ज़िम्मादार और समस्त अधिकार प्राप्त हैं। बादशाह युद्ध और सुलह के मामलों में सरकारी सदस्यों से परामर्श लेता है। उसको नियमों को जारी करने का कोई अधिकार नहीं है। नए बादशाह की नियुक्ति का अधिकार राष्ट्र के सर्वसम्मत निर्णय पर होता है। कहते हैं कि बादशाह जनता का रक्षक है। उसको हमने देश की देख-भाल के लिए नियुक्त किया है। यदि वह सुरक्षा की शर्तों को पूरा करता है तो हम उसके आज्ञाकारी हैं और यदि अत्याचारी, दुराचारी या मुर्ख है तो उसको बदलना आवश्यक है। अतएव जिस व्यक्ति को वह लोग साहसी, वीर और बुद्धिमान समझते हैं उसका आज्ञापालन करते हैं और उसको बड़ा और आदरणीय समझते हैं। संयोग से यदि बादशाह क्रोध के प्रभाव में आदेशात्मक व्यवहार अपनाए और नियम के विपरीत किसी के विरूद्ध आदेश दे तो वह व्यक्ति उत्तर में कहता है कि नहीं जानता कि तुम कौन और क्या हो। परंतु यदि बादशाह न्याय के साथ विनम्रता से कोई आदेश करता है तो उसका पालन सिर आँखों पर लेकर तत्काल करते हैं। दूसरी बात यह है कि यदि कोई बादशाह मर जाता है तो उसके ज्येष्ठ पुत्र को योग्यता की शर्तों पर राजसिंहासन पर बैठाते हैं यदि वह इस योग्य नहीं है तो उसके पुत्रों में जो बेहतर होता है उसको बदशाह बनाते हैं। यदि कोई बादशाह निःसंतान होता है तो पूर्वर्ती बादशाहों के वंश से किसी योग्य व्यक्ति को राजसिंहासन पर आसीन करते हैं। और पहले उसको गिरजा घर ले जाकर शपथ दिलाते हैं और ख़ूब जश्न मनाते हैं। उसमें सभी छोटे-बड़े उपस्थित होते हैं। और यदि कुछ दिनों बाद बादशाह सत्ता और धन के अभिमान में अपने पद से उदासीनता बरतता है और शपथ के विरूद्ध व्यवहार करता है तो शासन से संबंद्ध सदस्यगण राष्ट्र की सहमति से उसको राजसिंहान से उतार कर किसी दूसरे व्यक्ति को, जो उस पद के अनुरूप होता है राजसिंहासन पर बैठा देते हैं। इसीलिए बादशाह सब के साथ अच्छा व्यवहार करता है और शपथ के विरूद्ध कोई बात नहीं करता। यही सबब है कि जैसी शान और शौकत और इक़बालमंदी अँग्रेज़ों में है किसी और संप्रदाय को नसीब नहीं है। उनके सिद्धांत दूसरों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के लिए व्यवहार का नमूना हैं। उनके संविधान दूसरे देशों से अच्छे हैं। दूसरे देशों के स्वतंत्र बादशाह जो चाहते हैं, करते हैं और यह व्यवहार देश की तबाही का कारण होता है। यह मान लिया जाए यदि कोई बादशाह परजाप्रिय है और सदैव न्याय करता है और उसने अच्छे नाम के साथ जीवन व्यतीत की और संसार से विदा हो गया तो उसके बाद उसका बेटा राजसिंहासन पर बैठा या नमकहराम राजकर्मियों ने विद्रोह करके सत्ता पर कब्ज़ा जमा लिया। चाहे उनमें योग्यता हो या न हो। या किसी बादशाह हिमायूँ ने उसके पुत्र से झगड़ा किया तो विरासत के दावेदार होकर आपस में लड़ने लगते हैं। राजकुमारों को बंदी बना लेते हैं और कुछ का वध कर देते हैं। कुछ राजमुकार पिता को, पिता अपने पुत्र को मारते हैं। इस प्रकार नमकहराम राजकर्मचारीगण एक को राजसिंहासन से उतारते और दूसरे को बैठा देते हैं। और किसी को अंधा कर देते हैं। अतएव बदनसीब अहमद शाह आलमगीर द्वितीय और हज़रत शाह आलम के हालात मेरी बात के गवाह हैं। इन स्थितियों के मद्देनज़र बर्तानिया के संविधान जो राष्ट्र की सर्वसम्मति से बनाए गए हैं, जिनकी बदौलत कोई झगड़ा और हत्या नहीं होती। संसार के अन्य देशों के संविधान से बेहतर हैं। इसके कारण शासन में कोई त्रूटि रह नहीं प़ाती। अलबत्ता ईश्वरीय इच्छा में कुछ और है तो उसके समक्ष व्यक्ति लाचार मात्र है। परंतु हर व्यक्ति को उपाय अवश्य करना चाहिए और मेल-जोल स्थापित रखना चाहिए। बुजुर्गों ने कहा है कि धन एकजुठता से पैदा होता है और मित्रता दुराव से।

सैनिक नियम और सैनिक अधिकारियों के पद

बर्तानिया में सैनिक अधिकारियों के पद के नाम साधारणतः प्रसिद्ध हैं, उनके विशेष नाम यह हैं : सार्जेन्ट, लेफ्टिनेंट, कप्तान, मेजर, कर्नल, लॉर्ड और ड्यूक। उसके बाद बादशाह का मर्तबा (पद) है। सभी पद की तीन श्रेणियाँ होती हैं। उच्च, मध्य और कनीय। मध्य से प्रोन्नति पाकर उच्च पद तक पहुँते हैं। यह सब पदधारक युद्ध व्यवस्था, सैनिकों की नियुक्ति और इससे संबंधित सभी कार्यों को सम्पादित करते हैं। प्रत्येक सैनिक अपने प्रमुख का आदेश ईश्वरीय आदेश के समतुल्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मानता है और रत्ती भर भी आदेश की अवेहलना नहीं कर सकता है। यदि करता भी है तो उसकी सज़ा मृत्यु दंड है। या कतिपय परिस्थितियों में कोई अन्य उचित दंड दिया जाता है। क्षमा कभी नहीं किया जाता। देश में जगह-जगह सैनिक छावनी स्थापित की गई हैं। जहाँ हथियारबंद सवार और प्यादा (पदातिक) सैनिक अस्त्र-शस्त्र के साथ रहते हैं और तोप, बंदूक़ और अन्य हथियार चलाए जाने का उन्हें अभ्यास कराया जाता है। सवारी इत्यादि सरकारी कार्यों के अतिरिक्त और अन्य कार्यों के लिए इस्तेमाल नहीं करते। जिस प्रकार भारत में होता है कि एक व्यक्ति के जुलूस में कई-कई सवारियाँ और प्यादे चलते हैं। और शाही हवेली की सुरक्षा के लिए तैनात किए जाते हैं। युद्ध के समय सभी सैनिक अधिकारीगण अपने पदों के अनुरूप उपस्थित होकर सक्रिय हो जाते हैं। और शांति की स्थिति में अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं। रविवार के दिन बादशाह को सलाम करने जाते हैं। उनको इसकी अनुमति नहीं है कि बर्तानिया के बाहर जाएँ। ताकि यदि अचानक युद्ध आरंभ हो जाए तो वह अपना कर्तव्य तत्काल संभाल लें। उस समय अवज्ञा करने वालों को कठोर दंड दिया जाता है। और किसी प्रमुख को साहस नहीं कि अपराधी की अनुशंसा करे। इस प्रकार के उपद्रव वहाँ कम पैदा होते हैं। और यदि विवाद हो भी जाता है तो उसका समाधान आपसी बात-चीत से शीघ्र ही कर लेते हैं।

न्यायालय (संसद) की स्थापना और उसका संविधान

न्यायालय की स्थापना इस तरह होती है कि उच्च और निम्न दोनों वर्गों के चौबीस व्यक्ति सर्वसम्मति से न्यायालय के सदस्य नियुक्त किए जाते हैं और एक व्यक्ति उप बादशाह नियुक्त किया जाता है। उसको लार्ड की उपाधि मिलती है। न्यायालय को जिसको अँग्रेज़ी में पार्लियामेंट हाऊस कहते हैं। उसमें वर्गवार सबों के बैठने के लिए स्थान निर्धारित हैं। न्यायालय के सामने का भाग बहुत विस्तृत है। उसकी छत लकड़ी के बदले पत्थर से बनी है। यह दालान सामान्य फ़र्यादियों और न्याय प्राप्तकर्ताओं के लिए है। और न्यायालय का कमरा जिसमें बादशाह और न्यायालय के सदस्यगण

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बैठते हैं दालान के बाहर आदमक़द ऊँचा बनाया गया है। और उसके सामने दीवार और दरवाज़ा है। जो लोग रैयत में से हैं और गाँव के रईस हैं एक हाथ नीचे बैठते हैं और प्रबुद्ध, भद्र के अतिरिक्त मेजर और कर्नल और लार्ड से एक सिढ़ी ऊपर बैठते हैं। उप बादशाह उनसे एक सिढ़ी ऊपर बैठा होता है। सबसे ऊपर बादशाह के बैठने की जगह होती है। वह लाल रंग की कलात्मक कुर्सी पर विराजमान होता है। भारत की तरह तख़्त नहीं होता। बादशाह का वस्त्र आम अँग्रेज़ों की तरह कुर्ता और टोपी है। परंतु शाही कुर्सी पर विराजमान होते समय जो टोपी पहनता है वह रत्न जड़ित और सुसज्जित होती है। ऐसी टोपी बादशाह के अतिक्ति कोई नहीं पहन सकता। क्यों कि यह वस्त्र दरबार आम और युद्ध के समय पहना जाता है। साधारणतः टोपी आम लोगों जैसी होती है। बादशाह की सवारी के लिए एक बग्घी गाड़ी है, जिसमें एक रंग के आठ घोड़े जोते जाते हैं। सप्ताह में दो बार इसी सवारी पर जाते हैं। सवारी की शान और शौकत का यह हाल है कि क़रीब पचास सवार और बारह नेज़ा बरदार (बरछीधारी) और इतने ही झंडा बरदार (ध्वजधारी) साथ होते हैं। उनके अतिरिक्त पंद्रह साज़िंदे अपने वाद-यंत्रों के साथ होते हैं और सुस्वर गायक भी गाड़ी के साथ चलते हैं। दो सेवक गाड़ी के पीछे होते हैं। गाड़ी में दो सिंह बने हैं, जो बादशाह का विशेष चिह्न है। दूसरे नहीं बना सकते। यह मैंने देखा कि बादशाह के दोनों भाई गाड़ी में बैठे थे और गाड़ी धीरे-धीरे पग-पग चल रही थी। सवारी का यह तड़क-भड़क हर समय नहीं होता है। जब कभी बादशाह मनबहलाव के लिए निकलते हैं या जंगल में वटिकाओं को देखने जाते हैं तो इसी गाड़ी पर सवार होते हैं। दो सेवक गाड़ी के पीछे खड़े रहते हैं और बारह सवार आगे-पीछे चलते हैं। भाई और बेटे भी साथ होते हैं। कभी-कभार रात्रि के समय बादशाह अकेले बाज़ारों और गलियों की सैर करते हैं। गणमान्य और सरकारी सदस्यगण की भी यही आदत है इसको शान के ख़िलाफ़ नहीं समझते।

बादशाह का न्यायिक कार्य यह है कि चौबीस सदस्यगण देश और धन के सभी मुक़दमों को निपटाते हैं। अपना-अपना परामर्श प्रत्येक सदस्य एक काग़ज़ पर अंकित कर देता है। उसके पश्चात् सबों के अंकित परामर्श बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। बादशाह चिंतन-मनन के बाद दोटूक अपना निणर्य अंकित कर देता है। इससे पूर्व लिखा जा चुका है कि राष्ट्रीय और आर्थिक मामलों में बादशाह हस्तक्षेप नहीं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करता और न किसी की हत्या का आदेश दे सकता है। परंतु प्राणदान का अधिकार उसको प्राप्त है। यदि गणमान्य और मंत्रियों से मानवीय तक़ाज़े के कारण कोई असभ्य कार्य घटित हो जाए तो उसपर भी मृत्यु दंड वाजिब होता है। चाहे पहले उसका चरित्र कितना ही अच्छा क्यों न रहा हो। यदि किसी प्रबुद्ध या प्रज्ञ को पुराने सेवक होने के नाते बादशाह क्षमा कर देता है तो न्यायालय के सदस्यगण उसकी सज़ा को माफ़ कर देते हैं। बर्तानिया के लोग न्यायालय के निर्णया का सम्मान करते हैं। न्यायालय के चौबीस सदस्यगण प्रत्येक तीन वर्ष के बाद बदल दिए जाते हैं। उनके स्थान पर नवीन चुनाव होता है। यह इसलिए करते हैं कि कहीं अधिक समय इस पद पर आसीन रहने के कारण पक्षपात न करें। इसीलिए पक्षपात और घूसख़ोरी नहीं होती है। यदि कोई घूस का नाम लेता है तो उसको दंड दिया जाता है। जब कोई नया बादशाह राजसिंहासन पर आसीन होता है तो उसके लिए परंपरा यह है कि न्यायालय एक आदेश लिखता है और उसको पूरे देश में नगरों और ग्रामों में भेजते हैं जिसमें बादशाह के चुनाव का उल्लेख होता है और उसके लिए दिवस और तिथि अंकित होती है। साथ ही दो व्यक्तियों के नाम अंकित होते हैं। एक भद्र वर्ग का और दूसरा निम्न वर्ग के लोगें में से किसी का नाम होता है। निर्धारित तिथि पर लोग एकत्र होते हैं। उनको पंक्ति में खड़ा किया जाता है। इसके बाद पूछा जाता है कि दो नामों में से वह किसको पसंद करते हैं। प्रत्येक नाम पर लोगों से हाथ उठाने के लिए कहा जाता है। जिसके पक्ष में अधिक हाथ उठते हैं वही बादशाह बनाया जाता है। चाहे उसके पक्ष में मात्र एक ही हाथ अधिक उठाया गया हो। इसी तरह राष्ट्रीय और वित्तीय मामलों के अतिरिक्त नया कार्य आरंभ करने के लिए भी लॉटरी निकालते और इसी पर अमल करते हैं।

यदि संसद के सदस्यगण बादशाह के कर्मचारियों के वेतन या मदजूरी में वृद्धि करना चाहें, चाहे दो पैसा का ही क्यों न हो उसके लिए जनता से अधिक राशि प्राप्त करें तो ऐसा नहीं कर सकते जब तक राष्ट्र से स्वीकृति प्राप्त न कर लें। यदि युद्ध के लंबा खिंचने के कारण कोष ख़ाली हो जाए और शत्रु मुक़ाबले पर हो तो उस समय देश के धनी लोगों को न्यायालय में बुलाते हैं और उनसे सहायता माँगते हैं। जो क़र्ज़ के रूप में होता है। और इस वादे पर लेते हैं कि युद्ध के बाद शांति की स्थिति में यह क़र्ज़ देश की आय से अदा कर दिया जाएगा। और इस राशि का सूद प्रत्येक माह मिलता रहेगा। इस मामला में पूरा राष्ट्र सहमत होता है। लोग जानते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि बादशाह की सहायता न की और शत्रु विजयी हो गया तो धन-दौलत और मान-सम्मान भी बर्बाद हो जाएगा। इसलिए समय पर सहायता करना आवश्यक है। जिसके पास एक लाख होता है वह पचास हज़ार क़र्ज़ के रूप में बादशाह को देता है और उसपर प्रत्येक माह सूद मिलता रहता है। युद्ध समाप्त होने के बाद आय लंबे समय तक प्राप्त न होने के कारण सूद अधिक प्राप्त होता है और किसी को क्षति नहीं होती, बल्कि देश का लाभ होता है। और सरकार का सम्मान यथावत् रहता है।

बर्तानिया में विचार और कार्य की स्वतंत्रता

बर्तानिया में प्रत्येक मामूली आदमी स्वयं को सवतंत्र समझता है। किसी के समक्ष झुकता नहीं है। स्वामी और दास का सिलसिला वहाँ ऐसा नहीं है, जिस प्रकार कतिपय अन्य देशों में है कि लोग बादशाह और गणमान्य लोगों की ग़ुलामी पर गर्व करते हैं स्वयं को उनका दास समझते हैं बर्तानिया में सभी छोटे-बड़े और सरकारी सदस्यगण मुलाज़मत के शब्द को अपमानजनक समझते हैं। उनका कथन है कि बादशाह की नियुक्ति नाम मात्र होती है, क्योंकि देश के मामलों और व्यवस्था के लिए बादशाह का होना आवश्यक है। हमने उसको सरदार के रूप में नियुक्त किया है और सभी कार्य हम संपन्न करते हैं। और इसके बदले में अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कुछ मुआवज़ा वेतन के रूप में लेते हैं। जनकल्याण के लिए कतिपय व्यक्तियों पर आधारित एक न्यायालय स्थापित की है। उसका आज्ञापालन करते हैं। युद्ध और लड़ाई के समय अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए अपना जीवन और धन निछावर कर देते हैं। परंतु हम किसी के दास और नौकर नहीं हैं। स्वमी और दास की परंपरा स्वयं के लिए निर्धारित करने का क्या उद्देश्य है। हमारा समुदाय किसी का दास नहीं है। यद्यपि आदर और सम्मान और नियम की रक्षा के निमित्त बादशाह और विशिष्टों के आदेशों का अनुपालन करते हैं। इसी प्रकार बादशाह भी प्रत्येक के पद और प्रतिष्ठा के अनुरूप सांत्वना देता और प्रोस्ताहन करता है। अतएव दरबार आम में आने के बाद अपने सिर से ताज उतारकर कुछ क्षण खड़ा रहता है और उपस्थित लोग भी अपने-अपने सिर से टोपियाँ उतारकर सिर झुका लेते हैं और एक ज़ानू पर खड़े होकर झुककर नमन्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करते हैं। उसके बाद बादशाह अपनी सुसज्जित कीर्सी पर बैठता है। राजकुमार और बादशाह के भाई उसके दायें में छोटी चैकियों पर बैठते हैं। उनके अतिरिक्त कतिपय विशिष्ट गणमान्य व्यक्ति चौकियों पर स्थान पाते हैं। परंतु शेष गणमान्य और कर्नल, जनरल और लार्ड पद के अनुरूप निकट और दूर खड़े रहते हैं। यदि बादशाह चाहता है कि राष्ट्र को शत्रु देश के विरूद्ध युद्ध के लिए तैयार करे तो सभी सरदारों को बुलाता है और स्वयं सभी के समक्ष खड़ा होकर और सिर से टोपी उतारकर बुलंद आवाज़ में कहता है कि इस समय एक आवश्यक अभियान उपस्थित है। कृपया इसको संपन्न करो तो निश्चित रूप से देश की रक्षा और राष्ट्र की प्रसिद्धि का कारण हो सकता है। यह बात सुनते ही सभी सरदार सलाम करते हैं और कहते हैं कि हम आपके आज्ञा का पालन और जीवन निछावर करने वाले हैं। शत्रु का सिर कुचलने के लिए उपस्थित हैं। परंतु यदि बादशाह आदेशात्मक अंदाज़ में कुछ कहता है उदाहरण स्वरूप युद्ध में जाओ और मेरे आदेश का पालन करो तो वह उत्तर देते हैं कि हम किसी के ख़रीदे हुए दास नहीं हैं कि उसके कहने पर अमल करें।

सेना की छावनी

बादशाह की सेना एक निर्धारित स्थान में रहती है, जिको छावनी कहा जाता है। प्यादा और सवार भीमकाय और सुंदर, स्वस्थ और अच्छे व्यक्तित्व वाले होते हैं। वे सब एक रंग का साफ़-सुथरा वस्त्र पहनते हैं। सिपाहीगिरी की विधि और नियमों का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद सेना में भर्ती होते हैं। सवारों के घोड़े, मिलती-जुलती शक्ल के और एक जैसे रंग के होते हैं। काले, उजले और सुरंग घोड़ों के रेसाले (टुकड़ियाँ) अलग-अलग होते हैं। देखने वालों के दिलों की प्रसन्नता और आँखों की चमक बढ़ती रहती है। मैंने दो बार यह दृश्य देखा है।

एक बार लन्दन में और दूसरी बार स्कॉटलैंड में। बादशाह की सवारी के घोड़े और उसके सवार, भोजन और वस्त्र बादशाह की सरकार से पाते हैं। उनके लिए आठ रुपया माहवार निर्धारित है। सुना है कि फ्रांस से युद्ध में पहली बार एक लाख पचास हज़ार सवार और प्यादे थल और जल और ख़लासियों को मिलाकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मचारी थे। और अस्सी हज़ार सवार प्यादे थे। उस समय जब मैं लन्दन में था। एक सौ पचास छोटे-बड़े युद्धक पोत थे। दो पोत बहुत बड़े थे। एक बादशाह के नाम से था उसपर एक सौ साठ तोपें लगी थीं। दूसरा बादशाह की पत्नी के नाम से था जिसमें एक सौ पचास तोपें लगी थीं। युद्धक पोतों की मज़बूती और विशेषता की बहुत प्रशंसा करते थे। विशेषकर यह दोनों पोत अत्यंत प्रसिद्ध और सुपरिचित हैं। इन जैसे पोत किसी अन्य देश को उपलब्ध नहीं हैं। अँग्रेज़ों को जल-युद्ध में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त है। सुना है कि पाँच सौ युद्धक पोत तैयार हैं। इन पोतों की अधिकता के कारण और उनके युद्धक साज़ और सामान के कारण किसी देश में यह साहस नहीं है कि बर्तानिया के आस-पास भी आ सकें। अँग्रेज़ कहते हैं कि बर्तानिया एक द्वीप है जो क़िला की तरह है और चट्टान की तरह सशक्त है। युद्ध के समय युद्धक पोत साज़ और सामान के साथ तैयार रहते हैं। और सुलह के समय पोतों के पाल उतारकर उनको सुरक्षित रख देते हैं। और जैसे ही युद्ध का अवसर आता है अत्यंत अल्प समय में तैयार होकर सामने आ जाते हैं। युद्ध का तरीक़ा यह है कि वह शत्रु को अवगत कराते हैं कि अमुक तिथि को युद्ध होगा, तुम तैयार रहना। संयोगवश यदि किसी ने छल से युद्धक पोतों के साथ युद्ध छेड़ दिया तो वह धोखेबाज़ और कपटी प्रसिद्ध हो जाता है। अँग्रेज़ कहते हैं कि फ़्रांस से अंतिम युद्ध उस समय हुआ जब वह आठ मंज़िला पोत तैयार करके सूचना के बिना धोखे से युद्ध छेड़ने पर उतरू हो गया। जब बर्तानिया के बादशाह को यह सूचना मिली तो उसने फ़्रांस के बादशाह को पत्र लिखा कि तुम ने बिना सूचना के युद्ध की तैयारी की है। तुम्हारा क्या उद्देश्य है। इसी के साथ फ़्रांस के बादशाह ने अँग्रेज़ों के युद्धक पोतों की तैयारी का हाल सुना तो बहुत भयभीत हुआ। और स्वयं को अनपढ़ और मूर्ख बनाकर उत्तर दिया कि हमारा युद्ध करने का उद्देश्य नहीं है। पोत के अधिकारियों ने मरम्मत की व्यवस्था की है।

मालगुज़ारी और उसकी वसूली

कोष और मालगुज़ारी की व्यवस्था का तरीक़ा बर्तानिया में यह है कि निर्धारित राशि बिना किसी माँग के दो क़िस्तों में स्वयं कोष में जमा कर देते हैं, महाजनों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का यही तरीक़ा है। ज़मीनदार (किसान) भी सरकारी मालगुज़ारी के लिए बुलाए नहीं जाते। मालगुज़ारी के अतिरिक्त कुछ राशि तानकारी के नाम से ली जाती है। इसके अतिरिक्त एक पैसा भी जनता से लेना चाहें तो नहीं ले सकते हैं। इसके विपरीत बंगाल के बादशाह और ज़मीनदार (जागीरदार) मालगुज़ारी के लिए मार-पीट करते हैं और बंदी बनाकर यातनाएँ देकर निर्धारित राशि वसूल करते हैं। इस समय अँग्रेज़ी अमलदारी में राजाओं और नवाबों को एक स्थान पर बैठे हुए मालगुज़ारी नहीं मिलती है।

बर्तानिया में यदि कोई अधिकारी जनता की सहमति के बिना तुच्छ वस्तु भी माँगेंगे तो जनता उससे लड़ने पर उतारू हो जीती है। यद्यपि ज़मीनदार के पास सिपाही नहीं होते हैं फिर भी अपने हाथ से कृषि का कार्य नहीं करता है। एक नियम यह भी प्रचलित है कि अकाल में कोष में निर्धारित राशि की कमी हो जाने या युद्ध काल में सिपाहियों का ख़र्च माँगा जाए तो दुगना देते हैं। और शांति की स्थिति में ज़मीन की मालगुज़ारी हमारे देश के अनुपात में बहुत कम है। जैसा कि पूर्व में लिखा गया है। अन्य देशों के मुक़ाबले में थल और जल के कर अधिक हैं इसके अतिरिक्त घर गणना, द्वार गणना, गाड़ी, छकड़े इत्यादि का कर निर्धारित है। बर्तानिया में सड़कों की मरम्मत के लिए भी कर निर्धारित है। यदि युद्ध छिड़ जाए तो पच्चीस करोड़ रुपये वसूल किए जाते हैं। इनमें पचास लाख मालगुज़ारी की आय होती है। शेष आय अन्य करों से होती है। अँग्रेज़ों के देश में युद्ध के व्यय अधिक हैं। पूर्व काल में फ़्रांस, स्पेन और अन्य देशों के शासकों में सात वर्षों तक युद्ध जारी रहा है। इसमें अमेरिका भी शामिल था। एक सौ उन्तालीस करोड़ सत्तर लाख बारह हज़ार रुपये युद्ध पर व्यय हुए। मात्र दो करोड़ पचास लाख क़र्ज़ के थे, शेष अपने कोष से व्यय किए।

न्यायालय की कार्य प्रक्रिया

धन और फ़ौजदारी के वादों में वादी और प्रतिवादी दोनों न्यायालय से संपर्क करते हैं। और इसके लिए अपना वकील निर्धारित करते हैं। वाद महीनों, बल्कि वर्षों चलता है। दोनों पक्षों को न्यायालय और वकील पर बड़ी राशि ख़र्च करनी पड़ती है। जो सफल होता है उसको प्राजित पक्ष से मुक़दमें के कुल व्यय दिलवाए जाते

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मचारी थे। और अस्सी हज़ार सवार प्यादे थे। उस समय जब मैं लन्दन में था। एक सौ पचास छोटे-बड़े युद्धक पोत थे। दो पोत बहुत बड़े थे। एक बादशाह के नाम से था उसपर एक सौ साठ तोपें लगी थीं। दूसरा बादशाह की पत्नी के नाम से था जिसमें एक सौ पचास तोपें लगी थीं। युद्धक पोतों की मज़बूती और विशेषता की बहुत प्रशंसा करते थे। विशेषकर यह दोनों पोत अत्यंत प्रसिद्ध और सुपरिचित हैं। इन जैसे पोत किसी अन्य देश को उपलब्ध नहीं हैं। अँग्रेज़ों को जल-युद्ध में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त है। सुना है कि पाँच सौ युद्धक पोत तैयार हैं। इन पोतों की अधिकता के कारण और उनके युद्धक साज़ और सामान के कारण किसी देश में यह साहस नहीं है कि बर्तानिया के आस-पास भी आ सकें। अँग्रेज़ कहते हैं कि बर्तानिया एक द्वीप है जो क़िला की तरह है और चट्टान की तरह सशक्त है। युद्ध के समय युद्धक पोत साज़ और सामान के साथ तैयार रहते हैं। और सुलह के समय पोतों के पाल उतारकर उनको सुरक्षित रख देते हैं। और जैसे ही युद्ध का अवसर आता है अत्यंत अल्प समय में तैयार होकर सामने आ जाते हैं। युद्ध का तरीक़ा यह है कि वह शत्रु को अवगत कराते हैं कि अमुक तिथि को युद्ध होगा, तुम तैयार रहना। संयोगवश यदि किसी ने छल से युद्धक पोतों के साथ युद्ध छेड़ दिया तो वह धोखेबाज़ और कपटी प्रसिद्ध हो जाता है। अँग्रेज़ कहते हैं कि फ़्रांस से अंतिम युद्ध उस समय हुआ जब वह आठ मंज़िला पोत तैयार करके सूचना के बिना धोखे से युद्ध छेड़ने पर उतरू हो गया। जब बर्तानिया के बादशाह को यह सूचना मिली तो उसने फ़्रांस के बादशाह को पत्र लिखा कि तुम ने बिना सूचना के युद्ध की तैयारी की है। तुम्हारा क्या उद्देश्य है। इसी के साथ फ़्रांस के बादशाह ने अँग्रेज़ों के युद्धक पोतों की तैयारी का हाल सुना तो बहुत भयभीत हुआ। और स्वयं को अनपढ़ और मूर्ख बनाकर उत्तर दिया कि हमारा युद्ध करने का उद्देश्य नहीं है। पोत के अधिकारियों ने मरम्मत की व्यवस्था की है।

मालगुज़ारी और उसकी वसूली

कोष और मालगुज़ारी की व्यवस्था का तरीक़ा बर्तानिया में यह है कि निर्धारित राशि बिना किसी माँग के दो क़िस्तों में स्वयं कोष में जमा कर देते हैं, महाजनों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का यही तरीक़ा है। ज़मीनदार (किसान) भी सरकारी मालगुज़ारी के लिए बुलाए नहीं जाते। मालगुज़ारी के अतिरिक्त कुछ राशि तानकारी के नाम से ली जाती है। इसके अतिरिक्त एक पैसा भी जनता से लेना चाहें तो नहीं ले सकते हैं। इसके विपरीत बंगाल के बादशाह और ज़मीनदार (जागीरदार) मालगुज़ारी के लिए मार-पीट करते हैं और बंदी बनाकर यातनाएँ देकर निर्धारित राशि वसूल करते हैं। इस समय अँग्रेज़ी अमलदारी में राजाओं और नवाबों को एक स्थान पर बैठे हुए मालगुज़ारी नहीं मिलती है।

बर्तानिया में यदि कोई अधिकारी जनता की सहमति के बिना तुच्छ वस्तु भी माँगेंगे तो जनता उससे लड़ने पर उतारू हो जीती है। यद्यपि ज़मीनदार के पास सिपाही नहीं होते हैं फिर भी अपने हाथ से कृषि का कार्य नहीं करता है। एक नियम यह भी प्रचलित है कि अकाल में कोष में निर्धारित राशि की कमी हो जाने या युद्ध काल में सिपाहियों का ख़र्च माँगा जाए तो दुगना देते हैं। और शांति की स्थिति में ज़मीन की मालगुज़ारी हमारे देश के अनुपात में बहुत कम है। जैसा कि पूर्व में लिखा गया है। अन्य देशों के मुक़ाबले में थल और जल के कर अधिक हैं इसके अतिरिक्त घर गणना, द्वार गणना, गाड़ी, छकड़े इत्यादि का कर निर्धारित है। बर्तानिया में सड़कों की मरम्मत के लिए भी कर निर्धारित है। यदि युद्ध छिड़ जाए तो पच्चीस करोड़ रुपये वसूल किए जाते हैं। इनमें पचास लाख मालगुज़ारी की आय होती है। शेष आय अन्य करों से होती है। अँग्रेज़ों के देश में युद्ध के व्यय अधिक हैं। पूर्व काल में फ़्रांस, स्पेन और अन्य देशों के शासकों में सात वर्षों तक युद्ध जारी रहा है। इसमें अमेरिका भी शामिल था। एक सौ उन्तालीस करोड़ सत्तर लाख बारह हज़ार रुपये युद्ध पर व्यय हुए। मात्र दो करोड़ पचास लाख क़र्ज़ के थे, शेष अपने कोष से व्यय किए।

न्यायालय की कार्य प्रक्रिया

धन और फ़ौजदारी के वादों में वादी और प्रतिवादी दोनों न्यायालय से संपर्क करते हैं। और इसके लिए अपना वकील निर्धारित करते हैं। वाद महीनों, बल्कि वर्षों चलता है। दोनों पक्षों को न्यायालय और वकील पर बड़ी राशि ख़र्च करनी पड़ती है। जो सफल होता है उसको प्राजित पक्ष से मुक़दमें के कुल व्यय दिलवाए जाते

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। अतएव इस समय बंगाल में भी यही तरीक़ा प्रचलित है। न्यायालय की कार्य प्रक्रिया यह है कि सत्य के साक्ष्य और नालिश समाप्त करने के लिए किसी के समर्थन का विचार नहीं किया जाता है। घूस और उपहार का कोई दख़ल नहीं होता। यदि कोई विशिष्ट या बादशाह का पुत्र खेत के अंदर से गुज़र जाए और फसल बर्बाद हो जाए और खेत का मालिक नालिश कर दे तो उस व्यक्ति को न्यायालय में बुलाया जाता है और खेत में हुई क्षति की दुगनी राशि किसान को दिलवाई जाती है और सरकार भी जुर्माना वसूल करती है। न्यायालय का दृष्टिकोण यह है कि किसी धनवान को यह अधिकार प्राप्त नहीं है कि वह ग़रीब को सताए। हत्या के मुक़द्दमे में हत्या के बदले जुर्माना स्वीकार नहीं करते। अतएव न्यायिक नियम में इमाम मोहम्मद के कथन को इमाम अबूहनीफ़ा के कथन पर प्राथमिकता देकर यह नियम जारी किया गया है। इस समय बंगाल में भी यही नियम लागू है। यदि हत्या के मुक़दमे में वादी सहमत हो जाए और ख़ून माफ़ कर दे और एक करोड़ रुपया सरकार को जुर्माने के रूप में अदा करे तो न्यायालय के न्यायाधीश जुर्माना नहीं लेते मौत के बदले मौत की सज़ा देते हैं। क्षमा कदापि नहीं करते। इंसान को मार डालने और ईश्वर के बनाए हुए अस्तित्व को समाप्त करने में उसका पूरा लेहाज़ रखते हैं और धार्मिक बहाना मिलने पर रिहा कर देते हैं। यदि कोई व्यक्ति हत्या के जुर्म में गिरफ़्तार हुआ है और पूछताछ के क्रम में वह जुर्म को स्वीकार लेता है तो न्यायालय के सदस्यगण जानबूझकर अंदेखी कर उसको पागल घोषित कर देते हैं और कुछ अवधि क़ैद में रखते हैं। यदि वह तीन बार इसी तरह जुर्म को स्वीकार कर लेता है तो हत्या के बदले वध का आदेश देते हैं। और यदि वह सतर्क हो गया और बात समझकर इन्कार करता है तो वादी से साक्ष्य माँगा जाता है। इस मामले में कुछ समय प्रक्रिया में व्यतीत कर देते हैं। इस अवधि में यदि वादी सहमत नहीं हुआ और दो-तीन पेशियों में अनुपस्थि हो गया तो आरोपी को छोड़ देते हैं। चोरी के लिए यह नियम है कि यदि कोई व्यक्ति आठ आना (पचास पैसा) से अधिक चोरी करे तो इस्लामी क़ानून में उसका हाथ काटना आवश्यक नहीं परंतु बर्तानिया के न्यायालय में उस व्यक्ति को मृत्यू दंड दिया जाता है। क्योंकि चोरी की सज़ा माल की कमी-बेशी पर आधारित नहीं है, बल्कि चोरी के उद्देश्य पर आधारित है, न कि जो भी उसके हाथ आया ले गया। यदि अधिक मिलता तो वह अवश्य ले जाता। हर स्थिति में चोर मृत्यु दंड का अधिकारी है। बड़ी कठिनाई यह है कि चोरों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में सेंध मारने वाले और लूटने वाले उचक्के अधिक हैं। बर्तानिया के लोगों का तरीक़ा यह है कि रुपया, अशर्फ़ी, सोने-चांदी की वस्तुएँ, मुद्रा और घड़ी इत्यादि जेब में रखते हैं। बिना रुपया लिए घर से बाहर नहीं निकलते। प्रायः लोग नाचघर या बाज़ार की सैर के लिए जाते हैं। लोगों की भीड़ में पॉकेटमार और उचक्के जेब में हाथ डालकर बड़ी फुर्ती से वस्तु निकाल लेते हैं और अपनी जेब में डाल लेते हैं। यदि जेब में हाथ डालते समय उसको पकड़ लें तो वह वस्तु मालिक को मिल जाती है। और चोर को मृत्यु दंड मिलता है। यदि चोर का हाथ वस्तु सहित न पकड़ सका और यह देख लिया कि चोर वस्तु अपनी जेब में डाल रहा है हाथ में लिए हुए है तो फिर वह चोर को पकड़ नहीं सकता। यदि कहेगा तो चोर न्यायालय में नालिश कर देगा और माल वाले को क़ैद की सज़ा हो जाएगी और जुर्माना अदा करने पर रिहाई होगी।

बर्तानिया में डाकू और लुटेरे घोड़े पर सवार होकर लूटते हैं। प्रायः अमीर व्यक्तियों के लड़के यह धंधा अपनाते हैं जो बाप-दादा के छोड़े हुए धन-दौलत को मौज-मस्ती में ख़र्च करके निर्धन हो जाते हैं। और खाने-कमाने के लिए कोई हुनर भी नहीं सीखते। कोई पेशा अपनाने में अपना अपमान समझते हैं। यह डाकू और लुटेरे ऐसे स्थानों पर घात लगाकर बैठते हैं, जहाँ आबादी क़रीब न हो। और निकटवर्ती सड़कों पर आवा-गमन रहता है। जिस समय देखते हैं कि कोई सवारी गाड़ी आ रही है तो तुरत घोड़े दौड़ाकर उसके पास आ जाते हैं और बंदूक़ें तानकर कहते हैं जो कुछ तुम्हारे पास है निकालकर रख दो वरना जान मार दिया जाएगा। यात्री के पास जो कुछ होता है उनके हवाले कर देता है।

बयान करते हैं कि एक विशिष्ट व्यक्ति अपनी सवारी गाड़ी पर कहीं जा रहा था। उसने देखा दो घोड़सवार तेज़ी से उसकी ओर आ रहे हैं, यह डाकुओं की पहचान का संकेत है। गाड़ी के मालिक ने समझ लिया कि डाकू हैं। उसने तुरत अपनी बंदूक़ भर ली। दोनों डाकू उसके पास पहुँच गए और पिस्तौल तानलकर कहा कि "जो कुछ तुम्हारे पास है रख दो।" गाड़ी सवार ने अपनी बंदूक़ उनकी ओर किया और कहा, "यह लो" डाकुओं से कुछ बन न पड़ा और वह व्यक्ति सुरक्षित रहा।

एक और घटना बयान करते हैं कि इसी तरह एक चोर किसी विशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यक्ति के घर से नोट (करंसी) चुराकर ले गया। करंसी का मालिक तत्काल नगर आया और साहूकार की कोठी में सूचना दे दी और अपने साथ घटित घटना का वर्णन किया। दूसरे दिन चोर उन नोटों की क़ीमत लेने के लिए साहूकार की कोठी में गया। कोठी के मालिक ने चोर को पकड़कर न्यायालय के हवाले कर दिया।

युद्ध के नियम और वीरता की विशेषता

अँग्रेज़ क़ौम साहस और वीरता में प्रसिद्ध और युद्ध कौशल में कुशल है। प्रत्येक सिपाही के लिए प्रमुख का आदेश ईश्वरीय आदेश के समतुल्य होता है। इसके अतिरिक्त कतिपय ऐसे नियम हैं जो किसी अन्य देश में नहीं हैं। एक यह कि यदि कोई अपने प्रमुख के आदेश की थोड़ी भी अवज्ञा करे तो उसको वध कर दिया जाता है। या कोई सख़्त सज़ा देकर सेवा से वंचित कर दिया जाता है। उसको पुनः कहीं नौकरी नहीं मिल सकती। यह सज़ा सबके लिए है चाहे सिपाही हो या अधिकारी जो युद्ध-भूमि में युद्ध से इन्कार करता है, उसका दोष माफ़ नहीं हो सकता। यह आदेश भी है कि यदि शत्रु की सेना दुगनी हो तब भी लड़ाई से मुँह न मोड़े। यद्यपि चौगुनी हो तो भाग सकता है। उस समय लाचार समझा जाएगा। सरदार को चाहिए कि रणनीति से पीछे हटे और लड़ता हुआ रणभूमि से सुरक्षित स्थान में शरण ले और अपनी सेना को बचा ले। यदि दोनों ओर से रास्ता बंद हो तो युद्ध करते हुए हटे तो उसको सुनाम प्राप्त होगा। युद्ध में जितना लूट का माल होता है उनपर सिपाहियों और अधिकारियों का अधिकार है। उनमें वर्गवार वितरित कर दिया जाता है। परंतु फ़्रांस और पुर्तगाल में यह नियम है कि लूट के माल का चौथाई माल सेना में वितरित किया जाएगा और तीन भाग सरकारी कोष में रखा जागए। परंतु अँग्रेज़ों का उद्देश्य यह होता है कि सिपाहियों का साहस बढ़े और अच्छे नाम और धन के लोभ में अधिक सक्रियता से युद्ध करें और सफलता प्राप्त करें। ऐसा नियम बर्तानिया के अतिरिक्त किसी देश में नहीं है। सिपाहियों में मेल-मिलाप के लिए यह विधि अन्य देशों से कई गुना उत्तम है। परंतु अन्य देशों के बादशाह जो अपनी कथनी और करनी में स्वतंत्र हैं। उनको अपने पूर्व अनुभवी सरदारों को पराजय की स्थिति में यह कहना चाहिए कि जय-पराजय ईश्वर की मर्ज़ी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर आधारित है, बल्कि सचेत करें और उसके बाद सज़ा की अनदेखी कर दें। अँग्रेज़ अपनी वीरता पर डींगें नहीं मारते। वह ऐसे व्यक्ति को बहुत बुरा मानते हैं जो अपनी वीरता की चर्चा करते हैं। सामान्यतः यदि युद्ध का ज़िक्र आ जाए तो जिस सरदार ने युद्ध में अपनी रणनीति से विजय प्राप्त की है, उससे युद्ध की स्थिति पूछते हैं तो वह पूर्ण रूप से बयान कर देता है। यदि कोई अन्य उस महफ़िल में उस सरदार की प्रशंसा करता है तो निगाह नीचे करके चुप हो जाते हैं और लज्जा के मारे उनका ललाट पसीने से तर हो जाता है। अँग्रेज़ सरदार अपने सामने अपनी प्रशंसा सुनना पसंद नहीं करते हैं, बल्कि उसको अनुचित ख़्याल करते हैं और आत्मप्रशंसक को कायर समझते हैं। उनके यहाँ चापलूसी का प्रचलन कम है। यहाँ हमारे ज़माने में लोग डींगें मारने के बहुत आदी हैं। और उसको अपनी गौरव-पूँजी समझते हैं। यदि संयोग से किसी सियार का बड़ी मेहनत और मुशक़्क़त से शिकार कर लिया तो जगह-जगह कहते फिरेंगे कि सिंह को लोमड़ी की तरह मार डाला और जामा में फूले नहीं समाते हैं। मानो रुस्तम (एक नामी पहलवान का नाम) को बूढ़ा समझते हैं।

शब्द 'कम्पनी' नाम रखने का कारण और उसका कारोबार

अँग्रेज़ी भाषा के शब्दकोश में कम्पनी का अर्थ है किसी कार्य के लिए संप्रदाय का एकत्र होना परिभाषा में महाजनों के उस दल को कहते हैं, जो अपनी वस्तु और धन एक जगह करके साझा व्यवसाय करते हैं। बर्तानिया में कई कंपनियाँ हैं। वह दल जो बंगाल, दक्षिण और चीन में व्यवसाय करता है, उसको पूर्वी देशों की कम्पनी कहते हैं। और वह दल जो पश्चिमी देशों और अमेरिका में व्यवसाय करता है, उसे पश्चिमी कम्पनी कहते हैं। इसी प्रकार रोम और शाम इत्यादि देशों में व्यवसाय करनेवाला दल उन्हीं देशों के नाम से संबद्ध है। सभी कम्पनी बादशाह को कर और उपहार देती है। बंगाल की कम्पनी के हिस्सेदार दो हज़ार होंगे। परंतु वे सब अपने घरों में रहते हैं और उनके कर्मचारी काम करते हैं और सभी कार्यों में सवतंत्र हैं। उनमें चौबीस व्यक्ति उच्च प्रबंधक हैं और उन सबों को कार्यों का अधिकार प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। सभी आदेश-निर्देश, लाभ-हानि, विचार-विमर्श, हिसाब-किताब और प्रस्तावों पर कार्यान्वयन उनके ज़िम्मे है। यह चौबीस व्यक्ति बहुत अधिक वेतन पाते हैं और दो-तीन वर्षों में इनका स्थानांतरण कर दिया जाता है। और वह तीन वर्षों में प्रयाप्त धन प्राप्त कर लेते हैं परंतु कम्पनी महाजनों की संपत्ति है। उनकी प्रतिष्ठा शाही अमीरों (विशिष्टों) और ज़मीनदारों से कम होती है। प्रसिद्ध है कि जो लोग इस देश में बादशाह के कर्मचारी नियुक्त होते हैं उनकी प्रतिष्ठा कम्पनी के द्वारा नियुक्त किए हुए मेजर और जनरल से अधिक होती है। कम्पनी बर्तानिया के जिन लोगों को कर्मचारी नियुक्त कर हमारे देश में भेजती है उन की सूची बादशाह के कार्यालय में दाख़िल करती है और जब शाही शासन के सदस्यगण उस सूची पर हस्ताक्षर करते हैं और बादशाह इसको स्वीकृत कर लेते हैं तो बादशाह के कर्मचारी जाकर उनको गिनते हैं। यदि कोई व्यक्ति कम या अधिक हो तो उसकी पकड़ करते हैं। इसके बाद पोत प्रस्थान करता है। इस मामले में कड़ी चेतावनी है कि कम्पनी अपनी ओर से अधिक व्यक्ति न भेज दे ताकि कोई कर्मचारी जिसका मुक़दमा न्यायालय में हो फ़रार न हो जाए। और जब पोत यात्रा से वापस आते हैं तो उसमें लाई जाने वाली सामग्रियों की अत्यंत कठोरता से तलाशी ली जाती है। विशेष तौर पर बंगाल के लिए कपड़ों के कारणवश, जो बर्तानिया में महंगे दामों में बिकते हैं उसके अतिरिक्त रेशम, रेशमी कपड़े और अफ़ीम के लिए चेतावनी है कि कोई व्यक्ति नहीं ला सकता। कम्पनी (अर्थात् ईस्ट इंडिया कम्पनी) के अतिरिक्त दूसरों को यह अधिकार और अनुमति नहीं है कि व्यवसाय के लिए या अपने वस्त्र के लिए कपड़ा इत्यादि साथ लाए। यदि किसी विशिष्ट या लार्ड के संदूक़ में एक रेशमी कपड़ा या एक तौलिया और कच्चा रेशम भी निकल आए तो सामग्री कुर्क कर लेते हैं। और जो उसकी सामग्री होती है, बादशाह के अधिकार के अंतर्गत ज़ब्त होता है। यह घटना मुझको भी पेश आई परंतु कुशलता से रफ़ा-दफ़ा हो गया। इसका विवरण यह है कि मेरे पास कुछ नए रूमाल और वृक्षों की चित्रकारी किया हुआ एक थान श्री बेकाक की पत्नी के संदूक़ से बरामद हुआ था, जैसा कि पूर्व में लिखा है। तट पर रूमाल और वृक्षों की चित्रकारी किया हुआ थान श्री बेकाक और कप्तान सुईटन की पूरी सामग्री पंद्रह दिनों तक रोकी गई। बर्तानिया पहुँचने के एक माह बाद तक पूरी सामग्री ज़ब्त रही। अंततः मामला न्यायालय तक पहुँचा। घटना यह घटित हुई कि बर्तानिया प्रस्थान के समय घाट के चबूतरा पर हम पंद्रह दिनों तक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहे, जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि चबूतरा चौकी का अधिकारी एक गोरा था उसने एक रात मस्ती की स्थिति में श्री बेकाक की पत्नी से अश्लील व्यवहार किया, जो पुर्तगाली समुदाय से थी। उस मुक़दमा में गोरा दोषी साबित हुआ और श्री बेकाक की सामग्री छूट गई। मेरे रूमाल के लिए आदेश हुआ कि मुक़दमा ग़लत है। व्यवसाय के लिए रूमाल नहीं लाते और यह व्यक्ति भारत का मुंशी है। पूर्व में कभी इस देश में नहीं आया और न यहाँ के नियमों से अवगत है। इस आलोक में मेरी सामग्री छोड़ दी गई।

दूसरी बात यह कि बादशाह अपने प्रशासनिक अधिकारियों की सहमति से उन सिपहियों की निगरानी का अधिकारी है जो दूसरे देशों में काम करते हैं और कम्पनी की निगरानी भी करता है, जो कर और मालगुज़ारी सरकार को अदा करते हैं। इसलिए यदि कम्पनी को कोई आवश्यक कार्य आ पड़े और अपनी व्यावसायिक कोठी की सुरक्षा के लिए सेना की ज़रूरत पड़े तो बादशाह से अनुरोध करते हैं और सरकारी अधिकारी कम्पनी का अनुरोध स्वीकार करते हैं और उनकी सुरक्षा और सिपाहियों की संख्या निर्धारित करने का आदेश देते हैं और कभी शत्रु से मुक़ाबला की स्थिति उत्पन्न हो तो शाही सेना तैनात की जाती है। परंतु अपनी राष्ट्रीयता के आधार पर देशवासियों के लिए कम्पनी के कर्मचारियों को यह निर्देश है कि बर्तानिया के जो लोग दूसरे देश में कम्पनी के कार्य में लगे हुए हैं या कोई अन्य नौकरी करते हैं और खाना और कपड़े का बोझ नहीं देते हैं और यदि संयोगवश कभी उन सिपाहियों में से कोई कमज़ोर या घायल हो जाए या बीमारी में ग्रस्त हो जाए तो उसकी खुराक और कपड़े का जीवन भर के लिए व्यवस्था करें और उसका उपचार कराएँ और पूरी ख़बरगीरी (देख-भाल) करें। यदि बर्तानिया का कोई व्यक्ति देख-रेख न करने के कारण मर जाए तो कम्पनी का अधिकार प्राप्त व्यक्ति दंड पाएगा और सरकार को जुर्माना अदा करेगा। सात-आठ युद्ध पोत के साज़ और सामान के साथ बादशाह की ओर से कम्पनी के पोतों की सुरक्षा के लिए समुद्र में गश्त करते रहते हैं, जिनकी कमान अत्यंत अनुभवी अधिकारियों के हाथ में होती है। जिसको एडमीरल कहते हैं। वे विभिन्न दिशाओं और समुद्री मार्गों पर हबशी और रोमन डाकुओं और लुटेरों से लड़ने के लिए तैनात हैं। बर्तानिया के सब अँग्रेज़ अपने देश की सुरक्षा के लिए यही विधि अपनाए हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। सभी आदेश-निर्देश, लाभ-हानि, विचार-विमर्श, हिसाब-किताब और प्रस्तावों पर कार्यान्वयन उनके ज़िम्मे है। यह चौबीस व्यक्ति बहुत अधिक वेतन पाते हैं और दो-तीन वर्षों में इनका स्थानांतरण कर दिया जाता है। और वह तीन वर्षों में प्रयाप्त धन प्राप्त कर लेते हैं परंतु कम्पनी महाजनों की संपत्ति है। उनकी प्रतिष्ठा शाही अमीरों (विशिष्टों) और ज़मीनदारों से कम होती है। प्रसिद्ध है कि जो लोग इस देश में बादशाह के कर्मचारी नियुक्त होते हैं उनकी प्रतिष्ठा कम्पनी के द्वारा नियुक्त किए हुए मेजर और जनरल से अधिक होती है। कम्पनी बर्तानिया के जिन लोगों को कर्मचारी नियुक्त कर हमारे देश में भेजती है उन की सूची बादशाह के कार्यालय में दाख़िल करती है और जब शाही शासन के सदस्यगण उस सूची पर हस्ताक्षर करते हैं और बादशाह इसको स्वीकृत कर लेते हैं तो बादशाह के कर्मचारी जाकर उनको गिनते हैं। यदि कोई व्यक्ति कम या अधिक हो तो उसकी पकड़ करते हैं। इसके बाद पोत प्रस्थान करता है। इस मामले में कड़ी चेतावनी है कि कम्पनी अपनी ओर से अधिक व्यक्ति न भेज दे ताकि कोई कर्मचारी जिसका मुक़दमा न्यायालय में हो फ़रार न हो जाए। और जब पोत यात्रा से वापस आते हैं तो उसमें लाई जाने वाली सामग्रियों की अत्यंत कठोरता से तलाशी ली जाती है। विशेष तौर पर बंगाल के लिए कपड़ों के कारणवश, जो बर्तानिया में महंगे दामों में बिकते हैं उसके अतिरिक्त रेशम, रेशमी कपड़े और अफ़ीम के लिए चेतावनी है कि कोई व्यक्ति नहीं ला सकता। कम्पनी (अर्थात् ईस्ट इंडिया कम्पनी) के अतिरक्ति दूसरों को यह अधिकार और अनुमति नहीं है कि व्यवसाय के लिए या अपने वस्त्र के लिए कपड़ा इत्यादि साथ लाए। यदि किसी विशिष्ट या लार्ड के संदूक़ में एक रेशमी कपड़ा या एक तौलिया और कच्चा रेशम भी निकल आए तो सामग्री कुर्क कर लेते हैं। और जो उसकी सामग्री होती है, बादशाह के अधिकार के अंतर्गत ज़ब्त होता है। यह घटना मुझको भी पेश आई परंतु कुशलता से रफ़ा-दफ़ा हो गया। इसका विवरण यह है कि मेरे पास कुछ नए रूमाल और वृक्षों की चित्रकारी किया हुआ एक थान श्री बेकाक की पत्नी के संदूक़ से बरामद हुआ था, जैसा कि पूर्व में लिखा है। तट पर रूमाल और वृक्षों की चित्रकारी किया हुआ थान श्री बेकाक और कप्तान सुईटन की पूरी सामग्री पंद्रह दिनों तक रोकी गई। बर्तानिया पहुँचने के एक माह बाद तक पूरी सामग्री ज़ब्त रही। अंततः मामला न्यायालय तक पहुँचा। घटना यह घटित हुई कि बर्तानिया प्रस्थान के समय घाट के चबूतरा पर हम पंद्रह दिनों तक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहे, जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि चबूतरा चौकी का अधिकारी एक गोरा था उसने एक रात मस्ती की स्थिति में श्री बेकाक की पत्नी से अश्लील व्यवहार किया, जो पुर्तगाली समुदाय से थी। उस मुक़दमा में गोरा दोषी साबित हुआ और श्री बेकाक की सामग्री छूट गई। मेरे रूमाल के लिए आदेश हुआ कि मुक़दमा ग़लत है। व्यवसाय के लिए रूमाल नहीं लाते और यह व्यक्ति भारत का मुंशी है। पूर्व में कभी इस देश में नहीं आया और न यहाँ के नियमों से अवगत है। इस आलोक में मेरी सामग्री छोड़ दी गई।

दूसरी बात यह कि बादशाह अपने प्रशासनिक अधिकारियों की सहमति से उन सिपहियों की निगरानी का अधिकारी है जो दूसरे देशों में काम करते हैं और कम्पनी की निगरानी भी करता है, जो कर और मालगुज़ारी सरकार को अदा करते हैं। इसलिए यदि कम्पनी को कोई आवश्यक कार्य आ पड़े और अपनी व्यावसायिक कोठी की सुरक्षा के लिए सेना की ज़रूरत पड़े तो बादशाह से अनुरोध करते हैं और सरकारी अधिकारी कम्पनी का अनुरोध स्वीकार करते हैं और उनकी सुरक्षा और सिपाहियों की संख्या निर्धारित करने का आदेश देते हैं और कभी शत्रु से मुक़ाबला की स्थिति उत्पन्न हो तो शाही सेना तैनात की जाती है। परंतु अपनी राष्ट्रीयता के आधार पर देशवासियों के लिए कम्पनी के कर्मचारियों को यह निर्देश है कि बर्तानिया के जो लोग दूसरे देश में कम्पनी के कार्य में लगे हुए हैं या कोई अन्य नौकरी करते हैं और खाना और कपड़े का बोझ नहीं देते हैं और यदि संयोगवश कभी उन सिपाहियों में से कोई कमज़ोर या घायल हो जाए या बीमारी में ग्रस्त हो जाए तो उसकी खुराक और कपड़े का जीवन भर के लिए व्यवस्था करें और उसका उपचार कराएँ और पूरी ख़बरगीरी (देख-भाल) करें। यदि बर्तानिया का कोई व्यक्ति देख-रेख न करने के कारण मर जाए तो कम्पनी का अधिकार प्राप्त व्यक्ति दंड पाएगा और सरकार को जुर्माना अदा करेगा। सात-आठ युद्ध पोत के साज़ और सामान के साथ बादशाह की ओर से कम्पनी के पोतों की सुरक्षा के लिए समुद्र में गश्त करते रहते हैं, जिनकी कमान अत्यंत अनुभवी अधिकारियों के हाथ में होती है। जिसको एडमीरल कहते हैं। वे विभिन्न दिशाओं और समुद्री मार्गों पर हबशी और रोमन डाकुओं और लुटेरों से लड़ने के लिए तैनात हैं। बर्तानिया के सब अँग्रेज़ अपने देश की सुरक्षा के लिए यही विधि अपनाए हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समुद्री डाकुओं और लुटेरों का हाल

समुद्री डाकुओं और लुटेरों का तरीक़ा यह है कि समुद्र के किनारे कतिपय विशेष स्थानों पर अपने जहाज़ों और छोटी-बड़ी नौकाओं के साथ घात लगाए बैठे रहते हैं और कम्पनी के पोतों की प्रतीक्षा करते हैं। जिस समय कोई पोत उस ओर से गुज़रता है, चार-पाँच हज़ार लुटेरे आक्रमण करके पोत की सामग्रियों को लूट लेते हैं और पोत पर सवार लोगों को बंदी बनाकर ले जाते हैं और उनको गुलामों की तरह बेच देते हैं। अब अँग्रेज़ों से समझौता हो गया है। कहते हैं कि कुछ समय पूर्व एक अँग्रेज़ी पोत क़ो लूट लिया था। उसके बदले में बर्तानिया से दो-तीन पोत उस स्थान पर गए और उन्होंने अंकदिया देश को तबाह और बर्बाद कर दिया। उसके बाद अंकदिया के हाकिम ने समझौता कर लिया और यह निर्धारित कर लिया कि कभी अँग्रेज़ों का पोत नहीं लूटेंगे। अंकदिया जद्दा और बसरा के मध्य में स्थित है।

लार्ड मेयर का चुनाव

अँग्रेज़ प्रति वर्ष एक बुद्धिमान, प्रबुद्ध विशष्ट नगरवासी को सर्वसम्मति से नगर का हाकिम नियुक्त करते हैं। इसको लार्ड मेयर कहते हैं। जिस प्रकार कलकत्ता में नगर का ज़मीनदार चुना जाता है। प्रत्येक वर्ष उस दिन नगर और आस-पास के सभी छोटे-बड़े एकत्र होकर उसको स्नान कराकर नया वस्त्र पहनाते हैं और उसके बाद पहले न्यायालय में और उसके बाद गिरजा घर में ले जाकर शपथ दिलाते हैं और इस बात का संकल्प दिलाते हैं कि वह सत्य की पहचान और ईमानदारी के साथ अपने पदीय दायित्वों का निर्वहण करेंगे। उसका वेतन भी बहुत अधिक होता है। इस समारोह के बाद लगभग दस हज़ार छोटे-बड़े व्यक्ति एक साथ मिल-बैठकर भोजन करते हैं और उस समय एक शर्तिया काग़ज़ (संभवतः लॉटरी की भांति या इस काल में बीसी की परंपरा के अनुरूप प्रायः लोग राशि लगाते थे और लॉटरी की तरह पर्चा निकालते, उसमें जिसका नाम निकलता पूरी राशि उसी व्यक्ति को मिल जाती है)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तैयार करते हैं। अतएव प्रसिद्ध है कि यदि बीस रुपया प्रति व्यक्ति की शर्त लगाते हैं तो उसके लाख दो लाख रुपये हो जाते हैं। चूँकि वह राशि एक ही व्यक्ति के भाग्य में होती है इसलिए वह धनी हो जाता है। एक वर्ष एक मोची को दो लाख रुपया मिला था। प्रायः ग़रीब इस खेल की बदौलत धनवान हो गए। ग़रज़ यह कि पूरे राष्ट्र की सहमति और एकजुटता देश के कल्याण और उत्थान का कारण है। बदहाली कदापि पसंद नहीं करते। दूसरे यह कि शर्तिया अवकाश की यह परंपरा दूसरे स्थनों में भी जारी है। अतएव कलकत्ता में भी पुशटन के काल में देखने में आया। कम्पनी के व्यवस्थापक और शाही न्यायालय को तो भारी वेतन मिलता है। और ग़रीब लोग धन प्राप्त करने के बाद व्यवसाय करते हैं या कोई अन्य पेशा अपनाकर अपनी मेहनत और मुशक़्क़त से कमाते हैं और सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

इस देश में एक रिवाज या परंपरा यह है कि यदि धनवान लोगों में से कोई व्यक्ति किसी के पुत्र का लालन-पालन करता है तो उसकी सेवा के बदले उसके विवाह की व्यवस्था भी करता है। इसके लिए अपने प्रियजनों और मित्रों से व्यय के लिए सहयोग चाहता है। और लोग सहायता करते हैं। जैसे हमारे देश में चंदा एकत्र किया जाता है। इसके बाद विवाह का उत्सव बहुत ही भव्य रूप में आयेजित किया जाता है। एक रात और एक दिन लगातार जश्न मनाया जाता है। जो व्यक्ति उत्सव में भाग लेते हैं वे वर-वधू को मुँह दिखाई में इतना सोना और चाँदी देते हैं कि निर्धन भी धनवान हो जाता है और उसको रोज़ी-रोटी की चिंता से निजात मिल जाती है। इस स्थिति पर विचार करना चाहिए कि धनवान के सौ या डेढ़ सौ रुपया और ग़रीब के चार-पाँच रुपया चंदा में गए तो उनकी कोई क्षति नहीं है परंतु एक ग़रीब लड़के की इच्छापूर्ति हुई और उका जीवन संवर गया।

बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था

बर्तानिया में विशिष्टों और भद्रों के बच्चों की शिक्षा और दीक्षा भारत और बंगाल के अमीरों के ढंग से नहीं है कि शिक्षक और साहित्यकार को मुलाज़िम के रूप में रखते हैं और अपने घर पर शिक्षा दिलाते हैं। बच्चों को बाहर नहीं निकलने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देते कि कहीं नज़र न लग जाए अथवा यात्रा में बीमार न पड़ जाएँ। मगर बर्तानिया के लोग चाहे मंत्री हों या विशिष्ट अपने लड़के और लड़कियों को स्कूल में दाख़िल करते हैं और उनको शिक्षक के हवाले कर देतें हैं और उनके भोजन-वस्त्र के अतिरिक्त अन्य ख़र्चे पूरे वर्ष के लिए जमा कर देते हैं। यदि किसी का स्कूल निकट है तो वह अपने बच्चों को रविवार के दिन घर बुला सकता है और यदि दूर है तो महीना भर या उससे अधिक अवधि में जाकर भेंट करते हैं। बच्चे लगभग आठ वर्षों तक शिक्षा और हुनर की प्राप्ति में लगाते हैं। शिक्षा की विधि यह है कि पहले अक्षर का ज्ञान कराते हैं और तख़्ती पर अभ्यास कराई जाती है। उसके बाद व्याकरण प्रश्न-उत्तर के माध्यम से याद कराते हैं। इसके बाद आकर्षक क़िस्से और कहानियाँ जिससे बच्चों की अभिरुचि बढ़े, पढ़ाते और सुनाते हैं और कुछ निर्धारित समय के बाद गणित सिखाते हैं। जब अच्छी तरह पढ़ना और लिखना सीख जाते हैं तो उसके बाद धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते हैं और विधि, न्याय, दर्शन, अभियंत्रण, चिकित्सा इत्यादि ज्ञान की शिक्षा प्राप्ति की ओर रुख़ करते हैं और जिसमें अधिक ध्यान होता है उसमें निपुणता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। शिक्षकों ने प्रत्येक विषय की पाठ्यपुस्तकें बड़े ही सरल अंदाज़ में लिखी हैं। इन्हें इतनी बड़ी संख्या में मुद्रित की जाती हैं कि यदि कोई चाहे तो उसे प्रत्येक विषय की दस हज़ार प्रतियाँ एक दुकान से मिल सकती हैं। और बहुत अल्प मूल्य पर मिलती हैं। अतः भारत में शाहनामा फ़िरदौसी सेकड़ों रुपये में मिलता है और बर्तानिया में बारह रुपये में मिल जाता है।

धनवान लोग चार वर्ष की आयु से अपने बचों को लिखना-पढ़ना सिखाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति पुरुष हो या महिला संगीत, नृत्य, घुड़सवारी इत्यादि में निपुणता प्राप्त नहीं करता उसको धनवानों की संतान बुरा कहती है और उनकी निर्धनता पर व्यंग्य किया जाता है और कहते हैं कि उसके माता-पिता निर्धन थे इसलिए अच्छे प्रशिक्षण के लिए व्यय पूरा न कर सके। इसलिए उनकी संतान वेहुनर है। विशेषकर जो लड़कियाँ नृत्य और गायन नहीं जानती हैं उनको बुरा समझते हैं और उनके साथ विवाह करना पसंद नहीं करते। अतएव बर्तानिया की शिक्षा-व्यवस्था भारत की तरह नहीं है कि जहाँ बड़े और विशिष्ट शिक्षकों के मदर्सों (स्कूलों) में प्रवेश पाकर छात्र शिक्षा दान-अनुदान के रूप में प्राप्त की गई राशि से अपमानित होकर पेट भरते हैं और शिक्षा प्राप्त करते हैं और भद्र लोग इसको बुरा नहीं समझते हैं। बर्तानिया की शिक्षा धन पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आधारित है। सम्मान और विशिष्टता का आधार धन-दौलत पर है। बंगाल के लोग बर्तानिया के लोगों को इस बात पर निंदित करते हैं कि वह अपने बच्चों को शिक्षा की प्राप्ति के लिए दूर भेज देते हैं। परंतु यदि न्याय की दृष्टि से इस तथ्य पर नज़र डाली जाए तो मालूम होगा कि माता-पिता की यह कठोरता संतान के पक्ष में सच्चा प्रेम और वास्तविक मित्रता है। क्योंकि वह शिक्षा और हुनर में निपुणता प्राप्त करके पूरा जीवन संपन्नता से व्यतीत करते हैं। माता-पिता का ऐसा प्रेम और स्नेह जो संतान को शिक्षा और हुनर सीखने से रोके वह संतान के लिए शत्रुता है। और भारत में ऐसा प्रेम और स्नेह किया जाता है कि बच्चों को घर से बाहर जाने नहीं देते हैं और वह शिक्षा और हुनर से वंचित रह जाते हैं और अंततः अपमान और तिरस्कार का जीवन व्यतीत करते हैं। बर्तानिया में घुड़सवारी के प्रशिक्षण के लिए भी केंद्र हैं। इसकी व्यवस्था यह है कि फ्रांसीसियों ने एक विस्तृत और वृहत भवन बनाया है और आँगन में रेत भर दी है अमीरों के लड़कों से एक घन्टा सवारी सिखाने के लिए चार आने और कुछ आठ आने लेते हैं। एक समय में चार-चार घोड़े बराबर दौड़ते हैं। उसके बाद घोड़ों को कुदाते हैं इसी प्रकार नृत्य और संगीत (गायन) और विभिन्न वादनों की शिक्षा भी देते हैं। ग़रीब व्यक्ति अपने बच्चों को नगर के स्कूलों में भेजते हैं और प्रत्येक सप्ताह एक रुपया प्रति दिन शुल्क अदा करते हैं। लड़कों के स्कूल अलग हैं। मैंने देखे हैं। पढ़ने का तरीक़ा यह है कि सभी बच्चे पंक्तिबद्ध चौकी पर बैठकर पाठ पढ़ते हैं। शिक्षक एक चाबुक हाथ में लिए हुए पंक्ति के एक किनारे से दूसरे किनारे तक घूमता है और पाठ सुनता है जो पढ़ने में भूल करता है अत्याचारी शिक्षक इतने चाबुक मारता है कि उसकी गोरी पिंडली को घायल कर देता है। यद्यपि ज़ाहरी रूप में यह अत्याचार है परंतु वास्तव में उचित है। सादी शीराज़ी ने फ़र्माया है कि शिक्षक का अत्याचार पिता के स्नेह से बेहतर है। ग़रीबों को लिखने-पढ़ने और व्यवसाय में कोई लाज नहीं है चाहे पुरुष हों या महिलाएँ। किंतु कतिपय ग़रीब लोग, जिनके पास कोई पूँजी नहीं होती उनके बच्चे अनपढ़ रह जाते हैं। अतएव ग़रीब बच्चे ही आवश्यक शिक्षा प्राप्ति के बाद विभिन्न कारख़ानों में भेजे जाते हैं। ताकि कोई हुनर सीख लें। और वह सुनारों, लोहारों, दर्ज़ियों, बढ़हियों और मोचियों के कारख़ाने में काम सीखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार है कि जो पेशा चाहे अपनाए। जिस व्यक्ति के चार लड़के होते हैं उनमें से एक सुनारी, दूसरा बढ़हई और तीसरा जूते बनाने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देते कि कहीं नज़र न लग जाए अथवा यात्रा में बीमार न पड़ जाएँ। मगर बर्तानिया के लोग चाहे मंत्री हों या विशिष्ट अपने लड़के और लड़कियों को स्कूल में दाख़िल करते हैं और उनको शिक्षक के हवाले कर देतें हैं और उनके भोजन-वस्त्र के अतिरिक्त अन्य ख़र्चे पूरे वर्ष के लिए जमा कर देते हैं। यदि किसी का स्कूल निकट है तो वह अपने बच्चों को रविवार के दिन घर बुला सकता है और यदि दूर है तो महीना भर या उससे अधिक अवधि में जाकर भेंट करते हैं। बच्चे लगभग आठ वर्षों तक शिक्षा और हुनर की प्राप्ति में लगाते हैं। शिक्षा की विधि यह है कि पहले अक्षर का ज्ञान कराते हैं और तख़्ती पर अभ्यास कराई जाती है। उसके बाद व्याकरण प्रश्न-उत्तर के माध्यम से याद कराते हैं। इसके बाद आकर्षक क़िस्से और कहानियाँ जिससे बच्चों की अभिरुचि बढ़े, पढ़ाते और सुनाते हैं और कुछ निर्धारित समय के बाद गणित सिखाते हैं। जब अच्छी तरह पढ़ना और लिखना सीख जाते हैं तो उसके बाद धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते हैं और विधि, न्याय, दर्शन, अभियंत्रण, चिकित्सा इत्यादि ज्ञान की शिक्षा प्राप्ति की ओर रुख़ करते हैं और जिसमें अधिक ध्यान होता है उसमें निपुणता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। शिक्षकों ने प्रत्येक विषय की पाठ्यपुस्तकें बड़े ही सरल अंदाज़ में लिखी हैं। इन्हें इतनी बड़ी संख्या में मुद्रित की जाती हैं कि यदि कोई चाहे तो उसे प्रत्येक विषय की दस हज़ार प्रतियाँ एक दुकान से मिल सकती हैं। और बहुत अल्प मूल्य पर मिलती हैं। अतः भारत में शाहनामा फ़िरदौसी सेकड़ों रुपये में मिलता है और बर्तानिया में बारह रुपये में मिल जाता है।

धनवान लोग चार वर्ष की आयु से अपने बचों को लिखना-पढ़ना सिखाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति पुरुष हो या महिला संगीत, नृत्य, घुड़सवारी इत्यादि में निपुणता प्राप्त नहीं करता उसको धनवानों की संतान बुरा कहती है और उनकी निर्धनता पर व्यंग्य किया जाता है और कहते हैं कि उसके माता-पिता निर्धन थे इसलिए अच्छे प्रशिक्षण के लिए व्यय पूरा न कर सके। इसलिए उनकी संतान बेहुनर है। विशेषकर जो लड़कियाँ नृत्य और गायन नहीं जानती हैं उनको बुरा समझते हैं और उनके साथ विवाह करना पसंद नहीं करते। अतएव बर्तानिया की शिक्षा-व्यवस्था भारत की तरह नहीं है कि जहाँ बड़े और विशिष्ट शिक्षकों के मदर्सों (स्कूलों) में प्रवेश पाकर छात्र शिक्षा दान-अनुदान के रूप में प्राप्त की गई राशि से अपमानित होकर पेट भरते हैं और शिक्षा प्राप्त करते हैं और भद्र लोग इसको बुरा नहीं समझते हैं। बर्तानिया की शिक्षा धन पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आधारित है। सम्मान और विशिष्टता का आधार धन-दौलत पर है। बंगाल के लोग बर्तानिया के लोगों को इस बात पर निंदित करते हैं कि वह अपने बच्चों को शिक्षा की प्राप्ति के लिए दूर भेज देते हैं। परंतु यदि न्याय की दृष्टि से इस तथ्य पर नज़र डाली जाए तो मालूम होगा कि माता-पिता की यह कठोरता संतान के पक्ष में सच्चा प्रेम और वास्तविक मित्रता है। क्योंकि वह शिक्षा और हुनर में निपुणता प्राप्त करके पूरा जीवन संपन्नता से व्यतीत करते हैं। माता-पिता का ऐसा प्रेम और स्नेह जो संतान को शिक्षा और हुनर सीखने से रोके वह संतान के लिए शत्रुता है। और भारत में ऐसा प्रेम और स्नेह किया जाता है कि बच्चों को घर से बाहर जाने नहीं देते हैं और वह शिक्षा और हुनर से वंचित रह जाते हैं और अंततः अपमान और तिरस्कार का जीवन व्यतीत करते हैं। बर्तानिया में घुड़सवारी के प्रशिक्षण के लिए भी केंद्र हैं। इसकी व्यवस्था यह है कि फ्रांसीसियों ने एक विस्तृत और वृहत भवन बनाया है और आँगन में रेत भर दी है अमीरों के लड़कों से एक घन्टा सवारी सिखाने के लिए चार आने और कुछ आठ आने लेते हैं। एक समय में चार-चार घोड़े बराबर दौड़ते हैं। उसके बाद घोड़ों को कुदाते हैं इसी प्रकार नृत्य और संगीत (गायन) और विभिन्न वादनों की शिक्षा भी देते हैं। ग़रीब व्यक्ति अपने बच्चों को नगर के स्कूलों में भेजते हैं और प्रत्येक सप्ताह एक रुपया प्रति दिन शुल्क अदा करते हैं। लड़कों के स्कूल अलग हैं। मैंने देखे हैं। पढ़ने का तरीक़ा यह है कि सभी बच्चे पंक्तिबद्ध चौकी पर बैठकर पाठ पढ़ते हैं। शिक्षक एक चाबुक हाथ में लिए हुए पंक्ति के एक किनारे से दूसरे किनारे तक घूमता है और पाठ सुनता है जो पढ़ने में भूल करता है अत्याचारी शिक्षक इतने चाबुक मारता है कि उसकी गोरी पिंडली को घायल कर देता है। यद्यपि ज़ाहरी रूप में यह अत्याचार है परंतु वास्तव में उचित है। सादी शीराज़ी ने फ़र्माया है कि शिक्षक का अत्याचार पिता के स्नेह से बेहतर है। ग़रीबों को लिखने-पढ़ने और व्यवसाय में कोई लाज नहीं है चाहे पुरुष हों या महिलाएँ। किंतु कतिपय ग़रीब लोग, जिनके पास कोई पूँजी नहीं होती उनके बच्चे अनपढ़ रह जाते हैं। अतएव ग़रीब बच्चे ही आवश्यक शिक्षा प्राप्ति के बाद विभिन्न कारख़ानों में भेजे जाते हैं। ताकि कोई हुनर सीख लें। और वह सुनारों, लोहारों, दर्ज़ियों, बढ़हियों और मोचियों के कारख़ाने में काम सीखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार है कि जो पेशा चाहे अपनाए। जिस व्यक्ति के चार लड़के होते हैं उनमें से एक सुनारी, दूसरा बढ़हई और तीसरा जूते बनाने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का काम करता और चौथा लोहारी सीखता है। और एक दूसरे को नीच नहीं समझते। इसके विरूद्ध भारत में प्रत्येक अपने पेशे को अच्छा और दूसरे को बुरा समझकर उसको अलग समुदाय क़रार देता है। एक दूसरे के साथ खाने में शरीक नहीं होता और दूसरे का पेशा अपनाने को ऐब समझता है और ऐसा करने वाले को संप्रदाय से ख़ारिज कर देता है।

कारख़ानों की स्थापना

व्यावसायिक कारोबार के लिए तीन-चार व्यक्ति आपसी सहयोग (सहकारिता) से कई प्रकार की वस्तुएँ बनाने के लिए एक घर में कारख़ाना स्थापित करते हैं। और उसके लिए अच्छे कुशल कारीगर को मुलाज़िम रखते हैं, जो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बनाते हैं। कारख़ाने के मालिक उनको बेचकर लाभ कमाते हैं। प्रायः ग़रीब लोग अपने लड़कों को कोई हुनर सीखने के लिए कारख़ानों के मालिकों के हवाले कर देते हैं, जो उनको काम सिखाते हैं और उनके भोजन और वस्त्र के ज़िम्मेदार होते हैं। चौदह-पंद्रह वर्षों की अवधि में यह काम सीखकर हुनरमंद हो जाते हैं। उनकी योग्यता के अनुरूप कारख़ाने में मासिक वेतन निर्धारित हो जाता है। यदि कोई अन्य कारख़ाने में काम करना चाहे तो जा सकता है। जब कुछ अवधि बीत जाने के बाद उनके पास कुछ पूँजी एकत्र हो जाती है तो वह विवाह करते हैं और माता-पिता के घर से अलग हो जाते हैं और अपना घर बसाते हैं। इस प्रकार जनसंख्या में वृद्धि होती जाती है।

वह गोरे जो बर्तानिया से भारत आते हैं वह ग़रीब नीच परिवारों से संबंध रखते हैं। उनमें कुछ बेहुनर होते हैं, जिनकी बर्तानिया में कोई हैसियत नहीं होती। अधिकांश मज़दूर और कुछ आरोपी गाँवों से फ़रार होकर नगर में आते हैं और पोतों पर ख़लासी और छूलदारी लगाने वालों के रूप में नौकरी प्राप्ति के लिए भारत आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लावारिस और अनाथ बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था

फ्रांस और बर्तानिया में देखा कि शाही व्यय से एक बड़ी और विस्तृत हवेली बनाई गई है। जिसमें लावारिस ग़रीब और अनाथ बच्चों का प्रशिक्षण होता है। क्योंकि नगर और ग्राम के ग़रीब लोग जो ग़रीबी और रोज़ी-रोटी की तंगी के कारण बच्चों का लालन-पालन नहीं कर सकते, अपने एक वर्षीय और छः माह के आयु के बच्चों को बादशाह की हवेली के दरवाज़े पर ले जाकर बादशाह के नियुक्त कर्मचारियों के सुपुर्द कर देते हैं। इसके अतिरिक्त बलात्कारी महिलाएँ बच्चा के जन्म के बाद लज्जा और अत्मगिलानी के कारण रात के समय गुप्त रूप से अपने बच्चे को नाभी काटने के बाद हवेली के द्वार पर डाल आती हैं। इस प्रकार हज़ारों लड़के और लड़कियाँ इस हवेली में एकत्र हो जाते हैं। बादशाह की ओर से उनकी देख-भाल के लिए एक दारोग़ा और दो अधिकारी नियुक्त हैं। उनके अतिरिक्त डाक्टर, दाई, रसोइया और सेवक भी उनकी देख-भाल के लिए रखे गए हैं। बच्चों की शिक्षा-दीक्षा और कोई हुनर सिखाने के लिए शिक्षक नियुक्त हैं जो वहाँ पिता की तरह कोमलता और स्नेह से उनका लालन-पालन करते हैं। उनको दूध और पौष्टिकर आहार खिलाते हैं और अच्छा वस्त्र पहनाते हैं और जो कुछ उनके लिए करना संभव होता है करते हैं। इसके अतिरिक्त उनको कोई हुनर भी सिखाते हैं। लड़कों और लड़कियों के रहने के लिए अलग-अलग भवन हैं। लड़कियों को लिखने-पढ़ने की आवश्यक शिक्षा के बाद सिलाई-कढ़ाई का हुनर सिखाया जाता है। मर्दों को, जल और थल युद्ध के पैरेड और नियम सिखाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त युद्धक सामग्री तैयार करने और पोत निर्माण में जिन हुनरों की आवश्यकता होती है वह भी सिखाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त लोहे, लकड़ी और रस्सी बांटने का काम और लड़कों को पाल लगाने और पोत चलाने के तरीक़े सिखाए जाते हैं। जवान होने पर उनको शाही सेना में भर्ती किया जाता है। जो सेना के योग्य नहीं होते उनको बोझ उठाने और विभिन्न कार्यों में लगा देते हैं। वे खाना-पानी सरकार की ओर से पाते हैं। और जब वृद्ध हो जाते हैं तो चौकीदारी और सड़कों पर चिराग़ जलाने का कार्य करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोज़गार की चिंता और समय व्यतीत करना

बर्तानिया के लोग परलोक पर कम विश्वास रखते हैं। परलोक की चिंता को कोई महत्त्व नहीं देते। उनकी सूझ-बूझ रोज़गार की चिंता में लगी रहती है। सांसारिक कार्य वे इस सुंदरता और ख़ूबी से संपन्न करते हैं कि दूसरे उनसे सीख प्राप्त करते हैं। प्रथमतः यह कि युवा उदासीन और आलसी नहीं होते हैं और शिक्षा और हुनर सीखने से कतराते नहीं हैं। स्वास्थ्य और सामर्थ्य के बावजूद काम करना बेहतर समझते हैं। मुफ़्तख़ोरी को अपमान मानते हैं। अपने समुदाय के साथ मेल-मिलाप रखते हैं। सांसारिक कार्यों को धार्मिक कार्यों पर प्राथमिकता देते हैं। सभी कार्यों को सुविधा और सहजता से संपन्न करते हैं। ऐसे नियम निर्धारित किए हैं कि लोग न चाहकर भी उनपर अमल करते हैं। वे लोग आरंभिक युवा अवस्था से वृद्धावस्था तक शिक्षा और ज्ञान की प्राप्ति, रोज़गार की चिंता और सांसारिक धन एकत्र करने के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य में अभिरुचि नहीं रखते और चाहने और न चाहने की स्थिति में धनवान हो जाते हैं। संयोगवश यदि कोई व्यक्ति शिक्षा और हुनर सीखने में आलस्य करता है और योग्यता और क्षमता के बावजूद किसी हुनर और पेशा को नहीं अपनाता और रोज़ी की तलाश से उदासीन हो जाता है और हमारे देश के युवाओं की तरह खेल और मनोरंजन में समय नष्ट करता है और खाने-पीने के सिवाय कोई कार्य संपन्न नहीं करता है, उसको पहले तो उपदेश देते हैं। यदि इसका कोई प्रभाव होता है तो बेहतर वरन् कोड़े मारकर सीधा रास्ता दिखाते हैं। और जिस व्यक्ति ने पिता की विरासत पाई और उस मुफ़्त के धन का सम्मान नहीं किया और मूल धन से लाभ नहीं कमाया और फ़िज़ूलख़र्ची की तो न्यायालय उसको कोड़े मारने की सज़ा देती है। इसके अतिरिक्त इस समुदाय का धार्मिक नियम यह है कि यदि कोई व्यक्ति मर जाता है तो उसके बेटे पिता की संपत्ति को बराबर वितरित कर लेते हैं। परंतु समुदाय के प्रबुद्ध इसको पसंद नहीं करते हैं। इसलिए कि एक घर जो धन-दौलत से आबाद है और उस माल के द्वारा कारोबार और व्यवसाय को विकसित नहीं किया जाता और धन में वृद्धि की आकांक्षा नहीं रहती, जबकि देश की व्यवस्था और विकास जनता के घरों के विकास पर आधारित है। यदि एक घर के धन का वितरण पुत्रों के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीच हो तो थोड़ी-थोड़ी कई जगहों में बँट जाएगा और भवन और हवेली टुड़े-टुकड़े होकर वितरित हो जाएँगी। और कुछ ज़माना गुज़रने के बाद उन लड़कों की संतानों में वितरित होकर ज़र्रा-ज़र्रा होकर रह जाएगी। इस स्थिति में घर बर्बाद और धन अनुपलब्ध हो जाएगा। और धन की कमी के कारण जनता में कमज़ोरी उत्पन्न होगी। इसलिए परंपरा यह है कि पिता अपने जीवन में नक़द राशि वितरित कर देता है और हवेली और आवसीय भवन, बाग़-बग़ीचे और ज़मीनदारी (खेती) और आय के जो स्रोत रहे हों उनका मालिक और अधिकारी बड़े बेटे को बना देता है। इसमें विभिन्न साझीदारी नहीं होती। यदि संयोग से पिता ने अपने जीवन में दूसरे बेटों को कुछ नहीं दिया और आसामयिक निधन हो गया तो बड़ा बेटा सभी नक़द राशि और संपत्ति का मालिक और अधिकारी हो जाता है। परंतु यदि उसके भाई और बहन कम उम्र या कुंवारे रह गए हैं तो बीस वर्ष की आयु तक उनके भोजन और वस्त्र के अतिरिक्त शिक्षण का मासिक शुल्क और विवाह का ख़र्च दहेज की सामग्री सब की ज़िम्मेदारी बड़े बेटे पर है। जिस समय तक छोटे भाई व्यवसाय के योग्य न हो जाएँ और कोई हुनर और पेशा अपनाकर और अपना व्यक्तिगत भवन बनवाकर ज़मीनदारी और पूँजी की व्यवस्था करके जीवन व्यतीत करें। और यदि संयोगवश सभी भाइयों में से कोई एक निकम्मा बनकर घर में बैठ जाए या व्यवसाय करने में आलस्य करे और उदासीनता अपना ले तो उसका बड़ा भाई जो विरासत का हक़दार है उस निकम्मे भाई का ख़र्च बर्दाश्त करता है और इस ज़िम्मेदारी से कोई इन्कार नहीं कर सकता। परंतु चूँकि आत्म-सम्मान बर्तानिया के प्रत्येक छोटे-बड़े के स्वभाव में शामिल है और अन्य देशों की तरह निर्लजता और रोज़ी की तलाश में उदासीनता और आलस्य नहीं है। इसलिए उनका भोजन और वस्त्र युवा काल में पिता की संपत्ति पर आधारित है। उसका आत्म-सम्मान इस बात की माँग करता है कि रोज़गार का साधन तलाश करके धन प्राप्त करे और उसके लिए सभ्य प्रयास करे ताकि चालीस वर्षों में इतना धन एकत्र हो जाए जो बड़े भाई के बराबर या उससे अधिक हो जाए उसके बाद वह अपने प्रिय देश में हवेली बनवाए ज़मीन ख़रीदे इसके अतिरिक्त मनपसंद युवती से विवाह करे ताकि उसकी पत्नी बड़े भाई की पत्नी के बराबर पहुँच सके और उसे उत्तम वस्त्र और सवारी मिल जाए। यदि संयोगवश छोटे भाई के पास धन की कमी हो और उसकी पत्नी बड़े भाई की पत्नी के साथ उठने-बैठने में लज्जा महसूस करती

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। इसलिए ग़रीब लोग ग़रीबी के कारण विवाह नहीं करते हैं। परंतु इस कथन के अनुरूप कि भाग्य और धन की निर्भरता शिक्षा और हुनर जानने पर नहीं है। प्रायः लोग शिक्षा और हुनर सीखने का बहुत अधिक प्रलोभन देते हैं और भाग्य पर विश्वास और भरोसा नहीं करते।

परंतु यह विचार अधिक हावी है कि यदि भाग्य और विधि में मेल हो जाए तो फिर प्रयास से अधिक धन प्राप्त होगा। यदि न्याय की दृष्टि से देखा जाए तो पूर्णतः स्पष्ट होगा कि ईश्वर ने सांसारिक धन उन्हीं लोगों के लिए पैदा किया है। ग़रज़ कि मेरा उद्देश्य यह है कि अँग्रेज़ों के रिवाज और परंपरा पर प्रकाश डालूँ। जिसके यहाँ एक घर की आबादी से उसी तरह के सौ घर धन-दौलत से आबाद होते हैं और भविष्य में होते रहेंगे। यह सब विशिष्टता ईश्वर की कृपा से बर्तानिया में मौजूद है। धन की बाहुल्यता के साथ संतान की संख्या में बाहुल्यता है। यदि एक की पचीस संतान हैं तो दूसरे की यदि कम भी हैं तो पंद्रह सोलह हैं और जिनकी बहुत कम हैं उनकी भी आठ-नौ हैं और अधिकांश बच्चे जीवित रहते हैं। वास्तविकता यह है कि ईश्वर जिसकी आबादी बढ़ाना चाहता है उसके लिए उसी तरह के कारण पैदा कर देता है। बर्तानिया के प्रबुद्धों का कहना है कि धन की प्राप्ति व्यक्ति के प्रयत्न और चेष्टा और समझ को बढ़ाती है और वह अन्य लोगों का मार्गदर्शन करता है। मात्र खाने-पीने, मौज-मस्ती, महिलाओं के साथ नृत्य और गायन और राग-रंग की महफ़िल जमाने से न धन मिलता है और न सम्मान और जिस प्रकार मुग़लिया साम्राज्य पेशवाज़नुमा पाएजामे, मिस्सी लगे अधरों, काजल लगे नयनों और घुंघराले केशों की सज्जा के साथ सवारियों पर निकलते हैं चाटुकार और चौबदार आगे-पीछे दौड़ते, होश-बेहोश और उम्र और दौलत ज़्यादा हो की सदा निकालते हैं। इसको अँग्रेज़ शान और शौकत नहीं समझते, बल्कि इसका उपहास उड़ाते हैं। वह कोमल रूप मर्दों को अयोग्य और उनके तरीक़ों को अत्यंत ख़राब समझते हैं।

बर्तानिया के लोगों में कोमलता है। जिस समय उनके पास धन हो जाता है तो वह जहाँ भी होते हैं वहाँ से अपने देश जाते हैं और पहले ज़मीन ख़रीदकर भवन बनवाते हैं और उसके साथ एक बड़ा हाता होता है। भवन में ख़ानादारी का सामान रखा जाता है और हाता के अंदर गाय, भैंस, बकरी, मुर्ग़ी और बत्तख़ इत्यादि पालते हैं। उसमें हरियाली भी होती है जिसमें पालतू पशु घास चरते हैं। घास काटकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखा लेते हैं और उनके ढेर लगा लेते हैं। यह घास हिमपात और सर्दी के मौसम में जानवरों को खिलाते हैं। यदि अधिक होती है तो बेच देते हैं। भवन के आँगन में वाटिका होता है, जिसमें साग-सब्ज़ी और विभिन्न प्रकार के फूल उगाते हैं। अपनी ज़रूरत भर रखकर शेष बेच देते हैं। ज़मीनदारी (खेती) से प्राप्त आय को जीविका का साधन बनाते हैं। जो अन्न पैदा होता है उसमें से ज़रूरत भर रखकर शेष का भंडारण कर लेते हैं। दूध के लिए बच्चे वाली गाय सत्तर-अस्सी रुपया में ख़रीदकर लाते हैं और उसके बच्चे को काटकर खा जाते हैं। गाय एक दिन में बीस सेर दूध देती है। उससे दही, मलाई और पनीर बनाते हैं। यह वस्तुएँ पूरे परिवार के लिए प्रयाप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ रुपया सूद पर देते हैं और प्रत्येक महीने सूद प्राप्त करके अपनी आवश्यकताओं को पूरी करते हैं और मूल धन सुरक्षित रहता है। इसी प्रकार कुछ लोग साझे में व्यवसाय करते हैं और मामले का समझौता कर लेते हैं कि व्यावसायिक जहाज़ डूब गया तो दोनों बारबर के भागीदार होंगे। और दोनों निर्धनता और दरिद्रता से जूझेंगे। धनवान लोग सेवा के लिए सेवक रखते हैं, जो हजामत और प्रसाधिका का काम कर सकते हैं। उनके अतिरिक्त महिला रसोइया और एक गाड़ीबान भी होते हैं। घर का हिसाब-किताब पत्नी रखती है। वही घर की देख-रेख की ज़िम्मेदार होती है। घर का स्वामी प्रायः सैर और शिकार और मनोरंजन में लगा रहता है। यदि किसी के पास अपनी गाड़ी नहीं है तो किराया की गाड़ी प्राप्त कर लेता है। धनवानों की गाड़ी के आगे-पीछे सवार रहते हैं। बादशाह सैर और शिकार के लिए निकलता है तो आठ घोड़ों की गाड़ी पर सवार होता है। बारह सवारी गाड़ी के साथ चलते हैं। राजकुमार और मंत्रिगण भी चौथाई मील तक पैदल घूमते हैं। ग़रज़ कि बर्तानिया के लोग मात्र चालीस वर्षों की अवधि में अपने रोज़गार की व्यवस्था में लगे रहते हैं और इसी अवधि में दूसरे देशों की यात्रा करते और सैर-सपाटे करते हैं। संसार के अजूबों को देखते हैं। विभिन्न प्रकार के ज्ञान और अनुभव प्राप्त करते हैं। और धन और संपत्ति एकत्र करके निश्चिंत हो जाते हैं। और जब इन कार्यों से निवृत्त हो जाते हैं तो विवाह करके पारिवारिक जीवन धारण कर लेते हैं। इसके बाद यात्रा नहीं करते और पत्नी से जुदाई पसंद नहीं करते हैं। यह देखकर अपने देश के मुलाज़मत पेशा लोगों और व्यवसाइयों पर दुःख व्यक्त करना पड़ता है कि बचपन में अपने लड़कों का विवाह कर देते हैं। यदि उन्होंने धन कमाकर विवाह का व्यय वहन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर लिया तो ठीक है वरन् अत्यंत कठिनाई से क़र्ज़ लेकर और थोड़ा-थोड़ा इधर-उधर से माँगकर विवाह कर देते हैं और इस कार्य को संसार के सारे कार्यों से श्रेष्ठ ख़्याल करते हैं। इसके बाद क़र्ज़दार होकर रोज़गार की तलाश में दूरदराज़ के देशों की यात्रा करते हैं। अपने देश से दूसरे देश में जाते हैं और मारे-मारे फिरते हैं। कुछ को एक माह और कभी वर्ष भर में, कुछ को तो कई-कई वर्षों के बाद अपनी पत्नियों से मिलने का संयोग होता है या नहीं भी होता है। उनके पीड़ित हृदय में विरह का प्रभाव किस क़दर होता है। उनके दिल में जुदाई का जो प्रभाव होता है उनका हाल उनकी पत्नियों से सुनना चाहिए जो पति की जुदाई का कष्ट सहन करने की परीक्षा देती हैं। अर्थात् कष्ट को सहन करने वाली होती हैं। उनके अंदर पति से भेंट का मनोभाव हृदय की आकांक्षा को बढ़ाता है। वह जुदाई के दिनों में विरह के ताप की तीव्रता से जलती हैं और उनके व्यथित हृदय में विरह में क्या कुछ नहीं बीतता है। और प्रतिकूल स्थितियाँ उनके जीवन और धन के योग्य नहीं होते हैं। अतएव वह वेदनामय फ़ारसी कविताओं और हिंदी काव्यों और ब्रजभाषा की औरतों के दोहे इत्यादि पूर्व काल की कथाएँ और घटनाएँ अपनी स्थिति के अनुरूप बयान करती हैं। बर्तानिया के लोग इस क़िस्म की जुदाई महिलाओं के लिए स्पष्ट अत्याचार समझते हैं और अपने धर्म और क़ानून में इसको बहुत घृणित और अशुभ मानते हैं। वास्तविकता यह है कि सत्य उन्हीं के पक्ष में है।

एक अन्य बात यह है कि जब बर्तानिया के लोग धन की प्राप्ति और रोज़गार की चिंता से मुक्त हो जाते हैं तो फिर जीवन भर चाहे सत्तर या अस्सी वर्ष के हो जाएँ तो रात और दिन के समय में शिक्षा और हुनर के मनबहलाव से उदासीनता नहीं बरतते और न समय बर्बाद करते हैं। इसलिए खगौल शास्त्र भूशास्त्र की जानकारी प्राप्त करने के लिए आकाश में निकले तारों को देखते हैं और उनको गिनते हैं। और नवीन बातों की खोज करने हेतु नई-नई वस्तुओं का अविष्कार करने और इतिहास की पुस्तकों का लेखन और ऐसा ज्ञान और हुनर जो आम जनों के लिए लाभकारी हों, उनपर चिंतन-मनन करने में लिप्त रहते हैं। यह नहीं कि उस काल के सीधे-सादे व्यक्तियों की तरह फ़ारसी और हिंदी की ऐसी कविताएँ पढ़ने में समय लगाते हैं जिनमें प्रेसी के रूप, शराब और साक़ी का वर्णन अंकित करने में और प्रेम और प्रेमत्व का दम भरते और ठंडी आहें भरते और अपने को कल्पनाओं में गिरफ़्तार करके रातों को दिन कर देते हैं और तरह-तरह के उपयुक्त फ़ारसी अश्आर उपयुक्त उक्तियाँ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रंगीन वर्णनों, शब्दों, उपमाओं रूपकों को अत्यंत सुंदर ढंग से प्रयोग करने की कोशिश करने में, और कठिन शब्दों और गहरे बिंदुओं को बयान करके अनावश्चक लोगों को दुःख और चिंता के भंवर में फंसाने में, बर्तानिया के लोग इस प्रकार की शायरी, आलेख लेखन को बेकार और बेफ़ायदा समझते हैं और दीवान (ग़ज़ल-संग्रह) को नाम के अनुरूप समझकर लेखक को दीवाना कहते हैं।

अमेरिका जिसको नया संसार कहते हैं

अरब और ईरान के प्रबुद्धों और दार्शनिकों ने संसार को सात भागों में विभक्त किया है और उनका नाम सप्त महाद्वीप रखा है। पहला महाद्वीप बल्ख़, दूसरा ख़ुरासान, तीसरा रोम, चौथा चीन, पाँचवाँ भारत, छट्‌ठा मावराउलनहर, सातवाँ तुर्किस्तान कहा जा सकता है कि सातों महाद्वीपों पर सात तारों की दशा और प्रभाव है। इसका उल्लेख एक चौपाई में किया गया है। और चौपाई यह है :

"चद्रमा का बल्ख़ एवं सूर्यग्रह का ख़ुरासान पर प्रभाव है।
रोम पर बुद्धग्रह एवं चीन पर बृहस्पतिग्रह का प्रभाव है।।

शनिग्रह का भारत पर एवं शुक्रग्रह का मावराउन्नहर पर प्रभाव है।
मंगलग्रह का तुर्कीस्तान पर प्रभाव है।।"

परंतु फ़िरंगिस्तान के प्रबुद्धों ने संसार को चार भागों में विभक्त किया है। पूरे तुर्किस्तान को यूरोप कहते हैं। हबश और भारत और चीन को अफ़्रीका कहा जाता है। फारस, बरबर, तातार, रोम और शाम को एशिया का नाम दिया है। नया संसार अमेरिका को कहते हैं। यह देश बंगाल के उत्तर और और पश्चिम की ओर स्थित है। बर्तानिया से अमेरिका की यात्रा पोत से दो-ढाई माह में पूरा करते हैं। यह देश सप्त महाद्वीप से बाहर है। पूर्व काल में जब दिशासूचक यंत्र (क़ुतुबनुमा) का अविष्कार नहीं हुआ था उस समय पोत दूरदराज़ की यात्रा तय नहीं करते थे। यूनानी दार्शनिक अरस्तू और अफ़्लातून इत्यादि भी दिशासूचक यंत्र से परिचित नहीं थे। अमेरिका का पुनर्खोज किया गया। इसलिए इसको "नया संसार" कहते हैं। वैसे यह देश भी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन काल से आबाद है। संसार के मानचित्र में देखने से मालूम हुआ कि सप्त महाद्वीपों से चार भाग कम है। बाद के दार्शनिक कहते हैं कि संसार की उत्पत्ति में यह इसी संसार में शामिल था। देवदूत हज़रत नूह के काल में यह नीचे पड़ गया। बड़े-बड़े भूकंपों ने इसको प्राचीन संसार से अलग कर दिया। जिसका अंदाज़ा समुद्र के द्वीपों से होता है। ज़मीन कहीं ऊँची और कहीं नीची थी। पानी से उभरकर ऊपर आ गई और इसके आस-पास की ज़मीन पानी के नीचे रह गई।

अँग्रेज़ों ने दिशासूचक यंत्र के द्वारा पोत चालन के नियम बनाए। प्रत्येक देश के बादशाहों ने दूसरे देशों और द्वीपों की खोज के लिए पोत तैयार कराए और प्रायः आबाद और ग़ैर आबाद द्वीपों को अपने शासन क्षेत्र में लाए और उनको आबाद किया और सरकारें स्थापित कीं। अतएव अब प्रत्येक राष्ट्र के पोत अनुपम और अनुपलब्ध वस्तुओं और द्वीपों की खोज में समुद्र के अंदर दूरस्थ स्थानों तक घूमते रहते हैं। इस तरह समझना चाहिए कि जिस प्रकार प्रकृति के द्वारा निर्मित सौंदर्य की चित्रावली पर्दा के पीछे रहने की ताब नहीं रखती है और निर्धारित समय पर बेताबी की चादर चेहरे से हटाकर एक अनुपम रूप में प्रकट होती है। इसी प्रकार अमेरिका देश फ़िरंगिस्तान वालों की नज़रों में आया। इस संक्षेप का विवरण यह है कि स्पेन का एक पोत अज्ञात देशों और समुद्री अद्‌भुत वस्तुओं की खोज में निकला था, वह तबाह होकर इस ओर पहुँचा। पोत के लोगों को जब आबादी नज़र आई तो बहुत प्रसन्न हुए और वहीं लंगर डाल दिया। इस देश के श्यामले निवासी भीमकाय और नरभक्षी (आदमख़ोर) थे। परंतु रूप रंग में उनसे बहुत मिलते-जुलते थे। वह गोरेचिट्टे लोगों को लाल, पीला और काले रंग के वस्त्र में देखकर हज़ारों की संख्या में समुद्र तट पर एकत्र हो गए और पोतों को अपने पास बुलाने के लिए इशारे करने लगे। परंतु पोत पर मौजूद उजले लोग उनकी भद्दी और भूतों जैसे चेहरों को देखकर आश्चर्यचकित हो गए और भय और आतंक से अजीब संशय में पड़ गए। उनमें न समुद्र तट पर उतरने का साहस था और न पोत मोड़कर भागने की संभावना। कुछ समय आश्चर्यचकित उसी स्थान पर खड़े रहे। परंतु उन भीमकाय लोगों को प्रतीक्षा की शक्ति नहीं रही और बेचैन होकर सूखी लकड़ियों का एक बोझा बनाकर उसको मज़बूत रस्सियों से मज़बूती से बाँधा और उसपर सवार होकर पोत की ओर आने का निश्चय किया। पोत वालों ने जब मुसीबत के इस तूफ़ान को अत्यंत जोश के साथ अपनी ओर आते देखा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो तोप और बंदूक़ों से उनपर गोलियाँ बरसाने लगे और बहुतों को मौत के घाट उतार दिया। वे मूर्ख नासमझ तोप की आवाज़ सुनकर आकाश की ओर देखते थे और समझते थे कि कड़क है जो आकाश पर हो रही है और बादल में बिजली चमक रही है और ज़मीन पर गिर रही है। जब उन लोगों में से बहुत अधिक मारे गए तो उनके हंगामे में कमी आ गई। वंदना करते हुए संकेतों से भेंट की इच्छा व्यक्त की। जब उनकी चापलूसी बहुत बढ़ गई तो पोत वालों को उनकी कमज़ोरी का अंदाज़ा हो गया और वे संतुष्ट हो गए। पोत के कप्तान ने पहले तीन ख़लासियों को रोटी, पनीर और शराब देकर उनके पास भेजा कि उनको भेंट स्वरूप दें वे जंगली लोग उपहार पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए। पोत वालों को भी उनकी तरफ़ से इत्मीनान नसीब हुआ। और दिलों से भय समाप्त हुआ। इसके बाद सब एक दूसरे से गर्मजोशी से मिले। प्रेमभाव बढ़ा और एक दूसरे की स्थिति से अवगत हुए। कुछ समय तक पोत वाले वहाँ ठहरे और वहाँ की विशेषताओं का निरीक्षण किया। वहाँ दूसरी बार आने के लिए नक़्शा बनाया। उसके बाद वहाँ की विशेष वस्तुएँ, फल, फूल और विभिन्न सामग्रियाँ लेकर अपने देश वापस आए। दूसरे वर्ष दो-तीन पोत बहुत सारे उपहार लेकर गए। अमेरिका के अनपढ़ और सीधे-सादे लोग रंगबिरंगे कपड़े, शराब, रोटी और कबाब पाकर बहुत प्रसन्न हुए। पोत वालों की मृदुभाषा कोमलता की बात-चीत से प्रभावित होकर बहुत नर्मी और मेहरबानी से पेश आए। फ़िरंगियों ने अपने व्यवहार से उनको अपना आज्ञाकारी बना लिया। और वहाँ भवन और व्यावसायिक कोठियाँ निर्मित कीं, बाग़ लगाए और धीरे-धीरे सोने चाँदी के खानों वाले विशाल देश में अपना शासन स्थापित कर लिया और देश के मूल निवासियों को कामगार मज़दूर बना लिया।

अमेरिका की विशषताएँ

अमेरिका के निवासी श्याम रंग लंबे देह वाले और गठीले होते हैं। उनके क़द सामान्यतः छः हाथ से ऊँचे होते हैं। हमारे देश के निवासियों से अधिक मोटे और शक्तिशाली होते हैं। उनके यहाँ हराम और हलाल में कोई अंतर नहीं। और न ही उनका कोई मत और धर्म है। इसी प्रकार बुद्धि-चिंतन और रोज़गार के साधन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी हैं। वस्त्र पशुओं के चमड़े और वृक्षों के पत्तों से बनाते हैं। उनका भोजन कच्चा और अर्द्धपका मांस है। इस देश के सरदार, बादशाह के बराबर प्रतिष्ठा रखते हैं। वह टापा पर सवार होते हैं, जिनको लोग कंधों पर उठाकर जहाँ कहते हैं वहाँ ले जाते हैं। उन लोगों को कोई ज्ञान और बुद्धि नहीं। लिखना-पढ़ना बिल्कुल नहीं जानते। परंतु पत्राचार के लिए उन्होंने एक विचित्र लिपि तैयार कर ली है। वह पत्र वृक्षों के पत्तों पर लिखते हैं। उनके यहाँ प्राचीन काल से यह तरीक़ा प्रचलित है कि वह पत्तों पर पीले, हरे और कतिपय अन्य रंगों से सिंह, बिल्ली, कुत्ता, सियार, लोमड़ी और सूअर के चित्र बनाते हैं। अपने उद्देश्य को अभिव्यक्त करने के लिए प्रत्येक रूप को परिभाषा के रूप में निर्धारित किया है। उन अंकित रूपों को देखकर लिखने वाले का उद्देश्य मालूम हो जाता है। प्रश्न और उत्तर लिखने के मामले में इस प्रकार अपना काम निकालते हैं।

अमेरिका में सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, पारा और अन्य खनिज के खान की बाहुल्यता है। बर्तानिया से हमारे देश में जो सोना, चांदी आता है वह अँग्रेज़ अमेरिका ही से प्राप्त करके भेजते हैं, क्योंकि बर्तानिया में सोने चांदी के खान बहुत कम हैं। बंगाल की तरह अमेरिका में बारिश बहुत होती है। धान, गेहूँ, जौ, ईख, तंबाकू, अंगूर, अनार इत्यादि बाहुल्यता से पैदा होते हैं।

प्रथम बार जब स्पेन के लोग इस देश में गए तो लघु भाग पर अपना शासन स्थापित कर लिया। इसके बाद फ्रांस के निवासी वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देश का बहुत बड़ा भाग अपने कब्ज़े में कर लिया। उन दोनों के बाद अँग्रेज़ों ने उधर का रुख़ किया और फ्रांस वालों से कुछ कम भाग उनके हाथ आया। लगभग बंगाल के बराबर होगा। उन लोगों ने वहाँ रहना-सहना अपनाया। अपने देश के पेशावर और हुनरमंद लोगों को वहाँ आबाद किया और व्यावसायिक कारोबार आरंभ कर दिया।

फ्रांस, बर्तानिया और स्पेन की सरकारों ने अपने देश के अपराधकर्मियों को वहाँ भेजकर आबाद किया। उनकी संतानों की अधिकता से आबादी में वृद्धि हुई। उन लोगों ने कृषि को विकसित किया। बाग़ लगाए, भवन निर्मित किए और पोत बनाने के कारख़ाने स्थापित किए। इसके अतिरिक्त देश को राज्यों में विभक्त किया। प्रत्येक राज्य में सूबेदार, ज़मीनदार, ताआलुक़ादार, क़िलादार और फ़ौजदार नियुक्त किए। साथ ही मालगुज़ारी के नियम बनाए और न्यायालय स्थापित किए। अपने देश की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरह युद्धक साज़-सामान भी तैयार करने लगे। धीरे-धीरे अँग्रेज़ों का दबदबा बढ़ा और उन्होंने फ्रांस के क्षेत्रों पर कब्ज़ा जमा लिया और अपने क्षेत्रों को व्यापक कर लिया। कहते हैं कि पूर्व में अमेरिका के लोगों का यह तरीक़ा था कि विशिष्टगण और सरकार के सदस्यगण वहाँ किसी व्यक्ति को बर्तानिया के बादशाह का उप बनाते थे और वही शासन करता था। परंतु बारह वर्ष पूर्व धन के नशे और सैनिकों की अधिकता ने उनमें अभिमान और उदंडता उत्पन्न कर दिए। और उन्होंने बर्तानिया की सरकार से विद्रोह किया और शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। जब बादशाह को यह सूचना मिली तो उसने पचास हज़ार सेना पोतों के द्वारा वहाँ भेज दी। प्रथम आक्रमण में शाही सेना को विजय प्राप्त हुआ और एक बड़े नगर पर कब्ज़ा कर लिया। परंतु थल-युद्ध में अँग्रेज़ों को पराजय का सामना करना पड़ा और दोनों ओर के अधिकांश लोग मारे गए। अँग्रेज़ बर्बाद और परीशान होकर क़िलाबंद हो गए। इन स्थितियों की सूचना जब बर्तानिया पहुँची तो बादशाह ने अनुभवी सैनिक सरदारों के नेतृत्व में क़िलाबंद अँग्रेज़ों की सहायता के लिए अस्सी हज़ार सेना भेज दी, जिसके कमांडर डकार्नवाल्स गर्वनर कलकत्ता नियुक्त हुए। अमेरिका के सरदारों के पास सेना अधिक थी, युद्धक उपकरणों की कमी थी परंतु अनुभवी सरदार मौजूद थे। इसलिए उनको पराजय का सामना करना पड़ा और उन्होंने भागकर दूरदराज़ के स्थानों में शरण ली। इसके बाद पुनः आसपास से सेना एकत्र करके युद्ध के लिए तैयार हुए और अत्यंत वीरता से युद्ध किया। अँग्रेज़ इस आक्रमण से परीशान हो गए और थल-युद्ध बंद करके किनारे के नगर के क़िला में शरण ली। इस युद्ध में कई हज़ार सैनिक मारे गए। चूँकि दोनों फ़रीक़ (पक्ष) एक ही राष्ट्र से संबंध रखते थे इसलिए कुछ दिनों बाद आपस में सुलह-सफ़ाई कर ली।

बर्तानिया की अन्य विशेषताएँ

कृषि उत्पादन : बर्तानिया में धान, मूंग, मसूर और चना इत्यादि अनाज पैदा नहीं होते हैं। परंतु जौ, गेहूँ, तिल और मटर की खेती होती है। वहाँ एक विशेष क़िस्म का धान पैदा होता है, जिसके अंदर काला चावल निकलता है। उनको बर्तानिया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में कारन कहते हैं। यह चना और उरद के स्थान पर घोड़ों और बैलों को खिलाते हैं। ईख, कपास, गुड़ और चावल अमेरिका से मंगवाते हैं। रेशम, अफ़ीम, शोरा, इमली, सोठ, दारचीनी और लाल मिर्च इत्यादि बंगाल से लाते हैं। इसी प्रकार बादाम, किशमिस, खुर्मा और पिस्ता अरब देशों से लाते हैं। ग़रज़ यह कि संपूर्ण संसार की वह वस्तुएँ जिनकी आवश्यकता हो सब वहाँ मिल जाती हैं। परंतु प्रायः मंहगे दामों पर मिलती हैं।

बर्तानिया में विभिन्न वस्तुओं के भाव निम्नांकित हैं :-

अफ़ीम : एक सेर पचास रुपया, मिर्चा : आठ रुपया सेर, इमली : दस रुपया सेर, हल्दी : दस रुपया, लौंग : बारह रुपया प्रति सेर।

बर्तानिया के फूल : बर्तानिया में फूलों की क़िस्में बहुत हैं। भारतीय और ईरानी फूलों में गुल मेंहदी, गुल शब्बो, गुलाब देखने में आए। उनके अतिरिक्त गुल लाला, सदबर्ग, बेला, चमेली, नर्गिस, जूही और मोगरा भी नज़र आए। बर्तानिया के विशेष फूलों में उजले, हरे, पीले और नीले रंगों के फूलों की क़िस्में हैं। उनके नाम याद नहीं रहे। एक लाल रंग का फूल अत्यंत प्रिय है, जिसको गुल ग्रेनशि कहते हैं। किसी कवि ने अँग्रेज़ी भाषा में इस फूल का उल्लेख एक पंक्ति में किया है, जो प्रेसी की विशेषता में है। गुलाब के फूल यहाँ हज़ारों की संख्या में देखे और बहुत बड़े होते हैं, जो अन्य देशों में नज़र नहीं आते।

बर्तानिया के वृक्ष : बर्तानिया में सर्व और सनोबर, शमशाद, देवदार, शीशम के वृक्ष बहुत हैं। सनोबर और शमशाद की लकड़ी घर और पोत बनाने के काम में आती है। शीशम की लकड़ी से बंदूक़ों के कुंदे और चौकी इत्यादि बनाते हैं। लकड़ी बर्तानिया में बहुत होती है। इसलिए बेचने के लिए अन्य देशों में भेजी जाती है। सागवान, साल और आबनूस इत्यादि की लकड़ी बर्तानिया में नहीं होती है। गुलाब की लकड़ी चीन से आती है। और महाकहनी और आबनूस और साल की लकड़ी अमेरिका से लाते हैं।

सराय और यात्रियों के विश्राम के स्थान, पड़ाव और सैनिक गृह : बर्तानिया की आबादी इस क़दर घनी है कि एक कट्ठे का बीसवाँ भाग भी ग़ैर मज़रूआ और ग़ैर आबाद नहीं है। लन्दन से स्कॉटलैंड तक मैंने देखा है कि कोई ऐसा मैदान ग़ैर मज़रूआ नहीं है जहाँ पाँच सौ सवार और प्यादा शिविर लगाकर ठहर सकें। बर्तानिया में नियम यह है कि तीन हज़ार सवारों और प्यादों के लिए हर पड़ाव पर बहुत बड़ी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सराय बनी हैं। जहाँ सेना के आगमन की सूचना मिलते ही घोड़ों के लिए दाना और घास, मर्दों के लिए भोजन तैयार हो जाता है। किसी को भोजन बनाने या किसी और काम में कष्ट नहीं उठाना पड़ता है। यदि किसी को महिलाओं से (यौन संबंध बनाने) संभोग की इच्छा हो, वह भी उपलब्ध हो जाती है।

यात्रियों और डाक के लिए हर मंज़िल पर घोड़ा गाड़ियों की चौकी बनी हुई है। जहाँ पाँच छः मील के बाद गाड़ी के घोड़े बदले जाते हैं। रात-दिन गाड़ियाँ चलती रहती हैं और तेज़ गति से चलती हैं कि सौ दो सौ मील एक रात और दिन में तय कर लेती हैं। धनवान विशिष्ट लोग सेवक को भी साथ ले जाते हैं। जो किराया के घोड़ों पर सवार होकर गाड़ी के साथ चलते हैं। प्रत्येक सराय पर नाश्ता और खाना तैयार मिलता है। एक घन्टा नाश्ते और खाने के लिए ठहरते हैं। अन्य स्थिति में मार्ग में एक घन्टा का भी विलंब नहीं होता है। सराय के मालिक और गाड़ी चलाने वाले इस देश के भटियारे हैं। जो चार-पाँच मिलकर साझे में एक कम्पनी बनाकर गाड़ियों का कारख़ाना स्थापित करते हैं और प्रत्येक सराय में कामगार नियुक्त कर देते हैं। जिस समय कोई यात्रा का निश्चय करता है तो रात को कम्पनी के कार्यालय में जाकर गाड़ी या घोड़े का किराया जमा कर देता है। गाड़ी का मालिक उसी रात को सराय के कामगार को सूचित करता है कि कल इतने यात्री और गाड़ियाँ यहाँ से प्रस्थान करेंगी। यदि कोई निर्धारित किराया से अधिक जमा करता है, इस शर्त पर कि यहाँ से गंतव्य स्थान तक इतने समय में पहुँचना है तो उतने ही समय में पहुँच सकता है। और जहाँ विश्राम करता है वहाँ भोजन तैयार मिलता है। सराय में प्रत्येक व्यक्ति की हैसियत के अनुरूप नाश्ते और खाने की व्यवस्था होती है। जैसे ही कोई यात्री सराय में पहुँचता है सेवक भोजन और शराब इत्यादि पेश कर देते हैं और भोजन के बाद उसका बिल पेश करके राशि प्राप्त कर लेते हैं और यात्री उसी समय गाड़ी पर सवार होकर प्रस्थान कर जाते हैं। रात-दिन यह क्रम चलता रहता है। गाड़ियाँ ऐसी होती हैं जिनपर चार आदमी बैठते हैं। दो आगे और दो पीछे। गाड़ी का किराया कम है। ग़रीब व्यक्ति पैदल यात्रा करते हैं।

रास्ते और सड़कें : बर्तानिया में पहाड़ के टीले और ढाल बहुत हैं। इसलिए गाड़ी एक-दो मील पहाड़ी टीले पर चलती है और कभी डेढ़ मील चढ़ाई पर चलने के बाद ढलान में पहुँच जाती है। इस कारण गाड़ीबान और सवारियों को रास्ता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कठिनाइयों से तय करना पड़ता है। रास्ते को ठीक करने वाले मज़दूर और कामगार बराबर काम में लगे रहते हैं। और पत्थरों को काटकर ग़ैर समतल जगहों की मरम्मत करने में लिप्त नज़र आते हैं। इस कार्य पर प्रत्येक वर्ष अत्यधिक राशि व्यय की जाती है। इसी के लिए प्रत्येक गाड़ी और घोड़े पर चार आना शुल्क लिया जाता है। कतिपय स्थान पर आठ आना लिया जाता है। रास्ते में विभिन्न स्थानों पर फाटक बने हुए हैं। चौकीदार उनको बंद रखते हैं। जब कोई गाड़ी या घोड़ा आता है तो उससे रास्ते का कर प्राप्त करके जाने देते हैं। व्यवसाइयों की वस्तुएँ और सामग्रियों से लदे छकड़े जिनको छः से आठ घोड़े खींचते हैं, उन पर लदे हुए सामान का भार मालूम करने की यह विधि निर्धारित है कि ... कृषि की विधि हमारे देश की भाँति नहीं है। भूमि का अधिकांश भाग पत्थरीला है। अच्छी साफ़ भूमि कम है। विवशता में वे लोग पहले भूमि को कमर तक गहरा खोद डालते हैं और पत्थरों के टुकड़े चुनकर अलग कर देते हैं। इस प्रकार भूमि साफ़ और नर्म हो जाती है। इसके बाद घोड़ों और बैलों का गोबर मिट्टी के साथ मिलाकर ज़मीन में डाल देते हैं। इस प्रकार बहुत परिश्रम और ख़र्च के बाद उसको खेती के योग्य बनाते हैं और उसमें खेती करते हैं। उजली मिट्टी जिसको अँग्रेज़ी भाषा में चाक कहते हैं, वहाँ बहुत देखने में आई। लाल मिट्टी जिसको भारत में गेरुआ कहा जाता है, वह भी बहुत है। खेती की विधि यह है कि हिमपात के ज़माने में चार महीने तक ज़मीन पर बर्फ़ जमी रहती है। जिस समय चैत के महीने में सूर्य के ताप से बर्फ़ पिघल जाती है और ज़मीन गीली हो जाती है, उस समय ज़मीन को दो-चार घोड़ों से हल चलाकर जोत डालते हैं और उसमें जौ, गेहूँ और साग-सब्ज़ी के बीज डालते हैं। थोड़े ही दिनों में ज़मीन हरी-भरी हो जाती है और पौधों में नए पत्ते और कलियाँ निकल आती हैं। इसके बाद फूल और बालियाँ पैदा होती हैं। बर्तानिया में बारिश का सिलसिला लगभग बारह महीने तक जारी रहता है। पूरे वर्ष में एक फसल होती है। क्योंकि हिमपात और बारिश के कारण ज़मीन चार महीने तक खेती के योग्य नहीं रहती।

बसंत के मौसम के समय की खेती की हरियाली और वृक्षों में फूल खिलने के दृश्य का क्या उल्लेख करूँ, फुलवारी की कियारियों की सफ़ाई और क्रमबद्धता इस देश के उपहार हैं। खेतों की बनावट इस प्रकार है कि कुछ तिकोने, कुछ चौकोर हैं और कुछ गोल बनाए हैं। ज़मीन की उपलब्धता (गुंजाईश) के अंदाज़े से कियारियाँ ऐसी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनाते हैं कि उनमें बाल बराबर अंतर नहीं होता। खेतों के किनारे-किनारे हाते के लिए मेंहदी के पौधे टट्टी (घेराबंदी) के रूप में लगाते हैं, जिसके लिए मेंहदी के अतिरिक्त अन्य कँटेदार पौधे भी लगाए जाते हैं, जो बसंत और पतझड़ के मौसम में हरेभरे रहते हैं। खेतों की सुंदरता के लिए उनके अगलबग़ल इस प्रकार हाता बनाते हैं। जब बसंत का मौसम आता है तो हाता वाले पौधों में लाल, पीले, उजले और नीले रंग के फूल खिलते हैं। उनके अतिरिक्त खेत में तिल, मूंग और सर्सों इत्यादि अन्य अनाजों के पौधों में ज़ाफ़रानी और कुसुम के रंग के फूल खिल जाते हैं। उस समय जहाँ तक नज़र जाती है टीले और पहाड़ और मैदान सब फूलों का एक तख़्ता नज़र आता है। इस दृश्य का सौंदर्य देखने से संबंध रखता है। इसको लिखा नहीं जा सकता। जहाँ तक चाय का संबंध है मुझे पूछने पर मालूम हुआ कि चीन के सिवाय किसी देश में पैदा नहीं होती। इसी देश से दूसरे देशों में जाती है। परंतु बर्तानिया में चाय की एक क़िस्म होती है, जिसके पत्ते हाथ की हथेली के बराबर लंबे होते हैं। वह चाय का स्वाद देते हैं।

बर्तानिया के पशु

बर्तानिया के बैल देह में हमारे देश जैसे होते हैं, जो ज़बह (वध) करके खाने के काम आते हैं परंतु गाएँ नस्ल-वृद्धि के लिए पालते हैं। धनवानों के घरों में दूध और घी के लिए पाली जाती हैं। सुब्ह और शाम चालीस सेर दूध देती हैं। एक घर के लिए दूध, घी, मस्का और पनीर प्रयाप्त होता है। एक गया का मूल्य चालीस-पचास रुपया से कम सौ डेढ़ सौ से अधिक नहीं होता। बर्तानिया के घोड़े डील-डौल और मोटापे में हमारे देश के घोड़ों से दुगने होते हैं और कम मूल्य में मिलते हैं। परंतु ग़रीबों के घोड़े चाहे गाड़ी खीचने वाले हों या ज़मीन जोतने के काम आने वाले, उनसे भारत के बैलों, गदहों और भैंसों की तरह मालवाहक का काम लेते हैं और बर्तानिया के लोग यह सुनकर कि भारत के लोग बैलों से खेती करते हैं, सवारी और बोझ उठाने का काम लेते हैं तो बहुत हँसते हैं और मज़ाक़ उड़ाते हैं और आश्चर्य व्यक्त करते हैं। बर्तानिया के लोग घोड़ों की दुम काट देते हैं। और उनको ख़स्सी बना देते और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके अंडकोश निकाल देते हैं। दुम काटने का कारण बताते हैं कि लंबी दुम को हिलाने से सवार को कष्ट होता है और अंडकोश निकालने का कारण यह है कि भद्र लोगों की महिलाएँ घोड़ों पर सवार होती हैं तो उनके लिंग को देखकर लजा जाती हैं। सवारी के घोड़े जो अत्यंत तीव्र गति से दौड़ते हैं और अधिक मोटे-ताज़े नहीं होते हैं। अरबी और ईराक़ी घोड़े अत्यंत प्रिय और मंहगे होते हैं, यह सबों को नसीब नहीं हैं। बकरियाँ बर्तानिया में बहुत कम हैं और जो हैं सर्दी और हिमपात के कारण बहुत दुबली पतली हैं। परंतु भेड़ें सब पशुओं से अधिक हैं। उनके शरीर का ऊन रूई की तरह बहुत नर्म और मुलायम होता है और एक ऊंगली के बराबर मोटा। उनपर सर्दी का प्रभाव नहीं होता। वे जाड़े और गर्मी में मोटी-ताज़ा रहती हैं। जब गर्मी के मौसम में उनके ऊन काट लेते हैं और उनको कातकर धागा बाँटते हैं और उनसे बानात (एक प्रकार का मोटा गर्म ऊनी कपड़ा) बनाते हैं। उनका मांस बकरी के मांस की तरह कोमल और स्वादिष्ट होता है। यहाँ की भेड़ें भारत की गाय की तरह एक-दो सेर दूध सुब्ह और शाम देती हैं और उनसे मस्का और पनीर तैयार करते हैं। वह बारह महीने आबादी से दूर चारागाह में रहती हैं। उनके लालन-पालन की विधि यह है कि बंजर और पत्थरीली ज़मीन जिसमें सूखे घास के सिवाय कुछ नहीं होता बारह बीघा के रक़्बे पर पत्थरों की दीवार से हाता बनाते हैं और पूरे गल्ले को उसमें बंद कर देते हैं और सुब्ह के समय चारागाह में छोड़ देते हैं। सुब्ह और शाम के समय दूध दूहकर घर ले जाते हैं। शेर, सियार, भेड़िया हिंसक पशुएँ बर्तानिया में नहीं हैं। भेड़ों के गल्ले बिना रक्षकों के रात-दिन मैदान में निर्भय रहते हैं, चोरों का डर भी नहीं होता। पहचान के लिए और अदलाबदली के ख़्याल से प्रत्येक गल्ले का मालिक अपनी भेड़ों की पीठ पर एक निशान बना देता है।

बर्तानिया में मुर्गा और बत्तख बहुत हैं और उनका उपयोग भी अधिक है। इसलिए मंहगे हैं। दो बड़े मुर्गे एक रुपया में मिलते हैं और बड़ी बत्तख़ जिसकी पीठ से गले तक काली लकीर होती है उसका मूल्य अधिक होता है। इसको बंगाल में 'राजहंस' कहते हैं। और अँग्रेज़ी में सुईटन कहा जाता है। इसके पंख से क़लम बनाते हैं। दूसरी क़िस्म बीरोज है जिसको बंगाल में 'बज़' कहते हैं। इसकी यह विशिष्टता प्रसिद्ध है कि प्रत्येक क्षण ज़ेबरा की तरह रंग बदलती है। यह बेगू द्वीप से लाते हैं और अत्यंत मंहगे हैं। अन्य थल और जल के पक्षियों में मुर्ग़ाबी, सुर्ख़ाब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और कलिंग इत्यादि नज़र नहीं आए। परंतु सुना है लन्दन के आस-पास दरियाओं में अधिक हैं। इनके अतिरिक्त तीतर अधिक हैं, उनका शिकार भी किया। एक प्रकार का तीतर आठ रुपया में मिलता है, जो बहुत मोटा होता है। और एक उजला रंग का होता है। जिसे वाईट कहते हैं, बाहुल्यता से मिलता है। यह खाया भी जाता है। पालतू हिरण और बारह सिंघे बाग़ों में देखे मगर जंगल में नज़र नहीं आए। कहते हैं कि आस-पास के पहाड़ों में बहुत हैं। और पक्षियों में बाज़, शकरा और बहरी इत्यादि अनुपलब्ध हैं। यह पक्षी भारत से ले जाते हैं परंतु सर्दी की कठोरता के कारण कम जीवित रहते हैं। अलबत्ता चील और उजले और काले रंग के कौआ देखने में आए। चील की शक्ल करोल जैसी होती है। परंतु उससे बड़ी है। करोल मछली खाने वाला पक्षी है और बंगाल में प्रसिद्ध है। सोइटन कहते हैं। फ़ारसी में इसको ओक़ाब (एक शक्तिशाली शिकारी पक्षी) कहते हैं। यह बाज़ से बड़ा होता है। सिंह, भेड़िया, चीता और भालू वहाँ नहीं होते। इसी प्रकार अजगर, काला नाग, बनबिलाओ और सियार इत्यादि का नाम और निशान भी नहीं है। यहाँ के लोग बताते हैं कि पूर्व काल में उनकी संख्या बहुत थी और लोगों को क्षति पहुँचाते थे। इसलिए बर्तानिया के सभी लोगों ने एकमत होकर कई हज़ार आदमी उन हिंसक जंतुओं को मारने के लिए निर्धारित किए। उन लोगों ने प्रति दिन पहाड़ों और जंगलों को छान डाला और सभी हिंसक पशुओं को मार डाला। जंगलों में झाडू फेर दी। उन हिंसक जंतुओं का नाम और निशान बाक़ी न छोड़ा। परंतु लोमड़ी अपनी धूर्तता और छल से खोह में छुपकर सुरक्षित हैं। अतएव अब तक इनकी नस्ल समाप्त नहीं हुई। बर्तानिया में लोमड़ी की चालाकी की बहुत घटनाएँ प्रसिद्ध हैं। उनमें से एक घटना यह बयान किया जाता है कि एक व्यक्ति ने किसी गाँव में लकड़ी का घर बनवाया जो ज़मीन से दस-बारह हाथ ऊपर था। उसमें कुछ बत्तखें रखीं। रात को द्वार बंद कर देता था और सुब्ह के समय खोल देता। संयोग से एक लोमड़ी उनकी घात में लगी रहती और अवसर की प्रतीक्षा में थी। संयोग से घर का मालिक द्वार बंद करना भूल गया। सारी रात प्रेमी की प्रतीक्षारत आँखों की भाँति द्वार खुला रहा। धूर्त लोमड़ी को अवसर मिला और बिजली जैसी तेज़ी से घर के अंदर आई और एक बत्तख़ को उसका गला पकड़कर इस प्रकार ले गई कि उसकी आवाज़ भी न निकल सकी। उसने घर से कुछ दूर ले जाकर उसको रेतीली ज़मीन में दफ़न कर (गाड़) दिया और ऊपर अच्छी तरह मिट्टी से सतह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को बराबर कर दिया। इस प्रकार भंडारण करके भोजन से निश्चिंत हो गई। सुब्ह को जब घर के मालिक ने बत्तख़ों को नहीं देखा तो हैरान हो गया और गाँव के लोगों को यह हाल बताया। सब एकत्र होकर बत्तख़ों की तलाश में हर ओर दौड़े यहाँ तक कि उसके क़ब्र पर पहुँच गए और वहाँ बत्तख़ों के कुछ पर पड़े हुए देखे। जैसे ही उस स्थान को खोदा, सब बत्तख़ें मिल गईं।

हाथी, ऊंट, गदहे और जंगली गदहे बर्तानिया में नहीं हैं। लोग देखने-दिखाने के लिए भारत से ले जाते हैं और अपनी हवेली में रखते हैं। चूँकि बर्तानिया के लोग उन पशुओं को अद्भुत जीव समझते हैं इसलिए जहाँ कहीं हों उनको देखने के लिए जाते हैं। उसके देखने का तरीक़ा यह है कि एक या दो रुपया हवेली के द्वार पर अदा करते हैं इसके बाद अंदर प्रवेश करते हैं। यह भी एक प्रकार का व्यवसाय है, जिसके माध्यम से रुपये कमाते हैं।

बर्तानिया में कीड़े मकोड़े बहुत कम हैं। विभिन्न प्रकार के साँप और बिच्छू नज़र नहीं आए। बरसाती कीड़े जैसे मच्छर, पिस्सू इत्यादि नाम मात्र के हैं। अलबत्ता मधुमक्खियाँ बहुत हैं। इनको बहुत रखरखाव से पाला जाता है। इनके लिए लकड़ी का एक संदूक़ की तरह का घर बनाते हैं और बाग़ों में रखते हैं। उनसे मधु प्राप्त करते हैं।

शिकारी कुत्तों का हाल

इस देश में कुत्तों को प्रशिक्षण देकर अद्भुत कार्य लेते हैं, जो मनुष्य नहीं कर सकते। छोटे-बड़े कई प्रकार के कुत्ते देखे। उनमें कुछ ग़ोताख़ोर हैं। और हिरण को पकड़ने वाले गंध सूंघकर शिकार का पता लगाने वाले भी हैं, जो अद्भुत कार्य करते हैं। अतएव एक बार कार्तिक के महीने में जब गेहूँ और जौ कटने का मौसम होता है श्री सर्जन के बेटे और एक माली के साथ बंदूक़ से शिकार करने के लिए निकला। गंध सूंघकर शिकार का पता लगाने वाला एक छोटा कुत्ता साथ था। वह हमसे दूर-दूर और ओग-आगे चलता था और हम उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। वह शिकार की तलाश में हर ओर गंध सूंघ रहा था मगर शिकार का कोई निशान नज़र नहीं आया। अचानक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम खेत के किनारे पहुँचे तो देखा दस-बारह तीतर खेत में चराई कर रहे हैं। कुत्ते को उनका गंध लगा तो पचीस हाथ की दूरी पर घात लगाकर बैठ गया और सिर उठाकर कभी मालिक की ओर देखता था और कभी अपनी जगह सिर झुका लेता। श्री सर्जन उसके निकट गए और देखा तो उसको नज़र नहीं आए। उन्होंने कुत्ते पर नज़र डाली। कुत्ता दस क़दम आगे गया और खड़ा हो गया। उसने अपने मालिक की नाराज़गी महसूस कर ली कि वह उसको झूठा समझ रहे हैं। आगे इसलिए बढ़ा था कि वह भी आगे बढ़कर देख लें। मगर तीतरों के निकट नहीं गया कि कहीं वे उड़ न जाएँ और मालिक शिकार न मिले तो मुझको सज़ा दें। श्री सर्जन और आगे बढ़े तब भी उनको तीतर दिखाई न दिया। उन्होंने कुत्ते पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की। कुत्ता चंद क़दम और आगे बढ़ा और ठहर गया। श्री सर्जन उसके पीछे गए। वह स्थान ऐसा था कि गेहूँ कट चुके थे और घास का ढेर लगा था। तीतर उसकी आड़ में थे। सर्जन को फिर नज़र न आए तो वह बहुत क्रोधित हुए। कुत्ता बेचारा डरा और दौड़कर तीतर के निकट पहुँच गया। वह उसको देखते ही उड़ने लगे। सर्जन ने बंदूक़ से फ़ायर किया। दो तीतर गिरे। माली ने अपनी बंदूक़ चलाई तो एक और गिरा। श्री सर्जन को मालूम था कि मुसलमान अपने हाथ से ज़बह किया हुआ मांस खाते हैं। उसने मुझसे कहा, तुम ज़बह करो। मैंने तीनों तीतर ज़बह किए। उन्होंने तीनों मुझको दे दिए। मैंने उनका मांस खाया तो वह बहुत स्वादिष्ट और अच्छा मालूम हुआ। संयोग से जब यह घटना कप्तान सुईटन ने सुना तो उन्होंने बहुत दुःख व्यक्त करते हुए कहा यदि दो तीतर मुझको देते तो मैं कुछ सरकारी सदस्यों का भोज करता। मैंने जवाब दिया कि यदि मालूम होता कि यहाँ तीतर की इतनी क़द्र और क़ीमत है तो ज़रूर दे देता। वास्तविकता यह है कि ऐसे कुत्ते शिकार के समय अपने मालिक की आदत और व्यवहार से अवगत होकर उसका नेतृत्व करते हैं। शिकार का गंध सूंघकर पता लगाने वाले बड़े शिकारी कुत्तों को शिकार करते भी देखा है। नगर के कुछ मालदार लोग साथ मिलकर एक भवन में चार-पाँच सौ छोटे-बड़े शिकारी कुत्तों का लालन-पालन करते हैं। जिसको शिकार का शौक़ होता है वह इस भवन से किराए पर कुत्ते प्राप्त करते हैं। एक सप्ताह का किराया चार-पाँच सौ से कम नहीं होता है। उन कुत्तों के शिकार का तरीक़ा यह है कि शिकारी तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर सवार होकर जंगल में जाते हैं और कुत्तों को सिखाने वाला एक प्रशिक्षक उनकी ज़ंजीर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ में पकड़े रहता है और दूसरे हाथ में भोपू होता है। और सवार होकर शिकारियों के साथ चलता हैं और जंगल में जाकर छोड़ देता है। कुत्ते जंगल में हर ओर शिकार की तलाश में फिरते हैं। जब प्रशिक्षक भोपू के द्वारा आवाज़ देता है तो सब कुत्ते दौड़कर हाज़िर हो जाते हैं और पुनः उसके संकेत पर तलाश के लिए चले जाते हैं। यदि कोई लोमड़ी या जंगली गदहा खोह के अंदर छुपा होता है तो उसको खोदने में लग जाते हैं ताकि शिकारियों को विश्वास हो जाए कि इस खोह में शिकार मौजूद है यदि किसी हिरण को सोता हुआ पाते हैं तो पकड़ लेते हैं और यदि भागता है तो उसके पीछे दौड़ते हैं और जब वह मिल जाता है तो पकड़ लेते हैं। यदि कोई हिरण दो-तीन घंटे पूर्व किसी स्थान से उठकर कहीं चला गया है तो कुत्ते उसका गंघ सूंघते हुए उसे पकड़ने के लिए दौड़ते हैं। उनके पीछे शिकारी घोड़े दौड़ाते हैं। जहाँ कहीं हिरण होते हैं वहाँ पहुँचकर पकड़ लेते हैं। उसको छोड़ते नहीं। इसके लिए सवारों और गंघ सूंघने वाले कुत्तों की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। वह दस-बारह मील का रास्ता हो तो उनका पीछा करते हुए थोड़ी देर में तय कर लेते हैं। और रास्ते में यदि कोई दीवार या गड्डा पड़ता है तो घोड़ों को छलांग लगवाकर पार कर लेते हैं ताकि शिकार को हाथ से जाने न दें। इस बात से अंदाज़ा करना चाहिए कि अमीरों के बेटे चार वर्ष की आयु से घोड़े की सवारी और पोलो खेलने का अभ्यास करते हैं और वृद्धावस्था तक यह अभ्यास जारी रखते हैं। और हर प्रकार की मेहनत और कठिनाइयों को सहन करके हुनर प्राप्त करते हैं। आराम और राहत की ओर अधिक अभिरुचि नहीं रखते तो ऐसे लोग दूसरे देशों पर क्यों नहीं आच्छादित हों। इसके विरूद्ध हमारे देश भारत के गणमान्य विशिष्ट भोजन करते और ठंडा पानी पीकर मख़मल के कोमल बिस्तर पर सोते हैं और ऐश व इश्रत (भोग-विलास) के जीवन को अपनाया है। गर्व और अभिमान के नशे में मस्त रहते हैं। उनको अपने देश और जनता की सुरक्षा और भलाई की कोई चिंता नहीं होती। ऐसी स्थिति में उनका देश अन्य देशों के कब्ज़े में चला जाए तो आश्चर्य की बात नहीं होगी।

कुत्तों की एक प्रजाति बिल्ली के बराबर होती है। उनका प्रशिक्षण इस प्रकार किया है कि उनकी सहायता से सीख़ कंबाब आसानी से पका लेते हैं। इसका तरीका यह है कि लकड़ी का एक चर्ख़ा बनाते हैं जैसा पानी की चक्की में इस्तेमाल किया जाता है। इसके बीच में लकड़ी के टुकड़े लगे होते हैं। कुत्ता चर्ख़े के बीच खड़ा हो जाता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है और ऊपर चढ़ने का निश्चय करता है तो नीचे चला आता है पुनः वह अगले तख़ते पर पाँव रखता है वह नीचे चला आता है। इस प्रकार वह चर्ख़ा तेज़ी से गति करता और कुत्ता नीचे-ऊपर होता रहता है और चर्ख़ा की हवा से आग भड़कती है और उसपर सीख़ कबाब तैयार हो जाते हैं। कुत्ता मालिक के आदेश के बिना नीचे नहीं उतर सकता। दूसरे यह कि रसोइघर में एक जादूई खड़ी बनाई है जिसकी गति से सीख़ कबाब बिना किसी के सहयोग के उलटते-पुलटते रहते हैं और कबाब तैयार हो जाते हैं।

बर्तानिया के अन्य अविष्कार

बर्तानिया की भूमि की विशेषताएँ बहुत हैं। यदि उनको पूरे विस्तार से बयान किया जाए तो इसके लिए एक लंबी आयु दरकार है। वहाँ के अविष्कार में पानी और हवा से चलने वाली चक्की है जिससे गेहूँ पीसा जाता है और तेल निकाला जाता है। इसी के द्वारा आरा खींचने और बारूद साज़ी होती है। अब यह कलकत्ता में भी मौजूद है। अंदाज़ा करना चाहिए कि कठिन कार्यों को अंजाम देने के लिए कितनी सुविधाएँ उत्पन्न कर दी हैं, जिनसे लोगों को लाभ पहुँच रहा है। पानी से चलने वाली एक ऐसी चक्की का अविष्कार किया जिसमें सौ डेढ़ सौ मन गेहूँ पिसकर आटा बन जाता है। गावँ से लोग गेहूँ पिसवाने के लिए आते हैं। इसी चक्की के साथ एक ऐसा यंत्र भी लगा है जिसकी सहायता से तेलहन से तेल निकाला जाता है। और इसी से एक चर्ख़ी गति करती है जिसके द्वारा रेशम से धागा बनता है। इसके अतिरिक्त रहट के द्वारा कूएँ से पानी खींचते हैं और हौज में एकत्र करते हैं और इसके अंदर कई मन जौ डालते हैं और इस पानी को पकाकर आब जौ (संभवतः शराब) बनाते हैं जो बहुत आनंदायक, ठंडा स्वादिष्ट होता है। रहट कोलहू के बैल की तरह एक घोड़ा चलाता है। उसकी नाक के छिद्र में एक ही लकड़ी डाल देते हैं और उसी लकड़ी को चर्ख़ी से बाँध देते हैं। घोड़ा सिर ऊपर उठाए एक ही स्थिति में धीरे-धीरे बिना किसी के चलाए चलता है और रहट घूमकर कूएँ में आता-जाता रहता है। वास्तविकता यह है कि यह अविष्कार नया नहीं है। ईरान और तूरान में भी प्रबुद्ध रहट इत्यादि बनाते थे। जिनका हाल मैंने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किताबों में पढ़ा है। परंतु यहाँ अपनी आँखों से देख लिया।

अन्य अविष्कार में घड़ी भी है, जो समय मालूम करने का माध्यम है। यहाँ घड़ी दो क़िस्म की हैं। एक छोटी घड़ी जो अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसको छोटे-बड़े सब इस्तेमाल करते हैं और जेब में रखते हैं। परंतु ग़रीब लोगों के पास घड़ी नहीं होती। इसलिए जिनके पास घड़ी नहीं होती उसको ग़रीब समझा जाता है। दूसरी बड़ी घड़ी जिसे दीवार में लटकाई जाती है। अमीर लोग अपने रसोई घर में दीवार घड़ी लटकाते हैं ताकि उनके मुलाज़िम समय पर खाना पकाएँ और अपने मालिक को निर्धारित समय पर खिलाएँ। इन घड़ियों के अतिरिक्त रास्तों और बाज़ारों में धूप घड़ियाँ बनी होती हैं। वह इस प्रकार कि पत्थर की बड़ी सिल या लोहे के चौड़े टुकड़े पर घड़ी का चित्र अंकित है उसपर अंक अंकित हैं और ख़ाने बने हुए हैं और किनारे पर लिखा हुआ है सूर्य की छाया से समय मालूम करने की घड़ी, समय मालूम करने की यह विधि और घड़ी का निर्माण जो मनुष्य के लिए अत्यंत लाभकारी है बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है। हमारे देश में धनवान लोग समय मालूम करने के लिए नौबत और नक़्क़ारा बजवाते हैं। और इस कार्य के लिए मुलाज़िम रखते हैं। वास्तव में आम और विशिष्टजन और जहाज़ पर सवार होने वाले इसी विधि से समय से अवगत होते हैं।

कप्तान सुईटन से मतभेद का कारण

कप्तान सुईटन से मेरे मतभेद और विवाद का कारण यह है कि जब लार्ड कारतू उसके अनुचित कार्यों के कारण हज़रत बादशाह शाह आलम का पत्र बर्तानिया के बादशाह के पास नहीं पहुँच सका और वह मज़मून (विषय) इसी तरह गुप्त रखा गया। उस समय उक्त कप्तान को पुनः भारत जाने का अवसर हाथ से जाता नज़र आया और निराश हो गया। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि उस ज़माने में बर्तानिया में फ़ारसी जानने वाला कोई न था (फ़ारसी पढ़ने के इच्छुक बहुत थे) कप्तान सुईटन और डॉ. न्यूल्टन इत्यादि ने यह निर्धारित किया कि मुझको बर्तानिया में फ़ारसी पढ़ाने के लिए रोक लिया जाए। इसके लिए उक्त कप्तान ने बार-बार मुझसे कहा और दूसरों से कहलवाया कि मैं उनकी बात मान लूँ। और हर प्रकार की लालच और बहुत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रलोभन दिया और कहा कि बर्तानिया के गणमान्य लोग तुमसे फ़ारसी की किताबें पढ़ेंगे और तुमपर कृपालु हो जाएँगे। तुम्हारी देख-भाल बहुत अच्छी होगी। और तुम्हारे बाल-बच्चों के ख़र्च के लिए बंगाल में स्थाई तौर पर उचित राशि दी जाएगी और तुम एक पत्नी के बजाए दो पत्नियाँ रखना। चाहो तो इस्लामी तरीक़े पर निकाह करा दिया जाएगा। मैंने उसकी इस बात-चीत से यह अंदाज़ा लगाया कि वह मेरी तबीयत का रुजहान और मिज़ाज की कैफ़ीयत मालूम करना चाहते हैं। मैंने उनकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया। जब उनका आग्रह अत्यधिक बढ़ गया और तू तू मैं मैं की नौबत आ गई और उसके साथ ही उसने साथ यात्रा करने और खाने-पीने का भी ताना दिया। इस बात से मैं दुखी हुआ और ईश्वर पर भरोसा करके उनको सभ्य अंदाज़ में उत्तर दिया कि मेरा गुमनाम रहना नाम कमाने से अधिक प्रिय है और भारत की सांवली औरत बर्तानिया की गोरी परी से अधिक सुंदर होती है।

दूसरी बात कप्तान सुईटन ने यह कही थी कि मैं चाहता हूँ कि तुम को साथ लेकर बर्तानिया के सभी प्रसिद्ध स्थलों की सैर कराऊँ और सभी अद्भुत वस्तुओं और अवशेषों को दिखाऊँ। तुमको नए-नए अनुभव प्राप्त होंगे जिससे आगे के जीवन में तुमको लाभ पहुँचेगा। वास्तव में उसका मतलब इस प्रस्ताव से यह था कि लोग मेरे वस्त्र और आचार और अंदाज़ से यह ख़्याल करते थे कि मैं बंगाल के शासक नव्वाब के परिवार से संबंध रखता हूँ और जब उसके साथ यात्रा करूँगा तो लोगों की नज़रों में कप्तान का महत्त्व और प्रभाव बढ़ जाएगा और जब वह दुबारा बंगाल जाएगा तो उसकी प्रसिद्धि और सम्मान बढ़ेगा। मैंने उसको उत्तर दिया कि मुझको भी अन्य देशों की यात्रा का बहुत शौक़ है। परंतु मेरा मुलाज़िम खाना बनाने के लिए साथ जा सके तो फिर कोई हर्ज नहीं। कप्तान ने कहा कि हम और तुम एक गाड़ी पर सवार होंगे और मुलाज़िम को ले जाने की स्थिति में दूसरी गाड़ी की ज़रूरत पड़ेगी। इस स्थिति में व्यय बहुत अधिक होंगे। इसलिए तुम खाना मेरे साथ खाना जो मैं साथ ले जाऊँगा। मैंने उत्तर दिया कि तुम्हारा खाना मेरे लिए इस्लाम धर्म के आदेशों के मुताबिक़ हराम है। इसलिए मुझे क्षमा करो। उसने कहा कि मजबूरी के समय कोई हर्ज नहीं, तो उस समय मैंने उत्तर दिया कि जब ऐसा अवसर आए तो यह एच्छिक बात है, मजबूरी नहीं। और मजबूरी उस समय होती है जब भयंकर अकाल सामने हो या जान जाने का भय हो और परहेज़गार तो यहाँ तक कहते हैं कि धर्म पर स्थिर रहने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के लिए जान की परवाह भी न करना चाहिए। अतएव शरीअत (धार्मिक नियम) के अधीन वर्जितों से परहेज़ रखना आवश्यक है और अपनी इच्छा से धर्म में व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहिए। मगर उक्त कप्तान बराबर अपनी बात पर आग्रह करता रहता था। वह समझता था कि मेरा उत्तर मूर्खता और धार्मिक गर्व पर आधारित है। वरन् एक-दो दिन उपवास कर लेना गवारा है मगर मेरा खाना खाने से परहेज़ है। इसका क्या मतलब हुआ? इस मामला में मुझे दो सप्ताह तक कष्ट में ग्रस्त रहना पड़ा और ईश्वर का शुक्र है कि मैंने ज़माना सकून से व्यतीत किया। यह स्थिति उस समय पेश आई थी, जब श्री जान सुईटन और परिषद् के अन्य सदस्यों के बीच झगड़ा हुआ और उन दोनों ने न्यायालय का शरण लिया। वास्तव में इसका संबंध उस वाद से था जिसमें नव्वाब मुज़फ़्फ़र जंग और महाराजा नंद कुमार और महाराजा दौलत राम इत्यादि ... ठहरे हुए थे। चूँकि कप्तान सुईटन और श्री बंकाक अभी हाल में बंगाल से वापस आए थे इसलिए उक्त वाद के संदर्भ में न्यायालय में तलब किए गए। कप्तान सुईटन मुझको अपने साथ ले जाना चहाते थे कि उनके पास अपनी सफ़ाई के लिए जो काग़ज़ात हैं वह फ़ारसी भाषा में हैं और जब न्यायालय में प्रस्तुत किए जाएँ तो मैं उनका अनुवाद करूँ। मैंने उनके साथ जाने से असमर्थता व्यक्त की। मगर कोई लाभ नहीं हुआ। और मुझको उनके साथ लन्दन जाना पड़ा जहाँ के न्यायालय में वाद की पेशी थी। मैं और सुईटन एक गाड़ी में सवार हो गए। मेरा मुलाज़िम खाना बनाने वाला साथ न था। मैंने बहुत कुछ कहा सुना कि मुझको साथ न ले जाओ परंतु उनका आग्रह अत्यधिक हुआ। विवश होकर उनके साथ एक गाड़ी में सवार होकर रवाना हुआ। अपने साथ मात्र गुड़गुड़ी हुक़्क़ा और थोड़ा-सा तंबाकू रख लिया। एक रात और एक दिन की यात्रा के बाद एक सराय में ठहरा। अपने हाथ से शर्बत बनाकर पिया और थोड़ी-सी किशमिश और काग़ज़ी बादाम और खजूर का नाश्ता किया। जब सराय में कप्तान के सामने खाना लगाया गया तो उसने मुझको बुलाया और कहा कि जो खाना मेरे सामने रखा है, दही, मुर्ग़ का मांस और गेहूँ की रोटी है, जो हम तुम सब खाते हैं और जो चीज़ तुम्हारे धर्म में हराम है वह मौजूद नहीं है। तुम्हारा मुर्ग़ ज़बह करना और हमारा गला काट देना दोनों में अंतर नहीं है। तुम चमड़े और मांस के साथ ज़बह करते हो और हम गले में छिद्र करके दोनों रग कंठ बाक़ी नहीं रखते और मुर्दा नहीं खाते हैं। फिर तुम क्यों हमारा खाना खाने से इन्कार करते हो और जानबूझकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कलकत्ता के मूर्ख लोगों की तरह मुर्खता करते हो और स्वयं को मुसीबत और कष्ट में मुबतला रखते हो। मैंने उत्तर में कहा कि "बेशक तुम आसमानी किताब वाले हो, परंतु यह प्रायप्त नहीं है, क्योंकि ज़बह करने का अर्थ यह है कि वजू बनाकर अल्लाहो अकबर कहे फिर ज़बह करे, बिना मुसलमान के यह स्थिति नहीं बनती है। इसके अतिरिक्त तुम्हारा मांस जो तेल मसाले के बिना बनता है उसमें से मांस का गंध भी नहीं जाता है, भला वह गले के नीचे कैसे उतरेगा। यह बात मैंने क्रोधित होकर कही थी इसलिए कप्तान ने कुछ लज्जा और क्रोध से उत्तर दिया कि तुम मुसलमान यह समझते हो कि हम विष्ठा खाने वाले हैं। मैंने उत्तर दिया कि यह बात मैंने किसी के अपमान या विष्ठा खाने के कारण नहीं कही है, बल्कि इसकी वास्तविक्ता यह है कि प्रत्येक देश की अपनी-अपनी अलग परंपरा और रिवाज है। प्रत्येक समुदाय की आदतें विभिन्न होती हैं। एक वस्तु का स्वाद एक के लिए प्रिय होता है परंतु वही वस्तु दूसरे के लिए अप्रिय होती है। हमारी और तुम्हारी परंपराओं में उत्तर और दक्षिण अर्थात् आकाश और पाताल का अंतर है। मैं उसके साथ खाने में शामिल नहीं हुआ। परंतु भूख की आग ने पेट की हांडी को गर्म कर दिया वह जोश से भर गया। जो शर्बत और नाश्ता किया था वह दस्त के कारण निकल गया। कमज़ोरी बढ़ गई। वहाँ से प्रस्थान कर जब लन्दन पहुँचा तो बेहोशी की स्थिति उत्पन्न हो गई और मुर्दे की तरह पड़ गया। बिल्कुल गतिहीन। कप्तान का सेवक यह दशा देखकर समझा कि मेरी आत्मा ने शरीर को ख़ाली कर दिया है। उसने कप्तान को सूचित किया। वह घबराया हुआ आया और मेरे सिरहाने बैठा और मुझे होश में लाया और हाल पूछा। मैंने कहा ठीक हूँ कमज़ोरी है। उसने तत्काल मुर्ग़, मसाला और अन्य सामग्री मंगवाया। मैंने मुर्ग़ ज़बह करके क़लिया पकाया और थोड़े-से चावल उबाले और खाना खाने के बाद दो घड़ी बाद सो गया। सुब्ह को जागा तो अस्ली हालत में आ गया। एक सप्ताह लन्दन में रहा। अपना खाना खुद पकाकर खाया। इसके बाद चार व्यक्तियों के साझे में किराया की गाड़ी पर सवार होकर ओमरा नगर वापस आए।

इस यात्रा के बाद एक दिन मौज़ा बुलंद में ले गए। जहाँ कप्तान सुईटन के बड़े भाई रहते थे, जो वहाँ के न्यायाधीश थे। वह मौज़ा एक मंज़िल की दूसरी पर स्थित था। वहाँ अनावश्यक तीन दिनों तक रहना पड़ा।

एक दिन कप्तान साहब ने कहा कि मैंने बीस वर्ष बंगाल में गुज़ारे और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुसलमानों के तौर-तरीक़े अच्छी तरह देखे। विशिष्टों और सरकारी सदस्यों की महफ़िलों में भाग लिया, उनकी विशेष सभाओं में भी बैठने का अवसर मिला। उनके साथ खाया और पिया भी। मुसलमान धनवान और विशिष्ट लोग ज़ाहरी तौर पर तो कहते हैं कि हम शराब नहीं पीते। परंतु जब ग़ैर मुस्लिमों की महफ़िलों में होते हैं तो स्वयं साक़ी के हाथों से पैमाने ले लेते थे और कहते थे कि शराब अत्यंत उमदा चीज़ है। इसके जैसी वस्तु संसार में नहीं है। जो मुसलमान के धर्म में हराम है और लोगों के सामने पीना ऐब है। परंतु छुपाकर पीने में तो कोई हर्ज़ नहीं है। चूँकि तुम यात्री हो और नव्वाब नहीं हो और न नवाबदज़ादों में हो। यहाँ तुम्हारी क़ौम का कोई आदमी अच्छाई-बुराई का देखने वाला नहीं है। इसलिए हमारे साथ शराब पीने से परहेज़ करना बेकार की बात है। और वास्तविकता यह है कि तुम बंगाली हो और बंगाली अन्य भारतीयों की तुलना में नादानी और मूर्खता में अधिक प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त इन्कार की और कोई वजह नहीं है।

मैंने उत्तर में कहा कि मुसलमानों में शराफ़त और कुलीनता, धन और संपत्ति पर निभर नहीं है, बल्कि शिक्षा और व्यवहार और धर्म के अच्छे सिद्धांतों और नियमों पर है। जो ईश्वर और उसके रसूल (दूत) के आदेश के अनुरूप है। यदि धनवान और विशिष्ट मुसलमान अपनी अमीरी के अभिमान और मन के प्रलोभन पर धर्म के विरूद्ध अमल करें तो ग़रीब मुसलमान को उनका अनुकरण नहीं करना चाहिए चाहे वह देवदूत की संतान हो या बादशाह की संतान। यदि कोई अधर्मी और नास्तिक हो जाए तो धार्मिकों की दृष्टि में उसका कोई सम्मान और प्रतिष्ठा न होगी। जैसे नमरूद ने हज़रत इब्राहीम से विद्रोह किया। उनकी बात न मानी और जिस तरह फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के उपदेश पर अमल करने की बजाए उनको कष्ट पहुँचाया। और उन दोनों शक्तिमान बादशाहों पर आज भी धिक्कार (लानत) भेजी जाती है और कोई उनका सम्मान नहीं करता है। लोगों को सांसारिक धन के लोभ में धनवानों का अनुकरण नहीं करना चाहिए, बल्कि ईश्वर के आदेशों का पालन करना चाहिए। प्रतिष्ठित मुसलमानों और ऊँची नस्ल ग़रीबों में प्रायः नबी स. और उनके मित्रमंडल की संतान हैं। जिन्होंने सदैव ग़रीबी और निर्धनता को पसंद किया और अपने लिए गर्व का कारण समझा। ग़रीबी और निर्धनता की कोई जाति नहीं है, बल्कि यह भी एक हुनर और विशिष्टता दर्शाने वाली है। यही कारण है कि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे नबी स. और उनके मित्रों ने शाही राज और सम्मान की टोपी को पाँव की जूतियों के बराबर भी महत्त्व नहीं दिया। उनकी संतान हर देश में फैलीं और उनका अनुकरण करती रहीं। उन्होंने धन-दौलत के लिए किसी के समक्ष हाथ नहीं पसारा। परंतु बादशाहों और विशिष्टों ने सदैव उस वर्ग का सम्मान किया और उनकी सेवा को अपने लिए सौभाग्य समझा। ख़िलाफ़त राशदा (प्रथम चार ख़लीफ़ा) के बाद अमीर माविया ने और उनके बाद उनके पुत्र यज़ीद ने शासन की, इमाम ज़ैनुलआबदीन ने ख़िलाफ़्त की पेशकश को यह हक्कर ठुकरा दिया कि मैं अपने पूर्वजों की तरह साधारण जीवन व्यतीत करूँगा। मुझे सत्ता में कोई अभिरुचि नहीं। बनी उम्मिया के बाद बनी अब्बास का शासन स्थापित हुआ और संसार के विभिन्न देशों में मुसलमानों के शासन स्थापित हुए।

रोम में आले उस्मान ने ईरान और तूरान में आले सामान और भारत में महमूद ग़ज़नवी और उसके बाद शहाबुद्दीन ग़ौरी ने सत्ता स्थापित की। परंतु प्रत्येक काल में अधिकांश शरीफ़ और भद्र लोगों ने अलग रहकर ग़रीबी के जीवन को पसंद किया और अपने पूर्वजों के तर्का को गले से लगाए रहे। और ईश्वर और रसूल के आदेशों पर अमल करते रहने की कोशिश की। धर्म को संसार के ऊपर रखा। यद्यपि धनवानों की दृष्टि में निर्धन, तिरस्कृत और निंदित रहे परंतु इस्लामी बादशाहों और विशिष्टों ने उनको सम्मान, आदर और प्रतिष्ठा दी। मैं स्वयं उसी ग़रीब क़ौम का एक व्यक्ति हूँ, जो आर्थिक ज़रूरतों से विवश होकर तुम्हारे देश में आया हूँ। मैं यात्री हूँ और यात्रा की कठिनाइयों को सहन कर चुका हूँ। और आगे जो कुछ गुज़रेगी उसको भी झेला करूँगा और सब्र करूँगा। एक कवि के कथानुसार :

"ज़करिय अलैहिस्सलाम के अंग-अंग पर आरा चलाया गया परंतु उन्होंने दम नहीं मारा इसी प्रकार आदम की औलाद पर जो भी मुसीबत आती है गुज़र जाती है।"

(इसका प्रभाव उनपर नहीं पड़ता है।)

मेरा यह बयान सुनकर कप्तान सुईटन आश्चर्यचकित हुआ वह इस्लाम के इतिहास से ख़ूब अवगत था। अँग्रेज़ी भाषा में इस्लामी इतिहास की पुस्तकों का ख़ूब अध्ययन कर चुका था। मेरी बातों का क़ायल तो हो गया परंतु वह अपने देश के नियमों और सिद्धांतों की श्रेष्ठता को हर हाल में ऊपर रखना चाहता था। इसलिए मुझसे तो इसी तरह बातें करता रहा और वही आपत्ति दुहराता रहा। परंतु दूसरों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के सामने मेरी प्रशंसा की और कहा कि मैं लंबे समय तक बंगाल में रहा परंतु आस्था में इतना सख़्त मुसलमान नहीं देखा। पोत की यात्रा में पेचिश से ग्रस्त हुआ और स्थिति चिंताजनक हो गई, मैंने चाहा कि पुरानी शराब के चंद क़तरे पिला दूँ मगर न पिला सका। लेकिन उसके बाद फिर कभी बीमार नहीं हुआ।

कप्तान सुईटन ने मुझसे एक रोज़ पूछा कि तुम्हारे स्वास्थ्य का क्या राज़ है कि तुम इस अवधि में कभी बीमार नहीं हुए। मैंने उत्तर दिया 'कम खाना' अच्छे स्वास्थ्य का कारण है। वास्तविक स्थिति यह है कि जब मैं बंगाल से यात्रा के लिए प्रस्थान करने लगा अहल्लाह से दुआ की थी कि मुझे बीमारियों से सुरक्षित रखिए। और मैंने कम खाने की आदत डाली। क्योंकि यदि बीमार होता तो बर्तानिया के डाक्टर ताक़त के लिए शराब प्रस्तावित करते परंतु ईश्वर ने मेरी दुआ क़बूल कर ली और मैं पूरी यात्रा में बीमार नहीं हुआ। इसलिए किसी दवा की ज़रूरत भी पेश नहीं आई कि डाक्टर से संपर्क करता।

बर्तानिया के लोगों की बुरी आदतें

बर्तानिया के लोगों में जो बुरी आदतें और व्यवहार हैं, उन्हें वे स्वयं स्वीकार करते हैं। उनके यहाँ एक गाली बकी जाती है जिसका अर्थ है 'ईश्वर का कोप (क़हर) हो तुम पर' विशिष्ट और प्रबुद्ध इसको ज़ुबान पर नहीं लाते। जिस प्रकार मुसलमान 'ख़ुदा की लानत' इस्तेमाल करते हैं। इसको बहुत बड़ी गाली माना जाता है। अत्याचारी और दुराचारी के लिए यह शब्द प्रयोग में लाते हैं। परंतु आमजन इसको साधारण मानते हैं। नसारा कहते हैं कि ईश्वर का नाम सड़कों और बाज़ारों में नहीं लेना चाहिए। यह बहुत अपमान की बात है। किसी को चोर और झूठा कहना बहुत बड़ा देष है। यदि किसी ने बात-चीत के क्रम में दूसरे को चोर या झूठा कह दिया तो दूसरा व्यक्ति चाहे ग़रीब हो पिस्तौल या बंदूक़ लेकर कहने वाले को मुक़ाबला के लिए आमंत्रित करता है। यदि वह मुक़ाबले से बचता है तो वह डरपोक कहलाता है और अपनों से आँखें मिलाने के क़ाबिल नहीं रहता है। इस सिलसिले में एक-दो हत्याएँ भी हो जाती हैं। मामला न्यायालय में जाता है। कुछ से जान के बदले जान लिया जाता है और कतिपय को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आजीवन कारावास की सज़ा मिलती है। कोई बच भी जाता है। अधिकांश सज़ायाफ़्ता भागकर दूसरे देशों में चले जाते हैं और अपनी जान बचा लेते हैं। यद्यपि यह कृत आत्म सम्मान के तक़ाज़े से है परंतु प्रिय जीवन को किसी लाभ के बिना नष्ट करना उचित नहीं है। हाँ, यदि लड़ाई में जान जाए तो उचित है। वरन् जीवन जैसे अनमोल धन को हाथ से जाने देना बुद्धिमानी के विरूद्ध है। दूसरी कूप्रवृत्ति जुआबाज़ी है जिसके माध्यम से माल-दौलत और जायदाद भी हाथ से चली जाती है। जब हार जाते हैं तो तबाह हो जाते हैं। जान-बूझकर जुआ खेलते हैं और या तो धनवान हो जाते हैं या निर्धन और तबाह हाल हो जाते हैं।

एक अद्भुत नगर

रोम और फ़िरंगिस्तान के जो विचित्र हालात यहाँ के लोग बयान करते हैं, उनमें एक यह है कि रोम देश में हरको नाम का एक नगर है। उसके निकट पहाड़ था जिसके नीचे गंधक की खान थी। जिसके अंदर से आग निकला करती थी। तीन सौ वर्ष हुए जब पहाड़ के सब पत्थर जल गए और उनकी जली हुई राख उड़कर आबादी पर गिरी। पूरे नगर के भवन उसके नीचे दब गए। दो वर्ष बाद उस राख को हटाया गया तो उसके नीचे से पत्थरों और ईंटों के बने हुए भवन साज़-सामान के साथ निकले। उनके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के अन्न, बर्तन, हथियार और तरह-तरह की सजावटी वस्तुएँ मिलीं। जिनसे उस काल की संस्कृति और सभ्यता के स्तर का अंदाज़ा किया जाता है। प्रत्येक वस्तु सलीके से रखी हुई नज़र आई। एक अँग्रेज़ श्री जान बरमटन ने एक सुंदर अंगूठी दिखलाई जिस पर छोटे-छोटे नग जड़े हुए थे। उसने बताया कि यह अंगूठी उसी राख में छुपे नगर से मिली थी जो मेरे पूर्वजों से मुझ तक पहुँची है। मेरे पास यह उनकी निशानी है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुक़्क़ा और तंबाकू

हुक़्क़े और तंबाकू के इस्तेमाल का जो सलीक़ा और तरीक़ा भारतीयों में है, वह न तो यूरोप में नज़र आया न ईरान, तूरान, चीन और बर्तानिया में। यहाँ तंबाकू पीने का तरीक़ा यह है कि जाम की तरह का एक पाईप होता है उसके अंदर तंबाकू को भर देते हैं और उसपर आग रख देते हैं। उसके बाद कश लगाते हैं। कहते हैं कि इससे नज़ला और ज़ुकाम दूर हो जाता है और शरीर गर्म रहता है। ईरान में इसको क़ल्यान कहते हैं। बर्तानिया में ग़रीब लोग ख़ुस्क तंबाकू पीते हैं। मेरे पास जो हुक़्क़ा है वह गुड़गुड़ीनुमा है। और यहाँ मेरे लिए एक तमाशा बन गया है। जब मैं पीता हूँ तो पेंदे से पानी की आवाज़ गुड़गुड़ की तरह निकलती है और लोग क़रीब आकर देखते हैं और सुनते हैं और मुझसे आवाज़ के संदर्भ में सवालात करते हैं। उनको आशचर्य होता है कि आवाज़ कहाँ से आती है मैं विवश होकर उनको पूरी कैफ़ीयत बताता हूँ।

किताबत और मुद्रण

बर्तानिया में किताबत और मुद्रण का कार्य भी होता है परंतु मिस्तर (लिखने के लिए लाईन खींचने) की परंपरा नहीं है। श्री सुईटन ने मुझसे कुछ मुस्तर तैयार कराए और उसको बहुत पसंद किया और कहा कि यह कला भी अच्छी है।

शतरंज

शतरंज के खेल में उनको दिलाराम की योजना बहुत आकर्षक मालूम हुआ। जैसा कि कहा गया है :

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"पील व प्यादा आगे करके अस्प शह को मात दो।"

सुईटन के बड़े भाई ने काग़ज़ पर यह योजना बनवाई और अपने साथ ले गए।

अल्लाह को अच्छाई का अधिक ज्ञान है, हमारा अंत सत्य के साथ हो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट

शिगर्फ़ नामा विलायत नुस्ख़ा ख़ुदा बख़्श (एक टिप्पणी)

शैख़ एतिसामुद्दीन के यात्रा वृत्तांत 'शिगर्फ़ नामा विलायत' का एक नुस्ख़ा ख़ुदा बख़्श ओरिएन्टल लाइब्रेरी, पटना में भी मौजूद है जिसका विवरण निम्नांकित है :

शीर्षक	: शिगर्फ़ नामा विलायत
ए.सी.सी. संख्या	: १२४५
पृष्ठ	: १३१ (प्रथम पृष्ठ ग़ायब)
वर्ष किताबत	: १२१९ हिजरी मुताबिक़ १८०४ ई.
लिखावट	: नसतालीक़ जली
आकार	: १३ X २३
हौज़	: ८ X १६
पंक्तियाँ	: १४

यह नुस्ख़ा १९७६ ई. में ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी को प्राप्त हुआ। यह खजुवा से आया था और इसकी प्राप्ति में प्रो. सैयद हसन असकरी मरहूम की कोशिश शामिल थी। यह नुस्ख़ा स्वच्छ और स्पष्ट है। इस नुस्ख़ा की विषयसूची और प्रस्तुत उर्दू अनुवाद की विषयसूची में कुछ अंतर है। उदाहरण स्वरूप ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी के नुस्ख़ा में क्रमांक ८ 'पोत पर सवार होना और समुद्र की विशेषताएँ' का बयान। क्रमांक ९ पर 'पुर्तगालियों और अँग्रेज़ों के बंगाल आने का संक्षिप्त हाल' के फ़ौरन बाद है इसी प्रकार क्रमांक ११ पर 'पुर्तगालियों के कोठी ख़ाली कराने का हाल' क्रमांक १२ 'कहवल घाट की अँग्रेज़ी कोठी का ख़ात्मा और कलकत्ता की आबादी' के तुरत बाद उल्लेख है। ऐसा कई स्थानों पर देखने को मिलता है। अनूदित नुस्ख़ा में सभी शीर्षक मौजूद हैं। क्रम में कहीं-कहीं अंतर है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस यात्रा वृत्तांत के हवाले से कतिपय महत्वपूर्ण बिंदुओं का संकेत अनिवार्य है। शैख़ एतिसामुद्दीन ने बर्तानिया, स्कॉटलैंड और फ़्रांस के अतिरिक्त हालैंड के संदर्भ में भी अपनी भावनाओं को बयान किया है। यात्रा वृत्तांत से यह स्पष्ट है कि वे हालैंड कभी गए नहीं परंतु यह स्पष्टीकरण कहीं नहीं है कि यह विवरण उन्हें कहाँ से मिले। अनुमान है कि उन्होंने यह क़िस्से बर्तानिया में लोगों से सुने होंगे क्योंकि जो घटनाएँ उन्होंने बयान किए हैं उनकी स्थिति चुटकुले जैसी अधिक है।

उन्होंने रोम देश जो निकटवर्ती पूरब और रूस जैसे देशों के संदर्भ में संक्षेप में उल्लेख किया है परंतु इस बयान का ऐतिहासिक महत्त्व कुछ विशेष नहीं। उन्होंने एक आकर्षक समीक्षा फ़्रांस में गिरजा घर की व्यवस्था और पादरियों के सदाचार के ह्रास के संदर्भ में भी की है। फ़्रांस की क्रांति के इतिहास से अवगत लोग न केवल इस बात का सत्यापन करेंगे, बल्कि शैख़ एतिसामुद्दीन की समीक्षा की क़द्र भी करेंगे।

एक अन्य आकर्षक हवाला आक्सफ़ोर्ड के शिक्षा केंद्र से संबंधित है। शैख़ एतिसामुद्दीन ने वहाँ के पुस्तकालयों का उल्लेख किया है और यह भी बताया है कि वहाँ बड़ी संख्या में अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषा की पांडुलिपियाँ मौजूद थीं। उन्होंने वहाँ के प्रधानाध्यापक हंट डरीक के संदर्भ में भी उल्लेख किया है। और उस पुस्तकालय में मौजूद फ़ारसी की दो पुस्तकों का विशेष उल्लेख किया है। एक 'कलीला व दमना' (पंच तंत्र : अरबी अनुवाद) का अनुवाद फ़ारसी भाषा में और दूसरा फ़रहंग जहाँगीरी। उन्होंने यह भी लिखा है कि उन दोनों पुस्तकों से कप्तान सुईटन को उन्होंने परिचित कराया।

एक और रोचक उल्लेख शैख एतिसामुद्दीन ने बंगाल में जर्मनों की उपस्थिति और उनके निष्काशन के संदर्भ में किया है। उनके बयान के अनुरूप नव्वाब अली वर्दी ख़ाँ के शासन काल में बंगाल में रह रहे जर्मन क़ौम के निवासी उपद्रव पर उतारू हुए अतएव उनके विरूद्ध सैनिक कार्रवाई की गई और हुगली के स्थान से उन्हें हटना पड़ा। इस घटना का विवरण प्रो. काली कंकर दत्ता की प्रसिद्ध पुस्तक Ali Vardi and His Times में मिलती है। यद्यपि जर्मनी उस समय एक देश के रूप में नहीं था परंतु Ostend Company के नाम से जर्मन निवासी कुछ व्यापारी हुगली में व्यापार करते थे उनका प्रबंधक Schonamille नाम का व्यक्ति था

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके साथ नव्वाब के फ़ौजदार का झगड़ा हो गया था और १७४४ ई. में उन लोगों को हुगली से फ़रार होना पड़ा। कुछ वर्षों बाद १७५१ ई. में जर्मनी के एक अन्य राज्य परशा से जब बंगाल में रह रहे अँग्रेज़ों ने संपर्क स्थापित किया तो अली वर्दी ने पुनः उनकी ख़बर ली और इस प्रकार फिर जर्मन लोग का बंगाल में कोई प्रभाव स्थापित नहीं हो सका। पुर्तगालियों के बंगाल से निष्काशन का उल्लेख भी एतिसामुद्दीन ने पृथक शीर्षक के अंतर्गत किया है।

बुनियादी तौर पर देखा जाए तो अनूदित इबारत ख़ुदा बख़्श के नुस्ख़े की इबारत में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं है, मात्र इसके कि कतिपय शीर्षक के क्रम में कहीं कुछ अंतर है। फिर भी ख़ुदा बख़्श के नुस्ख़ा पर इस टिप्पणी को शामिल करना इसलिए अनिवार्य था कि अनुवादक ने जिन प्रतियों (नुस्ख़ों) का इस्तेमाल किया है उनकी नक़्ल की तिथि कहीं अंकित नहीं है जबकि ख़ुदा बख़्श का नुस्ख़ा १२१९ हिजरी /१८०४ ई. में दीवान इमाम अली की फ़र्माइश पर नक़्ल किया गया था और इस दृष्टि से इसकी प्राचीनता और महत्ता प्रमाणिक है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके साथ नव्वाब के फ़ौजदार का झगड़ा हो गया था और १७४४ ई. में उन लोगों को हुगली से फ़रार होना पड़ा। कुछ वर्षों बाद १७५१ ई. में जर्मनी के एक अन्य राज्य परशा से जब बंगाल में रह रहे अँग्रेज़ों ने संपर्क स्थापित किया तो अली वर्दी ने पुनः उनकी ख़बर ली और इस प्रकार फिर जर्मन लोग का बंगाल में कोई प्रभाव स्थापित नहीं हो सका। पुर्तगालियों के बंगाल से निष्काशन का उल्लेख भी एतिसामुद्दीन ने पृथक शीर्षक के अंतर्गत किया है।

बुनियादी तौर पर देखा जाए तो अनूदित इबारत ख़ुदा बख़्श के नुस्ख़े की इबारत में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं है, मात्र इसके कि कतिपय शीर्षक के क्रम में कहीं कुछ अंतर है। फिर भी ख़ुदा बख़्श के नुस्ख़ा पर इस टिप्पणी को शामिल करना इसलिए अनिवार्य था कि अनुवादक ने जिन प्रतियों (नुस्ख़ों) का इस्तेमाल किया है उनकी नक़्ल की तिथि कहीं अंकित नहीं है जबकि ख़ुदा बख़्श का नुस्ख़ा १२१६ हिजरी /१८०४ ई. में दीवान इमाम अली की फ़र्माइश पर नक़्ल किया गया था और इस दृष्टि से इसकी प्राचीनता और महत्ता प्रमाणिक है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खुदा बख़्श लाइब्रेरी के महत्वपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

1. इकबाल, हिन्दूस्तान और पाकिस्तान/ प्रो० सैय्यद हसन अहमद, 1991, पृ० 77 — रू० 15/-
2. खुदा बख़्श लाइब्रेरी एक परिचय / वी० सी० स्कॉट ओकोनौर, द्वितीय संस्करण, 2000, पृ० 36 — रू० 15/-
3. गांधीजी और हिन्दू मुस्लिम एकता / बिशम्भर नाथ पांडे, द्वितीय संस्करण, 1999, पृ० 50 — रू० 20/-
4. गीता और कुरान / पंडित सुन्दरलाल, 1996, पृ० 268 — रू० 50/-
5. दिलदार के दोहे: मुगल काल के संत कवि दिलदार बेग दिलदार की रचनाऐं / काज़ी अब्दुलवदूद, 1991, पृ० 30 — रू० 10/-
6. पंडित मदन मोहन मालवीय/ सैय्यद अबुल आला मौदूदी, 1992, पृ० 32 — रू० 10/-
7. पंडित मोतीलाल नेहरू का उद्घाटन भाषण -- 1907, 1990, पृ० 44 — रू० 15/-
8. भारत में कौमी एकता की परम्पराएं/बिशम्भर नाथ पांडे, 1994, पृ० 34 — रू० 10/-
9. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद/ डा० अजय अनुपम, 1989, पृ० 406 — रू० 60/-
10. मनमोहन की बातें: कुरान शरीफ के कुछ अंशों का अनुवाद / शाह फज़ले रहमान गंज मुरादाबादी, 1990, पृ० 42 — रू० 10/-
11. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की याद में, 1988, पृ० 84 — रू० 15/-
12. स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार के मुसलमानों का योगदान / तकी रहीम, अनुवाद शैदाई, 2000, पृ० 200 — रू० 80/-
13. साम्प्रदायिकता और देश की एकता, 1991, पृ० 88 — रू० 15/-
14. हिन्दूस्तानी मुहावरों का एक दुर्लभकोष / मिर्ज़ा जान 'तपिश' देहलवी, द्वितीय संस्करण, 1999, पृ० 55 — रू० 20/-

मिलने का पताः खुदा बख़्श लाइब्रेरी, पटना-800004
Phone: 0612-2300209, 2301507 / Fax: 0612-2300315
e-mail: pat_kbopl@dataone.in